मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

MRIDULA SINHA KI KAHANIYON KA AALOCHANATMAK ADHYAYAN

[मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल के हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच. डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध]

A THESIS SUBMITTED IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

वानललपारी चिन्जाह

VANLALPARI CHINZAH

MZU Regd. No. 1905399

Ph.D. Regd. No. MZU/Ph.D./1423 of 25.07.2019

हिन्दी विभाग

मानविकी एवं भाषा संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF HUMANITIES AND LANGUAGES

अक्टूबर, 2024

OCTOBER, 2024

मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

MRIDULA SINHA KI KAHANIYO KA AALOCHANATMAK ADHYAYAN

प्रस्तुतकर्ता

वानललपारी चिन्जाह्

हिन्दी विभाग

By

VANLALPARI CHINZAH

Department of Hindi

शोध-निर्देशक

डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा

SUPERVISOR

DR. AKHILESH KUMAR SHARMA

मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल के मानविकी एवं भाषा संकाय के अंतर्गत

हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि के

लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

Submitted in partial fulfilment of the requirement of the degree of Doctor of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
मिज़ोरम विश्वविद्यालय
आइजॉल – 796004

केंद्रीय विश्वविद्यालय
A Central University
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

Dr. Akhilesh Kumar Sharma
Assistant Professor
Department of Hindi
Mizoram University
Aizawl - 796004

Mob.No.-9413224221/7597525190; Email:akhileshksharma82@gmail.com; Website : www. mzu.edu.in

दिनांक: 24.10.2024

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **वानललपारी चिन्जाह** ने मेरे निर्देशन में मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल की **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (पीएच.डी.-हिन्दी)** की उपाधि हेतु **'मृदुला सिंह की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन'** विषय पर शोध कार्य किया है। प्रस्तुत शोध कार्य शोधार्थी की निजी गवेषणा का प्रतिफल है। यह इनका मौलिक शोध-कार्य है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, प्रस्तुत शोध-प्रबंध या इसके किसी अंश को किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी प्रकार की उपाधि हेतु अद्यावधि प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल की **डॉक्टर ऑफ फिलॉसफ़ी (पीएच.डी.-हिन्दी)** की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करता हूँ।

(डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा)
शोध निर्देशक

हिन्दी विभाग

मिज़ोरम विश्वविद्यालय

आइज़ोल

अक्टूबर, 2024

घोषणापत्र

मैं **वानललपारी चिन्जाह** एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि प्रस्तुत शोध-प्रबंध की विषय-सामग्री मेरे द्वारा किए गए शोध-कार्यों का सुपरिणाम है। इस शोध-सामग्री के आधार पर न तो मुझे और जहाँ तक मुझे ज्ञात है, न किसी अन्य को कोई उपाधि प्रदान की गई है और न ही यह शोध-प्रबंध मेरे द्वारा कोई अन्य उपाधि प्राप्त करने के लिए किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-प्रबंध लेखन के समय जिन ग्रन्थों की सहायता ली गयी है उसे समुचित रूप से उद्धृत किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल के सम्मुख हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच. डी. - हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

(वानललपारी चिन्जाह)

शोधार्थी

(प्रो. संजय कुमार)

अध्यक्ष

(डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा)

शोध-निर्देशक

प्राक्कथन

साहित्य समाज सापेक्ष होता है। साहित्य समाज की गतिशीलता को दर्शाता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा जाता है। इन्हें एक-दूसरे का पूरक भी कहा जा सकता है। साहित्य में समाज का रूप परिलक्षित होता है। समाज को दिशा-निर्देश प्रदान करने में साहित्य की अहम भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। हिन्दी साहित्य के काल विभाजन में भी उस काल के समाज में व्याप्त साहित्य को ही आधार बनाया गया हैं। साथ ही हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन भी उस समय की सामाजिक प्रवृत्ति के अनुसार ही किया गया है। यही सामाजिक प्रवृतियाँ साहित्य सृजन का आधार बनती हैं। साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की परिस्थितियों को दर्शाता हैं तथा आवश्यकता या समय की माँग पर व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ भी उठाते हैं।

लेखनी में बड़ी ताकत होती हैं। मौखिक अभिव्यक्ति तो समाप्त हो जाती है; लेकिन लिखित अभिव्यक्ति सदा के लिए अमर हो जाती हैं। साहित्यकार अपनी कृतियों के माध्यम से समाज में विद्यमान रीति-रिवाजों, खान-पान, रहन-सहन, परम्पराओं, संस्कृति आदि को पाठकों के सामने लाते हैं। इसके अतिरिक्त इससे राष्ट्र की स्थिति, इतिहास तथा सभ्यता की जानकारी भी मिल जाती है। मनुष्य समाज से अलग नहीं रह सकता है। क्योंकि उसकी गतिविधियाँ समाज द्वारा नियंत्रित होती है। मनुष्य का सर्वांगीण विकास केवल समाज में ही संभव होता है। साहित्य समाज को परिपूर्ण करता है।

साहित्य की रचना में अपना योगदान बिखेरते हुए मृदुला सिन्हा ने कतिपई रचनाओं का सृजन किया हैं। इनके लेखन का मुख्य केंद्र नारी और भारतीय ग्रामीण जीवन हैं। इन्होंने भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों का वर्णन किया है। इनकी कहानियाँ भारत की सच्ची झाँकी प्रस्तुत करती हैं। इनके लेखन में लोक जीवन के विविध रूप मिलते हैं। इनकी प्रतिभा लेखन से मुखरित हुई है। इन्होंने ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश और पाश्चात्य जीवन शैली के प्रभाव पर विचार अंकित किए हैं; लेकिन सबसे ज्यादा इनका मन ग्रामीण जीवन में रमा है। इस शोध प्रबंध में मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य, विशेष रूप से कहानियों की विशेषताओं को उभारने का प्रयास किया गया है।

मेरे शोध प्रबंध का विषय **'मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन'** है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। जिसमें रचनाकार मृदुला सिन्हा के कथा साहित्य की सहायता से विषयगत वर्गीकरण किया गया है।

प्रथम अध्याय में **'मृदुला सिन्हा और उनकी सृजन यात्रा'** के अंतर्गत दो उप अध्याय रखे गए हैं। पहला उप अध्याय **'मृदुला सिन्हा का व्यक्तित्व'** में जन्म एवं प्रारंभिक जीवन, शिक्षा-दीक्षा, निजी जीवन, वैवाहिक जीवन, सेवा और नौकरी, सामाजिक जीवन, साहित्यिक सृजन का स्त्रोत, स्वभावगत खासियत, स्त्री दृष्टिकोण, राजनीतिक यात्रा, विविध कार्यभार, योगदान तथा सहभागिता, संपादक कार्य, प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान आदि का विवरण विस्तार से दिया गया हैं। दूसरा उप अध्याय **'मृदुला सिन्हा का कृतित्व'** के अंतर्गत सात कहानी संग्रहों के कहानियों का परिचय दिया गया है। इनके व्यापक लेखन संसार में कहानी, उपन्यास, लघु कथा, लोक कथा, निबंध, कहानी संग्रह तथा लेखों का भंडार विद्यमान हैं। इन्होंने भारतीय संस्कृति, लोक जीवन, ग्रामीण तथा शहरी जीवन, वृद्धावस्था की समस्या, नारी जीवन, दिव्यांगों के मनोभावों पर आधारित अनेक लेखों का सृजन किया हैं।

दूसरा अध्याय **'हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास'** है। इसके अंतर्गत हिन्दी की प्रारंभिक कहानियाँ, हिन्दी कहानी की विकास यात्रा तथा प्रमुख कहानी आन्दोलन का सविस्तार वर्णन किया गया है। इसमें हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास को क्रमानुसार दर्शाया गया है।

तीसरा अध्याय **'मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन'** है। इसके अंतर्गत लोक तत्व से जुड़े विविध तथ्यों यथा- लोक जीवन की अभिव्यक्ति, तीर्थाटन, व्रत, पूजापाठ तथा लोक जीवन में जीव जन्तु की भूमिका, महत्व एवं उपयोगिता का विवेचन किया गया है। कहानी में निहित समाज और परिवेश का आकलन करते हुए बुनियादी रिश्ते, निम्न वर्ग के संघर्ष, वृद्धावस्था की

अभिव्यक्ति, कन्या जन्मोत्सव तथा कन्या भ्रूण हत्या पर चिंतन एवं विश्लेषण किया गया है। साथ ही तत्कालीन परिस्थितियों के हवाले सामाजिक परिवेश के विभिन्न परिदृश्यों को उजागर करते हुए वर्तमान संदर्भ में चिंतन किया गया है। भारतीय चिंतन बोध पर विचार प्रस्तुत करते हुए सांस्कृतिक चेतना को भी परिलक्षित किया गया है। भारतीय चिंतन दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना, आचार-विचार आदि पक्षों की विवेचना वर्तमान समय की जरूरत को ध्यान में रखकर की गई है। भारतीय संस्कृति में निहित मृदुला सिन्हा की कहानियों में वर्णित त्योहारों का स्वरूप भी दर्शाया गया है। नारी के विविध रूपों को प्रस्तुत करते हुए स्त्री पात्र निरूपण, सशक्त नारी की अभिव्यक्ति, मातृत्वबोध का चित्रण, दांपत्य जीवन तथा स्त्री मनोदशा का स्वरूप आदि को वर्तमान परिपेक्ष्य में उभारा गया है। इस अध्याय में मृदुला सिन्हा की कहानियों में व्यक्त नारी के विविध रूपों का चित्रण भी सविस्तार रूप से प्रस्तुत किया गया है। साथ ही लेखिका की कहानियों में निहित जीवन मूल्यों पर दृष्टि डालते हुए मानवीय मूल्यों को परखा गया है। युवाओं में बदलते जीवन मूल्यों के रंग-रूप को भी चित्रित किया गया है। पारिवारिक संस्कार में जीवन मूल्यों की स्थिति एवं चुनौतियों को भी उकेरा गया है। आधुनिक जीवन के प्रभाव के चलते जीवन मूल्यों के बिगड़ते संतुलन को भी दर्शाया गया है। अतः इसमें जनमानस में व्याप्त जीवन मूल्यों की चर्चा करते हुए उनकी महत्ता को रेखांकित किया गया है।

चौथा अध्याय **'मृदुला सिन्हा की कहानियों की भाषा शैली'** है। इसमें दो उप अध्याय भाषा और शैली रखा गया है। भाषा के अंतर्गत शब्द संपदा, शब्द प्रयोग, वाक्य विन्यास, लोकोक्ति, मुहावरे आदि को विवेचित किया गया है और शैली के अंतर्गत प्रयुक्त कथा, कहानी की विभिन्न शैलियों को परंपरागत और आधुनिक दृष्टिकोण से परखा गया है।

पाँचवाँ अध्याय **'समकालीन हिन्दी कहानीकारों में मृदुला सिन्हा का स्थान'** है। इसके अंतर्गत समकालीन हिन्दी कहानी की परंपरा में मृदुला सिन्हा का स्थान निर्धारित करने की कोशिश की गई है, जिसमें मृदुला जी के समकालीन प्रमुख महिला कहानीकारों का विवरण दिया गया है।

शोध प्रबंध के अंतिम अध्याय **उपसंहार** में शोध प्रबंध का निष्कर्ष दिया गया है। अंत में **संदर्भ ग्रंथ सूची** और परिशिष्ट के अंतर्गत शोधार्थी का जीवन वृत्त, शोध-पत्र प्रकाशन और शोधार्थी का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

मैं सर्वप्रथम परमपिता परमेश्वर को धन्यवाद देती हूँ जिनके आशीष से मैं इस शोध कार्य को पूर्ण करने में सक्षम हुई। प्रत्येक कार्य और निर्माण की पूर्णता और सफलता में केवल एक व्यक्ति का योगदान नहीं रहता है; बल्कि अनेक लोगों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में योगदान रहता है। मेरे इस शोध प्रबंध के विषय चयन से लेकर समाप्ति तक सहयोग, सुझाव तथा कुशल मार्गदर्शन देने में मेरे शोध प्रबंध के शोध निर्देशक डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा का अविस्मरणीय योगदान रहा है। इन्होंने शोध कार्य की कठिन प्रकृति के समय आई शंकाओं एवं समस्याओं के समाधान करने में मुझे समुचित मार्ग दिखाया। उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ। गुरु से ही शिष्य को ज्ञान की प्राप्ति होती है -

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोष।

गुरु बिन लखै न सत्य को , गुरु बिन मैटै न दोष॥

(कबीरदास)

इसलिए डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा से जीवनभर ज्ञान का आशीर्वाद पाने की कामना रखती हूँ। साथ ही भविष्य में भी उनके मार्गदर्शन की प्रार्थी भी हूँ। उनका सहयोग मेरे लिए सदा स्मरणीय रहेगा। इसके साथ ही मिज़ोरम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. संजय कुमार एवं विभाग में पदस्थ प्रो. सुशील कुमार शर्मा, डॉ. सुषमा कुमारी और डॉ. अमिष वर्मा के प्रति भी उनकी सज्जनता और आत्मीयता के लिए मैं आभार प्रकट करती हूँ। इनका मार्गदर्शन और सहयोग मुझे प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के प्रति प्रेरित करने में मेरे माता श्रीमती ललबियाकलियानी एवं पिता श्री ह्लाङदोला चिंजन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रेम और सहयोग के बिना मेरे लिए यह शोध-प्रबंध पूर्ण कर पाना संभव नहीं है। अपने माता-पिता के प्रति तहे दिल से कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। मैं अपने पति

श्री रोबर्ट मलसोमत्लूआंगा के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मेरे शोध कार्य में पूर्ण समर्थन दिया और बच्चों की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली। इसके साथ ही अपने छोटे भाई जिम्मी वानललदिका, मेरी छोटी बहन स्वर्गीय क्रिस्टीना वानललत्लानी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे हमेशा इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इसके साथ ही मैं डॉ. मरीना ललथ्लामुआनी, प्राचार्या, मिजोरम हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय और मिजोरम हिन्दी प्रशिक्षण महाविद्यालय के मेरे सभी सहकर्मियों के प्रति भी आभार ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य की पूर्णता के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही मुझे इनका पूर्ण समर्थन और सहयोग प्राप्त हुआ।

मैं मिज़ोरम विश्वविद्यालय के पुस्तकालय और राज्य पुस्तकालय का भी जिक्र करना चाहती हूँ जहाँ से मुझे शोध विषय से संबन्धित पुस्तकें प्राप्त हुई। साथ ही उन सभी ज्ञात-अज्ञात जनों को भी साधुवाद ज्ञापित करती हूँ जिनके सहयोग से मेरा शोध कार्य पूर्ण हो पाया। अंत में मैं हिन्दी विभाग के सभी कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ।

दिनांक : 24.10.2024

वानललपारी चिन्जाह

विषयानुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	**i-v**
अध्याय 1. मृदुला सिन्हा और उनकी सृजन यात्रा	**1-45**
1.1 मृदुला सिन्हा का व्यक्तित्व	
1.2 मृदुला सिन्हा का कृतित्व	
अध्याय 2. हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास	**46-65**
अध्याय 3. मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन	**66-168**
3.1 लोक तत्व	
3.2 समाज और परिवेश	
3.3 भारतीय चिंतन बोध	
3.4 नारी के विविध रूप	
3.5 जीवन मूल्य	
अध्याय 4. मृदुला सिन्हा की कहानियों की भाषा-शैली	**169-221**
4.1 भाषा	
4.2 शैली	
अध्याय 5. समकालीन हिन्दी कहानीकारों में मृदुला सिन्हा का स्थान	**222-257**
उपसंहार	**258-260**
संदर्भ ग्रंथ सूची	**261-266**
परिशिष्ट	
शोधार्थी का जीवन वृत्त	
पत्रिका प्रकाशन	
शोधार्थी का विवरण	

प्रथम अध्याय

मृदुला सिन्हा और उनकी सृजन यात्रा

1.1 मृदुला सिन्हा का व्यक्तित्व

1.2 मृदुला सिन्हा का कृतित्व

प्रथम अध्याय

मृदुला सिन्हा और उनकी सृजन यात्रा

विषय प्रवेश :

मृदुला सिन्हा हिन्दी महिला कथाकारों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। हिन्दी कहानी के क्षेत्र में इनका आगमन समकालीन हस्तक्षेप के साथ होता है। इनकी लेखनी अनुभव एवं यथार्थ पर निर्भर है। इनके साहित्य के पात्र अपने से लगते हैं। इनमें अपने आप को देखा या महसूस किया जा सकता है। इनके लेखों में गाँव की सोंधी खुशबू एवं परंपरा से युक्त यथार्थ का चित्रण मिलता है तो दूसरी तरफ आधुनिक समाज का रूप भी सम्मिलित है। इनके साहित्य के केंद्र में नारी रही है। इन्होंने पुरुष और नारी दोनों को समरूप स्वीकारा है। पर मातृत्व की विशेषता के आधार पर ये नारी को अधिक सशक्त और विशेष मानती हैं। मूलतः ये अर्धनारीश्वर को महत्त्व देती हैं। हिन्दी कथा साहित्य को समृद्ध करने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। साथ ही इनके सामाजिक और राजनीतिक योगदान को भी नहीं भूला जा सकता है।

1.1 मृदुला सिन्हा का व्यक्तित्व

मानव जीवन संघर्षपूर्ण होता हैं। इस संघर्षमय जीवन को किस प्रकार से जिया जाए, यह व्यक्ति पर निर्भर करता है। व्यक्ति की संवेदना शक्ति के आधार पर ही उसकी पहचान सामने आती है। संवेदनहीन व्यक्ति किसी और की संवेदना समझ नहीं सकता है। ऐसे व्यक्ति क्रूर ही कहलाते हैं और यदि लेखन भी कर लें तो, केवल अपने अंदर से ही गढ़ता और सजाता है। ऐसा लेखन दिल को नहीं छू पाता है। लेकिन जो व्यक्ति दूसरों की संवेदना को जान ले, महसूस कर लेते हैं, उनके भाव शब्दों में पिरोए जाते हैं और वे धीरे-धीरे अपने अनुभवों एवं संवेदनाओं से जुड़े साहित्य का निर्माण करते हैं। साहित्यकार अपनी संवेदना एवं अनुभवों से ही आगे बढ़ते हैं। इसी से ही इनके लेखन में सच्चाई एवं समाज का दर्पण

सामने आता है। इन्हीं अनुभवों पर विश्वास रखने वालों में से एक हैं मृदुला सिन्हा। स्वयं इन्होंने अपनी संवेदनाओं से जुड़े कथानकों को लेखनी का रूप दिया है। मृदुला सिन्हा जी ने स्वयं अपने कहानी संग्रह 'अपना जीवन' की भूमिका में स्वीकार किया है कि "अधिकांश कथाकारों, समीक्षकों और साहित्य प्रेमियों ने कहानीकार का संवेदनशील होना कहानी लेखन की सफलता की विशेषता माना है।"[1] तभी तो इनके लेखों के पात्र हों या कथानक सजीव जान पड़ते हैं, अपने लगते हैं। दिल में गहरी छाप छोड़ते हैं।

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन

प्रतिभावान मृदुला सिन्हा का जन्म 27 नवंबर, 1942 ई. को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के छपरा गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम छबीला सिंह था, जो पेशे से एक आदर्श शिक्षक थे। सरल मन के सहज व्यक्ति थे। इनकी माता का नाम अनूपा देवी था, जिनका जीवन अपनी घर-गृहस्थी और पति की सेवा में समर्पित था। मृदुलाजी के व्यक्तित्व पर इनके माता-पिता के सरल-सहज व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। इन्होंने अपनी माँ, पास-पड़ोसियों से गाँव के लोकगीत एवं लोक कथाएँ सुनीं, जो आगे चलकर इनकी जुबान में रच-बस गईं और फिर लेखन में विविध विधाओं के माध्यम से प्रकट हुईं।

गाँव से ही मृदुलाजी की जीवन की शुरुआत हुई। इनका बचपन गाँव के गली-मोहल्लों, खेत-खलिहानों की छाया में गुजरा है। इनके मन को भावुक और संवेदनशील होने में इन्हें घर-परिवार से मिले स्नेह-संस्कारों को श्रेय जाता है और पठनशील स्वभाव के पिता का शिक्षा के प्रति प्रेम का प्रभाव इनके व्यक्तित्व पर पड़ा जिसके फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में मृदुलाजी ने बहुत कामयाबी हासिल की है। गाँव की मधुर स्मृतियाँ इनके मानस में हैं। ग्रामीण जीवन का रस इन्होंने अपने बचपन में बखूबी चखा है। बचपन में मिले संस्कारों के

तहत इनका जीवन संस्कारमय रहा और इनका शिक्षिका एवं लेखिका रूप उभर कर सामने आया है। डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा के शब्दों में, "गाँव की पगडंडी से इन्होंने अपना जीवन प्रारंभ किया। गाँव के गली मोहल्लों, खेत-खलिहानों की छाँव में बचपन गुजरा। एक और घर-परिवार के स्नेह-संस्कारों ने इनके मन को भावुक और संवेदनशील बनाया तो पिता की शिक्षा के प्रति जागरूकता ने पठनशील। अपने घर और गाँव के संस्कारों ने इनके लिए जहाँ संस्कारवान उर्वरक भूमि तैयार की, वहीं बचपन में मिली शिक्षा ने इन्हें एक शिक्षिका और लेखिका के रूप में गढ़ा।"[2] शिक्षा के कारण मानव जीवन को विकास की गति प्राप्त होती है।

पिता शिक्षा के प्रति जागरूक थे। शिक्षा के महत्व को जानते एवं पहचानते थे। तभी तो समाज में संदेश या मिसाल देते हुए बालिकावस्था में मृदुला जी को अपने साइकिल के कॅरियर पर बैठाकर स्कूल ले जाया करते थे। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा बालिका विद्यापीठ, लखीसराय, बिहार से छात्रावासीय परिवेश में आरंभ की। इस विद्यालय की स्थापना बालिकाओं में भारतीय संस्कृति के संस्कार बीज पल्लवित-पोषित करने को लेकर हुई। साथ ही इन्होंने विद्यालयी जीवन में ही स्काउट ऐंड गाइड का प्रशिक्षण भी लिया। सन् 1958 में मैट्रिक की परीक्षा पास करके महंत दर्शनदास महिला कॉलेज में दाखिला लिया। यहाँ भी छात्रावास में रहीं। लेकिन जून 1959 में विवाह होने पर शहर में किराए पर घर लेकर रहने लगीं। फिर महाविद्यालीय शिक्षा लंगटसिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर से बी.ए. ऑनर्स (मनोविज्ञान) में अच्छे अंकों से पास कर एम.ए.(मनोविज्ञान) की परीक्षा बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से उत्तीर्ण की और यहीं से बी.एड. की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर शिक्षिका बनने का रास्ता खोला। इनकी पढ़ाई का यह स्तर उनके समय को ध्यान में रखते हुए, अपने आप में एक मिसाल है। फिर इन्होंने डॉ.श्री कृष्णसिंह महिला महाविद्यालय, मोतीहारी में कई वर्ष अध्यापन किया। तत्पश्चात नानाजी देशमुख की प्रेरणा

से एक आदर्श विद्यालय की संस्थापक-प्राचार्या के नाते आठ वर्षों तक कार्यरत रहीं। इन्होंने एक प्राध्यापक से लेकर संस्थापक प्राचार्या तक का अकादमिक और प्रशासनिक कार्यभार संभाला। मृदुला जी ने अपने स्व अनुभव और जीवन के प्रत्येक किरदारों के जीवन के अनुभव अपने अंदर बटोरती रहीं हैं। यही इनके साहित्य-सृजन की सामग्री और आधार बनी।

निजी जीवन

मृदुला जी का विवाह सन् 1959 में अंग्रेजी भाषा के विद्वान एवं विश्वविद्यालय व्याख्याता डॉ. रामकृपाल सिन्हा से हुआ। इनके दो बेटे - नवीन सिन्हा, प्रवीण सिन्हा और एक बेटी - मीनाक्षी सिन्हा हैं। साथ ही दो पोतियाँ, दो पोते और एक नातिन भी हैं। शिक्षा के प्रति जागरूक पिता की संतान मृदुलाजी ने भी अपने बच्चों को शिक्षित किया और संस्कारी भी बनाया। इनका छोटा बेटा डॉ. प्रवीण सिन्हा और बेटी डॉ. मीनाक्षी सिन्हा अपने-अपने परिवार समेत विदेश में रहते हैं और सबसे बड़ा बेटा श्री नवीन सिन्हा नई दिल्ली में अपने परिवार के साथ रहते हैं और भाजपा कार्यालय में कार्यरत हैं। मृदुलाजी की बड़ी बहू श्रीमती संगीता सिन्हा 'पाँचवाँ स्तंभ' पत्रिका की संपादक हैं। इस मासिक पत्रिका की स्थापना मृदुलाजी ने ही की थी। यह नई दिल्ली से प्रकाशित होती है। इनकी दूसरी बहू कल्पना सिन्हा शिक्षिका हैं। इनके दामाद डॉ. रणवीर चंद्रा, माइक्रोसोफ्ट में कार्यरत हैं। बेटी मीनाक्षी के पास भी पी.एच.डी. डिग्री, कोरनेल विश्वविद्यालय, अमेरिका से है। मीनाक्षी पेंटिंग की शौकीन हैं साथ ही ब्लॉग भी लिखती हैं। दूसरों की मदद करने के लिए अपने पेंटिंग की बिक्री भी करती हैं। इस तरह मृदुलाजी की संतति अपने-अपने कार्य क्षेत्र में अपने माता-पिता के नक्शे कदम पर चलकर सक्रिय एवं उच्च पदों पर है।

मृदुलाजी के पति एक स्वतंत्रता सेनानी के पुत्र हैं। इनके पति की प्रबल इच्छा रही राजनीति में प्रवेश करने की। इनकी इच्छा पूर्ति 1964 में जनसंघ पार्टी के ज़िला अध्यक्ष

बनने से हुई। मृदुलाजी अपने राज्य बिहार में 1977 तक रहीं। इसके बाद अपने पति डॉ. सिन्हा के साथ दिल्ली में रहने लगीं क्योंकि डॉ. सिन्हा राजनीति में सक्रिय होते गए। राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री और केंद्र सरकार में राज्यमंत्री बनाए गए। साथ ही भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय के प्रभारी भी बने थे। राजधानी दिल्ली में रहने का शुभ लाभ उठाते हुए मृदुलाजी ने एक संस्था की स्थापना की जिसका नाम है - 'साथी' (सोशल एक्शन थ्रू इंट्रीग्रेटेड नेटवर्क)। इसी के अधीन 'पाँचवाँ स्तंभ' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। अपने निजी जीवन में विभिन्न कर्तव्यों एवं दायित्वों को निभाते हुए इन्होंने अपनी साहित्यिक सृजन को भी निरंतर आगे बढ़ाया है।

सामाजिक जीवन

अपनी शिक्षा एवं ज्ञान के प्रकाश से मृदुलाजी ने समाज में विविध प्रकार से योगदान दिया है। मृदुलाजी सन् 1964 में अपने प्रिय विषय मनोविज्ञान की प्राध्यापिका बिहार के मोतिहारी जिले के डॉ. एस. के. सिन्हा महिला कॉलेज में बनीं। इस महाविद्यालय में 1968 तक सेवारत रहीं। इसके बाद इनका मन बाल विद्यालय की ओर प्रवाहमय हुआ। मनोविज्ञान विषय की ज्ञाता मृदुलाजी ने बच्चों के लिए 'भारतीय शिशु मंदिर' नामक एक विद्यालय की स्थापना मुजफ्फरपुर में की। इस विद्यालय के सुचारु रूप से संचालन के लिए इन्होंने लगातार नौ वर्षों तक यथा 1968 से 1977 तक एक संस्थापक और प्राचार्य की भूमिका को बखूबी निभाया है।

संवेदनशीलता से युक्त मृदुलाजी सामाजिक गतिविधियों में क्रियाशील रही हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ इनका नाता बना हुआ है, समाज के पिछड़े एवं निम्न वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिश और साहस इनके कार्यों में साफ दिखाई देता है। इस वर्ग के लिए इन्होंने विभिन्न मंचों से अपनी आवाज बुलंद की है। साथ ही इन्होंने स्त्री, परिवार,

समाज और राष्ट्र से जुड़े मुद्दों के लिए भी अपनी आवाज लेखनी के माध्यम से उठाई हैं। मृदुलाजी की चाह है कि स्त्री को विशेष अधिकार और समानता प्राप्त हों। तभी तो, यह जीवन के विभिन्न पहलुओं में स्त्री-पुरुष की व्यावहारिक समानता की उम्मीद एवं चाह रखती हैं। इनकी दृष्टि औरों से अलग एवं विशेष है क्योंकि ये स्त्रियों को विशेष मानती हैं। स्त्रियों को लेकर इनके स्पष्ट विचार झलकते हैं। इन्होंने स्त्री-पुरुष को एक दूसरे के खिलाफ नहीं होने दिया; बल्कि इन्हें एक दूसरे के पूरक के रूप में दर्शाया हैं। इनका मानना है कि नारी की समस्या समाज की समस्या है और इन समस्याओं का निदान भी भारतीय परंपरा के विचारानुसार खोजती हैं। इसमें इनकी विशिष्टता विशेष रूप में प्रस्तुत होती है, जिसके कारण नारी की महत्ता बढ़ जाती है। इन्होंने समाज के प्रत्येक नारी पात्र को उजागर किया और नारी स्थिति को सम्पूर्ण समाज के सामने प्रस्तुत किया हैं।

समाज की समस्याओं से रूबरू होते हुए मृदुलाजी ने इन्हें बेहद करीब से महसूस किया है। इनका जीवन ही अनुभवों से भरा हुआ है। इसीलिए इनमें आधुनिकता भी प्रखर होती है, जो युवा वर्ग के समस्याओं से भी वाकिफ हैं और इनके निदान का मार्ग भी प्रस्तुत करती हैं। डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा के शब्दों में, “मृदुला सिन्हा के लेखन के पीछे भारतीय समाज ही प्रमुख रूप से रहा। इन्होंने भारतीय समाज की बदलती हुई परिस्थितियों को अपने रचनात्मक लेखन के जरिये उभारा। जिसमें आम आदमी, विशेष रूप से महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया और इन समस्याओं का समाधान भी अपनी ही शैली में भारतीय विचार परंपरा में खोजा-प्रस्तुत किया।”[3] मृदुलाजी एक संवेदनशील रचनाकर हैं, जो यथार्थ का चित्रण करती हैं और समाज को जागृत करती हैं।

साहित्यिक सृजन का स्रोत:

मृदुलाजी के साहित्यिक जीवन का सृजन तो उनके छात्रावासीय जीवन से ही आरंभ हो चुका था, पर मूर्त रूप में हिन्दी की साहित्यिक दुनिया में प्रवेश इनकी पहली कहानी 'भ्रम की व्यथा' से हुआ, जो इन्होंने शादी के बाद लिखी थी। उन्हीं की जुबानी अगस्त 2015 में डी.डी. न्यूज़ पर उनके 'तेजस्विनी' इंटरव्यू में उनके साहित्य सृजन के पीछे का प्रेरणास्त्रोत पूछा गया था। उनका जवाब था, "मेरे पिताजी ने मुझे स्कूल का मुँह दिखाया और अपने पति के सहयोग-समर्थन और प्रेरणा से ही मैं यहाँ तक पहुँची हूँ।"[4] इनके कथन से साफ स्पष्ट होता है कि पढ़ाई-लिखाई के लिए ये अपने पिता और लिखने की शुरुआत करने के लिए अपने पति डॉ. रामकृपाल सिन्हा को श्रेय देती हैं।

साहित्य का सृजन समाज से अछूता नहीं होता है। इसलिए समाज के इतिहास से रूबरू होना बहुत जरूरी होता है। इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।"[5] इससे यह स्पष्ट है कि समाज में घटित घटनाओं से ही साहित्य का सृजन होता है और यही इसका इतिहास भी बनता चला जाता है। अत: साहित्य समाज को दिशा निर्दिष्ट करता है। मृदुला सिन्हा ने भी अपने विद्यार्थी जीवन से ही अपने लेखों के लिए साक्ष्य जाने-अनजाने बटोरना शुरू कर दिया था, जो आगे चलकर इनके सृजनात्मक लेखन को विकसित

करते गए और इनसे इन्होंने लघुकथाएँ, कहानियाँ, उपन्यास एवं निबंधों का सफलतापूर्वक सृजन किया।

मृदुला सिन्हा ने भारतीय समाज को ही अधिकतर आधार बनाकर लेखन किया है। इन्होंने भारतीय समाज में पनप रही विभिन्न परिस्थितियों को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर किया। इनके लेखों में भारतीय जनता के आम जीवन की सच्चाई एवं समस्याओं का दर्पण साफ झलकता है। साथ ही इन्होंने महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को अपनी लेखनी में उतारा और इन समस्याओं का समाधान भी भारतीय परंपरा के अनुसार प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपनी जीवन और लेखन में भारतीयता को सर्वोपरि रखा है।

जीवन मूल्यों की कदर करने वाली मृदुला सिन्हा ने सदैव प्रत्येक व्यक्ति के कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन एवं संयम पर विशेष बल दिया है। समाज में आस्थावादी विचार की पक्षधर रही हैं। समाज में सक्रिय रहकर सामाजिक जीवन को सही दिशा प्रदान कराने के लिए अपने लेखों के जरिए निरंतर प्रेरित एवं कोशिश करती रही हैं।

स्वभावगत खासियत

व्यक्ति की पहचान उसके स्वभाव से भी होती है। इस स्वभाव पर परिवार, संगति तथा वातावरण का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यह स्वाभाविक रूप से बनता सँवरता रहता है। इन्हीं रूपों से मृदुलाजी का स्वभाव निर्मित हुआ है। अपने नाम की तरह ही इनके स्वभाव में मृदुलता समाई हुई है। इनमें मानवीय समझ की शक्ति प्रचुर मात्रा में है, जिसके कारण किसी के दुःख-दर्द को या किसी की जरूरत को या उनकी स्थिति को जल्द-ही जान जाती हैं। इनकी मानवीय पहचान उच्च स्तर की है। इन्हें झूठा व्यवहार निभाना आता ही नहीं है। समाज एवं व्यक्ति की भलाई के लिए सदैव तत्परता से कदम उठाने और नए विचार

के स्वर समाज के सामने लाती रहती हैं। मृदुला जी आशा और धनात्मक भाव से हमेशा पूर्ण रहती हैं।

मृदुलाजी ने अपने जीवन में प्रत्येक व्यक्तित्त्व का सम्मान किया है, चाहे वह आम आदमी हो या विद्यार्थी हो या बड़े व्यक्तित्व। इनके स्वभाव में सच्चाई भरी हुई है। सच्चाई से काम करके उम्मीदों पर खरे उतरना इनकी स्वाभाविक गुण एवं पहचान है, जो इन्हें अन्य रचनाकारों और वोट के नाम पर राजनीति करने वाले व्यक्तित्वों से बिल्कुल अलग करती है। सरलता एवं रचनाधर्मिता में इनकी छवि एवं पहचान बसी हुई है। आशावादी, क्रियाशीलता, प्रशासनिक कुशलता, नवाचारधर्मिता, सहयोगी भाव आदि इनके विशेष गुण हैं।

स्त्री दृष्टिकोण

मृदुला सिन्हा की नारी दृष्टि विशिष्ट है। यह दृष्टि परंपरागत पुरानी भारतीय सोच के बिल्कुल विपरीत है, जिसमें स्त्रियों को केवल घर के चार-दीवारों के अंदर रहने की सोचकर रखा जाता था। मृदुलाजी स्त्री-पुरुष की समानता पर ज़ोर देती है लेकिन यह समानता पुरुषों से कदम-कदम पर टक्कर देने या जीत की मौहर दिखलाने के पक्ष पर नहीं जताती है; बल्कि स्त्री-पुरुष की परस्पर पूरकता को उजागर करती है। उनका मानना है कि स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूरक होते हैं। उनकी समानता की विचारधारा स्त्री-पुरुष की पूरकता पर आधारित है। स्त्री पक्ष की ओर इनका झुकाव साफ झलकता है। जब पुरुष की तुलना में स्त्री को विशेष सम्मान एवं विकास के लिए अवसर दिलाने पर ज़ोर देती है। बेटियों के सम्मान स्तर को उठाने के लिए भी इन्होंने अपनी लेखनी को माध्यम बनाया है। इनकी दृष्टि में स्त्री कमजोर नहीं होती है। न ही वह केवल कोमलता को दर्शाने वाली स्त्री है; बल्कि उनके अनुसार स्त्रियाँ कोमल होने के साथ ही लोहे को भी पिघला सकने वाली कठोर स्त्री भी है।

इन्होंने सदैव समाज में स्त्रियों के हित का समर्थन किया है, लेकिन साथ ही स्त्री को उसकी सही पहचान कराने के लिए भी अपनी आवाज बुलन्द की। उनका मानना है कि भले ही स्त्री ने पुरुषों की तरह आसमान को छू लिया हो फिर भी उसे अपने स्त्रीत्व को कायम रखना होगा। स्त्रीत्व की पहचान उसके ममत्व में निहित है और यही गुण उसे पुरुषों से अलग एवं श्रेष्ठ बनाता है। मृदुलाजी स्त्रियों को अपने अधिकारों की माँग करने के लिए उकसाती नहीं है; बल्कि अपने कर्तव्य निष्ठा के माध्यम से अधिकारों को प्राप्त करने की राह चुनने के लिए प्रेरित करती हैं। इन्होंने स्त्रियों को बाँधा नहीं; बल्कि इन्हें उड़ने के लिए स्वछंद किया और अपने ममत्व को सदैव कायम रखने की सीख भी दी है। कहते हैं परिवार जीवन की सबसे पहली पाठशाला होती है और भारतीय संस्कृति में परिवार का बहुत बड़ा महत्त्व होता है, इसलिए इस संस्कृति में सभी का साथ होता है। सभी को साथ लेकर चलना संस्कृति को आगे बढ़ाने जैसा है। प्राचीन काल की तुलना में आज की स्त्री घर की दहलीज को पार कर विकास की बुलन्दियों को छूती जा रही है इस पर मृदुलाजी का संदेश है उन तमाम आधुनिक लड़कियों के लिए कि भले ही तुम्हें भोजन बनाने का मौका नहीं मिल पाया हो, पर अपने परिजनों को परोसना नहीं भूलना है। परिवार की एकता को बुलन्द करने की उनकी स्वरचित कथन है – 'जब साथ चलती हैं तीन पीढ़ियाँ, तब परिवार चढ़ता है विकास की सीढ़ियाँ'।

मृदुलाजी आधुनिकता के साथ-साथ भारतीय परंपरा को भी कायम रखती हैं। आधुनिकता के चलते अपने में केवल आधुनिक होना ही नहीं है; बल्कि आधुनिकता को अपनाते हुए अपनी परंपरा को भी कायम रखना आवश्यक होता है। मृदुलाजी अपनी भारतीय परंपरा की सोच को साथ लेकर और आधुनिकता के कारण आए परिवर्तनों को साथ लेकर चलने वालों में से हैं।

मृदुलाजी ने स्त्री समस्या को पूर्ण समाज की समस्या का रूप माना है। इस समस्या को गंभीर रूप से लेने के लिए भी कहती हैं। स्त्री समस्या के समाधान से ही समाज का उत्थान हो सकता है। स्त्री हित से ही सभी का हित संभव है।

राजनीतिक यात्रा

मृदुला सिन्हा के राजनीति में प्रवेश करने का माध्यम इनके पति डॉ. रामकृपाल सिन्हा हैं। इनके पति डॉ. रामकृपाल सिन्हा ने 1977 में श्रम एवं संसदीय कार्य के राज्यमंत्री के रूप में कार्य करना शुरू किया। ये जनता पार्टी के समर्थक है। उस समय जनता पार्टी का नेतृत्त्व मोरारजी भाई देसाई ने किया था। इसी वर्ष से मृदुलाजी भी अपने पति के साथ दिल्ली आकर बस गईं और दिल्ली वालों की दृष्टि से ग्रामवासियों को देखने का अलग अनुभव उन्हें प्राप्त हुआ। गाँव की प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा एवं आनंद का स्पर्श इन्हें दिल्ली शहर आकार ही मूल रूप से ज्ञात और अनुभव हुआ। इसी कारण शहरों की भीड़-भाड़, शहरीकरण एवं मशीनीकरण की होड़ की भाग-दौड़ में तथा खोखले माहौल में गाँव की प्राकृतिक छटा और सीधी-साधी जीवन-शैली की सार्थकता खोजने में इनका झुकाव बढ़ता गया। सन् 1977 में मृदुलाजी को बिहार, (मुजफ्फरपुर) के संसदीय क्षेत्र की चुनाव संयोजिका के रूप में नियुक्त किया गया।

पति के समर्थन व सत्संग में रहकर मृदुलाजी का झुकाव राजनीति की ओर अग्रसर होता गया। जब भारतीय जनता पार्टी की स्थापना सन् 1980 में हुई। तभी से इस पार्टी की स्थापना के शुरुआती दौर से ही पूर्ण रूप से शामिल होकर जनसंपर्क के लिए श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के चुनाव संयोजिका बनकर सामने आईं। तभी से पार्टी को समृद्ध करने में जुट गईं। अपने कार्य को सफल रूप देने के लिए इन्होंने श्रीमती विजयराजे सिंधिया के साथ मिलकर महिला मोर्चा की सह संयोजिका बनकर महिलाओं को अपने पार्टी भारतीय जनता पार्टी से जोड़ने के लिए जुट गईं। इन्होंने ग्रामीण महिलओं को पार्टी से जोड़ने की पूर्ण

कोशिश की और काफी हद तक सफल भी हुईं। अपने कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा के फलस्वरूप इन्हें सन् 1981 को सदस्याता मिली भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी में । महिला मोर्चा में महामंत्री का पद भी 1982 से लेकर 1984 तक सुशोभित किया । इसके बाद महिला मोर्चा में ही 1984 से लेकर 1989 तक अध्यक्ष पद के कार्य को बखूबी निभाया। इसके बाद फिर से महिला मोर्चा की महामंत्री 1989 से 1992 तक रही। महिला मोर्चा की महामंत्री पद के बाद दुबारा अध्यक्ष बनी 1992 से 1995 तक। इसके बाद मृदुलाजी को भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद 1996 में सौंपी गई। इसके बाद 1998 से 2004 तक भारत सरकार के केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष बनी। फिर केंद्रीय संयोजिका बनी स्वयंसेवी संगठन प्रकोष्ठ में 2004 से 2005 तक। संयोजिका के बाद महिला मोर्चा की प्रभारी 2005 से 2006 तक बनी । इन्हें 2006 में सचिव पद पर राष्ट्रीय अनुशासन समिति ने रखा। इसके बाद निरंतर भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में अपनी भूमिका को कायम रखा।

भाजपा पार्टी ने 2014 की आम चुनाव में भारी बहुमत से केंद्र में जीत हासिल की। इस जीत का हिस्सा मृदुलाजी भी बनीं। इन्हें इसी वर्ष यानि अगस्त 2014 में गोवा राज्य के राज्यपाल जैसे संवैधानिक पद पर नियुक्त किया गया। इस संवैधानिक पद को इन्होंने पूरी ईमानदारी एवं प्रतिष्ठा से निभाया। यह एक सम्मानित पद है और इसकी उच्चता को कायम रखते हुए इन्होंने इसकी मर्यादा के दायरे के भीतर रहकर ही अपनी कार्यशीलता को प्रदर्शित किया। इन्होंने अगस्त 2014 से अक्टूबर 2019 लगातार पाँच वर्षों तक गोवा राज्यपाल का कार्यभार बखूबी संभाला। इन्होंने अपने राजकीय कार्यभार को पूर्ण निष्ठा के साथ निभाते हुए अपने रचना संसार को भी निरंतर विस्तृत किया। विभिन्न सरकारी गतिविधियों में क्रियाशील रहते हुए इन्होंने सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय भागीदारी निभाई। साहित्य के प्रति अपने लगाव को इन्होंने बरकरार रखा। अपनी साहित्यिक रचनाओं के जरिए इनका संबंध साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ता ही गया। इनकी भूमिकाएँ कुछ इस प्रकार हैं -

1. उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, नयी दिल्ली

2. कार्यकारिणी सदस्य, हिन्दी अकादमी, दिल्ली

3. सलाहकार समिति की सदस्य, 'ओजस्विनी' पत्रिका

4. न्यासी सदस्य, 'धर्मयात्रा महासंघ' एक धार्मिक-सामाजिक संस्था

5. वरिष्ठ सदस्य, दिल्ली महिला आयोग

इनकी भूमिकाओं एवं योगदानों से यह स्पष्ट झलकता है कि इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन औरों के लिए समर्पित किया है। श्रीधर पराड़कर के शब्दों में, "मृदुला सिन्हा साहित्य और राजनीतिक संतुलन का एक बड़ा नाम है। यह संयोग कदाचित् ही देखने को मिलता है, क्योंकि साहित्य और राजनीति एक-दूसरे के ठीक विपरीत दिशाएँ हैं।"[6] राजनीतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक क्षेत्रों में इनका योगदान सराहनीय है। इन्होंने समाज को बेहतर बनाने और नारी के स्थान को ऊँचा उठाने का प्रयास सदैव किया है।

मृदुला सिन्हा की छाप

मृदुला सिन्हा प्रतिभा से परिपूर्ण हैं। इन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को सर्वोपरि रखा और शिक्षा के क्षेत्र में स्वयं सक्रिय रहकर अध्ययन-अध्यापन में जुट गईं। लेकिन इन्होंने अपने व्यक्तित्व को अध्यापन तक ही सीमित नहीं रखा; बल्कि अपने व्यक्तित्व की छाप को विस्तृत करते हुए आज के प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए इन्होंने मीडिया में सक्रिय रूप से भागीदारी निभाई। बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए भी अनेक उपदेशात्मक बाल-रचनाएँ भी की हैं। बच्चों के प्रति प्रेम और लगाव को आंका जा सकता है। विचारपूर्ण रचनाओं का सृजन किया और इनका प्रचार-प्रसार भी किया। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भी पूर्ण रूप से हिस्सा लिया।

बच्चों के प्रति कार्य

मृदुला सिन्हा ने बच्चों के लिए भी अनेक लेख लिखे हैं। बच्चों के लिए लिखे गए इनके लेखों में भारतीय लोक जीवन की परंपरा को दर्शाया गया है क्योंकि बचपन से ही नींव डालना अति आवश्यक है। इन्होंने पौराणिक कथाओं एवं लोक जीवन के माध्यम से बच्चों को प्रेरित एवं संस्कारमय बनने के लिए संदेश दिया। बच्चों के लिए इनके लिखे गए लेख -'पुराण के बच्चे' तथा 'बिहार की लोककथाएँ' हैं। इन्होंने बच्चों के लिए 'दादी माँ की पोती' नामक एक धारावाहिक दो वर्षों तक 'बाल भारती' के लिए भी लिखा।

मीडिया में योगदान

वैज्ञानिक युग में मीडिया एक सशक्त साधन है, जिसके जरिए विचारों का प्रचार-प्रसार किया जाता है। इस उपागम का भरपूर उपयोग मृदुला सिन्हा ने भी किया है। रेडियो, दूरदर्शन और स्थानीय क्षेत्र के टेलीविजन चैनलों पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक मुद्दों और स्त्रियों एवं बच्चों से संबंधित विषयों पर आयोजित विचार-विमर्श कार्यकर्मों में नियमित रूप से हिस्सा लेती रही हैं। इन्होंने टेलीविजन कार्यक्रमों के लिए विभिन्न पक्षों के लेख भी लिखे हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख, निबंध तथा साक्षात्कार समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। टेलीविजन के डी.डी.न्यूज चैनल पर अगस्त 2015 में इनका इंटरव्यू 'तेजस्विनी' नाम से प्रसारित हुआ, इसमें इन्होंने साहित्य, समाज और राजनीति पर अपने विचार व्यक्त किए। इन्होंने फेसबुक पेज पर भी अपने वक्तव्य को विस्तृत किया है।

फिल्म और धारावाहिक में योगदान

मृदुला सिन्हा के लेखों का प्रसारण फिल्म एवं धारावाहिक के रूप में भी किया गया है। वृद्धों की समस्याओं पर आधारित इनकी एक कहानी पर फीचर फिल्म ‘दत्तक’ का निर्माण ‘राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम’ ने किया है। इन्होंने गीत एवं आलेख केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड के दो भाव्य रूपकों ‘चेतना’ तथा ‘पहचान’ के लिए भी लिखे हैं। इन्होंने ‘खेल-खेल में’ की गीतमय पटकथा तीन पीढ़ियों के छत के नीचे रहने का संदेश देने वाली बोर्ड की टेली फिल्म के लिए भी लिखी। मृदुलाजी तीन पीढ़ियों के साथ-साथ रहने की पूर्ण समर्थक हैं, जिसके चलते इन्होंने अपनी आवाज बुलंद की इस प्रसिद्ध नारा से ‘संग चलें जब तीन पीढ़ियाँ, चढ़ें विकास की सभी सीढ़ियाँ।’

इनकी कहानियों के अलावा उपन्यासों पर भी अभिनय किया गया है। इनका दिल को छू लेने वाली प्रसिद्ध उपन्यास ‘ज्यों मेहँदी को रंग’ पर धारावाहिक बनाया गया है। उपन्यास के नाम से ही बनाया गया है और इस धारावाहिक को अनेक बार प्रसारित किया गया है और इसी उपन्यास को मुंबई के एक निर्देशक ने अपनी फिल्म की पटकथा के लिए भी चुना है। इसके अलावा इनकी रचना राजमाता विजया राजे की आत्मकथा ‘राजपथ से लोकपथ पर’ पर आधारित हिंदी फीचर फिल्म ‘एक थी रानी ऐसी भी’ का निर्माण किया गया है। इनके गीत भी कुछ कम नहीं है। सितंबर 2015 में भोपाल में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान इनके एक गीत ‘हिंदी भारत माँ के माथे की बिंदी’ को राजभाषा आयोग द्वारा अपना गीत बनाया गया है। इनके गीतों को भी विशेष एवं ऊँचा स्थान प्राप्त है।

केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष के रूप में योगदान

मृदुला सिन्हा समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष 1998 से 2004 तक रहीं। इन्होंने अपनी अध्यक्षता के दौरान युवक-युवतियों के लिए शादी से पहले परामर्श की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए सामाजिक संस्थाओं द्वारा ऐसे परामर्श केंद्र खोले जाने की सिफारिश भी की। बुजुर्गों के लिए इनके विचार चिंतन स्पष्ट दिखाई देते हैं, तभी तो, इन्होंने बुजुर्गों के लिए खुल रहे वृद्धाश्रम पर चिंता जताई है और इसे रंगीन बनाने की पूर्ण कोशिश भी की है। अपने अंदाज में। इन्होंने वृद्धाश्रम के साथ पालनाघर खोलने की सलाह प्रेषित की है। इनकी यह सलाह शायद आगे चलकर समाज में वृद्धाश्रम के बनने एवं खुलने की संख्या को कम करने में सफल हो और पालनाघर को उसके साथ जोड़ने में एक नई उम्मीद एवं एक नवीन सोच है। इनकी इस सोच से तीन पीढ़ियों के साथ-साथ चलने की राह साफ झलकती है। उनका एक ढ़ृढ़ मत है कि वृद्धों की आवश्यकता बच्चे होते हैं और बच्चों के लिए बुजुर्ग। मृदुला सिन्हा का ध्यान बालिकाओं की शिक्षा की ओर भी गंभीर है। इनकी गंभीरता गाँव और शहर के बीच बढ़ रही बालिका शिक्षा की दूरी से है। इस दूरी को कम करने के लिए इनका उपाय यह है कि दोनों वर्गों से बालिकाओं के सह-शिक्षण शिविर आयोजित किया जाए। इसके परिणामस्वरूप 109 शिविरों का आयोजन 2001 में किया गया।

मृदुला सिन्हा ने दांपत्य जीवन को विशेष रूप से महत्त्व दिया है। इस रिश्ते को निभाने और इसकी कदर करने पर जोर दिया है। इसलिए दांपत्य जीवन की वर्षगाँठों की अहमियत को उजागर करने पर बल दिया है। शादीशुदा जीवन में मधुरता व सरसता को कायम रखने के लिए पचास वर्षीय दांपत्य जीवन के वर्षगाँठ को गंभीरता से लेने और पूरे हर्ष एवं उल्लास से मनाने के लिए जोर दिया है। साथ ही बेटी के लिए भी इनके जेहन में विशेष सम्मान है, जिसके तहत इन्होंने बेटियों को भी बेटों के समान विशेष सम्मान प्रदान

करने के लिए आवाज उठाई है। उनका सुझाव है कि बेटी के जन्म पर 'बधावा' गाया जाए और गाँवों में बेटियों का सामूहिक रूप से जन्मोत्सव मनाया जाए। इन्होंने महिलाओं के सम्मान व विकास के लिए बहुत चिंतन मनन किया है। महिलाओं की विशेषता को जानते, पहचानते एवं समझते हुए इन्हें सम्मानित करने के लिए इनका प्रस्ताव है कि मानवी सम्मान भोज का आयोजन किया जाए, जिसमें ग्रामीण महिलाओं को सम्मान प्रदान करने के लिए सामूहिक भोज का आयोजन किया जाए। पौष्टिक आहारों का ज्ञान कराने पर भी ज़ोर दिया है क्योंकि स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना आवश्यक है, जिसके लिए महिलाओं को सूचित करना अति आवश्यक है।

वृद्धों के प्रति इनकी गहरी संवेदना जुड़ी हुई है। इन वृद्धों के खेरियत की इन्हें बहुत चिंता है। इनके सही देखभाल की पक्षाधर हैं। बढ़ती वृद्धाश्रम की संख्या के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए इन्होंने एक नई परंपरा संचित करने के लिए युवाओं को प्रेरित किया है। नई परंपरा से उनका तात्पर्य वृद्धों को गोद लेने की परंपरा से है। ऐसा करने से वृद्धों की सही देखभाल काफी हद तक संभव हो सकेगी। मृदुलाजी परिवार के सदस्यों के साथ-साथ रहने की समर्थक हैं। अपने माता-पिता के साथ एक साथ रहने पर जोर देती हैं। इसके लिए इन्होंने सरकार तक को भी डी.डी.ए. फ्लैट में कमरों की संख्या बढ़ाने की सहमति प्रदान करने के लिए भी अपनी इच्छा जहिर की है। इन्होंने समाज में अपने इन विचारों का प्रयोग भी किए और परिणाम भी अच्छे निकले। इन्होंने इन कार्यक्रमों को बार-बार दुहराने की आवश्यकता भी जताई। इनके प्रयासों से यह साफ पता चलता है कि जीवन की विभिन्न अवस्था में मानव कल्याण के लिए अपनी पूरी निष्ठा एवं समर्थ का प्रयोग किया है।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में सहभागिता

मृदुला सिन्हा ने कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। इस भारत जननी ने अपने विचारों को इन सम्मेलनों के माध्यम से विदेशों तक पहुँचाया है। इन्होंने

राष्ट्र एवं राष्ट्रीय पहचान को आवश्यक माना तथा समसामयिक मुद्दों पर अपने मन्तव्य एवं स्पष्ट दृष्टि को साझा किया और स्त्रियों के सबलीकरण पर बल दिया है।

इनके द्वारा भाग लिए गए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों का विवरण इस प्रकार है –

1. भारतीय प्रवासियों पर आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, मॉरीशस में 1993 में भाग लिया।
2. जर्मनी में एक पाँच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल की एक सक्रिय सदस्य के रूप में 1996 में सहभागिता की।
3. फिलीपींस में आयोजित ‘राजनीति में महिलाओं का सबलीकरण’ विश्व सम्मेलन में 1998 में भाग लिया।
4. लंदन में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत सरकार के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में मार्च 1999 में भाग लिया।
5. संपन्न संयुक्त राष्ट्र सामान्य सभा के विशेष सत्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में जून 2000 में भाग लिया, इसमें महिलाओं की लौंगिक समानता तथा 21वीं सदी के लिए विकास और शांति आदि विषयों पर चर्चा हुई।
6. सूरीनाम में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत सरकार के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में जून 2003 में भाग लिया।
7. मॉरीशस में आयोजित अंतरराष्ट्रीय रामायण सम्मेलन में एक वक्ता के तौर पर अगस्त 2015 में भाग लिया।
8. भोपाल, मध्य प्रदेश में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत सरकार के प्रतिनिधि के

रूप में बतौर राज्यपाल (गोवा) एवं प्रख्यात साहित्यकार के रूप में सितंबर 2015 में भाग लिया।

9. लंदन में आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम में सितंबर 2016 में भागीदारी।
10. दिल्ली लेखिका संघ और मॉरीशस के साहित्यकारों की संगम संगोष्ठी, मॉरीशस में 2017 में भाग लिया।

अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य स्थान

मृदुला सिन्हा जी ने सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए अपने लेखन कार्य का विस्तार किया है। कभी पत्र-पत्रिकाओं में संपादक के रूप में तो किसी में संरक्षक एवं परामर्शदात्री की भूमिका में अपने आप को ढालती रही हैं। इसके अलावा इन्होंने कई सामाजिक संस्थाओं और मंत्रालयों में अपनी सक्रिय सहभागिता निभाई और अपने जीवन के अंतिम दिनों तक भी सक्रिय रूप से निभाती रहीं। इनका यह कार्य मृत्युपर्यंत तक चलता रहा।

पत्र-पत्रिकाओं से नाता

1. 'पाँचवाँ स्तंभ', नई दिल्ली में संस्थापक संपादक के रूप में।
2. 'इस्पात भारती', जमशेदपुर, झारखंड राज्य में पूर्व संरक्षक की भूमिका में।
3. 'सरल जीवन', नई दिल्ली में पूर्व परामर्शदात्री के रूप में।
4. 'ओजस्विनी', भोपाल, मध्य प्रदेश राज्य में भी पूर्व परामर्शदात्री के रूप में।
5. 'समाज कल्याण', मासिक पत्रिका में छह वर्षों तक स्तंभ लेखन का कार्य किया।
6. 'राजस्थान पत्रिका', दैनिक समाचार-पत्र, जयपुर राजस्थान में भी 2006 से 2010 तक यानि चार वर्षों तक विषयांतर स्तंभ लेखन के लिए भी लेख लिखें।

सामाजिक संस्थाओं में सहभागिता

1. सूर्या संस्थान, नोएडा, उत्तर प्रदेश में पूर्व अध्यक्ष

2. अखिल भारतीय साहित्य परिषद, नई दिल्ली में उपाध्यक्ष

3. ऋचा, नई दिल्ली में पूर्व सदस्य

4. लेखिका संघ में पूर्व सदस्य

5. 'साथी' में पूर्व अध्यक्ष

मंत्रालयों या विभागों में सहभागिता

1. गोवा राज्य की राज्यपाल, भारत सरकार, अगस्त 2014 से अक्टूबर 2019 तक

2. पूर्व सदस्य – हिंदी सलाहकार समिति, रेल मंत्रालय, भारत सरकार (1998 से 2002 तक)

3. पूर्व सदस्य – हिंदी सलाहकार समिति, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

4. राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, भारत सरकार के अंतर्गत पूर्व उपाध्यक्ष (सन 1999 से 2002 तक)

5. राष्ट्रीय बाल कोष, भारत सरकार के अधीन में पूर्व सदस्य

6. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण परिषद की सलाहकार समिति में पूर्व सदस्य

पुरस्कार व सम्मान

मृदुला सिन्हा ने अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। हिन्दी में साहित्य सृजन के लिए उन्हें विभिन्न सम्मान व पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है –

1. 1998 में साहित्य रचना एवं हिन्दी सेवा के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ ने प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 'साहित्य भूषण सम्मान' से नवाजा।
2. 2001 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ ने दुबारा प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा भारतीय जीवन दर्शन एवं संस्कारों से अनुप्राणित साहित्य सर्जन के लिए 'दीनदयाल उपाध्याय सम्मान' से विभूषित किया।
3. उत्कृष्ट साहित्य सृजन के लिए 'कल्पतरु पुरस्कार' प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा दिया गया।
4. 2004 में वुमन अचीवर अवार्ड, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, नई दिल्ली से ग्रहण किया।
5. दिल्ली गौरव सम्मान
6. 2013 में इंदिरा गांधी प्रियदर्शिनी सम्मान
7. साहित्य सर्जन के लिए वर्ष 2013 में लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार
8. 2015 में बिहार गौरव सम्मान
9. डॉ. बी.आर. अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार से डी.लिट. की

उपाधि मिली।

10. एम.आई.टी. पुणे द्वारा सम्मान

11. आचार्य तुलसी द्वारा कृतित्व सम्मान

12. नई धारा पत्रिका, पटना द्वारा उदय राज सिंह स्मृति सम्मान

मृदुलाजी को इन पुरस्कारों एवं सम्मानों के जरिए सम्मानित तो किया गया है लेकिन इनके द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध किए जाने की तुलना में ये पुरस्कार-सम्मान कुछ नहीं। हिन्दी साहित्य के प्रति इनके समर्पण एवं योगदान को सदा याद रखा जाएगा। इनके व्यक्तित्व के संदर्भ में डॉ. विंदेश्वर पाठक का कहना हैं, "श्रीमती मृदुला सिन्हा वैशाली के साथ-साथ भारत की गौरव-गरिमा हैं। इनका व्यक्तित्व बहुआयामी और क्षैतिज है। व्यक्ति से समाज तक इनके चिंतन का विस्तार है। समाज, साहित्य और राजनीति के त्रिभुज में इनके व्यक्तित्व का संचरण-संचारण होता रहता है।"[7] मृदुला सिन्हा एक सम्पन्न व्यक्तित्व वाली साहित्यकार एवं राजनीतिज्ञ हैं।

1.2 मृदुला सिन्हा का कृतित्व

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में मृदुला सिन्हा का आगमन समकालीन हस्तक्षेप के साथ होता है। गद्य विधा का आरंभ आधुनिक काल से माना जाता है। इन्होंने अपनी कहानियों में समकालीन जीवन परिवेश की विभिन्न परिस्थितियों को व्यापक जीवन के अनुभवों के साथ प्रस्तुत किया है। गहरी संवेदनशीलता, अनुभव की सच्चाई, लोक व शास्त्रों में संचित मानवीय मूल्यों की खोज इनके लेखन की विशेषता है। इनका साहित्य ग्रामीण और शहरी जीवन की व्यथा-कथा, हर्ष और उल्लास का भंडार है। इन्होंने अपने कथा-साहित्य में प्राचीन-आधुनिक भारतीय स्वरूप से भारतीय स्त्री की स्थिति और स्वभावगत विशेषताओं

को प्रकाश में लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। अपनी लेखनी के माध्यम से मृदुलाजी ने समाज में पनप रही समस्याओं को स्पष्ट रूप से उजागर किया है, जिनमें दिव्यांगों की समस्या का संवेदनशील रूप 'ज्यों मेहँदी को रंग' में दर्शाया है और 'अतिशय' उपन्यास में भारत के उद्यम रूप को पूरे विश्व के सामने लाने की इच्छा को व्यक्त करते हुए भारत के स्वभाव को तत्कालीन संदर्भों में दिखाया है। यही नहीं, भारत के गाँवों के जीवन रूप, मजदूरों की हालत, स्थिति-परिस्थितियों की सच्चाईयों को 'घरवास' में दर्शाया है। इनकी लेखनी की एक विशिष्ट दृष्टि यह है कि इन्होंने भारतीय स्त्री के पौराणिक चरित्रों के आत्मकथात्मक उपन्यास लिखे हैं। मृदुलाजी की आत्माकथात्मक लेखनी की विशिष्टता यह है कि इन्होंने महिला लेखन में भारतीय स्त्री के आदर्श पात्रों जैसे सीता, सावित्री, मंदोदरी और अहल्या के मुँह से ही अपनी आत्मकथा कहलवायी है। यह एक अलग एवं ध्यान आकर्षित करने वाली बात है।

मृदुला सिन्हा ने अपनी लेखनी का विस्तार लोककथा, कहानी, उपन्यास, लघु कहानी, निबंध, ललित-निबंध एवं लेखों तक किया है। साथ ही संपादन के क्षेत्र में भी अपनी छाप छोड़ी है। इन्होंने राजमाता विजयाराजे सिंधिया की आत्मकथा का संपादन अच्छी तरह से किया है।

मृदुला सिन्हा के कृतित्व संसार को निम्नलिखित रूप में दर्शाया जा सकता है।

कहानी-संग्रह

कहानी मन से गढ़ी जाती है। यह एक सशक्त माध्यम है अपनी रचना एवं चिंतन को समाज के सामने उजागर करने के लिए। रचनाप्रेमी लोग अपने-अपने ढंग से अपने मन द्वारा गढ़ित रचनाओं को रूप प्रदान करते हैं। यह रूप गद्य या पद्य में अभिव्यक्त होता है। गद्य रूप में कहानी छोटी विधा और उपन्यास बड़ी विधा होती है। मृदुलाजी के मन का पलड़ा गद्य में

ज्यादा भारी रहा है, जिसके कारण इन्होंने कहानी और उपन्यास अधिक मात्रा में लिखे हैं। कहानी से ही इन्होंने अपनी लेखनी की शुरुआत की है, वह भी आत्मकथात्मक कहानियों से। उनकी पहली कहानी 'भ्रम की व्यथा' है, जो 'कादंबिनी' में 1978 में प्रकाशित हुई थी। यही से इनकी लेखनी चल पड़ी और लगातार सृजन के मार्ग पर आगे बढ़ती चली गई। इस निरंतरता के फलस्वरूप इनके सात कहानी-संग्रहों का सृजन हो गया है। इन कहानी-संग्रहों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. साक्षात्कार, 1978, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

मृदुला सिन्हा की यह पहली कहानी-संग्रह है, जिसमें कुल 21 कहानियाँ हैं। **'साक्षात्कार'** इस कहानी-संग्रह की पहली कहानी है, इसी से ही इस कहानी-संग्रह का नामकरण हुआ है। इस कहानी में बाढ़ पीड़ित भारतीय गाँवों की दयनीय स्थिति, भूख और गरीबी का साक्षात्कार होता है। इस कहानी में लेखिका और उनके पति के मनोभावों का भी आत्म-साक्षात्कार स्पष्ट दिखाई देता है, जिसमें गाँव के लोगों की गरीबी एवं दुर्दशा पर दोनों गहरा चिंतन करते हुए प्रतीत होते हैं।

'अनशन' कहानी में गौ हत्या का विरोध प्रकट किया गया है। इसमें गरीबी के कारण बेचू की बेटी अपने पिता के गैरहाजिरी में घर की गाय कसाई के पास बेच देती है। जब बेचू को पता चला तो उसने इसका विरोध किया। सम्पूर्ण कहानी ही बेचू के प्रायश्चित्त भरा अनशन है, जिसमें बेचू अपनी जान देकर इस गौ हत्या का विरोध करके अपना अनशन परिपूर्ण करता है।

'भ्रम की व्यथा' कहानी दो सहेलियों की कहानी है, जिसमें प्यार के भ्रम की दास्ताँ है। इसमें प्यार को लेकर भ्रम की मनोदशा को प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में राधा और उसकी सहेली सरिता के पति के बीच पनप रहे प्यार के भ्रम को दिखाया गया है। खासतौर से राधा के प्रेम अनुभव का वर्णन है।

'मान रिश्ते का' कहानी शीर्षक के अनुसार इसमें रिश्तों का मान रखा गया है। इस कहानी में एक बेटी द्वारा अपने माता-पिता का मान रखना और एक पिता द्वारा अपनी बेटी का मान रखने के बारे में है। जीवन में कभी न कभी ऐसी परिस्थिति आ जाती है, जब हमे अपने रिश्तों का मान रखना पड़ता है। सभी रिश्तों के अपने-अपने मान होते हैं, जिन्हें वक़्त आने पर निभाना पड़ता है। विमला में भी मनुष्य की प्रवृत्ति के अनुसार अपनी बहन वीणा की शादी में दिए गए दहेज की तुलना अपनी शादी में दिए गए दहेज से करती है। फिर भी अपने सामानों पर संतुष्ट होते हुए अपनी बहन और पिता का मान रखती है।

'उपदेश' कहानी अंतरजातीय विवाह पर आधारित कहानी है। दूसरों को उपदेश देना तो बहुत ही आसान होता है, इस पर व्यक्ति बड़ी-बड़ी बातें तक भी कर लेते हैं, पर जब अपने घर पर आती है तो झटके से पलट जाते हैं और अपने उपदेशों पर स्वयं पानी फेर देते हैं। बबुआ भी अंतरजातीय विवाह का समर्थन करने का उपदेश दूसरों को देता है, पर जब उसी की ही बहन एक चमार जाति के लड़के के साथ भाग जाती है तो स्वयं अपने उपदेश के विरुद्ध होकर अपनी बहिन के अंतरजातीय विवाह को स्वीकार नहीं कर पाता है।

'परिवर्तन' कहानी दो सहेलियों के जीवन में आए बदलाव के बारे में है, जिसमें दोनों सहेलियों के सपने बिल्कुल अलग हैं। एक की सहज प्रवृत्ति है तो दूसरी की पूर्ण बनावटी। **'उनकी सीख'** कहानी बेटी की कहानी है, जो मायके और ससुराल के सीख को प्रस्तुत करती

है। इसमें संस्कार एवं संस्कारहीन सीख का उल्लेख है। भारतीय परिवार में बेटी को ससुराल में ही रहने की सीख को दर्शाया गया है लेकिन बेटी के द्वारा ही घर-परिवार के संस्कार का उल्लंघन भी है, जिसमें सास की हत्या कर देने जैसी संगीन संस्कारहीनता भी विद्यमान है।

'आपबीती' कहानी दुख में भी सुख का अनुभव करने की कथा है, इसमें बच्चों का संघर्ष और माता-पिता की असहायता भी मौजूद है। **'भैयादूज'** कहानी बेटी या बहन की पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार की माँग से संबंधित कहानी है, लेकिन भाई-बहन के प्यार के सामने यह माँग फीका पड़ जाता है।

'आज का लक्ष्मण' कहानी देवर और भाभी से संबंधित कहानी है। इसमें दोनों के बीच स्नेह, सम्मान और प्यार के बारे में है, लेकिन आधुनिक देवरानी के आ जाने से देवर-भाभी के बीच दूरियाँ आ जाती है। **'जीवन बीमा की रकम'** कहानी में भारतीय माँओं के बचत की प्रवृत्ति एवं किफायती रूप को दर्शाया गया है।

'मानिनी' कहानी दांपत्य जीवन के प्यार की कहानी है। यह कहानी मूल रूप से प्रभा की मानिनी रूप पर केंद्रित है, जो दो रूपों को दर्शाता है - प्रभा का खुद मानने वाला रूप और खुद को मनाने वाला रूप।

'गँवई और शहरी रंग' कहानी शहर और गाँव दोनों ओर की कहानी है, इसमें दोनों तरफ की जलवायु, रहन-सहन के ढंग, आचार-विचार के अंतर को दर्शाया गया है। **'उधार के फूल'** कहानी में लेखिका स्वयं अपनी कथा कहती हुई लगती है। लेखिका किसी-न-किसी पात्र के रूप में 'मैं' के माध्यम से अपनी कहानी कहती हुई प्रतीत होती है।

'दोषी कौन' कहानी पत्र शैली में है। इस कहानी में कुल 3 पत्रों का समावेश है, जिसमें पति-पत्नी के बीच के प्यार को महसूस किया जा सकता है। इस कहानी में दांपत्य जीवन में एक दूसरे के प्रति दुबारा विश्वास जगाने के लिए संदेश दिया गया है।

'जैसे को तैसा' कहानी मूलतः लड़की की शादी करवाने के बारे में है। इसमें शादी तय करने से लेकर शादी ठीक करने तक के कथ्य का समावेश है। **'आशीर्वाद'** दहेज विरोध पर लिखी गयी कहानी है, इसमें दहेज के लालच में लड़के के माँ-बाप अपने सबसे बड़ी बहू को जलाकर मार देते हैं और अपने छोटे बेटे मनोज की शादी भी दहेज के लिए करना चाहते हैं पर मनोज ऐसा होने नहीं देता है।

'कातिल' कहानी शराब सेवन के दुष्ट परिणामों को उजागर करती है। इसमें शराब के नशे में होने के कारण महेंद्र अपने दोस्त की बहन का बलात्कार कर देता है और इसके कारण गुस्से में आकर जुम्मन महेंद्र की हत्या कर देता है। इन सब काण्डों की असली वजह शराब को ठहराया गया है। **'निष्कलंक'** कहानी चंपा के चरित्र की कहानी है। इस कहानी की मूल कथ्य नसबंदी की गड़बड़ी पर आधारित है। चंपा नसबंदी की गड़बड़ी से अंजान पर इसका शिकार बन जाती है, जिसके कारण उसके चरित्र पर सवाल उठने पर चंपा अपने चरित्र को निष्कलंक साबित करने के लिए अपने प्राण त्याग देती है।

'अप्रत्याशित' कहानी में घटनाओं की प्रधानता है। इस कहानी की मुख्य पात्र विमला है, जिसकी शादी रमणी से होती है, फिर बेटा होता है, फिर अपनी सास के पास रहती है, फिर सास को अपने पास शहर में रखती है, लेकिन अचानक अपनी सास को गाँव भेज देती है, वह भी अपने बच्चे के साथ, फिर अचानक बच्चे को अपने पास लेकर आ जाती है। अत: व्यक्तिगत भावों से युक्त कथा है।

'प्रायश्चित' कहानी मुख्य पात्र राकेश के प्रायश्चित की कहानी है। इसमें एक नौकर गोपी के प्रति राकेश प्रायश्चित करना चाहता है और करता भी है, लेकिन उसके प्रायश्चित को सही दिशा उसकी पत्नी की समझदारी से मिलती है।

2. एक दीये की दिवाली, 1996, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

यह 21 कहानियों का कहानी-संग्रह हैं। इसकी पहली कहानी **'उधार का सूरज'** है। इसमें विदेश में काम करने वाले भारतीय युवकों के पुनः लौट आने के कथ्य को शिवानी के माध्यम से संजोया गया है। शिवानी और प्रकाश विदेश में काम करते हैं और वहीं रह जाते हैं। विदेश गए सभी युवकों की माँओ की तरह मुजफ्फरपुर में रहनेवाली प्रकाश की माँ भी अपने बेटे के लौटने की राह देखती रहती है। शिवानी अपनी माँ से मिलने भारत आती है पर अपने मित्र प्रकाश के आग्रह के कारण वह पहले उसकी माँ से मिलने मुजफ्फरपुर चली जाती है। प्रकाश की माँ शिवानी को अपनी होने वाली बहू मान लेती है। फिर बात शादी तक पहुँच जाती है लेकिन शिवानी शादी के लिए प्रकाश के सामने भारत लौटने की शर्त रख लेने की सोचती है।

'और उसी क्षण' कहानी प्यार से भरी कहानी है। इसमें बेटी के लिए माँ के असीम प्यार को दर्शाया गया है। बेटी मधु की शादी के बाद भी उसकी माँ अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ती है। जब भी मधु मायके आती है तो उसके ससुराल वापस जाते समय उसकी माँ पोटलियों एवं गठरियों में कुछ-न-कुछ भरके उसे विदा करती है। लेकिन जब माँ ही नहीं रहती है तो मायके से हो आने पर जब उसकी कार से पोटलियाँ बरामद नहीं होती हैं तो उसी वक्त मधु और उसके पति को माँ की याद सताने लग जाती है।

'मेरे हिस्से की उमस' कहानी में दो भाइयों के बीच प्यार की कथा को दर्शाया गया है। यहाँ बँटवारे की बात का जिक्र भी होता है, लेकिन समर्पण व त्याग की भी कमी नहीं

होती है। **'न्योता'** कहानी आर्थिक असमानता पर आधारित पड़ोस के दो घरों की कहानी है, जिसमें पनप रहे संकोच, लज्जा, शर्म और दिखावे को करीब से दिखाया गया है।

'पूर्वाभास' गाँव की एक काकी की कहानी है, जो कहीं न कहीं बच्चों की चिंता में अपने भविष्य को भाप लेती है, जिसके कारण वर्तमान में आँसू बहा लेती है। इस पूर्वाभास की भनक पड़ोस की एक बेटी की सोच से ज्ञात होता है। इस कहानी में बुढ़ापे का दर्द और बच्चों का तिरस्कार भाव है। **'चौथे पहर की धूप'** कहानी पत्नी की सेवा भाव को परखने की कहानी है। इस कहानी में एक औरत की पत्नी के रूप में कर्त्तव्य पालन को अंकित किया गया है, जिसमें पति का पत्नी पर अधिकार जताने की इच्छा तथा पत्नी की ओर से भी पति पर अपना स्वाभिमान जताने का भाव है।

'झगड्डुआ का पेट' कहानी मूल्यतः एक नौकर की कथा है। इसमें नौकर के प्रति मालकिन के स्नेह भाव को दर्शाया गया है। नौकर से केवल सेवा भाव रखने की सोच को इस कहानी के माध्यम से नकारा गया है। **'बाबूजी'** कहानी एक बहू द्वारा किस प्रकार अपने ससुर को दिल से बाबूजी कह सकने की कहानी है। इस कहानी में बहू स्वयं अपने ससुर को उनके प्यार स्नेह के कारण अपने-आप प्रेरित होकर मन से बाबूजी कहकर पुकारती है।

'एक दीये की दिवाली' कहानी पर ही इस कहानी-संग्रह का नामकरण होता है। यह कहानी अपनेपन पर आधारित है, जिसमें अमीरी-गरीबी की कोई सीमा नहीं होती है। इस कहानी में एक बच्चा शहर की रंगीन दिवाली मनाते हुए भी उसे अपने माँ के साथ केवल एक दीये में मनाई गई दिवाली सार्थक लगता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कैसी भी परिस्थिति हो अपने अपने होते हैं।

'अचार का घड़ा' एक ऐसी माँ की कहानी है, जो अपने परिजनों के लिए मनोयोग से खाना बनाती है। इस माँ के लिए खाना बनाना एक साधना से कम नहीं था, इसलिए उनके लिए घरेलू सामान एवं अपने बच्चों में कोई अंतर नहीं रखती है। दोनों उनके प्रिय हैं। आचार के घड़े के प्रति इनके लगाव को उभारा गया है। **'घर का वैरागी'** एक सेवानिवृत्त शिक्षक की कहानी है, जो गृहस्थ जीवन त्यागकर संन्यासी जीवन बिताता है, लेकिन अंत में अपने परिवार के पास वापस आ जाता है। इसमें एक आदर्श पत्नी व माँ का भी चित्रण हुआ है, जो अपनी परिस्थिति से पूर्णतः परिचित तथा हालत के अनुसार अपने को ढाल लेती है। **'सागर-सा'** एक पत्नी की पति के प्रति अमर प्रेम की कहानी है, जो विधवा होकर भी सधवा के रूप में जीती है। **'फासला इतना कि'** कहानी में फासला दर्शाया गया है अमीर-गरीब के बीच का। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में गरीबों और अमीरों के बीच बढ़ते फासलों का यथारूप वर्णन हुआ है।

'आखिर कब तक' पारिवारिक स्थिति से सामना करनेवाली कहानी है। इसमें गहने-जेवर रखने की चाह रखनेवाली तथा खानदानी प्रतिष्ठा के बारे में सोचने वाली बहू का चित्रण किया गया है। **'जब-जब होहिं धरम कै हानि'** नसबंदी पर आधारित कहानी है। यह कहानी बढ़ती जनसंख्या पर रोकथाम लगाने पारिवारिक संतुलन लाने की कोशिश की कहानी है। लेकिन इसमें संयुक्त परिवार की परंपरा रखने वाले भारतीय लोगों की असहमति का भाव भी बरकरार है।

'बेटी का घर' कहानी में भारतीय सोच व परंपरा को उजागर किया गया है, जिसमें बेटा-बेटी के घर में अंतर करवाता है। **'जीत या हार'** भारतीय परिवार व्यवस्था में दाम्पत्य

जीवन के संबंधों में सजीवता लाने वाली कहानी है। **'मुसाफिर काकी'** तीर्थ यात्रा एवं गंगा स्नान से संबंधित कहानी है। **'रिले रेस'** कहानी में मृत्यु के कारण दाम्पत्य जीवन में किसी एक के बिछड़ या चले जाने से दूसरे की बैचनी, अकेलेपन और पुरानी यादों के सहारे जीने की कहानी है।

'हाँ! मैं दोषी हूँ' एक गरीब लड़की पर आधारित कहानी है, जिसे दिल्ली लाया गया और अमीरों के बीच रहकर उसकी आदतें बिगड़ जाती हैं। जिसके कारण उसे ससुराल से निकाल दिया जाता है। लड़की के गाँव वाले उसे दिल्ली ले जाने वाले को कोसते हैं। **'पितृ तर्पण'** एक पिता की इच्छा के बारे में है, जो उसका बेटा पूरा भी करता है। कहानी का मुख्य केन्द्र पिता की इच्छा के इर्द-गिर्द घूमता है।

डॉ. विद्यानिवास मिश्र ने **'एक दीये की दिवाली'** कहानी-संग्रह के लोकार्पण के समय में कहा था कि, "पत्थर होती जा रही दुनिया में मृदुला सिन्हा कहाँ इतना रस छुपाए बैठी हैं।"[8] इनकी कहानियाँ अनुभव और यथार्थ जीवन से जुड़ी होती हैं।

3. स्पर्श की तासीर, 1997, किताबघर, नई दिल्ली

'स्पर्श की तासीर' 15 कहानियों के मिश्रण की कहानी-संग्रह है। इसकी प्रथम कहानी **'स्पर्श की तासीर'** से ही इसका नामकरण होता है। इस कहानी की मुख्य पात्र नंदिता है, जो पेशे से एक डॉक्टर है। लेकिन अपने घर परिवार में भी नंदिता को डॉक्टर से ही संबोधित किया जाता है, जिसके कारण अपने परिजनों से अपने नाम से संबोधित होने को तरस जाती है। वह अपने रिश्तों के स्पर्श को पाने की लालसा रखती है।

'आपबीती' शिक्षा के महत्त्व को दर्शानेवाली कहानी है। इसमें वातावरण के प्रभाव तथा सहायता की प्रवृत्ति को भी दर्शाया गया है। इस कहानी के मुख्य पात्र रामएकवाल सिंह हैं, जो अपनी आपबीती अपने परिजनों को सुनाते हैं। **'गाँठ'** कहानी स्त्री-पुरुष के रिश्तों की कोमलता के बारे में है। स्त्री को महत्त्व दिया गया और स्त्रीत्व की प्रशंसा भी हुई है।

'शीशा फुआ' विधवा स्त्री पर आधारित कहानी है। शीशा फुआ की दुखद वृद्धावस्था स्थिति की कहानी है। इस कहानी में संबंधों में बेजानता, संवेदनाओं का परिहास तथा स्वार्थीपन को भी दर्शाया गया है।

'दूसरा पहलू' कहानी मानवीय संबंधों की कहानी है, जिसमें दूसरों को अपना बनाने की कोशिश की गई है। यह कहानी संबंधों में अपनेपन से जुड़ी हुई है। **'अपनी बारी'** कहानी समाज के दो वर्गों की मनोदशा व स्थिति को उजागर करती है। इसमें पारिवारिकता तथा भावुकता का चित्रण है।

'एक लावारिस की आत्मकथा' कहानी में बीरू अपने जीवन की लावारिसता को उजागर करता है। इस कहानी में अपनों के संग का सुखदायक रूप है और गाँव छोड़कर शहर में आने के बाद की अकेलेपन की दुख भरी स्थिति का वर्णन हुआ है। **'एक और निश्चय'** कहानी दिव्यांगों पर आधारित कहानी है, जिसमें पीड़ित के बजाय पीड़ित के पति के प्रति सहानुभूति व्यक्त की जाती है। यह 'ज्यों मेहँदी को रंग' उपन्यास की पृष्ठभूमि कही जाती है।

'ऋण' पत्र शैली के जरिए पति-पत्नी के रिश्ते की अद्भुत कहानी है। इसमें साथ न रहने पर भी पति-पत्नी के रिश्ते में मजबूत पकड़ है। यह कहानी मूल रूप से एक पत्नी की प्रायश्चित भरी कथा है, जिसने पति को कुष्ठ रोग के कारण छोड़ दिया था। लेकिन इसी रोग

के कारण दोनों के रिश्तों में सार्थकता और जीवंतता आ गई। **‘संयोग’** कहानी में भारतीय समाज में विवाह से संबंधित एक नाजुक समस्या यथा स्त्रियों के लिए पुनर्विवाह की समस्या को उकेरा गया है। खासकर जब बच्चों की बात आती है तो माँ के लिए पुनर्विवाह एक प्रश्न बन जाता है। **‘दत्तक पिता’** दिल को छू लेने वाली एक अनोखी कहानी है, जिसमें भारतीय स्वभाव माता-पिता के प्रति बच्चों के फर्ज को दर्शाया गया है। साथ ही विदेश में अपने स्वदेश की यादों की स्मृतियों को अंकित किया गया है।

‘विरासत’ पिता पर आधारित कहानी है। इसमें एक आदर्श पिता का चित्रण है, जो अपने बच्चों के लिए अपना जीवन अर्पित करने को तैयार है। समर्पण एवं प्रेम को दर्शाया गया है। इसमें ईमानदार पिता की विवशता है, जो प्रोविडेंट फंड तोड़कर भी बेटे के लिए नौकरी नहीं खरीद पाया। अंत में अपने प्राण त्याग कर स्वयं विरासत के तौर पर मिली सरकारी नौकरी अपने बेटे को अर्पित की। **‘पुष्पांजलि’** एक ईमानदार रिक्शेवाले की कहानी है। **‘घरवास’** कहानी मुसहर जाति की एक स्त्री द्वारा अपने नये घर का घरवास करने की इच्छा की कहानी है। **'जीवन बीमा की रकम’** यह कहानी मृदुलाजी की प्रथम कहानी संग्रह की है। अतः इस कहानी की पुनरावृत्ति हुई है।

4. जैसे उड़ि जहाज को पंछी, 2004, विद्या विहार, नई दिल्ली

यह कहानी-संग्रह 16 कहानियों से संग्रहित हैं। इस कहानी-संग्रह का शीर्षक सूरदास के पद से उद्‌घृत किया गया है। इस संग्रह की पहली कहानी **'बात का गोला'** दो भाइयों के बीच की कहानी है। इसमें एक भाई शहर में नौकरी करता है और दूसरा गाँव में रहता है। पत्र के माध्यम से संजीवन अपने भाई प्रतापसिंह से आर्थिक मदद के लिए लिखता है पर उसकी भाभी उन पत्रों को अपने पति तक पहुँचे नहीं देती है और एक दिन अचानक

संजीवन दिल्ली पहुँच जाता है, भाई से मिलने पर प्रतापसिंह पिघल जाते हैं। भाई से मिलने पर बहुत खुश होते हैं। यह सब भारतीय संस्कारों को उकेरती हैं।

'बाबूजी का लोटा' एक निर्धन परिवार की कहानी है, जिसमें महेश के पिता अपने लोटे को गिरवी रखते हैं। महेश इस लोटे को छुड़ाने की पूरी कोशिश करता है, पर अधिक समय लग जाने के कारण लोटे की पहुँच से दूर हो जाता है। लोटे की वापसी की उम्मीद खोने के बाद अनजाने से अपनी पत्नी के माध्यम से पुनः प्राप्त कर लेता है। **'जुनून और जज्बात'** युवकों के जोश की कहानी है, जिसमें रक्षक के रूप को दर्शाया गया है। **'मुआवजा'** कहानी एक माँ के अरमानों की कहानी है, जो अपने संतानों पर अपने लार-दुलार अच्छे कपड़ों से लेकर खिलौनों तक न दे सकने के कारण उनकी भरपायी के रूप में अपने पोतों एवं पोतियों में लुटाने की कथा है। **'सती का सम्मान'** इंदिरा नामक औरत की कहानी है। जिसने अपने पति की देखभाल में कोई कसर नहीं छोड़ी है। पति के मौत के बाद भी दूसरों के लिए क्रियाशील होकर आगे बढ़ती है। इस रूप को सम्मान देने और जनता से रूबरू कराने का कथ्य है। इस कहानी के विषय में लेखिका ने कहा हैं कि, "सती का सम्मान कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं, जीवंत घटनाक्रम हैं – पात्रों के नाम और घटनाक्रम सहित। पर यह कहानी समाज के उन छदम ठेकेदारों कि हँसी उड़ाती है, जो भारतीय समाज में प्रचलित कई रूढ़ विशेषणों के गलत अर्थ ढूँढ़ते रहने के आदी हो गए हैं, आस्थाओं को विखंडित करने का व्यर्थ प्रयत्न करते हैं।"[9] समाज में व्याप्त कथानक का परिलक्षित रूप उजागर किया हैं।

'पुनर्दान' कहानी अमेरिका गए नौजवानों की कहानी है, जो अपने माता-पिता को बिन बताए विदेशी महिलाओं से शादी कर लेते हैं। बदलते हालातों को पूरी तरह से प्रस्तुत

करती है। **'परामर्श'** कहानी भारतीय गाँव के स्त्रियों की कहानी है। जो अपने पति को पति परमेश्वर के रूप में मानती हैं, भले ही उसका पति शराबी हो या जुल्मी क्यों न हो। शिक्षित स्त्री से परामर्श मिलने पर भी वे अपने पति को नहीं छोड़ती हैं। **'जैसे उड़ि जहाज को पंछी'** कहानी भी विदेश गए भारतीय नवयुवकों पर आधारिक कहानी है। इसमें विदेशी चाल-ढाल, रहन-सहन के मोह को दिखाया गया है परंतु अंत में भारतीय मूल्यों एवं संस्कारों की ओर लौटने की कहानी है। इस कहानी के बारे में लेखिका का कहना हैं, "हमारे ही समाज के उन नौजवानों के भारतीय जीवन-मूल्यों के प्रति पुनः लौटने की प्रतीक है।"[10] आधुनिकता के कारण काम की होड़ में भारतीय नौजवानों का विदेश गमन का अंकन है, पर भारतीय संस्कृति की शक्ति का विस्तार है जो स्वदेश लौटने के लिए बाध्य करता है।

'लालटेन की लौ' कहानी एक बिन माँ-बाप के बच्चे रमेश के संघर्षपूर्ण बचपन की कहानी है, जो स्वयं रमेश अपने बेटे को सुनाता है। **'पेंटिंग के बहाने'** कहानी में अनमोल की पेंटिंग जिसमें उसने माता-पिता की सेवा करते हुए पुत्र का सजीव रूप चित्रित किया है। दोस्त के माध्यम से अनमोल की पेंटिंग अमेरिका तक पहुँच जाती है और अमेरिका में भी अनमोल की पेंटिंग को बहुत सराहना मिलती है। इस पेंटिंग का मूल उद्देश्य भारतीय संस्कृति अर्थात माता-पिता की सेवा भाव का अंकन किया गया। **'आकांक्षा'** एक नई सोच पर आधारित कहानी है, जिसमें अनाथ बच्चों को अपनाने के लिए दिशा निर्दिष्ट किया गया है। **'सात राखियाँ'** कहानी सात भाइयों की इकलौती बहन सुखविंदर की कहानी है। देश के बँटवारे के समय में अपने चार भाइयों को खो देती है और बाकी तीन भाइयों को भी 1984 के दंगों में खो दिया। फिर भी सुखविंदर हर साल राखी के दिन अपने सात भाइयों के लिए

राखी बनाती है। इन सात राखियों को लेकर गुरुद्वारे में चली जाती है। राखियों समेत अपने आप को समर्पित कर देती है।

'दादी माँ की पिकनिक' बेटे-बहू द्वारा माँ की सेवा की कहानी है। इसमें सास-बहू का संगम तथा माँ-बेटे का प्रेम भाव और दादी-पोतों का सुंदर संबंध रूप प्रस्तुत किया गया है। **'पगली कहीं की'** स्त्री जीवन के दयनीय अवस्था तथा संघर्षों से युक्त कहानी है। **'बलेसर माई का तालाब'** भारतीय ग्रामीण जीवन की कहानी है। इस कहानी की मुख्य पात्र बलेसर की माँ यानि बलेसर माई का है, जो पेशे से दाई है, अछूत जाति की है लेकिन पूरे गाँव के लोगों के लिए सोचने वाली माई है। साथ ही चिड़ियों के लिए भी सोचने वाली है। अपने दाई कर्म से मिले पूँजी से ही गाँव के लिए तालाब बनवाती है।

इस संग्रह की कहानियों के बारे में सोनिया सिरसाट का कथन हैं, "प्रस्तुत 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी' कहानी-संग्रह में संग्रहीत मृदुला सिन्हा की कहानियाँ संक्षिप्त कथानक और प्रभावशाली पात्रों के तहत जीवन के सुखद क्षणों की तलाश में अग्रसर होते समय अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए प्रगतिशील सोच अपनाने की सलाह देती हैं।"[11] इनकी कहानियाँ संक्षिप्त एवं संदेशपरक होती हैं।

5. ढाई बीघा जमीन, 2013, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली

यह कहानी-संग्रह 19 कहानियाँ से युक्त है। **'अक्षरा'** इसकी पहली कहानी है। यह कहानी मातृत्व भाव से भरी हुई है, लेकिन यह भाव पूर्ण नहीं हो पाती है। यह कहानी नौकरानी सुखिया की है, जिसकी कोख नहीं भरती है। इस पीड़ा को सहते-सहते सुखिया मर जाती है।

'अनावरण' सास-बहू के रिश्ते की सुंदर कहानी है, जिसमें बहू प्रभाती अपने सास की महानता का वर्णन करती है। प्रभाती की सास अपने समय के लिए एक मिसाल है, जो अपने बहू को बेटी की तरह रखकर ससुराल में पढ़ाकर एक वकील बनाती है। **'औरत और चूहा'** कहानी एक औरत मालती की कहानी है, जो अकेली रह जाती है और सभी से डर जाती है। **'औलाद के निकाह पर'** कहानी दांपत्य जीवन के प्रेम की कहानी है। इस कहानी में पति-प्रेम की कथा को पिरोया गया है। अपने संतान के ब्याह पर हर माँ-बाप को अपनी ब्याह की याद आ जाती है, इस भाव को सहज रूप से बयान किया गया है।

'बेटी का कमरा' एक बाप-बेटी की कहानी है, जिसमें पिता का दुलार बेटी के लिए दर्शाया गया है। बेटी की शादी के बाद भी पिता उसके लिए मायके पर सबसे सुंदर और बड़ा कमरा बनवाता है। हर बेटी के लिए एक आदर्श पिता का रूप पिरोया गया है। **'बुनियाद'** कहानी भी बाप-बेटी की कथा है। अलका बेटी की कहानी है। इस कहानी में आधुनिकता को काफी हद तक स्वीकारा गया है। बेटी के पसंद को ध्यान में रखा गया है। कलाओं के प्रति रुचि को भी दर्शाया गया है। **'चिट्ठी की छुअन'** दिल को छू लेने वाली एक सजीव कहानी है। इस कहानी में कौशल्या ऐसी औरत है जो चिट्ठी की लिखावट एवं स्याही की इस्तेमाल से लिखने वाले की स्थिति जान लेती है। इन्हें चिट्ठी से बहुत लगाव है, क्योंकि इन्हीं से वह अपनी बेटी का हाल जान लेती है। इसलिए बेटी की शादी के बाद आए सभी चिट्ठियों को भी संभाल के रखती है।

'ढाई बीघा जमीन' कहानी मूलतः शादी से संबंधित कहानी है, जिसमें आधुनिक दृष्टि को उजागर किया गया है। शादी के लिए पहले लड़के की पैतृक संपत्ति को देखा-परखा

जाता था, लेकिन अब लड़के की नौकरी और आमदनी को ही अहम रखा जा रहा है। **'डायरी के पन्नों पर'** पति-पत्नी के रिश्तों से संबंधित कहानी है, जिसमें कड़वाहट, खटास और शंकाओं के समाधान के लिए डायरी लिखने की आदत को एक सुगम मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया गया है। **'हार गया सत्यवान'** दांपत्य प्रेम की कहानी है, जिसमें पत्नी अपने पति को पुत्र के समान प्यार एवं दुलार करती है और समय आने पर पति भी अपनी पत्नी के इलाज पर सब कुछ खर्च कर देता है लेकिन कैंसर ग्रस्त पत्नी को नहीं बचा पाता है।

'हस्तक्षेप' कहानी पश्चिमी संस्कृति की देखा-देखी में भारतीय युवा-युवती में प्रचलित होती जा रही 'लिव-इन-रिलेशनशिप' रिश्ते की कहानी है। लेकिन नानी कौशल्या देवी की हस्तक्षेप से भारतीय संस्कृति की जीत होती है। **'कटोरी'** कहानी सीमा पात्र द्वारा कथित कहानी है, जिसमें उसकी माँ द्वारा प्राप्त किए गए कटोरी का वृतांत्त वर्णित है। **'केकड़ा का जीवन'** एक कामचोर पति के कारण पत्नी के संघर्ष की कहानी है। **'पुनर्नवा'** कहानी मुख्यतः पात्र अभय सिंह की कहानी है, जिसमें उसके स्वभाव परिवर्तन को दर्शाया गया। पढ़ाई-लिखाई की उपयोगिता को दर्शाया गया है। **'अंतिम संकेत'** यह कहानी भी डायरी लेखन पर आधारित है। बेटी की मौत के बाद एक माँ की शंका को दूर करने में बेटी द्वारा लिखी गई डायरी अहम भूमिका निभाती है। **'चार चिड़िया चार रंग'** चार भाइयों के विविध जीवन शैली की कहानी है।

'रद्दी की वापसी' भारतीय दर्शन को प्रस्तुत करने वाली कहानी है। इसमें पुराने वस्तुओं की अनमोलता को निखारा गया है। **'रामायणी काकी'** जन्मभूमि के प्रति लगाव एवं प्रेम की कहानी है। मैना रानी उर्फ रामायणी काकी गाँव से शहर तथा विदेश तक चली

जाती है लेकिन अंत में वह गाँव में ही लौट आती है और अपने प्राण त्याग देती है। **'साझा वॉडरोब'** एक मध्यमवर्गीय पारिवारिक कहानी है, जिसमें वॉडरोब यानि अलमारी से जुड़ी यादों की दास्तान है। इस संग्रह की कहानियों में लोक का समावेश हैं।

इस कहानी संग्रह की कहानियों के बारे में शीतला प्रसाद दुबे का कहना है, "लेखिका ने जीवन से जुड़ी कठिन बातों को बड़ी सरलता से कहने का प्रयास किया है।" मृदुला जी अपनी कहानियों में अतिशयोक्ति का साथ नहीं लेती हैं, वह तो सीधे सरल शब्दों में अपनी बात रख लेती हैं।[12]

6. अपना जीवन, 2014, यश प्रकाशन, नई दिल्ली

कहानियों का पुनः संकलन हुआ है, जिसके कारण इस कहानी संग्रह की मौलिक कहानियाँ 13 हैं। इस संग्रह की पहली कहानी – **'अपना जीवन'** पर ही इस कहानी संग्रह का नामकरण हुआ है। यह कहानी एक माँ की है, जो अपने इकलौटे बेटे से बहुत प्यार करती है। इतना प्यार करती है कि खुद अपना जीवन जीना भूल जाती है। जिस माँ ने अपना पूरा जीवन अपने बेटे के लिए समर्पित किया वही बेटा अपनी माँ से उन्हें अपना जीवन जीने और उसे भी अपना जीवन जीने के लिए कह देता है। यह मातृत्व से भरी कहानी है, जिसमें गहरी पीड़ा सम्मिलित है।

'बेनाम रिश्ता' अलग किस्म की कहानी है, जिसमें मानवीय जीवन का सूक्ष्म दर्शन मिलता है। **'चार पीढ़ियों बाद'** कहानी एक पारिवारिक कहानी है जिसमें बदले की आग को दर्शाया गया है। **'एक और निश्चय'** मानव समाज में पुरुष सत्ता को स्पष्ट दर्शाती कहानी है, मन में सवाल उठता है कि यदि शालिनी के बजाय राहुल के पैर कट गये होते तो क्या तब

भी राहुल की माँ या राहुल शालिनी की दूसरी शादी के बारे में सोचते या करवाते? **'गुड़गाँव में अदौरी'** कहानी एक परिवार की कहानी है जिसमें पिता की सीख रंग लाती है। **'कटे हाथ में हथियार'** कहानी मानवता का संदेश देती है। **'खोए जीवन की खोज'** अपना जीवन कहानी की तरह अपने संतान के लिए एक समर्पित माँ की कहानी है।

'खूँटा' कहानी भारतीय स्त्री चरित की दृढ़ता को दर्शाती एवं निभाती रुक्मिणी पात्र के जरिए प्रस्तुत किया गया है। **'खूँटे का बंधन'** कहानी में आधुनिक समाज में नौकरी पेशी दाम्पत्य जो अलग शहरों में रहते है, उनके बीच एक दूसरे के लिए समझ की आवश्यकता को उकेरा गया है। **'खुद्दारी का सम्मान'** मानवीय मनोभावों को प्रस्तुत करने वाली कहानी है। **'मेरा फर्ज बनता है'** नौकरी पेशा माँ-बाप जो अपने बच्चों को आया के भरोसे छोड़ जाते हैं, उससे संबंधित कहानी है।

'पेट' एक मार्मिक कहानी है, जिसमें भूख की बड़ी करुणामय चित्रण किया गया है। साथ ही प्राणी के महत्व को दर्शाया गया है। **'रामरक्खी मर गई'** अकेली रह गई एक वृद्ध औरत लालमणि की कहानी है, जो अपने कामवाली रामरक्खी पर पूरी तरह से निर्भर होती है। **'समझौता'** कहानी स्त्री और जेवर के बीच हुए समझौते की कहानी है। यह समझौता स्त्री धन का आभूषण के रूप में नहीं परिवार के लिए किसी बनिया के यहाँ गिरवी रखने के बीच स्त्री का अपने से किए गए समझौते से है। **'सवासेर'** कहानी एक आदर्श पुरुष की कहानी है, जो एक अछूत लड़की की इज्जत बचाने में अपना जान गवा देता है। पिता के नक्शे कदम पर चल कर सुबोध भी शरणार्थी पाकिस्तानी लड़की की इज्जत बचाने में अपने जान से हाथ धो बैठने वाला होता है लेकिन बच जाता है। यह कहानी भारतीय जीवन दर्शन एवं मूल्यों पर

आधारित है। **'सहस्रपूतों वाली'** में भारतीय जीवन दर्शन और मानव सेवा को सहज रूप में दर्शाया गया है। **'अगुआ का अनुराग'** कहानी दलित जीवन पर आधारित कहानी है। इस संग्रह की अंतिम कहानी **'पहली मृत्यु पर'** राजनीति से संबंधित कहानी है, जिसमें अपने पति को ईमानदार रखने में पत्नी की अहम भूमिका को भी प्रस्तुत किया गया है।

7. अंतिम इच्छा, 2014, यश प्रकाशन, नई दिल्ली

यह कहानी-संग्रह मृदुला जी का अंतिम कहानी-संग्रह है। इस कहानी-संग्रह में कुल 17 कहानियाँ हैं। पहली कहानी के शीर्षक के नाम पर ही इस संग्रह का नामकरण किया गया है। **'अंतिम इच्छा'** कहानी वृद्धावस्था पर आधारित कहानी है, जिसमें उनके अकेलेपन एवं समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया गया है। **'बेमेल तसवीरें'** कहानी शादी से संबंधित कहानी है। दीवार पर टंगने वाली दादा-दादी की तस्वीर की बेमेलता को उकेरा गया है, क्योंकि दादा का साथ जल्दी छूट गया और 85 वर्ष की दादी के साथ 45 वर्ष के दादा की तस्वीर मेल नहीं खाती है। लेकिन इस बेमेलता का सही रूप रिश्तों में दिखाया गया है।

'गुमान का दंश' कहानी एक औरत की पारिवारिक रिश्तों से संबंधित कहानी है। इस कहानी में मायके की प्रतिष्ठा को कायम रखा गया है। **'हँसुली'** कहानी एक दुख भरी कहानी है। इसमें किसी और के लिए बने हँसुली का किसी और के गले पर पड़ने के कारण उसे अशुभ माना गया है। एक तरह से यह अंधविश्वास को उजागर करने वाली कहानी है। **'काश! ऐसा नहीं हुआ होता'** एक ऐसे बहू की कहानी है, जो अपने ससुर की देखभाल करती है, लेकिन ससुर के अंतिम दिनों के पास में अपने पछतावे के लिए अपने ससुर का दिल दुखा देती है। **'मगन है मदन'** लेखिका की पहचान का है, जिसे अपने सर्वेण्ट क्वार्टर में भी रहने दिया है।

मदन की मगनता उसकी पत्नी, जो गूंगी-बहरी है उसमें बेटी के जन्म के बाद आए परिवर्तन के कारण है। **'मनौती'** एक अछूत तथा ब्राह्मण लड़की की दोस्ती की कहानी है। यह कहानी मानवीय मनोभावों की व्यथा को दर्शाती हैं। **'नजरें जुड़ाने वास्ते'** कहानी मूलत: माँ की ममता को दर्शाने वाली कहानी है, जो अपने बेटे से मिलने के लिए बेकरार है। **'उऋण'** कहानी में बेटी को ऊँचा दर्जा दिया गया है। माँ-बेटी के बीच की आपसी समझ एवं प्यार को दर्शाया गया है। **'वसीयतनामा'** में एक आदर्श पिता का चित्र खींचा गया है, जिसे अपने संतानों की सही जरूरत की भान होता है। **'टिफिन बॉक्स'** कहानी पारिवारिक संबंधों को प्रस्तुत करती हैं। साथ ही टिफिन के मामले में नए जमाने के प्रभाव को भी उजागर किया गया है। **'खाली तिजोरी'** धन के अभाव की नहीं; बल्कि परोपकार की भावना जैसे संस्कार को लेकर चलने वाली कहानी है।

'ऊपरवार कमाई' ईमानदारी की सीख को प्रस्तुत करने वाली कहानी है। **'विलमता बिलगाव'** कहानी दांपत्य प्रेम में आए समझ को प्रस्तुत करती कहानी है। **'पुनश्च'** कहानी तीन पीढ़ी की कहानी है। इसमें माँ-बेटी की मार्मिक कथा है। **'चक्रव्यूह का आनंद'** लेखिका की आप बीती की कथा है। अपने अतीत में तस्वीर के माध्यम खोई हुई है। **'कुछ भी नहीं बदला'** धर्म से जुड़ी कहानी है। इसमें अंतरजातीय विवाह को सामने लाया गया है। स्त्री संघर्ष को भी दर्शाया गया है।

मृदुला सिन्हा की कहानियों से स्पष्ट पता चलता है कि वह लोकधर्मी साहित्यकार हैं। वे मन से अपनी अनुभवों को लेखन में पिरोती हैं। लोक चेतना से जुड़कर लेखन कार्य सम्पन्न करती हैं, इसीलिए उन्होंने अपनी लेखनी के जरिए आधुनिक हिन्दी कथा संसार में

एक नया स्तंभ स्थापित किया है। डॉ. बलदेव वंशी का कहना हैं कि, “लोकधर्मी चिंतन-सरोकारों की अपनी रुचि और झुकावों के कारण मृदुलाजी जानी जाती हैं।”[13]

कहानी-संग्रहों के अलावा भी इन्होंने गद्य के अन्य विधाओं यथा उपन्यास, कविता संग्रह, पत्र संग्रह, आत्मकथात्मक लेखन आदि पर भी अपनी कलम चलायी है। इनके 9 उपन्यास प्रकाशित हुए हैं- ज्यों मेंहदी को रंग, नई देवयानी, घरवास, अतिशय, सीता पुनि बोली, विजयिनी, परितृप्त लंकेश्वरी, अहल्या उवाच और कोविड-19 जिंदगी-20। इन्होंने बच्चों के लिए बाल कथाएँ भी लिखीं। इनके 3 बाल-कथा संग्रह उपलब्ध हैं- दादी माँ की पोती, खेल-खेल में और पुराण के बच्चे। इनका एक कविता संग्रह है- मुझे कुछ कहना है। क.ख.ग. तथा आईने के सामने इनके दो ललित निबंध संग्रह हैं। बिटिया है विशेष पत्र संग्रह हैं और ‘मेरे साक्षात्कार’ साक्षात्कार संग्रह है। इनके 20 लेखों का संग्रह हैं। इनकी लेखों का अनुवाद भी विभिन्न भाषाओं में किया गया है। मृदुला सिन्हा का साहित्य बहुत समृद्ध है। इन्होंने पद्य तथा गद्य के विविध विधाओं में अपनी कलम चलाई हैं। डॉ. विंदेश्वर पाठक के अनुसार, “मृदुलाजी एक उच्च कोटि की लेखिका हैं। इनके साहित्य का केंद्रीय बिन्दु है – नारी-सशक्तीकरण, राष्ट्रीयता, भारतीयता, मानव-संवेदना, अनुशासन, नैतिकता और ग्रामांचल-अभ्युदय।”[14] हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में मृदुलाजी के योगदान को सदा के लिए याद रखा जाएगा। भारतीय लोकधर्मिता को निरूपित करने वाली हिन्दी की कथाकार मृदुला सिन्हा भौतिक रूप से 18 नवम्बर, 2020 को अंतिम सांस लेकर इस संसार से अलविदा हो गई। पर, अपने लेखन-सृजन से हिन्दी पाठकों के बीच आज भी जिंदा हैं, जीवंत हैं, प्रासंगिक हैं। यही उनकी और उनके लेखन की उपादेयता है।

संदर्भ:

1. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 5

2. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, 2017, पृ. सं. - 24

3. वही, पृ. सं. - 27

4. बल्देव भाई शर्मा (प्रधान सं.), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 48

5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. - 21

6. बल्देव भाई शर्मा (प्रधान सं.), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 163

7. वही, पृ. सं. - 167

8. वही, पृ. सं. - 62

9. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी (भूमिका), विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 8

10. वही, पृ. सं. - 8

11. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य: विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका

पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, 2017, पृ. सं. - 167

12. वही, पृ. सं. - 143

13. बल्देव भाई शर्मा (प्रधान सं.), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 308

14. वही, पृ. सं. - 167-168

द्वितीय अध्याय

हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

द्वितीय अध्याय

हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

विषय प्रवेश

हिन्दी साहित्य समृद्ध साहित्य है। हिन्दी साहित्य का सुदीर्घ इतिहास रहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने "हिंदी साहित्य के 900 वर्षों के इतिहास को चार कालों में विभक्त किया है।"[1] अधिकांश विद्वान इस काल विभाजन को ही आधार मानते हैं। इस काल विभाजन के आधार पर आधुनिक काल (जिसका प्रारंभ 1900 ई. से माना गया है) से हिंदी गद्य साहित्य की शुरुआत मानी जाती है।

हालाँकि इसके पहले भी भारतीय परंपरा में कथा एवं कहानियाँ प्राचीन काल से विद्यमान रही हैं। "कहानी में कहने की विशेषता बराबर महत्वपूर्ण रही है। लोक और शिष्ट दोनों रूपों में उसका सम्बन्ध वाचिक परंपरा से अधिक रहा। यह रोचक बात है कि हमारी भाषा के मुहावरे में कविता लिखी जाती है और कहानी कही जाती है। तब यह स्वाभाविक है कि अपने नये मुद्रित रूप में कहानी का हिंदी साहित्य में आविर्भाव बीसवीं शती के आरंभ में होता है, साहित्यिक पत्रकारिता के उदय के साथ। मनोरंजन से हटकर एक अनुभूति का सीधा साक्षात्कार अब उसका विधागत लक्ष्य हो जाता है।"[2] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कहानी केवल मनोरंजन का साधन नहीं है; वरन यह एक अनुभूति है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अनुभूत की जाती है।

हिन्दी कहानियों के उद्भव और विकास में भारत के प्राचीन कथा, लोक कथा एवं पाश्चात्य कथा का सम्मिलित रूप मिलता है। मोटे तौर पर हिन्दी कथा साहित्य की उत्पत्ति आधुनिक काल से ही मानी गयी है। हिंदी कहानी का आविर्भाव 'सरस्वती' में प्रकाशित

कहानियों से माना जाता है क्योंकि 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन 1900 ई. से ही शुरू हुआ था। डॉ. रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में "हिंदी कहानियों का प्रारंभ सभी इतिहासकारों ने एक स्वर से 'सरस्वती' के प्रकाशन से ही स्वीकार किया है।"[3] इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन पूर्व भी कहानियाँ लिखी गई होंगी।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार - "अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाओं में जैसी छोटी-छोटी आख्यायिकाएँ या कहानियाँ निकला करती हैं, वैसी कहानियों की रचना 'गल्प' के नाम से बंगभाषा में चल पड़ी थीं। ये कहानियाँ जीवन के बड़े मार्मिक और भावव्यंजक खंड चित्रों के रूप में होती थीं। द्वितीय उत्थान की सारी प्रवृत्तियों का आभास लेकर प्रकट होने वाली 'सरस्वती' पत्रिका में इस प्रकार की छोटी कहानियों के दर्शन होने लगे।"[4] अतः हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास में पाश्चात्य और बांग्ला साहित्य का बहुत बड़ा योगदान रहा है। 'सरस्वती' पत्रिका हिन्दी कहानी के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। इस तथ्य की पूर्ति के लिए डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल के शब्दों को लिया जा सकता है – "सरस्वती के प्रकाशन के पूर्व आधुनिक कलात्मक हिन्दी कहानियों का अस्तित्व नहीं था।"[5] हिन्दी साहित्य में हिन्दी कहानी एक प्रमुख कथात्मक विधा है। इस विधा से हिन्दी साहित्य में नया मोड़ आया है; लेकिन हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी को लेकर विद्वानों में मतभेद रहा है।

हिन्दी की प्रारंभिक कहानियाँ

हिन्दी की प्रारंभिक कहानियों में कहानी कला के गुण कम पाए गए। जाहिर-सी बात है कि शुरुआती दौड़ में किसी भी विधा का रूप पूर्ण नहीं होता है। हिन्दी कहानी की प्रारंभिक अवस्था में प्राचीन-कथा-साहित्य, लोक-कथा-साहित्य तथा पाश्चात्य साहित्य का

प्रभाव देखने को मिलता है। भारत का कथा साहित्य उपनिषदों, बौद्ध और जैन साहित्यों तथा संस्कृत कथा साहित्य में पनप रहा था। प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य में रचे गए पद्यबद्ध कथाओं का भी योगदान रहा है। चारणों के साहित्य में भी कथा-साहित्य के रूप यथा- इतिहास, बात, प्रसंग आदि पाए गए हैं। हिन्दी कहानी की पृष्ठभूमि भारत के प्राचीन कथा साहित्य में विराजमान है। भले ही इसका रूप बिखरा हुआ क्यों न हो। यह विविध भाषा से गुजरते हुए अपने स्वरूप का गठन करती चली है। लोक कथाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। प्राचीन जनजीवन में कथाओं का मौखिक रूप विद्यमान रहा, पर मौखिक रूप में भी यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होता चला आया, जिसके कारण लोक कथाओं से प्रेरित होकर हिन्दी कहानियों का विकास हुआ।

हिन्दी कथा साहित्य में पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव को भी देखा जा सकता है। हिन्दी कहानी का उद्भव बीसवीं सदी के प्रारंभ में हुआ। साथ ही प्रेरणा का स्रोत लेकर 1900 ई. के आस-पास शेक्सपियर के अनेक नाटकों के अनुवाद 'सरस्वती' में कहानी रूप में प्रस्तुत किए गए। इन तथ्यों की पुष्टि के लिए डॉ. रामचन्द्र तिवारी के कथन को लिया जा सकता है - "जहाँ तक 'इतिवृत्त' का प्रश्न है, हिन्दी-कहानीकारों ने प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य, लोक-कथाओं तथा पाश्चात्य-साहित्य इन तीनों से सामग्री ली।"[6] अतः हिन्दी कहानियों का विकास समृद्ध एवं व्यापक रूप में हुआ है।

हिन्दी कहानी की प्रारंभिक अवस्था बिखरी हुई थी, लेकिन मुंशी प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी के विकास में एक नया मोड़ आया जिसके तहत हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को दर्शाने के लिए प्रेमचंद को केंद्र में रखा जा सकता है। इस प्रकार इन्हें कहानी विधा

का आधार स्तम्भ मानते हुए हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है –

1. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी

2. प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी

3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

1. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी

यह काल हिन्दी कहानी की शैशावस्था काल कहा जा सकता है। इस काल में हिन्दी कहानी का जन्म हुआ। अपने स्वरूप की पहचान के लिए यह कई रूप धारण करते हुए अग्रसर होती गई। इस काल में कहानी की कोई विशेष पहचान नहीं थी। लेकिन इसकी शिल्प विधि का विकास हो रहा था। हिन्दी कहानी का प्रारंभ मुख्यतः द्विवेदी युग से ही माना जा सकता है। तथापि इस काल में अधिकतर साहित्यकार नाटक और निबंध लिखने में सक्रिय थे। इस काल में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बहुत-से कहानीकार सामने आए। इसी के तहत 'सरस्वती' पत्रिका में 1900 ई. में प्रकाशित किशोरी लाल गोस्वामी कृत 'इंदुमती' को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना। लेकिन शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह कहानी शेक्सपीयर के 'टेम्पेस्ट' का अनुवाद है, जिसके कारण यह मौलिक रचना नहीं कही जा सकती है।

इसके अलावा मुंशी इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1872) को रामरतन भटनागर ने हिन्दी की प्रथम कहानी माना है। तो माधवराव सप्रे कृत 'एक टोकरी भर मिट्टी' (1901) को देवीप्रसाद वर्मा ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है। इस

कतार में रामचन्द्र शुल्क कृत 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903) को डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल ने हिन्दी की प्रथम कहानी माना है। तो बंग महिला कृत 'दुलाई वाली' (1907) को रायकृष्ण दास ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है।

इस प्रकार हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी को लेकर विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न हैं। उपर्युक्त भिन्न मतों में सामान्यतः 'इन्दुमती' को ही हिन्दी की प्रथम कहानी माना गया है। जबकि "शिल्पविधि की दृष्टि से हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी है, रामचन्द्र शुल्क कृत 'ग्यारह वर्ष का समय'।"[7] इस कहानी से ही मौलिक हिन्दी कहानी की शुरुआत मानी जाती है। इसके आगे भी हिन्दी की मौलिक कहानियों का सृजन होता गया। साथ में बंगला तथा अंग्रेजी आदि से भी अनुवाद किया जाने लगा।

1906 ई. में पं. वेंकटेशनारायण की 'एक अशरफी की आत्मा-कहानी', लाला पार्वतीनन्दन की 'एक के दो दो', पं. सूर्यनारायण दीक्षित की 'चन्द्रहास का अद्‌भुत आख्यान' आदि कई मौलिक कहानियाँ 'सरस्वती' में प्रकाशित हुईं। "सातवें वर्ष की 'सरस्वती' में बंग महिला कृत 'दुलाई वाली' कहानी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानी गयी है। कुछ आलोचकों ने इसे ही हिन्दी की आदि मौलिक कहानी के रूप में स्वीकार किया है।"[8] इसी क्रम में 'सरस्वती' के नवें और दसवें वर्ष में वृन्दावन लाल वर्मा कृत 'राखीबन्द भाई' तथा 'तातार और एक वीर राजपूत' कहानियाँ प्रकाशित हुईं।

एक ओर 'सरस्वती' के नवें वर्ष ही यानि "1909 में काशी से 'इन्दु' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ और इसी के माध्यम से 'प्रसाद' का कहानी-साहित्य में प्रवेश हुआ।"[9] इनकी

प्रारंभिक कहानियाँ – आग, चन्दा, गुलाम, चितौर-उद्धार आदि प्रकाशित हुईं। बंगला कहानियों के अनुवादों का प्रकाशन अधिकतर इसी पत्रिका में हुआ। “बंगला के प्रसिद्ध पत्र ‘प्रवासी’ से अनेक कहानियों का अनुवाद पं॰ पारसनाथ त्रिपाठी ने ‘इन्दु’ में प्रस्तुत किया। हिन्दी-कहानी के विकास में प्रवासी का प्रभाव ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।”[10] इस प्रकार कहानियों के मुद्रित रूप का अंकन होता गया और कहानी के इतिहास का रूप गढ़ता गया और कहानी का विकास होता चला गया।

कहानी विधा की उत्पत्ति के विषय में श्री रामस्वरुप चतुर्वेदी का कथन दृष्टव्य है – “कहानी हर रूप में उपन्यास से पुरानी विधा है। गीत और कहानी मानव सभ्यता से साक्षरता-काल के पहले से जुड़े हुए हैं, यद्यपि दोनों के लक्ष्य कुछ भिन्न रहे हैं। गीत में मनुष्य ने अपने को व्यक्त किया और कहानी से दूसरों का मनोरंजन। आदिम काल से चली आती ये वृत्तियाँ इन दोनों काव्य-रूपों से आज भी जुड़ी दिखती हैं।”[11] इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कहानी बहुत पुरानी विधा है, जिसका अस्तित्व मनुष्य के साथ बहुत गहरा है।

इस प्रकार देखा जाए तो इस युग में कहानीकार सामने तो आए पर इनकी कहानियों में मौलिकता कम और अनुवाद कार्य अधिक पाया गया। प्रेमचंद और प्रसाद से पूर्व कहानी लेखन बहुत कम हुए। इस युग की रचित कहानियों में आम जीवन की सच्चाईयों का रूप बहुत कम मिलता है।

2. प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी

हिन्दी कहानी का विकास क्रम मूलत: प्रेमचंद युग से ही देखा जा सकता है। प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी को नई राह प्राप्त हुई। इस युग में कथा का विकास जादुई एवं तिलिस्मी चमत्कारों से हटकर चरित्र की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर होने लगा। प्रेमचंद

की प्रथम कहानी 'पंच परमेश्वर' का प्रकाशन सरस्वती में 1916 में हुआ। इस कहानी से मनोवैज्ञानिक कथानकों की शुरुवात होती है।

डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने इस युग को कहानी के विकास युग की संज्ञा दी है। वे लिखते हैं - "विकास-युग के प्रथम चरण में सरस्वती के माध्यम से चंद्रधर शर्मा गुलेरी और प्रेमचंद, इन्दु के माध्यम से 'प्रसाद' तथा हिन्दी गल्पमाला के माध्यम से जी. पी. श्रीवास्तव तथा इलाचन्द्र जोशी आदि प्रमुख कहानी लेखक सामने आये।"[12] फिर आगे चलकर हिन्दी कहानियों में दो धाराएँ सामने आईं – पहला, यथार्थवादी दृष्टिकोण जिसमें जीवन के व्यावहारिक पक्ष को दर्शाया गया। इसमें प्रेमचंद, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन प्रमुख हैं। दूसरा, आदर्शवादी दृष्टिकोण जिसमें भाव सत्य को महत्त्वपूर्ण रखा गया। इसमें जयशंकर प्रसाद, चंडीप्रसाद तथा राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह प्रमुख हैं।

प्रेमचंद ने अपने युग को एक नई राह प्रदान की जिसमें अपनी कहानियों के माध्यम से 1930 तक आते-आते ये कथा-साहित्य के सम्राट कहलाये। इन्होंने 300 से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इनकी विशिष्टता यह है कि इन्होंने अपने आपको युगानुसार परिवर्तित किया। उनके लेखन की शुरुआती दौड़ से लेकर उनके अंतिम दिनों तक उनके दृष्टिकोण और मान्यताओं में बदलाव आया है। इनकी कहानियाँ ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित होती हैं। उनके अनुसार कहानी जीवन का अंग है। इसीलिए ये सामाजिक सत्य से मनोवैज्ञानिक सत्य तक पहुँच गए। इस युग में हिन्दी कहानियों के विभिन्न रूप उभरे। आलोचकों के मतानुसार यह विभिन्न रूप इस प्रकार हैं-

(क) चरित्र प्रधान कहानियाँ – इन कहानियों में लेखक का मुख्य उद्देश्य किसी चरित्र का सुंदर चित्रण करने से होता है। इस प्रकार के कहानी लेखन में प्रमुख प्रेमचंद हैं। इनकी

आत्माराम, बड़े घर की बेटी, बाँका गुमान, दफ्तरी, बूढ़ी काकी आदि कहानियाँ चरित्र प्रधान कहानियाँ हैं।

(ख) वातावरण प्रधान कहानियाँ – इस तरह के कहानियों में भावना के प्रेरक उपादानों को कथानक का मूल कारण बना दिया जाता है और कहानी में यह सजीव होकर कहानी की केंद्र बिन्दु बन जाते हैं। इसके अंतर्गत जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन तथा गोविंद वल्लभ पन्त आदि लेखक आते हैं। प्रसाद जी की आकाशदीप, प्रतिध्वनि, बिसाती, हिमालय का पथिक आदि कहानियाँ वातावरण प्रधान कहानियाँ हैं।

(ग) कथानक प्रधान कहानियाँ – इस प्रकार की कहानियों में चरित्र तथा परिस्थितियों के संबंध पर ज़ोर दिया जाता है। इस प्रकार की कहानी लिखने वालों में विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', ज्वालादत्तशर्मा तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि प्रमुख हैं।

(घ) कार्य प्रधान कहानियाँ – इन कहानियों में लेखक केवल कार्य पर ही शुरूआत से अंत तक बना रहता है। इसके अंतर्गत गोपालराम गहमरी की जासूसी कहानियाँ और दुर्गाप्रसाद खत्री की वैज्ञानिक कहानियाँ आती हैं।

इन उपर्युक्त कहानियों के अलावा ऐतिहासिक, हास्य एवं व्यंग्य प्रधान, प्राकृतवादी और प्रतीकवादी कहानियाँ भी इस युग में लिखी गईं और ये कहानियाँ अपने आप में ऐतिहासिक महत्त्व रखती हैं। लेकिन आज इस युग की कहानियों के वर्गीकरण को वैज्ञानिक नहीं माना जा रहा है क्योंकि कहानी को अनुभूति की एक इकाई माना जा रहा है। प्रत्येक काल या युग के मूल्यांकन के लिए अपने मानदंड होते हैं। इसलिए "प्रेमचंद-युग के आलोचक से आज के मूल्यों और मानों की आशा करना उसके साथ अन्याय करना है"[13] प्रत्येक युग के लेखकों की अपनी पहचान होती है।

शैली रूपों में भी विकास कहानी प्रकारों के साथ हुआ। पाँच शैलियों का प्रमुख रूप से प्रचलन होता है। प्रथम वर्णनात्मक शैली है। इसका प्रचलन सबसे अधिक होता है। इसमें लेखक पूरी की पूरी कहानी को सुनाता है। दूसरी संलाप शैली है। इस शैली का कम प्रयोग होता है। इसमें वार्तालाप के जरिए कथा और चरित्र का विकास होता है। तीसरी शैली के अंतर्गत आत्म-चरितात्मक शैली आती है। इसमें लेखक खुद को उत्तम पुरुष में रखता है और कहानी रचता है। चौथा है पत्र-शैली और पाँचवाँ है डायरी-शैली। इन शैलियों में कहानियों की रचना होती रही और कहानी विधा समृद्ध होती गई।

इस युग के अंतिम चरण में हिन्दी कहानियों की नई दिशा सामने आई। स्वयं प्रेमचंद भी पहले आदर्शवादी कहानी लिखते थे, लेकिन अपने युग की सुधारवादी परछाई में वे भी यथार्थयुक्त कहानियाँ लिखने लगे। प्रेमचंद युग से ही कथा का क्षेत्र बदल जाता है और मध्यम वर्ग एवं उनके समस्याओं को उठाया जाने लगा। कथा का मूल केंद्र मानव जीवन की सच्चाईयों से जुड़ने लगा। इन नए विषयों को कथा साहित्य का केंद्र बनाते हुए अनेक नए लेखक सामने आए। इनमें इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, जैनेन्द्र, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' और अज्ञेय प्रमुख हैं। इन लेखकों में जैनेन्द्र प्रेमचंद युग के अंतिम चरण के सबसे योग्य लेखक के रूप में उभर कर आए। इनके अलावा भी कई लेखकों का आगमन हुआ।

इन लेखकों के बीच प्रेमचंद युग में लेखिकाओं का भी पूर्ण योगदान सामने आया, जिनमें उषादेवी मित्रा, होमवती देवी, सत्यवती मलिक और कमला चौधरी प्रमुख हैं। इन लेखिकाओं ने नारी की निजी खूबियों एवं घरेलू जीवन की अदाओं का सुंदर रूप प्रस्तुत किया है।

3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

प्रेमचंद के बाद की कहानियों का नाम किसी एक व्यक्ति विशेष के नाम से नहीं जुड़ा। दूसरे शब्दों में कहानी कला ने नया मोड़ लिया और यह विस्तृत होती चली गई। प्रेमचंदयुगीन कहानी के बाद हिन्दी कहानी लेखन के क्षेत्र में बदलाव आया और इसका दायरा विस्तृत रूप में फैलता गया। लेकिन साथ ही इसकी काल अवधि सीमित या कम होती गई। 1936 के बाद हिन्दी कहानी विभिन्न वादों में बँट गई।

हिन्दी कहानी के विस्तार में पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। सन 1938 में 'कहानी' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ, पर यह 1942 में किसी कारणवश बंद हो गया। लेकिन दूसरी ओर 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के जरिए हंसराज रहबर, अमृतराय, रांगेय राघव आदि लेखक कहानी लेखन में सामने आए। इस युग के शुरुआती समय में देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, लेकिन इस युग के प्रारम्भ के ग्यारह वर्ष के अंतर्गत देश आजाद हुआ लेकिन आजादी की खुशियों के साथ देश के बँटवारे के शोक में डूबा हुआ भी था।

देश की दयनीय स्थिति का प्रभाव कहानी लेखन में भी पड़ने लगा। इन स्थितियों के कारण लेखक यथार्थ की ओर उन्मुख हुए और नए कहानीकारों का आगमन होता गया। साथ में 1954 में 'कहानी' पत्रिका का पुनः प्रकाशन हुआ। इस काल में लेखक आम जनता के करीब आए और उनके यथार्थ से जुड़कर कहानी रचना को समृद्ध और धनी बनाते गए। इन नए कहानीकारों में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ 'रेणु', धर्मवीर भारती आदि तथा महिला कहानीकारों में उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि प्रमुख हैं।

इसके बाद 1960 से हिन्दी कहानी ने नयी कहानी के रूप में नया रूप धारण किया। इस नयी कहानी के प्रारंभ की पहचान को दृढ़ करने में **'नयी कहानी'** नामक पत्रिका ने अहम भूमिका निभाई है। इस पत्रिका का प्रकाशन 1960 में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से हुआ। इसके संपादक श्री भैरवप्रसाद गुप्त थे। सटीक रूप से इन नयी कहानियों की प्रारम्भिक अवधि को निश्चित करना कठिन है। लेकिन इस काल में कहानियों की प्रवृत्ति में आए परिवर्तन एवं इसके पहले की कहानियों की तुलना में 1954 से 1965 तक की कहानियों में पूरी तरह से नयी कहानी की प्रवृत्तियाँ प्रतिष्ठित हो गईं। 'नयी कहानी' की कुछ प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं -

1.यथार्थ जीवन का अंकन – कथाकारों एवं रचनाकारों ने प्रेमचंदोत्तर कहानी युग में मानव जीवन के यथार्थ को कहानी का केंद्र बिन्दु बनाया। प्रेमचंद युग के अंतिम चरण में आदर्श युक्त कहानियों का अंत-सा होता गया और यथार्थपूर्ण कहानियों का बोल-बाला होता गया। यथार्थ का बोध विभिन्न रूपों में प्रकट होने लगा। जैसे, - मानव मन के अवसाद के रूप में, पारिवारिक टूटन, सामाजिक मूल्यों के ह्रास के रूप में आदि। यथार्थ का अंकन किया जा रहा है, लेकिन यथार्थ की अभिव्यक्ति सही रूप में हुई है या नहीं? यह सबसे बड़ा प्रश्न है।

मानव जीवन अनेक चुनौतियों से भरा हुआ है। इस चुनौतीपूर्ण जीवन की अपनी सीमाएँ एवं स्थिति होती है, जिसका रूप समय रहते बदलता रहता है। इन्हीं बदलावों के कारण मनुष्य की परिस्थितियों के साथ गाँव एवं शहर में भी बदलाव हो रहे हैं। इन बदलावों में प्रत्येक कथाकार की अपनी विशिष्ट कला निहित होती है, जो कथा के रूप में उभरकर सामने आ जाती है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी कहते हैं - "प्रायः मार्कण्डेय और शिवप्रसाद सिंह को गाँवों के जीवन से; कमलेश्वर को कस्बे के जीवन से; फणीश्वरनाथ 'रेणु'

को अंचल विशेष के जीवन से, मोहन राकेश और निर्मल वर्मा को नगर के जीवन से सम्बद्ध करके देखा गया है। इसमें संदेह नहीं कि उपर्युक्त कलाकारों का अनुभव गाँव, कस्बे, अंचल और नगर के स्तर पर अन्यों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील है; किन्तु इन सबने विभिन्न स्तरों पर आज के यथार्थ को ही पकड़ने की चेष्टा की है। .... यथार्थ की व्यापक स्वीकृति 'नयी कहानी' की केन्द्रीय प्रवृत्ति है।"[14]

2. व्यक्ति की प्रधानता – केवल समाज एवं इसमें निहित कुरीतियों को छोड़कर इससे आगे चलकर नयी कहानी में व्यक्ति को सर्वोपरि रखा गया। व्यक्ति के संदर्भ में समाज को देखा गया। पूर्ण रूप से व्यक्ति को सामने लाया गया। प्रेमचंद पूर्व की कृतियों में मूल्यतः इस युग में कहानी की रचना न के बराबर थी। और जितने भी हुए उसमें समाज का दर्पण दिखाई नहीं देता था। प्रेमचंदयुगीन लेखकों ने समाज को प्रधानता दी, जिसके कारण समाज में पनप रही कुरीतियों को पाठक के सामने लाया गया। साथ ही काफी हद तक इन कुरीतियों को समाज से उखाड़ फेकने की कोशिश भी की गईं। लेकिन इस युग में पहले समाज को रखा गया और व्यक्ति को गौण रखा गया। मगर प्रेमचन्दोत्तर युग में व्यक्ति को प्रधानता देने के साथ-साथ समाज को भी ध्यान में रखा गया। इस युग में व्यक्ति की असली पहचान इन कहानियों के माध्यम से सामने लाया गया। व्यक्ति की संवेदनाओं, मनः स्थिति, सामाजिक भूमिकाओं, परिस्थितियों आदि को साफ-साफ दर्शाया गया। समाज को व्यक्ति की नज़र से देखा गया है।

3. तीव्र भावावेश का अभाव – तीनों कालों में कहानियाँ लिखी गई। लेकिन कहानियों के रूप या विषय अलग-अलग हैं। प्रेम कहानियों के रूप में काफी अंतर देखा गया है। प्रेमचन्दोत्तर युग के कहानियों में तीव्र भावनाओं का अभाव है। बल्कि इस युग की कहानियों

में व्यक्ति की प्रेम कथा उसके अनुभवों एवं समस्याओं के साथ जुड़कर सामने लाया गया। जीवन के सच्चे पहलुओं से व्यक्ति को जोड़कर उसके द्वारा अनुभव किए गए खुशियों और मुश्किलों को सजीव रूप से दर्शाया गया है। इस भावुकता पर डॉ. रामचन्द्र तिवारी के शब्द दृष्टव्य है - "1950 ई. तक यह भावुकता बनी हुई थी। ग्राम्य कथानकों में छिछली भावुकता का संस्पर्श आज भी मिल जाता है, किन्तु 'नयी कहानी' की तात्विक मर्यादा निर्मम तटस्थ भावाभिव्यक्ति में ही स्वीकार की जाती है।"[15] भावनाओं से हटकर यथार्थ की ओर उन्मुक्त कथाओं को स्थान मिलता गया।

4. मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण – हिन्दी कथा साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन का बोल-बाला है। इस युग की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का अंकन किया गया है। हालाँकि इस युग के कथाकार स्वयं मध्यवर्गीय परिवार से आते हैं। अपने अनुभव एवं सच्चाइयों को ध्यान में रखकर एक सटीक कहानी का निर्माण कर लेते हैं। इस युग के कथाकारों की दृष्टि अपने ही वर्गों के दुःख-दर्द, पीड़ा, विवशता आदि को सामने लाया तथा संघर्षयुक्त जीवन की चुनौतियों को भी उभारा गया। उच्च वर्ग का भी अंकन हुआ है। लेकिन अल्प मात्रा में, परिवेश को सार्थक बनाने के उद्देश्य से इनका वर्णन किया गया है। मध्यवर्गीय जीवन से जुड़ी कहानियों से हिन्दी कथा साहित्य समृद्ध है।

5. आधुनिक बोध – नयी कहानी के विषय में वक्त के साथ परिवर्तन आता गया। इस परिवर्तन के कारण ही इसमें आधुनिक बोध विद्यमान है। नयी कहानी के समर्थक के रूप में अनेक लेखकों ने अपनी कहानियों का सृजन किया, जिसमें मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, कृष्ण बलदेव वेद, रमेश बक्षी, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा आदि प्रमुख उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं। इन लेखकों ने अपनी कहानियों में शहरी जीवन का

बनावटीपन एवं आर्थिक विषमताओं, बाह्य आडंबर, नारी-पुरुष संबंधी दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन के विघटन आदि का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। पाश्चात्य संस्कृति एवं विदेशी जीवन का भी चित्रण है, जिसमें यौन प्रवृत्तियों को भी दर्शाया गया है।

अन्य प्रमुख कहानी आन्दोलन

कहानी आन्दोलनों की पंक्ति में सर्वप्रथम नयी कहानी आती है। 1947 में देश आज़ाद हुआ। आज़ादी के पहले और आज़ादी के बाद हिन्दी कथा साहित्य की प्रवृत्तियों में काफी परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता के बाद लिखी गई कहानियों को स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानी कहा जाता है। इन कहानियों में विभिन्न रचनात्मक पक्ष और बदलाव को देखा गया, अर्थात इनमें नई अभिव्यक्तियाँ उभरकर सामने आईं। नई कहानी के बाद आने वाले कहानी आन्दोलनों का विवरण इस प्रकार है –

अकहानी – नई कहानी के विरोध के कारण अकहानी का जन्म हुआ। इस कहानी आंदोलन की कालावधि 1960 से 1963 तक मानी जा सकती है। इसमें कहानी के स्वीकृत मूल्यों को स्वीकार न करके अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा की गई। दूसरी ओर कुछ लोग अकहानी को नई कहानी के विकास के रूप में स्वीकार करते हैं। अकहानी आन्दोलन के समर्थकों में डॉ. गंगाप्रसाद विमल, जगदीश चतुर्वेदी, रवीन्द्र कालिया, दूधनाथ सिंह, प्रयाग शुक्ल, सुधा अरोड़ा, ज्ञान रंजन,रमेश बक्षी, श्रीकान्त वर्मा, विजयमोहन सिंह, विश्वेश्वर आदि प्रमुख हैं।

सचेतन कहानी – इस कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक डॉ. महीप सिंह हैं। इस आन्दोलन का आरंभ 1964 ई. में 'आधार' पत्रिका के 'सचेतन कहानी विशेषांक' के प्रकाशन से माना जाता है। यह कहानी नई कहानी की तुलना में अधिक संतुलित एवं व्यापक दृष्टिकोण रखती

है। इस आन्दोलन से जुड़े अन्य कहानीकारों में कमल जोशी, मधुकर सिंह, योगेश गुप्त, वेद राही, हिमांशु जोशी, मनहर चौहान आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। डॉ. रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में - “नयी कहानी के दायरे में जो नकारात्मक प्रवृत्तियाँ पनप रही थीं, उन्हीं का विरोध ‘सचेतन कहानी’ आन्दोलन में किया गया था। यही नकारात्मक प्रवृत्तियाँ ‘अ-कहानी आन्दोलन’ के रूप में उभर कर सामने आयी थीं। ‘सचेतन कहानी’ आन्दोलन बहुत शीघ्र बिखर गया।”[16] बदलते समय के साथ कहानीकारों के विचारों में परिवर्तन होते गए, जिसके परिणामस्वरूप अनेक कहानी आंदोलनों का रूप सामने आया।

सहज कहानी - अमृतराय ने 1968 ई. में ‘नयी कहानियाँ’ पत्रिका का प्रकाशन इलाहाबाद से शुरू किया। इस पत्रिका का प्रकाशन पहले दिल्ली के राजकमल प्रकाशन से होता था। इन्होंने **सहज कहानी** पर आवाज उठाई, लेकिन यह आन्दोलन के रूप में प्रचलित नहीं हो सकीं। इस आन्दोलन के प्रतिष्ठित न हो सकने के कारण को स्पष्ट करते हुए डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है - “अमृतराय ने किसी भी प्रकार के बने-बनाये साँचे का विरोध किया और अपनी बात बलपूर्वक प्रस्तुत की, किन्तु उन्हें सहज कहानी लिखने वाले नये लेखक उपलब्ध नहीं हुए।”[17] इस कहानी आंदोलन के समर्थक कम होने के कारण यह जल्द ही बिखर गई। किसी का विरोध करने एवं बलपूर्वक अपनी बात रख देने से कोई समर्थन यों ही नहीं दे देता है।

समांतर कहानी – सन 1971 ई. के आस-पास समांतर कहानी आन्दोलन का प्रवर्तन कमलेश्वर ने ‘सारिका’ पत्रिका के माध्यम से किया। समांतर से इनका आशय कहानी को आम आदमी के जीवन की परिस्थितियों एवं समस्याओं के समांतर प्रतिष्ठित करने से है। इस आन्दोलन के रचनाकारों ने आम आदमी के संघर्षों, चिन्ताओं एवं तकलीफों को दर्शाया। इस आन्दोलन से जुड़े प्रमुख रचनाकारों के नाम हैं - अरविंद, आशीष सिन्हा, इब्राहीम शरीफ,

कामतानाथ, जितेन्द्र भाटिया, दामोदर सदन, निरुपमा सोबती, मधुकर सिंह, मृदुला गर्ग, सुधा अरोड़ा, शीला रोहेकर, विभुकुमार, श्रवणकुमार, सतीश जमाली, सुदीप, सनतकुमार, से.रा. यात्री, रमेश उपाध्याय। यह आन्दोलन भी इसके आगे की आंदोलनों की तरह ज्यादा देर तक नहीं चल पाया।

डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने कहा है कि - "इसके सिद्धान्त-सूत्र सोच-समझकर निर्धारित किये गये थे, कहानियों के भीतर से उभर कर सामने नहीं आये थे। यह सारा आन्दोलन कमलेश्वर की महत्त्वाकांक्षा का द्योतक अधिक था, रचना-संदर्भों से उभरकर रचनाकारों की सक्रियता की अनिवार्य परिणति के रूप में सामने नहीं आया था।"[18] इस कहानी आंदोलन में भले ही आम आदमी के संघर्षों को दर्शाया गया हो, मगर पाठकों के मन को गहराई से नहीं छुआ गया।

इसके बाद **जनवादी कहानी** की ओर कुछ रचनाकारों का ध्यान आकर्षित हुआ। इसकी शुरुआत दिल्ली विश्वविद्यालय में 1977 ई. में स्थापित जनवादी विचारमंच से मानी जा सकती है। अगले वर्ष ही इसी मंच के तत्त्वावधान में हिन्दी लेखकों का एक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 1967 से 1977 ई. तक के जनवादी साहित्य का मूल्यांकन किया गया। राजधानी दिल्ली में ही 1982 ई. में जनवादी लेखक मंच का पहला राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। इसी से जनवादी आन्दोलन क्रियाशील हुई। इस तरह की कहानी की शुरुआत कहानी सम्राट प्रेमचंद की 'कफन' और 'पूस की रात' कहानियों से मानी गई। इस कहानी परंपरा में समाज के निचले वर्ग जैसे किसानों, मजदूरों, दलितों और असहायों की दयनीय जीवन स्थिति एवं संघर्षों को दर्शाया गया है। जनवादी कहानी की परंपरा का विकास क्रम यशपाल, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त, मार्कण्डेय, भीष्म साहनी, अमरकान्त, शेखर जोशी आदि की कहानियों में परिलक्षित होता है। इस परंपरा को आगे बढ़ाने में ज्ञानरंजन, काशीनाथ सिंह,

रमेश उपाध्याय, रमेश बतरा, हेतु भारद्वाज, नमिता सिंह, असगर वजाहत, धीरेन्द्र अस्थाना, उदय प्रकाश आदि लेखक उल्लेखनीय हैं।

सक्रिय कहानी – इस कहानी आन्दोलन का प्रवर्तन राकेश वत्स ने 1979 ई. में 'मंच' पत्रिका से किया। यह कहानी आन्दोलन मूलत: आदमी को अपनी कमजोरियों से उभारकर सामना करने और मज़बूत बनाने की ओर अग्रसर करता है। इस कहानी आन्दोलन के समर्थकों में रमेश बतरा, चित्रा मुद्गल, सच्चिदानन्द धूमकेतु, सुरेन्द्र सुकुमार, धीरेन्द्र अस्थाना आदि रचनाकारों के नाम प्रमुख हैं। सक्रिय कहानी के बारे में डॉ. रामचन्द्र तिवारी का कहना है कि - "'सक्रिय कहानी' की अवधारणा में 'समांतर कहानी' और 'जनवादी कहानी' की अवधारणाओं को मिला दिया गया है। इस आन्दोलन का प्रभाव भी सीमित ही रहा।"[19]
कहानियों का रूप बदलता गया, जिसके कारण अनेक कहानी आंदोलनों का जन्म हुआ, मगर मानव मन की अस्थिरता के कारण इन आंदोलनों का समय कम होता गया। बदलावों के आने से हिन्दी कथा साहित्य समृद्ध होता चला गया।

आधुनिक काल से हिन्दी कथा साहित्य की शुरुआत हुई। इस काल से गद्य साहित्य का विकास होता गया। 1900 ई. से 1936 ई. तक हिन्दी कहानी ने एक निश्चित काल अवधि तक अपना रूप बदला। फिर प्रेमचन्दोत्तर कहानी के बाद से हिन्दी कहानी के विकास क्रम में विभिन्न आन्दोलनों का रूप देखा गया। इन आन्दोलनों ने हिन्दी कहानी को किसी-न-किसी रूप में समृद्ध किया और प्रवृत्तियों में विविधता का मिश्रण दिया। हालाँकि इन आन्दोलनों की काल अवधि कम रहीं। इन आन्दोलनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक आन्दोलनों में मानव जीवन के विभिन्न संदेर्भों को विभिन्न रूपों में प्रकट किया गया है।

निष्कर्ष

प्रत्येक रचनाकारों ने अपने ढंग से अपने विचारों को प्रस्तुत किया और अपने तरीके को ध्यान केन्द्रित करने के लिए अपने विचारों पर ज़ोर दिया और औरों के समक्ष प्रस्तुत

किया। इन रचनाकारों ने समाज में पनप रहे जीवन मूल्यों को मार्मिक रूप से दर्शाया है। कहानी साहित्य का सफर जादुई तिलिस्म से जीवन के यथार्थ की ओर उन्मुख हुआ, जिसने समाज की प्रवृत्तियों को सामने लाने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। कहानी साहित्य की अन्य विधाओं से अधिक जीवन्त एवं प्रेरणायुक्त होती है। हिन्दी कहानी के विकास क्रम में पत्रिकाओं के महत्त्वपूर्ण योगदान को नहीं भूला जा सकता है।

संदर्भ :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. - 21
2. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृ. सं. - 144
3. डॉ. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ. सं. - 293
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. - 359
5. डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, नयी दिल्ली, 2022, पृ. सं. - 463
6. डॉ. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ. सं. - 292
7. वही, पृ. सं. - 293
8. वही, पृ. सं. - 293
9. वही, पृ. सं. - 293
10. वही, पृ. सं. - 294

11. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृ. सं. - 144
12. डॉ. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ. सं. - 294
13. वही, पृ. सं. - 295
14. वही, पृ. सं. - 300-301
15. वही, पृ. सं. - 302
16. वही, पृ. सं. - 305
17. वही, पृ. सं. - 305
18. वही, पृ. सं. - 306
19. वही, पृ. सं. - 307

तृतीय अध्याय

मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

3.1 लोक तत्व

3.2 समाज और परिवेश

3.3 भारतीय चिंतन बोध

3.4 नारी के विविध रूप

3.5 जीवन मूल्य

तृतीय अध्याय

मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

विषय प्रवेश

कहानी एक लोकप्रिय विधा है। इसका प्रचलन प्राचीन काल से होता आया है। लेकिन गद्य की एक विधा के रूप में इसका अस्तित्व आधुनिक काल 1900 ई. से माना जाता है। साहित्य भाव और विचारों का क्षेत्र है। इसमें प्रत्येक साहित्यकार अपने भावों, विचारों एवं पक्ष को लिखकर दूसरों के समक्ष साझा करता है। इन्हीं कृतियों के भावों एवं विचारों को आत्मसात् कर पाठक या पढ़ने वाला समीक्षा के स्तर पर पहुँच जाता है।

समीक्षा का दूसरा नाम आलोचना है। आलोचना एक साहित्यिक प्रक्रिया है। इसमें कृति के सौन्दर्य का उद्घाटन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया जाता है। सरल शब्दों में कृति के गुण-दोष का विवेचन किया जाता है। साथ ही किसी भी रचना को समझने के लिए रचनाकार के जीवन और उसके परिवेश का अध्ययन करना भी जरूरी होता है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी के अनुसार, “रचना कैसी भी हो वह रचनाकार के व्यक्तित्व तथा उसके परिवेश के दबाव से सर्वथा मुक्त और निरपेक्ष नहीं हो सकती।”[1] साहित्यकार अपने इर्द-गिर्द से कहानी के कथानक की रचना करता है।

हिन्दी आलोचना का आरंभ भारतेंदु युग से ही माना जाता है। आलोचना के मूल में अंतर कर सकनेवाली शक्ति निहित होती है। इसमें खोजबीन विश्लेषण, व्याख्या, परीक्षण आदि क्रियाएँ समाहित होती हैं। बाबू श्यामसुन्दर दास के शब्दों में, “यदि साहित्य जीवन की व्याख्या है तो आलोचना उस व्याख्या की व्याख्या।”[2] साहित्य मानव जीवन का दर्शन होता है। देश की परिस्थिति हो या वातावरण साहित्य में परिलक्षित होता है।

आलोचना पर डॉ. देवराज की परिभाषा दृष्टव्य है, "आलोचना किसी कलाकृति में निबद्ध अनुभूति के विश्लेषण, व्याख्या और मूल्यांकन का प्रयत्न है।"[3] यह अत्यंत सटीक तथा व्यवस्थित परिभाषा है। अतः आलोचना साहित्य के पाठकों, लेखकों आदि को एक नयी चेतना एवं सजग बोध भी देती है और अपने आप में एक मूल्यवान अभिव्यक्ति बन जाती है।

मृदुला सिन्हा का साहित्य वर्तमान संदर्भ के अनुकूल है। इनकी कहानियों में आम जीवन की सच्ची झलक दिखाई देती है। इन्होंने अपने अनुभव को कहानियों का आधार बनाया है, जिसमें साधारण व्यक्ति के जीवन को विविध परिस्थितियों में देखा जा सकता है। इनका साहित्य अनुभूति और भावनात्मकता से भरा हुआ है। उनका दृष्टिकोण सकारात्मक है और वे अपने कार्य के प्रति पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से साहित्य सृजन में रमी हुई हैं। उनके लेखन का मुख्य उद्देश्य समस्या की पहचान कराना और उसके समाधान की ओर उन्मुक्त करना रहा है, जिसमें वह अत्याचार और शोषण के खिलाफ भी जागरूकता लाने की पक्षधर हैं। उनका लेखन कार्य अनेक विधाओं से युक्त है। इन विधाओं में उन्होंने समाज में प्रचलित समस्याओं का परिवेशगत अनुभूतियों और प्रचलित विकृतियों का गहराई से चित्रण किया है। साथ ही नारी जीवन के अनेक पहलुओं को दर्शाया भी है। इनकी नारी कमजोर नहीं होती है, बल्कि यह सशक्त नारी का रूप निर्माण करती है, जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप समस्याओं एवं विपत्तियों का सामना करती है। इनके पुरुष पात्रों में भी आदर्श पुरुषों का रूप भी निखर के सामने आया है जो समाज में नारी की स्थिति को ऊँचा उठाने में पूर्ण सहयोग देते हैं।

साहित्यकार अपनी संवेदना और अनुभवों से आगे बढ़ते हैं, जिसके कारण इनके लेखन में सच्चाई एवं समाज का दर्पण सामने आता है। मृदुला सिन्हा ने भी इन्हीं अनुभवों पर विश्वास रखा है। इसलिए इन्होंने अपनी संवेदनाओं से जुड़े कथानकों का सृजन किया है।

अतः इनका साहित्य इनके जीवन, व्यक्तित्व, ज्ञान, अनुभवों और पारिवारिक दशा से प्रभावित होता है।

मृदुला जी का हिन्दी कहानी के क्षेत्र में आगमन समकालीन हस्तक्षेप के साथ होता है। इन्होंने हिन्दी साहित्य को अपनी कृतियों से समृद्ध बनाया है। प्रारंभिक हिन्दी महिला कथाकारों ने घरेलू नारी के जीवन की त्रासदी एवं यातना का चित्रण किया है जबकि समकालीन महिला कथाकारों ने अपने अनुभव को विस्तार दिया और समाज की दोहरी नैतिकता का पर्दाफाश किया, कामकाजी नारी की दोहरी जिंदगी का यथार्थ रूप दर्शाया, स्त्री-पुरुष संबन्धों की सूक्ष्मताओं को नए रूप में प्रस्तुत किया तथा मानवीय संबंधों के बिखराव से उत्पन्न सूनेपन आदि को कहानी का विषय बनाया। इनके विषय क्षेत्र का विस्तार होता गया और यह सशक्त बनते गए। ममता कालिया के शब्दों में, “हम उचित गर्व कर सकते हैं कि महिला-लेखन अब हिन्दी साहित्य में एक सशक्त उपस्थिति है, सचेत, सतर्क व स्वाभिमानी। यह समूचे हिन्दी जगत के लिए चकित होने का समय है कि महिला-लेखन ने अपनी चमक, दमक और ठसक के साथ आज विश्व पटल पर अपनी जगह बनाई है।”[4] आज महिला लेखन अपनी ऊँचाइयों के साथ प्रगति पथ पर अग्रसर होती जा रही है।

मृदुला जी ऐसी साहित्यकार हैं, जो अपने जीवन को मन-मस्तिष्क से स्पर्श कर कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। वह अपने साहित्य का निर्माण और सृजन करती है। इसमें वह यथार्थ का चयन, विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण को ध्यान में रखकर कहानियों का सृजन करती हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से वह समाज को दिशा प्रदान करती हैं।

3.1 लोक तत्व

लोक समाज का मूल है। यदि आरम्भ में देखे तो वेद और वेदोतर जैसी स्थितियाँ थीं, जिसमें वेदोत्तर परम्परा के पास ही लोक था। लोक को जब वेदोत्तर माना जाने लगा। कालांतर में लोक अपनी संकुचित स्थिति से निकलकर आया और उसकी भावना वैदिक तथा अवैदिक दोनों का स्पर्श करने लगी। अब तो लोक परम्परा का संरक्षक अनुभूति की संवेदनापूर्ण सतत संवाहक माने जाने लगा। जीवन के सभी उपकरणों का समावेश उसमें हो गया है। लोक सामान्य जन का है, इसी कारण वह किसी भी तरह के नियमों से बद्ध नहीं होता है। उसमें सब कुछ स्वच्छन्द एवं सामूहिक है। लोक को इसी रूप में परिभाषित करते हुए डॉ. सत्येन्द्र लिखते हैं, "लोक मानस समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।"[5] इस तरह लोक में प्राचीन परम्पराओं, मान्यताओं, विश्वासों, आस्थाओं को प्रकट किया जाता है, जो सभी के लिए ग्राह्य हो। समान भावना के कारण सब उसे किसी न किसी रूप में उसको ग्रहण कर लेते हैं। लोक न तो कभी व्यतीत होता है और न अप्रासंगिक। वह सदा ही नवीन और प्रतीत बना रहता है।

लोक का सीधा संबंध लोक मानस से है, जो सहज ही वाणी से निकलकर लोक मानस की सरल, निश्चछल एवं अकृत्रिम अभिव्यक्ति ही लोक तत्व में अभिव्यक्त होती रही है। इसी तत्व के माध्यम से समाज का सुख-दुख, हर्ष-उल्लास, संस्कार-परम्परा, आशा-आकांक्षा, आवेग-उद्वेग तथा रीति-रिवाज का समावेश होकर जन-जीवन में प्रवाहित होता आया है। जन-जीवन के अनुभव और आकांक्षा, यथार्थ और कल्पना, प्रेम और उत्सर्ग, मानवीय गरिमा और उदारता, स्वाधीनता और सामूहिकता तथा स्त्री-पुरुष की समानता का मूर्त रूप और

जीवंत संस्कार ही लोक तत्व के प्राण हैं। लोक तत्व हमारी अदम्य और अपराजेय परम्परा की सृजनात्मक अभिव्यक्ति होता है, न कि यादों का अजायबघर। लोक जीवन से ओतप्रोत कहानियाँ ही मृदुला सिन्हा के लेखन की विशेषता है। लोक के प्रति गहरी रुचि एवं आस्था उनके कहानियों को ऊँचाई प्रदान करती है। बद्रीप्रसाद पंचोली के शब्दों में, "मृदुला सिन्हा के साहित्य में उदात्तता भी है और उत्कृष्ट मानवीय संवेदना भी। लोक से उनका असाधारण लगाव है। वाग्भट्ट ने कहा था- आचार्य सर्वचेष्टासु लोक एव हि धीमतः। अर्थात् हमारी चेष्टाओं का आचार्य लोक है। लोक की इस शक्ति से मृदुला जी सुपरिचित हैं।"[6] प्रत्येक मनुष्य के लिए लोक का पहरा होता है। यही लोक हमारे आचरण और व्यवहार को कहीं न कहीं नियंत्रित करते रहते हैं।

लोक जीवन की अभिव्यक्ति

लोक विश्वास लोक जीवन के प्रति आस्था भाव पैदा करता है। इससे जीवन मूल्यों की स्थापना होती है। जीवन मूल्य एवं लोक परम्परा ही मृदुला सिन्हा की कहानियों को सजोने का कार्य करता है। इनकी अधिकतर कहानियाँ लोक की धरातल पर टिकी हुई हैं। मृदुला सिन्हा लोक विदुषी साहित्यकार है। उनकी कहानियों में लोक जीवन की गहरी निष्ठा के दर्शन होते हैं। उन कहानियों में जनदुख से उपजी मनोभावों को दर्शाया गया है। जयश्री रॉय के शब्दों में, "मृदुला जी कहानियों में ग्राम्य जीवन का सौंदर्य, उसके विविध रंग, वहाँ की सरलता और लोक-जीवन अपने संपूर्ण वैभव और जीवंतता के साथ मौजूद हैं।"[7] 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी' कहानी संग्रह की कई कहानियाँ लोक संग्रह के भाव के साथ-साथ भारतीयता को प्रतिष्ठित करती हैं। देश के प्रति अनुराग को प्रतिष्ठित करती हैं। पाश्चात्य समाज से जुड़े रहने के बावजूद स्वदेश एवं स्वदेशी के प्रति निष्ठा रखने की तमाम पहलुओं को बयान करने एवं संजोए रखने की जज़्बात इस संग्रह की विशेषता है। जैसे – "चार बेटों

के बाहर चले जाने पर माँ का अकेली गाँव में रहना पार्वती को अच्छा नहीं लगता। सास के कष्ट से ज्यादा वह लोक-लाज से परेशान रहती है। बार-बार पति को कहती रही, 'लोग क्या कहेंगे?' उसके पति फाइलों में आँखें डुबोए कह देते, 'लोग क्या होता है।'... हमें देखना यह है कि वे जहाँ भी रहें, उनकी सेवा-शुश्रूषा की व्यवस्था करवा दें। वे मनचाही जगह पर रहकर सुखी और हम उनकी सेवा न भी कर पाए तो क्या सेवा-व्यवस्था करके ही संतुष्ट। ... पर पार्वती पति की दलील से संतुष्ट नहीं होती भी। .... कार्तिक महीने में छठ पर्व करने गाँव गई थी। खूब सुनाई थी अड़ोस-पड़ोस की महिलाओं ने। एक निस्संतान प्रौढ़ महिला ने यहाँ तक कह डाला, 'अच्छा हुआ, जो हमारी कोख में बच्चा अंकुराया नहीं। क्या फर्क पड़ता है! बुढ़ापे में क्या बाँझ, क्या पूतोंवाली दोनों का एक ही हाल है। मैं भी अकेली, तुम्हारी सास भी अकेली'।"[8] इस कहानी में एक तरफ लोक जीवन के मूल्यों की प्रतिष्ठा है तो दूसरी तरफ पारिवारिक संबंधों को सहेजने का भावभूमि की उर्वरता।

मृदुला सिन्हा की 'पुनश्च' कहानी भारतीय परम्परा के लोक विश्वास को गहरा करती प्रतीत होती है। भारतीय लोक में ऐसे लोक जीवन के मूल्य परिवार की आस्था को व्यक्त करते हैं – "कई जिंदगियाँ जी हैं सुशीला ने। अपनी, बेटी की, उसकी संतान की। और इस पुनश्च जीने की कामना का ही नाम जीवन है। सुशीला की कामना अक्षय है। मंजूला बाई यह देख सुनकर मगन है। माँ को जाना तो है ही। पर उसने जिंदा रहते ही स्वर्ग की सीढ़ियाँ चढ़ लीं। अपनी परम्परा में चौथी पीढ़ी का दर्शन, जीते जी स्वर्ग की सीढ़ियाँ चढ़ना ही माना जाता रहा है। माँ को यह सुख देने में मंजूला बाई कारक बनी है। उससे ही करुणा और फिर उससे अक्षय है। पर इन तीनों की जड़ स्वयं सुशीला है। इन तीनों पुनश्चर्यों की जड़। निश्चय ही करुणा भी आगे आने वाले पुनश्चयों की जड़ बनेगी।"[9] लोक जीवन में सभी को चौथी

पीढ़ी देखना नसीब नहीं होता है। लोक जीवन से ही समाज पूरा होता है। लेखिका ने इन्हीं लोक जीवन का स्वरूप अपनी कहानियों में प्रकट किया है। डॉ. रामशरण गौड़ के अनुसार, "उनकी (मृदुला) लगभग सभी रचनाओं में स्थान-स्थान पर लोक के दर्शन होते हैं और उनका समाहार लोक को प्रतिबिंबित करता है।"[10] लोक जीवन से ही समाज का विकास होता है।

तीर्थाटन

लोक जीवन में धर्म मनुष्य को जीने की राह दिखाता है एवं भटकाव से बचाता है। अपने-अपने धर्म के अनुसार ही मनुष्य अपने जीवन की गति को निर्धारित करता है। मृदुला सिन्हा धर्म को अपने आचरण से जोड़ती हैं और उसे लोक जीवन में प्रयोग भी करती हैं। जिसमें मानवता एवं अध्यात्म का समावेश हो, परम्पराओं एवं रीतियों का अनुसरण किया गया हो ऐसी कहानीकार हैं मृदुला सिन्हा। इनकी बहुचर्चित कहानी है – 'मुसाफिर काकी'। इसमें काकी की धर्म स्थलों की यात्राओं से लगाव एवं स्नेह को दिखाया गया है। कहानीकार के शब्दों में, "वह तो पर्व-त्योहार पर गंगा स्नान से लेकर मेला-ठेला घूमने-घूमाने में दक्ष हो गई थीं। अयोध्या, मथुरा, काशी, जनकपुर धाम के साथ चारों धामों की यात्रा समाप्त कर गंगा सागर भी हो आई थीं। ... जिन अधवयसा अथवा नवोढ़ा को अपने घरवालों से तीर्थ जाने की अनुमति नहीं मिलती हो वह अपनी अंतिम अस्त्र अपनाती भीं – मैं अकेले थोड़े जा रही हूँ, मुसाफिर काकी के साथ जा रही हूँ।"[11] मुसाफिर काकी जैसी औरतें शहर-शहर घूम कर हर तीर्थ स्थलों का भ्रमण करती हैं और धर्म के प्रति आस्था का प्रतीक बनकर लोक जीवन को प्रतिष्ठित करती है। यही आस्था और विश्वास लोक परम्परा को आगे बढ़ाता है।

धार्मिक प्रवृत्ति मनुष्य की चित्तवृत्ति को सुसंस्कारित बनाता है। धर्म वह है जिसे धारण करना पड़ता है। वह मन के अनुकूल प्रवृत्तियों को माँजती है एवं मनुष्य को मनुष्यत्व के

तरफ अग्रसर करती है। ऐसी विचारधारा रखने वाली कहानी मनुष्य के आस्थावान हृदय से ही निकलती है। लोक आस्था से जुड़ी कहानियों में धार्मिक मूल्यबोध जगह-जगह दिखाई पड़ता है। इसीलिए आज का परिवेश भले ही बदल गया हो; परन्तु आस्था के प्रतीक स्थलों पर प्रवाहित होने वाली श्रद्धा मन को विभोर कर देती है।

व्रत एवं पूजापाठ

लोक जीवन में पूजापाठ एवं व्रत के प्रति आस्था देखी जा सकती है। जन-जीवन में अपने एवं परिवार के सुख-शांति के लिए नित-उपवास एवं आस्था के प्रति श्रद्धा रखते हैं। मृदुला सिन्हा भी जिस परिवेश में पली-बढ़ी उसी परिवेश को ग्रहण किया और अपनी कहानियों में पात्रों के माध्यम से उकेरा भी। उनकी कहानी के पात्र जन-जीवन के संघर्षों का वर्णन तो करते ही हैं साथ-साथ वे लोक परिवेश के धार्मिक आस्था के मूल्यों को भी अपनी जीवन शैली में उतार लेते हैं। उदाहरण – "तीज की साड़ी खरीदने की योजना पर उन्होंने तपाक से कहा था, 'क्या ही अच्छा होता, कि सस्ती-सी साड़ियाँ खरीदकर दस नग्न औरतों का तन ढक दो। मैं सच कहता हूँ, ऐसा करने से तुम्हें जो सुखानुभूति होगी, वह हजार रूपये की साड़ी में लिपटे रहने से नहीं मिल सकती। तुम एक बार ऐसा करके तो देखों। बड़ा आनन्द मिलेगा।"[12] प्रस्तुत उदाहरण बाढ़ की विभीषिका, गरीबी आदि के साथ-साथ धार्मिक मूल्य बोध नजरिए एवं व्रत की परम्परा तथा मानवीयता को भी दर्शाता है, जो लोक तत्व के मुख्य गुण हैं। व्रत के दिन क्या पहनना-खाना चाहिए यह सोचना लोक व्यवहार का अंग है परन्तु 'साक्षात्कार' कहानी का पात्र निज स्वार्थ की अपेक्षा लोक चिंतन को महत्व देता है।

मृदुला सिन्हा अपनी कहानी का परिवेश गाँव एवं लोक से गढ़ती हैं। इसमें आस्था, विश्वास और श्रद्धा का निर्वहन किया गया है। छठ पूजा से लेकर तीज आदि व्रत-त्योहार का

चित्रण करना जीवन मूल्यों की विशेषता है। यह भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा है। मृदुला सिन्हा अपनी कहानियों के द्वारा धार्मिक जीवन के कई मूल्यों को लोक जीवन का हिस्सा बनाते हुए स्थापित किया है। अपने पात्रों एवं उनके संवादों के जरिए मानवीय जीवन की सिद्धहस्त रचना कौशल को मजबूत बनाया है। समाज को एक नई दृष्टिकोण प्रदान किया है।

लोक-जीवन बनाम जीव-जन्तु

लोक जीवन में पशुत्व प्रेम का महत्व भी बहुत ज्यादा देखने को मिल जाता है। पशु-पक्षी भी मनुष्य से उतना ही प्रेम करते हैं, जितना मनुष्य उनसे करता है। उनसे कहीं ज्यादा वे भी मनुष्य को चाहने लगते हैं। यह लोक जीवन की विशेषता है। मृदुला सिन्हा ने लोक परिवेश के इन महत्वपूर्ण पहलुओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। उनकी कहानियों में लोक अध्यात्म का संगम को दिखाना उनकी लोकधर्मिता और पौराणिक पात्रों की आधुनिक सृष्टि ही है। 'अनशन' कहानी इसका मुख्य उदाहरण है। इस कहानी में बेचू अपने ही घर में अपनी बेटी द्वारा गाय को कसाई को बेचने की बात को सुनता है तो वह विकल हो जाता है। वह इस विरह को झेल नहीं पाता और प्रायश्चित करने के लिए अपनी जान की बाजी लगा देता है। बेचन(बेचू) के शब्दों में, "बेटी तुने यह क्या कर दिया, मेरी जिन्दगी ही कितनी थी, दोनों साथ-साथ चले जाते, उसे कसाई के हाथ सौपने की क्या जरूरत थी? लेकिन सखिया से यह छुपा न रह सका था कि उसका बापू मर्माहट हो गया है। उसका दिल कचोटता रहता कि कसाई के हाथ गाय बेचकर उसने कितना बुरा किया था। गाय को किसी दूसरे के हाथ बेचने से शायद बापू को इतनी गहरी चोट न लगी होती। ... सखिया के लाख आग्रह के बावजूद, बेचू ने आज भी कुछ नहीं खाया। बछिया के पास खाट खींचकर वह चुपचाप औधें मुँह पड़ गया।"[13] लोक में आज भी गाय को माता या कहें पूजा

जाता है। उसी विचार के चलते बेचू भी अपनी गाय से प्रेम करने लगता है। पर जब उसे पता चला कि गाय को कसाई को बेचा जा चुका है तो वह इस पाप का प्रायश्चित अनशन द्वारा अपने प्राणों की बलि देकर पूरा करता है।

3.2 समाज और परिवेश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर अनेक क्रिया कलाप करता है। इन्हीं क्रियाकलापों में वह अन्य लोगों के संपर्क में आता है और रिश्तों के बंधन में बँध जाता है। इन्हीं रिश्तों के परिवेश में मनुष्य घिरता जाता है। मनुष्य अकेला पैदा होता है, लेकिन परिवार में वह माँ-बाप, भाई-बहन आदि के बीच पलता-बढ़ता है। अपने आस-पड़ोस तथा विस्तृत जगत के संपर्क में भी आता है। जिस तरह मानव का अपने परिवार के लोगों के साथ संबंध होता है वैसे ही उसका संबंध अपने चारों ओर के प्राकृतिक, सामाजिक, राजनीतिक वातावरण से भी होता है। अतः चारों ओर के इस वातावरण को परिवेश कहा जाता है। भारतीय समाज बहुत पुराना समाज है। इसने प्राचीन काल से ही रिश्तों और समाज को महत्त्वपूर्ण माना है। डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली के शब्दों में, “भारतीय समाज मानवीय रिश्तों का समाज है। अनजान से अनजान व्यक्ति को भी व्यक्ति किसी रिश्ते में बाँधकर पुकारता है, यथा- बहन! सुनना। भैया! रुको। बेटी गलत काम नहीं करना है। काका! भीख मत माँगों, धंधा करो, आदि-आदि। सब रिश्ते परिवार में पनपते हैं। इसी प्रक्रिया से विश्वकुटुंब की भावना साकार होती है।”[14] विश्व को एक परिवार में समेटने के लिए मानवीय रिश्तों के जीवंत साथ की आवश्यकता होती है। मृदुला सिन्हा मानवीय सम्बन्धों को अपनी कहानियों में उकेरती हैं। वह समाज के निर्माण और कल्याण में स्त्री को श्रेय देती हैं। लेखिका स्त्री को विशेष मानती हैं। किरन पोपकर के शब्दों में, “समाज संरचना में वह स्त्री को सबसे ऊँचा

स्थान प्रदान कर और उसे मानवी के रूप प्रतिष्ठित करती हैं।"[15] इससे स्पष्ट होता है कि समाज संरचना में स्त्री की अहम भूमिका होती है और इस बात को लेखिका ने खूब पहचाना और प्रतिष्ठित भी किया है।

बुनियादी रिश्ते –

हर समाज की बुनियाद परिवार से ही बनती है। परिवार में एकता बनाए रखने के लिए परिवार के हर सदस्य को अपना योगदान देना पड़ता है। मृदुला सिन्हा ने सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीतिक क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया है। उन्होंने समाज को अनेक रूपों में देखा और समझा है। अपने इन्हीं अनुभवों से उन्होंने कहानी साहित्य को समृद्ध किया और समाज की अनेक समस्याओं एवं विसंगतियों को नजदीक से देखा, परखा, विचार-विमर्श किया तथा उनके हल ढूँढने का सदैव प्रयास भी किया। व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के आधार पर कहानी विधा को एक नई नजरिया प्रदान की। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि उनके साहित्य में जीवन का हर एक अनुभव देखने को मिलता है। इनकी रचनाएँ सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का प्रतिफल कहा जा सकता है। 'पेंटिंग के बहाने' कहानी अनामिका और अनमोल के सहजीवन के सम्बन्ध को प्रस्तुत करती है। आज के दौड़ में हर घर में दिखाई देने वाली कहानी है। दिल्ली जैसे बड़े शहर में दोनों पति-पत्नी ने मिलकर एक फ्लैट लिया था। दोनों ने मिलकर घर खरीदने के लिए हर कोशिश की। जैसे – अनामिका ने घर में काम करने वाली बाई को हटा दिया, अनमोल ने अपना स्कूटर बेच दिया, सिगरेट पीना छोड़ दिया। अनामिका ने तीन वर्षों तक एक नई साड़ी नहीं खरीदी। अनमोल के माता-पिता गाँव में रहते थे। उनके पत्र लगातार आ रहे थे; परंतु अनामिका को इन पत्रों के बारे में अनमोल के साथ बात करने का मौका ही नहीं मिल रहा

था। बाबू जी के आखिरी पत्र के बारे में अनामिका अनमोल से बताने ही वाली थी कि बाबू जी आर्थिक मदद करने हेतु दिल्ली आने वाले हैं। उतने में एक दिन सुबह दोनों आ गए।

एक दिन अनमोल दफ्तर से बहुत ही उत्साहित होकर लौटा परन्तु घर आते ही उसका उत्साह कम हो गया। पत्नी ने कारण पूछा तो उसने बताया कि उसका एक मित्र जो अमेरिका में रहता है वह इंडिया आया है और उसके पेंटिंग को उसने अमेरिका की एक पत्रिका में भेजी थी, उसे पुरस्कार भी मिला। उसी खुशी में उसके सभी मित्र दूसरे दिन उसके घर आने वाले थे। माँ-बाबू जी के सोने की समस्या थी। दोनों को कुछ समझ नहीं आ रहा था। अनमोल की माँ बहू और बेटे की सारी बातें सुन लेती है। दूसरे दिन सुबह दोनों ने गाँव वापस जाने की बात कही। बेटे और बहू को साश्चर्य प्रसन्नता हुई। शाम को अनमोल के मित्र घर आए। सभी ने बहुत आनंद उठाया। सब बहुत खुश थे। पाँच दिन बाद बाबू जी का पत्र आया, "हम दोनों तुम्हारे जैसे बेटा पाकर गौरवान्वित हैं। तुम्हारे कमरे में लगी पेंटिंग हमें भी बहुत पसंद आई। चलो, अब तो अमेरिका ने भी पसंद कर ली।"[16] इस कहानी की हर घटना में पति-पत्नी एवं माता-पिता के बीच का सामंजस्य भी दिखाई देता है। एक परिवार तभी खुश रह सकता है, जब परिवार के हर सदस्य के बीच सामंजस्य की भावना विद्यमान हो। हर एक की भावना का सम्मान करना ही परिवार की खुशी का रहस्य हो सकता है। सोनिया सिरसाट के शब्दों में, "मृदुला सिन्हा के मतानुसार समाज की नींव सामंजस्य पर टिकी हुई है। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को समझने का प्रयास करे तो अनेक गलतफहमियाँ होने से बच सकती हैं, अनेक रिश्ते और परिवार टूटने से बच सकते हैं।"[17] यदि प्रत्येक व्यक्ति में सामंजस्य का गुण समाहित हो जाए तो कोई रिश्ते या परिवार की टूटने की गुंजाइश नहीं होगी।

‘टिफिन बॉक्स’ एक ऐसी महिला की कहानी है जिन्होंने अपने रसोईघर के माध्यम से परिवार को जोड़ रखा है। यह परिवार किसी समूह से कम नहीं जिसमें 20-25 लोग रहते हैं। इस परिवार की मुख्य सदस्य भी संतोष जी है। सुबह छः बजे से ही लग जाती संतोष जी बच्चें और मर्दों के टिफिन भरने के काम में। हर एक की रुचि की भिन्नता का वह खूब सम्मान करती थी। टिफिन वह इस प्रकार भरती मानों अपने भगवान का शृंगार कर रही हो। यह सिलसिला लगातार पच्चीस वर्षों तक चलता रहा। उन्होंने अपनी बहू को भी उस कार्य में प्रवीण बनाया था। पर धीरे-धीरे टिफिन की संख्या कम होती गई। बच्चे बड़े होते गए और टिफिन कम होता गया। कहानीकार के शब्दों में – “बड़े मकान में सज रही एक बड़े हृदय वाली महिला का भव्य व्यक्तित्व मुझे बड़ा आकर्षित करता था।”[18] संतोष जी का परिवार आज की इस चकाचौंध भरी दुनिया पर आकर्षित हो गया था। सब देश-विदेश में जा बसे थे। संतोष जी भी अमेरिका हो आई थी। उन्हें इस बात का बड़ा दुख था कि अमेरिका के घरों में खाना बहुत ही कम बनता था। ज्यादात्तर खाना बाहर से ही मंगवाया जाता था। वहाँ का वातावरण और खान-पान को लेकर वह बहुत चिंतित थी। आज हमारे देश कि भी हालत भी बदल गई है। होटलों की संख्या बढ़ रही है और घरों में खाना खाने वालों की संख्या कम हो रही है। इस आधुनिक चकाचौंध में संतोष जी के जीवन में खालीपन आ गया है। वे अपने जीवन से उब सी गई हैं। यह कहानी मनुष्य के मर्म को छू जाती है। आज भी समाज में पायी जाने वाली यह एक बड़ी दुखद बात है कि आधुनिकता और स्वयं की सुविधा के लिए निस्वार्थ प्रेम का गला घोट दिया जाता है। संतोष जी का जीवन-चरित्र देखकर लगता है कि उन्होंने जो अपने जीवन काल में परिवार के लोगों को दिया उसके बदले उन्हें जीवन के अंतिम समय में दुख ही मिला। ऐसी घटनाएँ हमारे आस-पास कई सारे प्रश्न लिए खड़ी रहती है।

दाम्पत्य जीवन और मजबूत रिश्तों की मार्मिक कहानी है 'औलाद के निकाह पर'। यह कहानी साइदा और उसके शौहर के जीवन एवं आत्मीय प्रेम से जुड़ी हुई कहानी है। इस कहानी के माध्यम से रिश्तों की मजबूत बुनियाद और समाज में कैसे साम्प्रदायिकता के अनेक अच्छे पहलुओं को उभारा गया है। हिन्दू-मुस्लिम का आत्मीय प्रेम और एक दूसरे के धर्मों का सम्मान इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है। कहानी की मुख्य पात्र साइदा जिसने चार बेटियाँ पैदा होने पर भी कभी प्रताणित नहीं हुई और हमेशा अपने पति से सम्मान एवं प्यार चाहती रही। साइदा के शब्दों में, "मेरा मुख मलीन होते नहीं देखना चाहते हैं। उन्हीं के कारण मैं सुबह-सुबह उठ पाती हूँ; वरना खटिया पर पड़ी रहती। मेरी कमर में बड़ा दर्द रहता है। जवानी में ही सिनेमा देखकर लौटते समय रिक्शा से गिर गई थी। आज तक वह दर्द नहीं गया। हर सुबह सेठ जी मेरी कमर की मालिश करते हैं, तभी मैं उठ पाती हूँ। ....आप लोगों की दुआ सलामत रहे। ऊ कहते हैं कि सकीना विदा हो जाएगी तो क्या, हम तो हैं। हम ही खाना बना देंगे। चिंता मत करो। मियाँ-बीवी के जीवन में औलाद तो बरखा-बाढ़ की तरह आती है, जाती है। मियाँ-बीवी से गृहस्थी शुरू होती है, मियाँ-बीवी पर ही रुक जाती है। रोना मत। सकीना के रुखसत पर भी नहीं।"[19] इस कहानी के माध्यम से यह बात सामने आती है कि विवाह संस्था जिसे निम्न वर्ग के लोगों ने सुविधाओं के न होने के बावजूद एक-दूसरे की समझदारी से कायम रखा है, वहीं उच्च वर्ग में विवाह संस्था कमजोर पड़ती दिखाई देती है।

निम्न वर्ग का संघर्ष

आज की युवा पीढ़ी में सामंजस्य न होने के कारण उनमें आए दिन झगड़े होते रहते हैं और बात-बात पर रिश्ता तोड़ने की बुनियादी फैसले लिए जाते रहे हैं। कई बार तो आपसी मतभेद दोनों को एक-दूसरे के सामने झुकने से मना करती है। 'परामर्श' कहानी में लक्ष्मी

अपने सामंजस्य के द्वारा सहजीवन का एक बड़ा सबक दे जाती है। लोगों के घरों में चौका-बर्तन करने वाली लक्ष्मी भी अपने पति के अनेक अत्याचारों को सहते हुए उसी के साथ रहती है। जहाँ वह काम करती है वहाँ की मेयर साहिबा उसे समझाती हुई कहती है कि जब तुम्हारा पति शराब पीकर घर आता है, मारता-पीटता है फिर भी वह उसे कानूनी सजा क्यों नहीं देना चाहती? मेयर साहिबा की बात सुनकर लक्ष्मी कहती हैं – "मेमसाहब! इतनी सी बात मैं भी जानती हूँ। मेरे मुहल्ले में भी अपने मर्दों को छोड़कर बहुत सी औरतें रहती हैं। परन्तु यह मर्द उनसे अलग है! वे सब कमाते हैं, खाते हैं, एक नहीं, दो-दो, तीन-तीन मेहरियाँ रखते हैं। मेरा मर्द तो न दो पैसा कमा सकता, न दो रोटी बना सकता है। न किसी दूसरी औरत ने इसकी ओर आज तक आँख उठाकर भी देखा है। फिर उसे कैसे छोड़ दूँ? किस पर छोड़ दूँ? वह तो जिन्दा ही नहीं रह पाएगा।"[20] लक्ष्मी के इस वाक्य में कितनी गहराई छिपी है। पति-पत्नी का रिश्ता एक-दूसरे के प्रति लगाव, प्रेम, विश्वास और खिंचाव का होता है। तलाक का एक कागज उस मजबूत रिश्ते को नहीं तोड़ सकता। इस कहानी के माध्यम से विवाह संस्था की नींव की मजबूती को एक साधारण काम करने वाली साधारण महिला के श्रेष्ठ विचारों के माध्यम से दर्शाया गया है। मृदुला सिन्हा वर्तमान समय में विवाह संस्था की कमजोर हो रही बुनियाद को देख इस प्रकार के उदाहरणों से अपने विचार रखने का सफल प्रयास करती है और समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं।

आज जहाँ हम देखते हैं कि छोटी-छोटी बात को लेकर आपस में तनाव आ जाता है। वहीं सहजीवन का पूरा अर्थ एक अनपढ़ अच्छी तरीके से समझता और उसे निभाता भी है। आज की पीढ़ी सहजीवन और रिश्तों की परिभाषा ही नहीं समझती। मानवीय रिश्ते ही समाज एवं परिवार के आधार स्तंभ होते हैं। एक-दूसरे के प्रति कर्तव्यों को समझकर उसका पालन करना चाहिए। 'अक्षरा' कहानी इसका प्रमुख उदाहरण है। यह कहानी एक चौका-

बर्तन करने वाली सुखिया नामक मजदूर औरत के दुख-दर्द को बयाँ करती है। सुखिया को माँ बनने की बड़ी चाहत है; परन्तु ईश्वर ने जैसे उससे उसका माँ बनने का हक छीन लिया है। उसकी सास बार-बार उसे बाँझ कहते हुए उसे दुख पहुँचाने का कोई मौका नहीं छोड़ती। उसकी भतीजी रेशमा उसके दुख को देखकर अपने बेटे पप्पू को उसकी गोद में डाल देती है। सुखिया पप्पू का बड़े लाड़-प्यार से लालन-पालन करती है। यह एक मजदूर औरत की कहानी है। यह कहानी मजदूरों के जीवन की वास्तविकता को बयां करती है। मजदूरों को एक समय का खाना भी ठीक से नहीं मिलता। सुखिया का माँ न बनना उसकी शारीरिक कमजोरी ही है। लेखिका इस कहानी में मजदूर वर्ग की समस्याओं के साथ-साथ आधुनिक संस्कृति की चक्का-चौंध और उससे प्रभावित जीवन शैली को पप्पू के माध्यम से दर्शाती है। पप्पू बड़ा होने के बाद जब नौकरी करने के लिए द्वारका चला जाता है और वहीं पर बस जाता है। पप्पू के शब्दों में, "अब मैं देवकी और यशोदा के चक्कर में नहीं पड़ूँगा। मुझे नौकरी मिल गई है। इसलिए मैं द्वारिका में ही रहूँगा।"[21] आज समाज में पप्पू जैसे लड़कों की कोई कमी नहीं है। सुखिया ने उसे कितना लाड़-प्यार से पाला था जबकि वह उसकी भतीजी का बेटा है। फिर भी बेटे की चाह में रिश्ते की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई भी सुखिया ने। परन्तु पप्पू के माध्यम से देवकी, यशोदा और द्वारका का आपसी संबंध नए संदर्भों में ज्ञात होता है। जहाँ स्वार्थ और स्वयं का महत्व तो है परन्तु रिश्तों की कोई अहमियत नहीं है।

वृद्धावस्था की अभिव्यक्ति

मनुष्य जीवन पाँच अवस्थाओं से गुजरता है। शैशव, बाल्य, किशोर, युवा और वृद्धावस्था। मानव जीवन की यह त्रासदी है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक की उपयुक्त पाँचों अवस्थाओं के लिए वह स्वयं जिम्मेदार है। वृद्धावस्था मानव जीवन का एक ऐसा मोड़ है जिसपर मनुष्य के पास अनुभवों का खजाना होता है। परन्तु मनुष्य का बुढ़ापा जैसे-जैसे नजदीक आता है वैसे-वैसे उसे अपना जीवन नीरस लगने लगता है। वह अपने आप को

बेकार और समाज से उपेक्षित समझने लगता है। कुछ वृद्ध अपने वृद्धावस्था को हँसी-खुशी बिताते हैं। हमारे देश की संस्कृति बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाती है। घर में बुजुर्गों का होना सुख, शांति, चैन और समृद्धि का होना है। वर्तमान समय में माता-पिता को घर से निकाल दिया जाता है। अपने स्वार्थ के लिए बूढ़े माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेज दिया जाता है। आज के युवा पीढ़ी को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि एक न एक दिन उन्हें भी इस अवस्था से गुजरना है। युवावर्ग को वृद्धों का अनुभव और अपने ज्ञान का संगम बनाकर नवनिर्माण करना चाहिए। इतिहास के पन्नों पर ऐसे कितने सारे बुजुर्ग हैं जिन्होंने अपने अनुभव और उच्च विचारों के माध्यम से नवपीढ़ी को असाधारण मार्गदर्शन किया है। परन्तु दुख इस बात का है कि आज कि युवापीढ़ी वृद्धों से किसी प्रकार का मार्गदर्शन लेना ही नहीं चाहती।

शायद वृद्धावस्था की इसी मार्मिकता को समझने-समझाने के लिए मृदुला सिन्हा ने कुछ कहानियों को गढ़ा है। इन कहानियों के माध्यम से यह बताने का प्रयास करती है जिससे आज के युवा पीढ़ी अनभिज्ञ है। 'काश! ऐसा नहीं हुआ होता' कहानी के मुख्य पात्र देवेन्द्रजी वृद्धावस्था की ओर झुके है और उनका शरीर उनका साथ नहीं देता। परन्तु अपने बेटे और बहू के साथ रहना वे अपने आत्मसम्मान की हानि मानते हैं। बार-बार बीमार पड़ने के कारण पड़ोसी उन्हें समझाते हैं कि वे अपने बेटे-बहू के पास रहने के लिए जाएँ ताकि उन्हें किसी न किसी का साथ जरूर मिलेगा। बहू कल्पना के साथ रहते समय देवेन्द्र जी की जिद के कारण ही उनके प्राण चले जाते हैं। बहू कल्पना एक छोटे बच्चे की तरह उनका ख्याल रखती है। परन्तु देवेन्द्र जी को रिश्ते-नाते में अपने आत्मसम्मान को ही महत्व देना था जो उनके मृत्यु का कारण बना।

इस कहानी के दूसरे पात्र सुशील कुमार अपनी पत्नी और चार बेटों के साथ खुशी-खुशी रहते थे। चारों बेटों के लिए अलग-अलग कमरे सारी आधुनिक सुविधाओं के साथ बनवाए

थे। चार बेटे-बहू एवं पोते-पोतियों से भरा उनका परिवार हँसता-खेलता था कि इसी बीच सुशील जी की पत्नी का देहान्त हो गया और पूरा परिवार बिखर गया। कारण, सारे बच्चे अलग-अलग शहरों में जा बसे। इतने बड़े मकान में रहने पर अकेलापन उन्हें काटने को दौड़ता। मोहल्लेवाले भी अब उनकी देखभाल नहीं कर पाते और उन्हें वृद्धाश्रम भेज देते है। जब तक बेटों की माँ जीवित थी वे आते-जाते रहते थे, लेकिन अब उनका आना-जाना ऐसे बंद हो गया मानों उनके पालने पोसने में पिता की कोई भूमिका ही नहीं थी। सुशील जी को वृद्धाश्रम भेजने के पश्चात पड़ोसियों ने जैसे राहत की साँस ली, पर उस मोहल्ले के अन्य वृद्ध लोग अपने अस्तित्व को लेकर चिंतित हो गए। "सुशील बाबू को वृद्धाश्रम भेज कर मुहल्ले वाले भी निश्चिंत हुए थे। पर उस मुहल्ले में रह रहे बुजुर्गों की आँखों के आगे चारों पहल वृद्धाश्रम का सपना आने लगा था।"[22] प्रस्तुत कहानी और उसके पात्रों के चरित्र को देख हम कह सकते हैं कि समाज में एक तरफ कल्पना जैसी बहुएँ हैं जो अपने ससुर की अपने संतान की तरह देखभाल करती हैं। दूसरी तरफ ऐसी बहुएँ हैं जो विवाह होते ही सास-ससुर को अपने वैवाहिक जीवन का रोड़ा समझने लगती हैं और उन्हीं के कारण उनको वृद्धाश्रम का रास्ता अपनाना पड़ता है।

इसी प्रकार की एक और कहानी है – अपना जीवन। इस कहानी में बेटा हर्ष अपनी माँ को दर्द नहीं देना चाहता, परन्तु माँ अपनी पोती में ही जब अपनी व्यस्तता देखने का प्रयास करती है। तब अंजाने में ही हर्ष माँ को यह कहते हुए दुखी कर देता है कि वे उसे अपना जीवन जीने दे – "माँ हमें अपना जीवन अपनी तरह से जीने दीजिए। आप लोग अपना जीवन जीएँ।"[23] वृद्धावस्था एक ऐसी अवस्था है जिसमें मनुष्य अपना बचपन ढूँढ़ने लगता है। मन अधिक भावुक होने के कारण छोटी-छोटी बातें भी इनके दिल को घायल करती है। अपने ही बेटे से दुत्कार मिलने के बाद वह अपने जीवन में छिपा हर्ष ढूँढ़ने का प्रयास करती हैं।

‘खोए जीवन की खोज’ कहानी में जब बेटा माँ को अपने जीवन में अपना ही खोया हुआ जीवन ढूँढने के लिए कहता है तब सर्वप्रथम अनुराधा को बहुत बुरा लगता है, क्योंकि उसका जीवन तो उसके पति के गुजरने के बाद अपने बेटे तक ही सीमित रह गया था। वह अपने खोए जीवन की खोज कहाँ से करेंगी। परन्तु कई बार देखा गया है कि शारीरिक तौर पर अपने आप को कमजोर दिखने वाले वृद्ध समय आने पर वज्र से भी कठिन हो जाते हैं। जैसे कि अनुराधा ने बेटे की दुत्कार के बाद असल में अपने जीवन को खोजना आरंभ किया, “बत्तीस वर्ष पूर्व वह साथी गुजर गया था जिससे साथ जीवन जीने के लिए अग्नि के सात फेरे साथ-साथ लिए थे। पति के चिता की अग्नि भी शांत नहीं हुई थी। अपनी कोख में पल रहे सात महीने के शिशु को उसने तत्काल जन्म दे दिया था। क्या करती, जीने के लिए पति या उसके अंश का साथ तो चाहिए ही था। ... समीर के पालन-पोषण में पति का संग-साथ भूल गई थी। उसने पूरी जिन्दगी समर्पित कर दी थी उसे। उसके लिए जीना भर भी जिन्दगी। शायद यही भूल थी उसकी। चंद पल पूर्व सज्ञान बनी अनुराधा के पाँव बेटे द्वारा खरीदे पचास लाख के फ्लैट के टाइल्स लगे जमीन पर मानों धँस रहे थे। वजनदार जो हो गए थे। दरवाजे से माँ के बाहर होने तक का इंतजार किया था समीर ने। ... अनुराधा के निकलते ही दरवाजा जोरों से बंद हुआ। बाहर बैठी अनुराधा के लिए अपनी खोई हुई जिन्दगी खोजने के सिवा बचा ही क्या था।”[24] माता-पिता को जब सबसे ज्यादा बेटे-बहू की जरूरत होती है, तब उसे या तो वृद्धाश्रम छोड़ देते हैं या उन्हें अकेले घर में उनकी हालात पर । जब वह स्वयं उसी अवस्था में पहुँच जाते हैं तब माता-पिता का दुख समझ में आता है। नियत का फेर मनुष्य को फिर से वहीं लाकर खड़ा करता है जहाँ से उसने शुरुआत की होती है।

कन्या जन्मोत्सव बनाम कन्या भ्रूण हत्या

आज बालकों की तुलना में बालिकाओं की संख्या का घटते जाना संस्कारी समाज, स्वयंसेवी संगठनों और चिंतनशील व्यक्तियों की चिंतन का कारण बन रहा है। कन्या भ्रूण हत्या ही इसका कारण माना जा रहा है। कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए गर्भ की जाँच कराने के विरुद्ध कानून बने हैं। उनके कारगर न होने पर उन्हें सख्त बनाने के लिए संशोधन हुए; परन्तु यह बुराई रुकने का नाम नहीं ले रही। बेटी के प्रति समाज की सोच को बदलने की आवश्यकता है। संविधान, शिक्षा और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बेटा-बेटी को बराबर करके देखा जा रहा है। आज बेटी जल, थल और नभ में विचरण कर रही है फिर भी बेटी को बोझ समझा जाता है। रीति-रिवाज, त्योहार और परम्पराएँ समाज का अक्स बनती हैं। रीति-रिवाज और त्योहारों में ही बेटा-बेटी में भेद हैं। कुछ स्थानों पर आज भी कन्या जन्म पर खुशियाँ नहीं मनाई जाती है। मृदुला सिन्हा एक साक्षात्कार के माध्यम से अपने जन्म के विषय में एक प्रश्न समाज के सामने रखती है। उनका मानना है कि लड़कियों को बहुत पीछे रखा जाता है। बीते बचपन के बारे में पूछे जाने पर बताती हैं, “मैं लड़की हूँ भैया से अलग। इस अनुभूति का खट्टा-मिट्ठा स्वाद जिह्वा पर तैरता आया है। उस समय जब समय के हिसाब का खाका नन्हें मानस पर अंकित भी नहीं हुआ था। दादी और माँ ने कहना प्रारंभ कर दिया था, तू लड़की है लड़की। ऐसा नहीं करते, वैसा नहीं करते। मैं उनकी परवाह किए बिना वैसा बहुत कुछ करती रहती जो उनके द्वारा वर्जित था। इन हरकतों के लिए मैं नहीं कुछ हद तक मेरे पिता जिम्मेदार थे। उन्होंने उन सारी लक्ष्मण रेखा को पार करवाया था, जिन्हें लाँघने की हिम्मत मेरी बड़ी बहनें और हमउम्र सखियों ने कभी नहीं की।” इन सारी बातों से एक संदेश समाज को जाता है कि लड़कियों को अवश्य शिक्षित करना चाहिए। वे भी गर्व का अनुभव करवा सकती हैं।

पुरुष द्वारा पत्नी के गर्भ की जाँच कराना और यदि गर्भ में कन्या अथवा बालिका भ्रूण आता हैं तो गर्भ को समाप्त करना सामाजिक रिवाज बन गया है। अधिकांशतः स्त्रियाँ इसका प्रायश्चित आत्महत्या के रूप में भी करती हैं। सामाजिक संदर्भों में यदि कोई मूल स्त्री-पुरुष किसी से भी हो, तो उसकी सजा स्त्री को ही भुगतनी पड़ती है। लेखिका ने अपनी कहानियों में नारी जीवन की सार्थकता, सुरक्षा के अंतर्गत गरिमामयी विचार प्रस्तुत किए हैं, जैसे – नारी देवी है, साधना है, वह भोग्या नहीं है। उसके ऋण से पुरुष भी, उऋण नहीं हो सकता। नारी सिर्फ फूल नहीं अपितु चिंगारी भी है। लेखिका भ्रूण बालिका परीक्षण व हत्या से लेकर उसके कुपोषण, अशिक्षा तक में एक सीमा तक स्त्री को ही जिम्मेदार मानती हैं। लेखिका संघर्षशील नारी को आधार बनाकर स्त्री स्वरूप को जाग्रत कर समय रहते मातृत्व को बचाने की बात करती हैं। चिंतन के साथ आगे बढ़ने से ही समाधान निकलेगा।

भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में लिंग असमानता आज भी व्याप्त है। पितृसतात्मक समाज की मानसिकता आज भी मन मस्तिष्क पर अंकित हैं। लैंगिक समानता को जिन शब्दों के द्वारा परिभाषित किया गया है, उनके मायने कुछ इस प्रकार है – 'लिंग एक सामाजिक-सांस्कृतिक शब्द है जिसे सामाजिक परिभाषा से संबंधित करके महिला-पुरुष के कार्यों और व्यवहारों से परिभाषित किया जाता है। पितृसतात्मक व्यवस्था अपनी वैधता और स्वीकृति हर तरह से हर तरीके से थोपती आई है फिर चाहे कोई भी धर्म, समाज या संस्कृति क्यों न हो।' परिणामस्वरूप मृदुला सिन्हा भी स्त्री-पुरुष समानता तक सीमित न रहकर तथा आधुनिकता के नाम पर भारतीय संस्कृति की उपेक्षा न करके आधुनिकता और संस्कृति की पक्षधर हैं। उन्होंने स्त्री शोषण का सबसे मुख्य कारण पितृसतात्मक समाज एवं स्वयं स्त्री को भी माना है परन्तु इस व्यवस्था में वह समझौता करने के लिए आक्रोश के स्थान पर समझदारी का सहारा लेती हैं। लेखिका स्त्री की स्थिति को दर्शाते हुए कहती हैं कि

वह चिंगारी तो बने; परन्तु अपने मूल रूप का त्याग कभी न करें। उसे प्रीत की रक्षा हेतु अपने मूल कर्त्तव्यों का दायित्व निभाना पड़ेगा।

3.3 भारतीय चिंतन बोध

भारतीय चिंतन बोध के विकास का प्रारम्भ भारत में आर्यों के आगमन से माना जाता है। ऋग्वेद के अनुसार आर्यों का समाज पितृप्रधान था। धर्म एवं कर्मकाण्ड का प्रभाव समय के साथ बढ़ा। अत्यधिक उपजाऊ भूमि में कृषि का विस्तार हुआ और व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला। इसके कारण समाज में एक प्रभावशाली व्यापारिक वर्ग का उदय हुआ। कृषि उद्योग एवं अन्य कलाओं से जुड़ी नई जातियाँ बनने लगी। सामाजिक विकास के साथ-साथ राजनैतिक विकास होने लगा। उस समय जो राजनैतिक व्यवस्था थी उसकी अपनी विशेषता थी जो उसे पाश्चात्य चिंतन से अलग करती है। ये विशेषताएँ तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक कारणों से प्रभावित थी। उस समय भारत में राजनीति तथा उसके सिद्धांतों का विकास धर्म के एक सिद्धान्त के रूप में हुआ था। भारत में राजनीति में आत्मा का विकास एवं मानव के सर्वांगीण विकास पर बल दिया गया। भारतीय चिंतन में माना गया कि जीवन का मूल उद्देश्य आत्मा का विकास करना है। जीवन इस उद्देश्य की प्राप्ति का साधन मात्र है। भारतीय चिंतन की एक विशेषता यह भी है कि वह राज्य को आवश्यक संस्था मानती है। जीवन के तीन लक्ष्यों – धर्म, अर्थ और काम की राज्य के बिना प्राप्ति संभव नहीं है। यह न केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है, वरन आत्मिक विकास का माध्यम भी है। भारतीय चिंतन आदर्शवादी तो है, परन्तु इसमें कहीं भी व्यक्तिवाद की झलक नहीं मिलती है। राज्य न केवल व्यक्तियों की रक्षा करेगा, वरन उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा और नैतिकता के मार्ग पर प्रेरित कर अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वातावरण उपलब्ध कराएगा।

भारतीय चिंतन का मानना है कि मानव में आसुरी शक्तियों की प्रधानता होती है। अतः उनको नियंत्रित करने के लिए दण्ड की आवश्यकता होती है। भारतीय चिंतन में कठोर दण्ड का प्रावधान है जिससे समाज में संदेश जाए और अन्य लोग कानून तोड़ने से बचे। भारतीय चिंतन आदर्शवादी न होकर व्यावहारिक है। भारतीय चिंतन में यूनानी विचारकों की तरह कल्पना का अभाव है। प्रत्येक देश की राजनीतिक व्यवस्था वहाँ की सामाजिक व्यवस्था की देन होती है। भारतीय चिंतन प्रणाली में भी देखा गया है कि यहाँ सामाजिक व्यवस्था का व्यापक प्रभाव राजनीतिक व्यवस्था पर है। भारतीय चिंतन बोध में परम्परा एवं नेतृत्व के स्तर पर वैश्विक क्षमता विद्यमान है। मृदुला सिन्हा भारतीय चिंतन बोध की संवाहिका हैं। उनके कहानियों में भारतीय चिंतन प्रणाली के आख्यान यदा-कदा बिखरे पड़े हैं। ‘अनावरण’ कहानी में प्रातः कालीन संस्कार एवं अकस्मात मुँह से निकला श्लोक इस बात का प्रणाम है। जैसे – “कराग्रे वसते लक्ष्मी:, करमध्ये सरस्वती:, करमूले तु गोविन्दं प्रभाते करदर्शनम।”[25] भारतीय चिंतन की आधार शिला ही वेद, पुराण आदि से माना जाता है। प्रस्तुत उदाहरण इस बात की ओर संकेत करता है कि पात्रों के माध्यम से इस तरह का परिवेश गढ़कर लेखिका भारतीय चिंतन की पोषक हैं। ऐसा वातावरण मानव को संबल प्रदान करता है और जीवन जीने की राह दिखाता है।

मृदुला सिन्हा की कहानियाँ मानव जीवन की राह दिखाती हैं। इन कहानियों में जीवन मूल्य एवं भारतीयता का पक्ष भारतीय चिंतन बोध का प्रमाण है। जीवन बोध से ओतप्रोत पात्रों में सजीवता का संचार कर भारतीय चिंतन बोध को मजबूती प्रदान करती हैं। ‘दाई बीघा जमीन’ मृदुला सिन्हा की प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में मातृभूमि के प्रति आदर एवं सम्मान का भाव प्रस्तुत हुआ है जो भारतीय दर्शन को व्याख्यायित करता है, “बार-बार आई बाढ़ ने हमारी जमीन उपजाऊ बना दी है। जमीन सोना उगलती है। हमारे बच्चे भी

खुशहाल हैं। शहर की नौकरी तो ताड़ की छाँव है, आज है तो कल नहीं। पुश्तैनी जमीन तो माँ के बराबर होती है, जिसकी छाया सिर से कभी नहीं हरती। संतान के सुखी जीवन से माँ भले ही दूर हो जाए, दुर्दिन में संजीवनी बन खड़ी होती है।"[26] प्रस्तुत कहानी लोक जीवन को अपने अंदर समेटे हुए है। कहानी के पात्र और उसके संवाद की आपसी तालमेल कहानीकार की विचारधर्मिता को प्रस्तुत करता है। इसकी पृष्ठभूमि सार्थक संदेश देती है, जो भारतीय चिंतन बोध से ओत-प्रोत है।

सांस्कृतिक चेतना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। समाज में रहकर वह संस्कृति का निर्वाह करता है। संस्कृति से ही सभ्य समाज का निर्माण संभव होता है। इसलिए जनता में सांस्कृतिक चेतना का विकास होना चाहिए। साहित्य में भी सांस्कृतिक चेतना एक आवश्यक तत्व है। साहित्य में किसी-न-किसी रूप में संस्कृति विद्यमान होती है या यूँ कहें कि संस्कृति का रूप झलकता है। समाज और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। संस्कृति का दूसरा रूप मानवीय मूल्यों में समाहित है। अंजुलता सारस्वत के शब्दों में, "भारतीय संस्कृति में सर्वोच्च स्थान मूल्यों का है। दया, क्षमा, शांति, सहृदयता, उदारता, प्रेम, सौहार्द, बंधुत्व आदि उदात्त मूल्य ही हमारी संस्कृति को विश्व मंच पर खड़ा करते हैं।"[27] इन्हीं मूल्यों से संचित जीवन ही हमारी संस्कृति है।

लोक संस्कृति ही भारतीय संस्कृति है। मृदुला जी भारतीय संस्कृति के प्रति असीम निष्ठा रखती हैं। इसलिए उनकी अधिकांश कहानियों में भारतीय जीवन की गरिमा मुखरित होती है। इस प्रकार की कहानियों में एक है 'उधार का सूरज'। इस कहानी में प्रकाश अमेरिका में नौकरी करता है और उसकी माँ भारत में गाँव में रहती है। माँ को बेटे की बहुत

याद आती है। पर खुद न जाकर अपनी स्त्री मित्र शिवानी को माँ के पास भेज देता है। शिवानी को देखकर माँ कहती है, "अरे बिटिया! आदमी के संग-साथ के लिए तरस गई हूँ मैं। गाय, बकरी और तोता के साथ बोल बोलकर थक गई। मैं ही बोलती जाती हूँ। ये जवाब देने का नाम नहीं लेते।"[28] माँ के अकेलेपन और पालतू जानवरों के प्रति माँ का प्रेम व लगाव और संग साथ को दर्शाया गया है। शिवानी माँ को अपने साथ अमेरिका में प्रकाश के पास चलने के लिए कहती है। इस पर माँ कहती है, "ना, बेटी! मैं ना जाऊँ कहीं। मैं तो इसी धरती पर... गला रुँध गया उनका। फिर कहती है – इस आठ कोठरी की हवेली में मैं अकेली बची हूँ। मैं चली जाऊँ तो साँझ-बत्ती भी कौन देगा?"[29] माँ की बातों से साफ-साफ पता चलता है उन्हें अपनी संस्कृति से कितना लगाव है। अमेरिका जैसे विकसित देश में जाने की उन्हें कोई चाह है न लालच जबकि उन्हें बेटे से मिलने की बहुत उत्सुकता थी। माँ को शिवानी बहुत पसंद आती है और बहू के रूप में उसकी स्वीकारता पत्र के माध्यम से बेटे से कहती है। शिवानी भी शादी के लिए मान जाती पर प्रकाश के सामने एक शर्त रखती है और वह शर्त है- "इंडिया लौटने की शर्त। आठ कमरों के उस वीरान घर में दिया जलाने की शर्त। अँधेरे में औंधी पड़ी माँ के आँचल में प्रकाश लौटाने की शर्त। प्रकाश की जरूरत तो अब इंडिया को है, अमरीका को नहीं। पूरब को उसका सूरज लौटाने की शर्त। पश्चिम पर ऋण है पूरब का। सूरज को लौटाकर पश्चिम को ऋण-मुक्त कराने की शर्त।"[30] इस कहानी में लेखिका ने भारतीय संस्कृति की प्रशंसा की है और संदेश निहित किया कि भारतीय नौजवानों को पढ़-लिखकर विदेश में जाने की जरूरत नहीं है। उन्हें अपने देश की सेवा सर्वोपरि रखना चाहिए।

मृदुला सिन्हा की कहानियों में सांस्कृतिक चेतना परिलक्षित होती है। इन्होंने भारतीय संस्कृति को आधार बनाकर ही साहित्य का सृजन किया है। प्रत्येक मानव का अपनी संस्कृति

से अटूट रिश्ता होता है। भले ही वह कभी-कभी उसे पहचान नहीं पाता लेकिन हालात और परिस्थितियाँ उसे मजबूर कर देती हैं अपनी संस्कृति की ओर लौटने के लिए। लेखिका ने ऐसे ही परिस्थिति पर आधारित 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी' कहानी में दर्शाया है। भरत अमेरिका में पढ़-लिखकर वहीं नौकरी करता है। उसके माता-पिता उसकी शादी एक गुजराती लड़की से कर देते है। भरत को यह शादी रास नहीं आया। क्योंकि वह जिस दुनिया में रह रहा था उसमें अपनी पत्नी रोमिला को बिलकुल नहीं समा पा रहा था। पत्नी का त्याग करता है लेकिन चार साल बाद वह पुनः लौट आता है। भारतीय संस्कृति की ओर उसका झुकाव भारी पड़ जाता है। उसके लौटने पर कोई पहचान नहीं पाता है, “किसी ने भरत के अपने पास आ जाने तक नहीं पहचाना। रोमा से टकराकर उसे पीछे छोड़ आगे बढ़े भरत ने झुककर माता-पिता और ससुर के पाँव छुए। कुछ क्षणों के लिए उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। वे सब उसका रूप निहारते रह गए। भरे-भरे शरीर पर चूड़ीदार पाजामा, सिल्क का कुरता और सिल्क का जैकेट। रूप निरख भरत की माँ की आँखों से अविरल धार बह चली।”[31] जबकि उसके पिता को लगा था कि भरत अंग्रेजी वेशभूषा में आएगा, “वे भरत कि आकृति, रूप-रंग नजरों में समाए उसके प्रकट होने की राह देखने लगे। उनका अनुमान था कि भरत अत्याधुनिक अमेरिकन रूप-रंग में सजा होगा।”[32] भरत की सोच ही नहीं पूरा पहनावा भी भारतीय बन गया था। झुककर माता-पिता और ससुर के पाँव छूना यह सब भारतीय संस्कार की ही पहचान है। बचपन में जो संस्कार मिले थे उन्हीं का निर्वाह और कदर करना सीख गया। भारतीय पहनावे में भारतीय संस्कार से युक्त बेटे को देखकर माँ की आँखों से खुशी के आँसू बह चली है। भारतीय संस्कार की जीत होती है। उमेश चंद्र शुक्ल के अनुसार, “भारतीय संस्कृति और संस्कारों से संस्कारित समाज प्रगति के

राजमार्ग पर दीर्घकाल तक गति कर सकता है।"[33] क्योंकि संस्कृति और संस्कार भारतीय समाज को विशेष एवं सुव्यवस्थित बनाते हैं।

संस्कृति त्योहारों से पूर्ण होती है। भारत में अनेक प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं। पूरी श्रद्धा, सम्मान और निष्ठा के साथ त्योहारों को मनाया जाता है। मृदुला सिन्हा ने भी अपनी कहानियों में त्योहारों के रंग भरे हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानियों में से एक है 'एक दीये की दिवाली'। यह कहानी गणेश नाम के लड़के पर आधारित है, जो गाँव से दिल्ली शहर में किसी के घर काम करने के लिए रहता है। उसे शहर में रहे छः महीने हो गए फिर भी दिल्ली जैसे शरह से ज्यादा वह गाँव में रह रही अपनी माँ से यादों में बँधा रहा। गणेश अपनी मालकिन को मम्मी कहता है। गणेश को मम्मी के हाथ से बना खीर से ज्यादा अपनी माँ का बनाया हुआ खीर ही स्वादिष्ट लगता है। भले ही वह खीर एक पाव दूध और दो लीटर पानी में ही बनायी गई हो। गणेश के शब्दों में होली के दिन उसकी माँ के हाथ का बना खीर के बारे में, "मम्मी ....अ...अ! हमरो माय खीर बन बइत रहे। बड़ा मीठ। मुँह से न छूटे। हे हमर बाबू...अ... खूब खाइत रहे खीर। पूरा थाली भर के। हे...अ...अ फगुआ (होली) के दिन-भर थाली खीर देलक हमर माय हे...अ...अ...अ।"[34] गणेश की मम्मी को अच्छी तरह से पता है कि गणेश की माँ की खीर और उसके खीर में अंतर तो होगा ही लेकिन गणेश के लिए उसकी माँ की खीर से बढ़कर कोई खीर है ही नहीं। गणेश गाँव का गरीब लड़का है फिर भी उसे दिल्ली शहर की चकाचौंध, अच्छे पकवान या अच्छे घर मोहित नहीं कर पाता है। भारत की राजधानी दिल्ली में मनाई जाने वाली दिवाली के आगे हर गाँव की दिवाली फीकी तो होगी ही। लेकिन गणेश के लिए तो उसकी माँ की एक दीये की दिवाली ही सबसे बड़ी दिवाली है। "करोड़ों रुपए फूँककर मनाई दिल्लीवालों की दीपावली के नीचे उसकी माय की दीया-बत्ती कितनी छोटी पड़ी थी, इसका न आश्चर्य, न गम था मुझे। उसकी स्थिति

देखकर गम था तो उसकी 'माय' का मम्मी के आगे छोटी पड़ने का। मैं कभी नहीं चाहती थी, उसकी माय मम्मी से पराजित हो जाए। गणेश की माय तो माय थी। उसके लिए अपराजिता। उसने एक दीये की दीपावली मनाई तो क्या...!"[35] गणेश की एक दीये की दिवाली भारी पड़ गई दिल्ली वालों की दिवाली से। उसने एक दीये से ही सही दिवाली तो मनाई है।

'सात राखियाँ' भाई-बहन के त्योहार रक्षाबंधन पर आधारित मृदुला जी की कहानी है। इससे भाई-बहन के रिश्ते के बंधन को सजीवता मिलती है। इस कहानी में सुखवीर कौर अपने सातों भाइयों के लिए राखी बनाती और उनके कलाइयों पर बाँधती है, "जब से होश संभाला तब से पर्व-त्योहारों में राखी ही उन्हें मनभावन लगता था। लगता भी क्यों नहीं, सात भाइयों की इकलौती बहन जो थीं।"[36] भाइयों के लिए मरते दम तक राखी बनाती रही। उसके दोनों बेटों के शादी के बाद भी सुखवीर वाहे गुरु से यह दुआ माँगती है कि "परिवार नियोजन और महँगाई के जमाने में दो ही बच्चे होने चाहिए। मेरे बच्चों के एक लड़का एक लड़की देना, ताकि राखी मनती रहे।"[37] यहाँ लेखिका सुखवीर के माध्यम से अपनी दिल की बात कहती हुई प्रतीत होती है।

ऐसे ही भाई-बहन से जुड़ी त्योहार पर लिखी गई मृदुला जी की कहानी 'भैया दूज' है। इस कहानी में मंगलसिंह अपनी बहन सुमंगला को बहुत प्यार और दुलार करता है। बहन के द्वारा कोई शैतानी हो भी जाए तब भी मंगलसिंह अपनी बहन के साथ ही खाना खाता है। गाँव में स्कूल न होने के कारण उसने बहन के लिए मास्टर रखा। उसकी शादी भी एक शिक्षक से करवाया, जो शहर के हाई स्कूल में पढ़ाता है। वकालत पढ़ रहे फुफेरे देवर के बातों में आकार सुमंगला ने अपने भाई से जायदाद में हिस्सा माँग लेती है। सुमंगला की

शादी को छः महीने ही हुए थे। उसकी शादी में मंगल सिंह द्वारा लिए गए कर्ज भी अभी पूरा चुकता नहीं हुआ था। फिर भी औकात से कहीं अधिक खर्च किया। फिर सुमंगला की ओर से उसका जायदाद में हिस्सा माँगने की खबर गाँव में फैल जाती है। जिसने भी खबर सुनी सबके सब ने सुमंगला के पति को ही दोषी ठहराया। मंगलसिंह कोर्ट-कचहरी के बाहर ही सुलह करना चाहता था। इसलिए सुमंगला को बुलाया गया। सुमंगला अपने भाई के यहाँ न ठहर कर चरित्तर काका के यहाँ ठहरती है। पर संयोग से वह दिन भैया दूज का दिन होता है। सुमंगला को एहसास हो जाता है कि वह गलत कर रही है। उसी दिन उसने भैया के संग भैया-दूज मनाई। दोनों के बीच का संवाद दृष्टव्य है,

"भाई : बाबा के संपत्तिया गे बहिनी
आधा देवउ गे बांट।
बहन : बाबा के संपत्तिया हो भैया
तोहरे बाढ़ौ हो राज।
हम दूर देशी हो भैया
सिन्दूरवा केरा हो आस।"[38]

इस संवाद से स्पष्ट है कि सुमंगला के मन में अब कोई लालच नहीं है। अब तो केवल भाई के लिए प्यार ही प्यार भर गया। भाई-बहन के त्योहार ने पुनः भाई-बहन को दिल से मिला लिया। एक बहन का भैया से जायदाद में अपना हिस्सा माँगने की कथा है, लेकिन भाई-बहन के प्यार के आगे यह माँग छोटा पड़ गया।

इन त्योहारों के अलावा एक त्योहार का जिक्र मृदुला सिन्हा ने 'साक्षात्कार' कहानी में किया है। हालाँकि यह कहानी बाढ़ पीड़ितों की कहानी है। इस कहानी में बाढ़ की विभीषिका का वर्णन किया गया है। इस कहानी में ऐसा प्रतीत होता है कि शायद लेखिका

ही इस कहानी की नायिका है। बाढ़ पीड़ितों की सेवा सत्कार के लिए लेखिका व उनके पति और कुछ लोग जाते हैं। लेखिका ने तीज की साड़ी पहनी है। क्योंकि तीज का दिन है और व्रत भी रखा है, "उफ! कितनी प्यारी मेरी साड़ी थी। मैंने बेकार ही उसे पहन लिया था। उस दिन मेरा व्रत था, तीज का नयी साड़ी कैसे न पहनती।"[39] यहाँ लेखिका बाढ़ पीड़ितों से मिलने और उन्हें खिचड़ी, रुपया और कपड़े बाँटने के लिए जा रही है, जिसके लिए नाव पर बैठकर जाना है और बैठने की जगह की समस्या थी। फिर भी लेखिका व्रत रखते हुए गई और उसने जो फटा हाल भारतीय औरतों का देखा था उससे वह बहुत दुखी होती भी हैं। घर लौटने के बाद भी पति के द्वारा तीज की साड़ी पर प्रशंसा सुनने पर भी लेखिका ध्यान मग्न है उन नग्न औरतों को अपनी तीज की साड़ी भी पहनाने के लिए। इस कहानी के माध्यम से गाँव की बदहाली तथा गरीबी से साक्षात्कार होता है। भूख का चित्रण भी हुआ है। मृदुला जी ने भारतीय संस्कृति को उजागर करने के लिए लोक संस्कृति के परिवेश में अपनी कहानियों को बुना है। अंजुलता सारस्वत के शब्दों में, "संस्कृति संपूर्ण जीवन को परिमार्जित व परिष्कृत करनेवाली आचार पद्धति है।"[40] अतः लेखिका ने भारतीय संस्कृति के समस्त अवयवों जैसे लोक कथा, लोक नृत्य, लोक गीत, त्योहार, मेले आदि को दर्शाने की कोशिश की है, जो हमें ग्रामीण जीवन के समस्त क्रियाकलापों से अवगत कराने में सहायक सिद्ध होते हैं।

भारतीय संस्कृति से जुड़ा एक महत्त्वपूर्ण अंग है पशु पालन एवं उनका महत्त्व। भारतीय ग्रामीण जीवन में पालतू पशुओं का बड़ा महत्त्व होता है। लेखिका मृदुला सिन्हा ने भी अपनी कहानियों में पशुओं की महत्ता को दर्शाया है। इन्होंने अपनी पहली कहानी संग्रह की कहानी 'अनशन' में गौ हत्या का विरोध किया है। इस कहानी में सखिया पिता बेचन की अनुपस्थिति में बीमार गाय को कसाई के पास बेच देती है। बेचन को बहुत दुःख होता है।

बेटी से कहता है, "बेटी, तूने यह क्या कर दिया, मेरी जिन्दगी ही कितनी थी, दोनों साथ-साथ चले जाते, उसे कसाई के हाथ सौंपने की क्या जरूरत थी?"[41] जब से बेटी ने गाय को कसाई के पास बेचा था तब से बेचू अनशन पर था। पूरे आठ दिन के अनशन के बाद बेचू मर जाता है। इससे पता चलता है कि बेचू अपने गाय के प्रति समर्पित है। गाय के प्रति लगाव और प्रेम भाव को अनशन के द्वारा बेचू ने साफ दर्शाया है।

लेखिका की पशु से संबन्धित एक और कहानी है 'पेट'। इस कहानी में भूख का चित्रण भी है। इस कहानी में दो त्योहारों का जिक्र हुआ है। एक दीपावली के आगमन की तैयारी और दूसरा डहरा जानवरों का त्योहार, जिसे दीवाली के दो दिन बाद मनाया जाता है। इस त्योहार में जानवरों के लिए रस्सियाँ बांटी और गले की घंटियाँ खरीदी जाती हैं। 'पेट' कहानी भैंस पालने वाले एक परिवार की कहानी है। भैंस के कारण उनकी जिन्दगी काफी हद तक सँवर चुकीं थी। भगवंती के शब्दों में, "जमीन भी तो इसी के नानी और माँ की कमाई है। दूध बेच-बेच कर ही हम पेट पालते रहे। लोग कहते है कि हम भैंस पालते हैं। सच तो यह है कि भैंस हमें पालती है।"[42] अपने पालतू जानवर के प्रति भगवंती कृतज्ञ हो रही है। लेकिन इस कहानी का मूल स्वर पेट यानि भूख है। इनकी तीन भैंसें जंगल से वापस नहीं आती हैं। इन्हें ढूँढने के लिए शिवा जंगल गया लेकिन जिंदा वापस नहीं आया। मनुष्य को अपना पेट भरने के लिए कुछ न कुछ काम तो करना ही पड़ता है। भैंसें तो वापस मिल गए पर बेटा को हमेशा के लिए चेथरू मंडल ने खो दिया। अब खुद के पेट के लिए इन भैंसों को पालते जाना हैं। जयश्री रॉय के शब्दों में, "पेट' कहानी में जहाँ भूख की विभीषिका का करुण चित्रण हुआ है, वहीं भारतीय संस्कृति में पशु के महत्व और मनुष्य जीवन से उनके गहरे

जुड़ाव और अंतर्संबंधों का भी अद्भुत वर्णन हुआ है।"[43] भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण भाग पशु पालन है। यही ग्रामीण लोगों की पहचान भी हैं।

लेखिका स्वयं गाँव की मिट्टी में जन्मी व पली बढ़ी हुई है। इसलिए गाँव के परिवेश से अच्छी तरह वाकिफ है। तभी तो उनके कहानियों में ग्रामीण परिवेश अधिक मात्रा में पाई जाती हैं। बद्रीप्रसाद पंचोली के शब्दों में, "मृदुला जी ने भारतीय गाँवों, गाँवों के संस्कारों, गाँव की भाषा, ग्रामीणों की सरल प्रकृति को अच्छी तरह समझा है, सराहा है और रुचि पूर्वक चित्रित किया है।"[44] भारत की सच्ची पहचान उसकी परंपरागत भारतीय संस्कार में निहित है, जो आज भी गाँवों में जीवित है।

3.4 नारी के विविध रूप

हिन्दी साहित्य में वर्षों से नारी विमर्श की चर्चा हो रही है। यह चर्चा खास तौर पर कहानियों एवं उपन्यासों में ज्यादातर दिखाई पड़ती है। 'विमर्श' मनुष्य के विचारों को चिंतन, मनन और प्रासंगिक विषयों पर चर्चा करने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी विषय पर विचार-विमर्श साहित्य की आवश्यकता है। किसी भी समाज के सुसंस्कृत होने का प्रमाण उस समाज की नारी से होता है। नारी मुक्ति का अर्थ यह कतई नहीं कि उसे पुरुष के विरोध में खड़ा किया जाए। नारी मुक्ति का अर्थ मात्र यह है कि उसे वह सम्मान दिया जाए जो उसे मिलना चाहिए। नारी सही अर्थों में निम्न गुणों से परिपूर्ण होती है। जैसे – 'एक पत्नी प्रत्येक कार्यों में मंत्री के समान सलाह देने वाली, सेवा में दासी के समान काम करने वाली, भोजन कराने में माता के समान, शयन के समय रम्भा के समान सुख देने वाली, धर्म के अनुकूल तथा क्षमा जैसे गुणों को धारण करने में पृथ्वी के समान।' नारी में मात्र गुण ही होते

हैं ऐसा नहीं है बल्कि उनमें अवगुण भी होते हैं, जैसे – झूठ, चंचलता, माया, भय, छल, अविवेक एवं निर्दयता आदि। समाज को बनाने में नारी के योगदान को पुरुष द्वारा सम्मान मिलना चाहिए। यही सही अर्थों में नारी विमर्श का कारण है।

किसी भी सभ्य समाज का अथवा संस्कृति की अवस्था का सही आकलन उस समाज की स्त्रियों की स्थिति के आकलन से किया जाता है। पुरुष समाज में स्त्रियों की स्थिति एक जैसी नहीं रही है। साहित्य और समाज दोनों जगह सबसे ज्यादा चर्चित नारी ही रही हैं। स्त्री को हमेशा से केन्द्र में रखकर ही बातें की गई हैं। साहित्य एवं समाज भले ही बदलता रहा परन्तु स्त्री की स्थिति आज भी कुछ हद तक जस का तस है। कथा साहित्य में पात्र विश्लेषण की अहम भूमिका होती है। विशेषतः कहानी का पात्र अपने-अपने स्तर पर अपनी भूमिकाएँ निभाता है। कहानी में शिल्पगत चमत्कार हो या न हो किन्तु पात्रों के निरूपण का योगदान प्रमुख होता है। विघटित होते जा रहे जीवन मूल्य, सामाजिक, आर्थिक धरातल के स्त्री पात्रों का निरूपण मृदुला सिन्हा के रोम-रोम में बसा है। विघटित होते जा रहे मानव जीवन को लेखिका ने पूर्ण यथार्थ और संवेदना के साथ अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। मानव स्वभाव और समस्याओं को उन्होंने गहराई से देखा, परखा और परिवर्तित होती चेतना को विविध संदर्भों में अनुभव किया। इनकी कहानियों के पात्र व्यक्ति इकाई के रूप में समाज से पृथक नहीं हैं, अपितु समाज को अपने में आत्मसात करने वाले मनुष्य के रूप में चित्रित है।

स्त्री पात्र निरूपण

स्त्री पात्र निरूपण के भाव और प्रश्न उनकी प्रत्येक कहानी में दिखाई पड़ते हैं। पात्रों के जीवन की विविधताओं, उनके मार्मिक प्रसंगों तथा समस्याओं को दिखाने या चित्रित करने के लिए ही पात्र निरूपण करना आवश्यक हो जाता है। जीवन का कोई भी मर्मांतक क्षण या

अर्थ पूरित घटना और प्रसंग कहानी को एक तंत्र में बाँधता है। इस तरह उसमें कई तरह के नए-नए प्रयोग भी झलकते हैं। कहानीकार का अनुभव व उसकी संवेदनाएँ ही प्रमुख मनी जाती हैं। परंतु कभी-कभी इन संभावनाओं को दर्शाने के लिए पात्रों का सहारा भी लेना पड़ता है, "अगर कहानी का ढाँचा बार-बार और इतनी तेजी के साथ टूट-टूटकर बदल रहा है तो इसका करण यही है कि कलाकार का अनुभव कलाकार से बड़ा होता है। कलाकार का कोई ईश्वर नहीं होता। कलाकार का ईश्वर उसका अनुभव होता है। जिसे प्रतिष्ठित करने के लिए वह उसके अनुरूप मंदिर की रचना करता है।"[45] लेखिका ने स्त्री पात्रों के द्वारा विविध चित्रों को प्रस्तुत किया है। कहानी 'अनावरण' इसका प्रमुख उदाहरण है। इस कहानी में माँ का वाह्य और अंतर्मन दोनों एक साथ दिखाई पड़ता है। इसमें माँ का चरित्र और प्रकृति का परिचय मिलता है। स्त्री के मातृत्व के वर्तमान अनुभव से गुजरना और पूरी शक्ति से उसे जीना कहानी में जीवंत हुआ है। उदाहरणार्थ – "कोर्ट में दूध का दूध और पानी का पानी भले न हो, हमारी माँ जी तो घर में दूध का दूध और पानी का पानी ही कहती और करती भीं। बेटे को बहुत प्यार करती थीं, पर मेरी दूसरी बेटी के जन्म पर बेटे की एक नहीं सुनी। मेरे पति की इच्छा थी कि मैं दो बच्चों के बाद ऑपरेशन नहीं करवाऊँ, तीसरा बच्चा पैदा करूँ। पर मेरी माँ जी अड़ गई, क्या कहा, तीसरा बच्चा? क्यों? इसलिए कि ये दोनों बेटियाँ हैं? क्या बेटी, क्या बेटा? प्रभाती भी तो बेटी ही है। अब क्या अंतर है। हमारे समय में अंतर था। बेटा बाहर के लिए, बेटी अंदर के लिए थी। अब तो दोनों बाहर-भीतर कर रहे हैं। फिर बेटी क्या और बेटा क्या? और बच्चा पैदा करना क्या आसान है? कोर्ट में बहस करने जानेवाली बहू और कितने बच्चे पैदा करे?"[46] भारतीय समाज में नारी की नियति पुरुष (बेटा) संतान जनने के लिए भी रही है। पुरुष प्रधान समाज ने यह झूठ प्रचारित कर रखा था कि बेटा-बेटी

जनने की जिम्मेदार स्त्री होती है। इसी झूठ के आधार पर पुरुष को पहली पत्नी के रहते दूसरा विवाह करने का बहाना मिल जाता है। कहानी 'अनावरण' इसका प्रमाण है। मृदुला सिन्हा समाज की इस स्थिति को प्रस्तुत करते हुए स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति सजगता के साथ सामना करने और बेटा-बेटी में अंतर न करने की सलाह प्रस्तुत करती हैं।

वर्तमान दौर में कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन का साधन बनकर रह गई हैं। वे मनोरंजन के लिए ही पढ़ी और सुनी जाती हैं। आज मनोरंजन ही उसकी सार्थकता और सफलता बनकर रह गया है। स्वतंत्रता के पश्चात कहानियों में शिल्पगत प्रधानता ही अधिक मात्रा में देखी गई है। कहानी में उसकी कथावस्तु के अनुरूप शिल्पगत प्रधानता आवश्यक है। उससे अधिक उसमें कथ्य तथा भाव-प्रवणता आवश्यक है। लेखिका ने अपनी कहानियों में शिल्प के साथ-साथ प्रतीकात्मकता का भी निरूपण किया है। 'औलाद के निकाह पर' कहानी इस बात को प्रमाणित करती है – "मैंने कहा, भाग जाओ। अम्मा आ रही होगी। मेरे साथ तुम्हें भी मार लगेगी। थोड़ी देर रुका। जाते-जाते पीछे मुड़-मुड़कर देखता था। मुझे उसपर रहम आ गई। दरअसल रहम की डोर से ही उससे जुड़ी। मैं उसे जाते देखती रही। उसने मुझे दस रुपए दिए। मुझे कभी किसी ने दस रूपए नहीं दिए थे। दस रूपए के नोट ने भी उससे मेरी डोर जोड़ दी। उससे मिलना मुझे अच्छा लगा। पर वह भी कोई मुलाकात थी। मुझे उसकी याद के साथ रसगुल्ले की हाँड़ी की याद आ गई। मुँह में पानी भर आया।"[47] प्रस्तुत उदाहरण में स्त्री का संवेदनशील स्वरूप प्रस्तुत हुआ है। वह इतनी कोमल और सहृदय है कि कुछ थोड़े समय में ही किसी के मोहपाश में बंधती चली जाती है। लेखिका ने मुख्य रूप से स्त्री पात्रों के द्वारा उसके विविध रूप प्रस्तुत किए हैं। नारी की नियति में आबद्ध जीवन स्थितियों को दर्शाया है। इनकी कहानियों में नारी वर्ग को मानसिकता की सही समझ प्राप्त होती है। भारतीय समाज में उपस्थित जो चरित्र इन्होंने उठाए हैं वे आज के परिवेश में यथावत उपस्थित हैं।

मृदुला सिन्हा की कहानियों में स्त्रियाँ स्नेह,त्याग, ममता व समर्पण के मूल्यों को न केवल स्थापित करती हैं। बल्कि उन मूल्यों के लिए स्वयं को न्योछावर भी कर देती हैं।

स्त्री विमर्श का सही स्वरूप 'बेनाम रिश्ता' नामक कहानी में देखने को मिलता है। मृदुला सिन्हा की यह बहुत ही चर्चित कहानी है। इस कहानी के पात्र शालीग्राम जी को दिल की बीमारी ने घेर लिया था। उनके दिल ने काम करना बंद कर दिया था और वह अस्पताल में भर्ती हो गए थे। शालीग्राम जी जब अस्पताल में थे तभी चित्रा जी अपने पति को दुर्घटनाग्रस्त लेकर उसी वार्ड में आई। चित्रा जी के पति के मस्तिष्क ने काम करना बंद कर दिया था। डॉक्टरों का कहना था कि अगर किसी का धड़कता हुआ दिल शालीग्राम को प्रत्यारोपण कर दिया जाए तो इनके प्राण बच सकते हैं। चित्रा जी ने अपने पति का हृदय दान कर शालीग्राम को पुनर्जीवित किया था। शालीग्राम जी के बेटी के विवाह में कन्यादान करने की जब बात आई तो शालीग्राम जी ने चित्रा जी को आमंत्रित किया – "शालीग्राम जी ने ऊँची आवाज में कहा – चित्रा जी! आप इधर आइए। मंडप पर बैठिए। मेरी बेटी को आपका विशेष आशीर्वाद चाहिए।"[48] भारतीय समाज में विशेष रूप से गाँवों में विधवा औरत को किसी भी शुभ कार्यों में शरीक नहीं किया जाता है। शालीग्राम जी द्वारा चित्रा जी के बारे में सब जानकर परिवार और रिश्तेदार को यह बात माननी पड़ी। शालीग्राम की पत्नी माला खुद चित्रा जी को लेकर मंडप तक आती है, "माला मंडप पर से उठी। सीधे चित्रा जी के पास पहुँची। पैर छूकर आशीष लिए। और हाथ पकड़कर मंडप पर ले आई। महिलाओं के झुंड ने आँसू पोछकर गाना प्रारंभ किया – शुभ हो शुभ, आज मंगल का दिन है, शुभ हो शुभ। शुभ बोलू अम्मा, शुभ बोलू पापा, शुभ नगरी के लोग सब, शुभ हो शुभ।"[49] प्रस्तुत कहानी में जो त्याग और समर्पण देखने को मिला वह भारतीय समाज में देखने की गुंजाइश है। यही मृदुला सिन्हा की कहानी कला है और स्त्री विमर्श का सकारात्मक दृष्टि। यह कहानी

इंसान का इंसान के साथ इंसानियत का नाता दिखाती है। आजकल की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में किसी को किसी की तरफ देखने के लिए समय ही नहीं है। दूसरों की समस्याओं को देख उन्हें सुलझाने या उनकी मदद करने में कोई दिलचस्पी नहीं है। लोगों का कारवाँ आता-जाता रहता है। कोई किसी के लिए रुकना नहीं चाहता। ऐसे में चित्रा जी जैसे लोग समाज में एक आदर्श रख जाते हैं।

सशक्त नारी की अभिव्यक्ति

हिन्दी के साहित्यकार, कवि, कहानीकार अनेक लोगों ने नारी को अपने साहित्य में उच्च स्थान दिया है। साहित्यकारों ने नारी को दीन, करुणामय दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हिन्दी साहित्य में नारी की नियति पर गंभीरतापूर्वक विचार किया गया है। नारी के जीवन को सर्व रूप से दर्शाया गया है। नारी के हर तरह के दर्द को गहराई के साथ दिखाने में साहित्यकार सफल भी हुए है। परिवार समाज का एक प्रमुख भाग है। नारी पारिवारिक रिश्तों को निभाने में अपना जीवन लगा देती है। परंतु अंत में उसे निराशा का सामना करना पड़ता है। विवाह पूर्व वह माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के अधीन रहकर कभी आदर-सत्कार तो कभी घृणा पाती है एवं विवाह के बाद अपने ससुराल वालों से। मृदुला सिन्हा ने स्त्री को हर तरफ से विकसित दिखाया है। इनके यहाँ स्त्री स्वतंत्र विचार रखते हुए अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं अस्तित्व स्थापित करती है। मृदुला सिन्हा की स्त्री अबला नहीं सबला है जो परिस्थिति के सामने घुटने नहीं टेकती बल्कि उस समस्याओं का सामना करती है एवं उससे निपटने के समाधान ढूँढ़ती है।

'जैसे उड़ि जहाज को पंछी' नामक कहानी रोमिला नामक पात्र के दाम्पत्य जीवन से जुड़ी है। रोमिला ने दसवीं तक की पढ़ाई अपने गाँव में रहकर की थी। बी.ए. की पढ़ाई के लिए उसे बड़ौदा जाना पड़ा, जहाँ से उसने उच्च शिक्षा प्राप्त की। कहानी का दूसरा पात्र भरत एम.बी. ए. की पढ़ाई पूरा करके अमेरिका चला जाता है। रोमिला और भरत के पिता

एक अच्छे दोस्त हैं और इस दोस्ती को वे रिश्तेदारी में बदलना चाहते हैं। एक साल बाद इन दोनों से बिना पूछे शादी तय कर दी जाती है। रोमिला शादी से खुश है; परन्तु भरत इस शादी को बोझ समझता है। घरवालों से बिना कुछ कहे भरत रोमिला को ससुराल में ही छोड़कर अमेरिका वापस चला जाता है। एक गुजराती दुल्हन के रूप में वह रोमिला को स्वीकार नहीं कर पाता। अपने पति के इस तरह के व्यवहार से रोमिला को ठेस पहुँचता है। वह अपने मौसी के घर चली जाती है और उन्हें सब बातें बताती है। रोमिला की मौसी उसे आधुनिक नारी के रूप में विकसित करती है। भरत जब अमेरिका से वापस आता है तो वह रोमिला से मिलना चाहता है। जबकि रोमिला अपनी सास के साथ भरत के सामने ही खड़ी है, परन्तु वह आधुनिक रोमा (रोमिला) को नहीं पहचान पाता। इस कहानी से यही ज्ञात होता है कि एक औरत अपने जीवन में सम्मान पाने के लिए किसी भी हद तक संघर्ष कर सकती है। पत्नी का दर्जा पाने के लिए रोमिला अपनी पुरानी परम्पराओं को भी पीछे छोड़ देती है। एक गाँव की लड़की जो भारतीय परम्पराओं से जुड़ी हुई थी, को पति ने त्याग दिया था। रोमिला से रोमा बनने के दौड़ में वह अपने सास-ससुर का पैर छूना भी छोड़ दिया है। भले ही यह उसके लिए बहुत मुश्किल है। अमेरिका से वापस आए भरत अपने रोमिला को ढूँढता हुआ नजर आया। यह बात जानकर रोमा रोमिला बनकर गुजराती वस्त्र में जब अपने पति के सामने आती है तो भरत उसे अपने सीने से चिपकाते हुए कहता है – “केम छो, रोमिला? ...‘मजा मा सारो छे।’ कहते-कहते रोमिला का कंठ अवरुद्ध हो गया।”[50] भारतीय नारी की जीत होती है। यह जीत संस्कार के कारण ही संभव होता है। भारतीय संस्कार हैं ही ऐसे जो अपने साथ दूसरों को भी प्रेरित करते हैं, उसी के रंग में रंगने के लिए।

भारतीय परिवार व्यवस्था में दाम्पत्य जीवन एक निधि के रूप में है। जिसे सहेजना प्रत्येक पति-पत्नी का कर्त्तव्य है। मृदुला सिन्हा की कहानियाँ भी इसी सौन्दर्य बोध से

आद्योपांत आप्लावित हैं। मृदुला जी की एक चर्चित और प्रसिद्ध कहानी है – 'खूँटा'। लाजो रानी अपने त्याग और समर्पण से अपने मायके का नाम 'रुक्मिणी' भी बिसरा देती है। लाजो नाम से ही अपने ससुराल में अपने दायित्व का निर्वहन करती है। इसके बावजूद लाजो की अपने पति की एक भूल से बातचीत बंद हो जाती है। फिर भी लाजो अपने घर का 'खूँटा' बनी रहती है। जोड़े रखती है अपने घर को आखिरी साँस तक। अपने बेटे और बहू को भी यही सीख अपने आचरण एवं व्यवहार से दे देती हैं। कितनी भी, कैसी भी परिस्थितियाँ आई लाजो ने हिम्मत नहीं तोड़ी और न ही हौंसला। "फुआ सास ने पूछा – लाजो रानी! क्या देख रही हूँ। रामदीन से तुम्हारी बात नहीं होती क्या? पति-पत्नी का रिश्ता भी नहीं रहा। फुआ जी! अभी देवर और बहू रानी को नाश्ता परोस दूँ। फिर इत्मीनान से बात करती हूँ।"[51] किसी से कुछ शिकायत नहीं रखना और न ही करना दाम्पत्य जीवन की समृद्धि का राज है, जिसे भारतीय परम्परा में गृहणी खूब निभाती हैं। लाजो भी निभा रही थी तो रामदीन भी। रामदीन अपनी भूल को मानकर प्रायश्चित में लगा हुआ था। अहसास तो था उसे भी, पर कहे किससे। अपने बेटे राहुल को जीवन की सीख देते हुए कहते हैं – "यह भी नहीं पढ़ाया होगा कि विवाह क्यों होता है। विवाह कैसे निभाता और टिकता है? नहीं। आज जीवन जीने की पढ़ाई नहीं होती। तो सुनो! विवाह होना आवश्यक नहीं। विवाह का टिकना आवश्यक होता है।"[52] दोनों पति-पत्नी में बोलचाल नहीं फिर भी रिश्ता चल रहा है। एक विश्वास के बूते। एक कसम के साथ। सात जन्मों के लिए। आजीवन। यही है भारतीय परम्परा का दाम्पत्य बोध का सौन्दर्य। रामदीन अपने बेटे राहुल से कहते भी हैं – "तुमने जो लड़की पसंद की है, हम तुम्हारा विवाह उसी से करेंगे। शर्त यही है कि तुम दोनों का वैवाहिक संबंध टिकना चाहिए। चाहे जैसी भी परिस्थिति हो। विवाह मनोरंजन के लिए नहीं है। पर्दे पर

प्रकट हुए और चले गए।"[53] साँस-ससुर के रिश्ते को देखकर राहुल की पत्नी रूपा समझ गई कि दाम्पत्य जीवन को सुखपूर्वक आगे बढ़ाना है तो बहुत सारे बातों को नजर अंदाज करना पड़ेगा।

दाम्पत्य जीवन की सरसता का बोध करती यह कहानी पारिवारिक सुदृढ़ता के लिए एक मिशाल पेश करती है। कई कहानियाँ हैं मृदुला जी की ऐसी जिनमें जीवन के सौन्दर्य बोध का पता चलता है। दाम्पत्य जीवन के सौन्दर्य बोध से पारिवारिक जीवन में एक ओर जहाँ मजबूती आती है, वहीं दूसरी ओर सरसता का संचार भी होता है। पूरे परिवार की संरचना ही इस संबंध की गहराई और मजबूती पर टिकी होती है। व्यक्ति अपने जीवन के माधुर्य को जीना चाहता है। सँजोना चाहता है। हँसी खुशी गुजारना चाहता है। उसके लिए उसे अपने जीवन में दाम्पत्य जीवन के इस मूल्य बोध को अपनाना पड़ता है।

मातृत्वबोध का चित्रण

स्त्री शोषण का इतिहास देखें तो स्पष्ट होगा कि एक परिवार की कोई स्त्री जब गर्भवती होती है तब उसे पुत्रवती होने के आशीर्वाद देते हैं। बावजूद इसके किसी औरत को अगर बेटी होती है तो परिवार वाले ठंडी आहें भरते हैं। पुत्री के लिए कोई भी आशीर्वाद नहीं देता। आज भी स्त्री का इतना अपमान क्यों हो रही है? पुराणों में कहा गया है कि पुरुष विष्णु है तो स्त्री लक्ष्मी है, पुरुष विचार है तो स्त्री भाषा, पुरुष धर्म है तो स्त्री बुद्धि, पुरुष तर्क है तो स्त्री भावना, पुरुष रचियता है तो स्त्री रचना, पुरुष मंत्र है तो स्त्री उच्चारण, पुरुष धैर्य है तो स्त्री शक्ति। अगर स्त्री शक्ति है तो उसका हर जगह किसी न किसी रूप में अपमान होना किसी भी समाज के लिए प्रगतिशील नहीं हो सकता। हमारा समाज पुरुष प्रधान होने के कारण वह हमेशा से स्त्री का गलत तरीके से फायदा उठाता आया है। समाज में पुरुषों का आधिपत्य होने के कारण पुरुषों की आवाज हमेशा से बुलंद रही है। स्त्री की आवाज को

दबाया जाता रहा है। समय-समय पर पुरुष अपनी गलतियों को स्त्री के माथे डालता रहा है। आज समाज में बढ़ रही सबसे समस्या है वंध्यत्व। कई बार देखा गया है वंध्यत्व के लिए भी मात्र स्त्री को जिम्मेदार ठहराया जाता है। पुरुष अपनी गलती को मानता नहीं है। गर्भ रखने के लिए जैसे स्त्री को जिम्मेदार माना जाता है। वैसे ही अगर वह गर्भ धारण नहीं कर सकती तो इसमें पति की शारीरिक क्षमता पर कोई सवाल उठाता नहीं है। वंध्यत्व की समस्या समाज को दीमक की तरह खाती जा रही है। कई दाम्पत्य बच्चा न होने पर दवाइयों पर ही जैसे अपना जीवन काट रहे हैं। इस समस्या के प्रमुख कारण तो आज की बदलती जीवन शैली, बच्चे को दत्तक लेने की होड़, कई दम्पती में बच्चा जनने की इच्छा ही नहीं होती। मृदुला सिन्हा ने ऐसी समस्याओं को एक अलग रूप दिया है। निम्नलिखित कहानियों के माध्यम से वंध्यत्व (बाँझपन) के अनेक कारणों का पता चलता है।

मृदुला सिन्हा की 'अक्षरा' कहानी एक चौका बरतन करने वाली सुखिया नामक मजदूर औरत के दुख दर्द को बयाँ करती है। इस कहानी में सुखिया को माँ बनने की बड़ी चाहत है। परन्तु ईश्वर ने जैसे उससे उसका माँ बनने का हक जैसे छीन लिया है। सुखिया की सास बार-बार उसे बाँझ कहते हुए उसे दुख पहुँचाने का कोई मौका नहीं छोड़ती। कहानीकार के शब्दों में, "उस दिन सुखिया सचमुच दुखिया हो गई थी। गर्भ रहने के गर्व के ढहने का दुःख, मासिक धर्म बंद होने का दुःख, दुःख-ही-दुःख। ... सुखिया के भीतर मातृ-भाव अक्षरा था, माँ बनने की क्षमता समाप्त होने के उपरांत भी जिसका क्षरण नहीं हो सका। अपने भीतर से दूसरी जान का सर्जन नहीं कर सकी।"[54] अक्षरा एक मजदूर औरत है। उसके जीवन में बच्चे की कमी है। उसकी शारीरिक कमजोरी के कारण उसे बच्चा नहीं हो रहा है। यह समस्या मजदूरों के जीवन की वास्तविकता को बयां करती है।

मृदुला सिन्हा की एक और प्रसिद्ध कहानी है – 'आकांक्षा'। निशा और विवेक इस कहानी की केंद्र भूमिका में है। दोनों का विवाह हुए अभी दो वर्ष हो गए है। विवेक अपना एक बच्चा चाहता है। परन्तु निशा अभी एक बच्चे की जिम्मेदारी लेने में अपने आपको असमर्थ मानती है। विवेक निशा से नाराज है। निशा विवेक की भावनाओं की कद्र करते हुए उसे एक बच्चा गोद लेने की सलाह देती है। निशा का यह सुझाव विवेक को अच्छा नहीं लगता। निशा विवेक को समझाने की पूरी कोशिश करती है कि समाज में रहते हुए हमारी भी कुछ जिम्मेदारियाँ होती है। बच्चा गोद लेकर हम एक तरह से समाज का एक ऋण चुकता कर सकते हैं। यह बात विवेक समझ जाता है और निशा की बात मान लेता है। विवेक अपने मनोज नामक वकील दोस्त से बच्चा गोद लेने की विधि के बारे में पूछता है। मनोज विवेक का बहुत पुराना दोस्त है। मनोज विवेक की बात समझ नहीं पाता। उसे अपना स्वयं का बच्चा पैदा कराने की सलाह देता है। मनोज की बात सुनकर निशा सोचती है कि बड़ी मुश्किल से विवेक बच्चा गोद लेने के लिए तैयार हो गया है। मनोज की बातों में न उलझते हुए दूसरे ही दिन दोनों एक अनाथाश्रम में जाकर एक बच्ची गोद लेते है। इस कहानी में निशा की भूमिका यही दर्शाती है कि प्रकृति ने स्त्री को अनोखा बनाया है। वह अपने जीवन में आनेवाली हर कठिनाई का सामना करते हुए अपने परिवार की गाड़ी को फिर से पटरी पर लाकर ही चैन की साँस लेती है।

औरतों को चाहिए कि अपने साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ वे आवाज उठाएँ। अपने खुद के लिए खड़ी हो जाए। समाज की छवि तब तक नहीं बदलेगी जब तक कोई भी व्यक्ति अन्याय के विरोध में खड़ा नहीं हो जाता। मृदुला सिन्हा की कहानी 'पगली कहीं की' एक ऐसी माँ की कहानी है जिसका नाम कस्तूरी है। उसके जीवन में सुख कोसों दूर भाग गया है। विवाह के बाद कस्तूरी अपने पति के साथ बहुत खुश थी। सास भी बहुत लाड़ करती। विवाह के दो साल होने के बाद भी जब उन्हें बच्चा नहीं होता तो पति और सास उसे बाँझ

कहते हुए परेशान करना शुरू करते हैं। पति उस पर झूठा आरोप लगाता है कि वह बच्चा देने के लिए असमर्थ है। जबकि कस्तूरी को यह बात बहुत अच्छे से पता है कि उसका पति झूठ बोल रहा है। पति अपने दोष को छुपाने के लिए पत्नी को ही दोषी ठहरता है। उसकी सास अब और ज्यादा उसकी प्रताड़ना करने लगती है। पति स्वयं पढ़ा-लिखा होने के बावजूद कस्तूरी को मारने लगता है। सास और उसका पति कस्तूरी के साथ पागलों जैसा बरताव करने लगते है। आस पड़ोस को भी दोनों माँ बेटा यह दिखलाने में सफल हुए कि कस्तूरी पागलों जैसा व्यवहार करती है या उसमें पागलों के लक्षण है। फिर एक दिन वह घड़ी आई जब कस्तूरी को घर से निकाल दिया गया और जब कस्तूरी अंदर घुसने के लिए विनती करती पर कोई उसके लिए दरवाजा नहीं खोलता है। एक झटके में कस्तूरी बेघर हो जाती है।

कस्तूरी रास्ते भर घूमती रहती है। राह चलते लोग उसे पागल समझने लगते हैं। चलते-चलते वह एक रेलवे स्टेशन पर पहुँच जाती है और यही रह जाती है, लेकिन यहाँ कुछ दरिंदों के हवस की शिकार बन जाती है। गर्भवती हो जाती है। एक बच्ची को जन्म देती है और पति द्वारा लगाए गए झूठे आरोप का स्मरण हो उठता है। बच्ची जन्म देने के बाद से कस्तूरी अपने संतुलित रूप में आ जाती है हालांकि वह कभी पागल हुई ही न थी। बस हालत के मारे पागल जैसी रहने लग गई थी। एक स्वयंसेवी संस्था उसकी और बच्ची की जिम्मेदारी लेते है। कस्तूरी अपनी बच्ची के साथ-साथ आश्रम की अन्य बच्चियों की भी देखभाल करती है। कई सालों बाद एक दिन उसकी सहेली श्रद्धा मज़ाक में ही कस्तूरी की बेटी को पगली कहीं की कहती है तो कस्तूरी को झट से अपने पिछले जीवन की याद आ जाती है और भूल से भी दुबारा उसकी बेटी को पगली नहीं कहने के लिए कहती है। उसके पति के नकारने के बाद लोग उसे पगली कहकर ही पुकारते थे। अपनी खामी छुपाने के लिए पति ने उसे पगली करार दिया था, जिसका गलत फायदा समाज ने भी उठाया। जबरदस्ती

से ही सही उसकी बच्चा जनने की सक्षमता सामने आई। समाज में आज भी ऐसी बहुत सारी महिलाएँ हैं जो अपने पति की कमजोरी का शिकार बनी हुई हैं। लोक-लाज के कारण सब कुछ सह लेती हैं। आज समाज में देखी जानेवाली अनेक समस्याओं में यह समस्या उभरकर आ रही हैं। इन समस्याओं के लिए समाधान ढूँढ़ने की आवश्यकता है। वंध्यत्व केवल महिलाओं में ही नहीं पाया जाता, बच्चे को जन्म देने के लिए स्त्री-पुरुष दोनों समान रूप से जिम्मेदार होते हैं। आज भी समाज में पुरुष अपनी कमियों को औरतों के माथे डालकर समाज में अपनी स्वच्छ और अच्छी छवि बनाने में सफल हो जाते हैं।

दाम्पत्य जीवन

परिवार एक अवधारणा मात्र नहीं बल्कि एक अनुभूति है। जिसे बनाने, सँवारने और संभालने में मस्तिष्क की कम हृदय की अधिक आवश्यकता होती है। भारतीय चिंतन परंपरा, व्यवहार में व्यक्ति नहीं परिवार ही समाज की प्रथम इकाई है। जहाँ व्यक्ति अपने कर्त्तव्य निर्वाह के द्वारा प्यार, सम्मान, सुरक्षा, सुख-दुख, संरक्षण और बहुत कुछ प्राप्त करता है। परिवार तीन चार पीढ़ियों से संबंधित होता रहा है। परिवार की इस कल्पना को आधार देने में विवाह संस्कार का विशेष महत्व है। विवाह दो लोगों के मध्य एक सामाजिक और धार्मिक मिलन है, जिसे संस्कार और रीति-रिवाज से पूर्ण बनाया जाता है। एक दूसरे की भावनाओं को समझने की भक्ति, जीवन भर साथ रहने की प्रतिबद्धता विवाह को समाज से जोड़कर चलती है। आज विवाह की संस्था परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। 'स्व' के लिए जीने के गहरातें जा रहे भावों ने सच्चे सुख से वंचित कर दिया है। पति-पत्नी के रिश्ते कभी-कभी संकटपूर्ण स्थिति में पहुँच जाते हैं। यदि विषय के अंतर में जाया जाए तब पता चलता है कि वजह बहुत बड़ी नहीं होती। बदलते सामाजिक-आर्थिक वातावरण में एकल परिवार में अत्यधिक व्यस्तता व समयाभाव के चलते छोटी-छोटी बातें पति-पत्नी के सम्बन्धों में

दरार उत्पन्न कर देती है। इसलिए पश्चिमी स्त्री-विमर्श को भारतीय दर्शन संदर्भ में यथावत स्वीकृति नहीं दी जा सकती है। इसको केवल देहवाद चिंतन तक सीमित करना गलत है।

'हार गया सत्यवान' नामक कहानी की नायिका है टुन्नी। जो श्रीराम और किशोरी की संतान है। गुड़िया जैसी दिखने वाली टुन्नी की असली नाम है 'सावित्री'। बहुत इंतजार के बाद जन्मी टुन्नी माँ-बाप की दुलारी है। घर आँगन में चिड़िया सी चहकती है। समय के साथ-साथ टुन्नी भी बड़ी हो जाती है। माँ-बाप अपनी लाड़ली के लिए उचित वर चयन करना शुरू करते हैं। नवीन नामक मनोविज्ञान के व्याख्याता के साथ टुन्नी का विवाह निश्चित हो जाता है। बेटी के विवाह के कुछ ही दिनों के बाद श्रीराम जी परलोक सिधार जाते हैं। पिता के पश्चात माँ की जिम्मेदारी टुन्नी स्वयं उठाती है। नवीन भी उसकी बात से सहमत हो जाता है। विवाह के कई वर्षों बाद भी नवीन और टुन्नी को संतान प्राप्ति नहीं होता। टुन्नी अपने आपको घर के कामों में व्यस्त रखती है। अपनी माँ और नवीन के लिए जीना ही उसके जीवन का उद्देश्य बन जाता है। नवीन की सुबह की चाय से लेकर रात के खाने तक की हर एक बात का वह स्वयं ख्याल रखती है। एक छोटे बच्चे की तरह उसकी हर जिद को पूरा करने में ही अपने जीवन की धन्यता मानती है। नवीन अब सेवानिवृत्त हो गया है। सेवानिवृत्ति के बाद तो नवीन संपूर्णतः टुन्नी पर निर्भर रहने लगता है। टुन्नी पर आश्रित रहना उसे सुखद अनुभव देता है। दिन बड़े ही खुशी से गुजर रहे थे पर ऐसे में सबको हिला देने वाली खबर मिलती है कि टुन्नी को गर्भाशय का कैंसर है। ऐसे में नवीन सोचने लगता है जिस गर्भाशय में बच्चा नहीं पल सका उसमें कैंसर कैसे पला? नवीन अंतर्बाह्य से हिल जाता है। एक दिन एक बड़ी कराह के साथ सावित्री उसे एकदम अकेला छोड़कर चली जाती है। "किस्सा खतम हो गया टुन्नी का। नवीन की अकेली कहानी भी नहीं बन सकती। उसे भी टुन्नी के संग-साथ की अपनी कहानी के संग-साथ जीना है। आखिर हार गया सत्यवान। यमराज की जीत हुई। सत्यवान की जगह सावित्री होती तो शायद यमराज परास्त होते।

पता नहीं क्या होता। कितनी सावित्रियाँ हारती रहती हैं। अभी तो मैं इस सत्यवान की हार पर अचंभित हूँ।"[55] पति-पत्नी के बेजोड़ घनिष्ठ रिश्ते को इस कहानी में बड़ी ही मार्मिकता से दर्शाया गया है। निःसंतान होने के बावजूद पति कभी भी अपनी पत्नी को नकारता नहीं है। हर मनुष्य के जीवन में ऐसी बहुत सारी खुशियाँ होती है जो वह अपने जीवनसाथी के साथ बाँट सकता है। यही इस कहानी का मर्म है।

मृदुला सिन्हा ने अपनी अनेक कहानियों के माध्यम से विवाह संस्था के बहाने वैवाहिक जीवन की अनेक खट्टे-मिट्ठे पहलुओं को उजागर किया है। 'सती का सम्मान' कहानी आज के बढ़ते विवाह-विच्छेद के कारणों एवं निवारणों को व्यक्त करता है। यह कहानी एक तरह से मातृत्व का मोह एवं क्षोभ तथा वैवाहिक जीवन पद्धति की मजबूत कड़ियों को दर्शाता है। कहानी की केन्द्रीय पात्र इंदिरा है, जो अपने पति प्रेमलाल के साथ खुशी-खुशी रहती है। इन दोनों का विवाह एक क्रांति से कम नहीं था क्योंकि उस जमाने में उनका प्रेम विवाह हुआ था। अपने जीवन में विवाह की बेला पर फूल न खिलने (मातृत्व का सुख न पाना) का दुख इंदिरा जी को हमेशा से सताता है, परन्तु इस बात की एक झलक तक उनके पति को वह नहीं दिखाती। दोनों में गहरा प्रेम है जिसके कारण दोनों एक-दूसरे की हर इच्छा-अनिच्छा का विचार करते हुए व्यवहार करते हैं। पचहत्तर वर्ष की आयु में बिछावन पर पेड़ अपने पति की सेवा करने में वह किसी भी प्रकार की कमी नहीं रखती। ऐसे में आज की पीढ़ी को देखा जाए तो पति की बीमारियों एवं बच्चे न हो पाने की वजह से भी विवाह-विच्छेद हुए हैं। विवाह के समय हर पति-पत्नी एक-दूसरे को वचन देते हैं कि उन्होंने एक-दूसरे के गुण-अवगुणों के साथ एक-दूसरे को स्वीकार किया है। वैवाहिक जीवन में आए अनेक उतार-चढ़ाव, सुख-दुख, सम्मान-अपमान जैसे अनेक प्रसंग दोनों ने एक साथ देखा है। अपने पति की बीमारी के समय उन्हीं के आग्रह पर वह एक कार्यक्रम में जाने के लिए

अनमने ही तैयार हो जाती है। तैयार होने के बाद वह अपने पति से पूछती हैं – “देखो मेरी ओर, मैं कैसी लग रही हूँ? बोलने की कोशिश करते हुए उन्होंने जवाब दिया, मो-स्ट-ब्यू-टी-फुल।”[56] यह कहानी सभ्यता और संस्कृति के विकास का प्रतिफल कही जा सकती है। जिसमें भारतीय नारी की सादगी, गौरव, संस्कार, प्रतिष्ठा, आस्मिता, कोमलता, संवेदनशीलता एवं सहजता दिखाई पड़ती है।

मृदुला सिन्हा ने दाम्पत्य जीवन को बहुत महत्वपूर्ण माना है। पति-पत्नी के बीच आपसी समझ और साझेदारी को आवश्यक मानती है। इससे संबंध घनिष्ठ बनता जाता है। अलका सिन्हा के शब्दों में, “मृदुलाजी दांपत्य जीवन को दलहन का दाना कहती हैं। जब तक उस पर एक कठोर ओट बनी रहती है, दोनों सुरक्षित हैं। घर के भीतर की सुरक्षा और पति-पत्नी के बीच की साझेदारी को वे सर्वाधिक महत्त्व देती हैं।”[57] सुरक्षा और साझेदारी ही दांपत्य जीवन को मजबूत बनाती है।

मृदुला जी समाज के साथ चलने वाली साहित्यकार हैं। समाज में घट रही घटनाओं एवं पल रहे रिश्तों को भी अपने कहानियों के माध्यम से उभारा है। आधुनिक समाज की देन कहे या पाश्चात्य जीवन शैली की देखा-देखी में भारत में भी युवाओं में लिव-इन संबंध विद्यमान हैं। लिव-इन संबंध यानि बिना शादी किए स्त्री और पुरुष का एक साथ रहना। इस पर आधारित लेखिका की कहानी ‘हस्तक्षेप’ है। नीलाभ और मल्लिका बिना शादी किए एक ही फ्लैट में साथ-साथ रहते हैं। नीलाभ की नानी एक दिन पहले सूचना देकर गाँव से आ जाती है। नानी को बात समझते देर नहीं लगी कि दोनों एक साथ रहते है। अगले दिन दोनों को मंदिर ले जाती है और उनकी शादी करा देती है। दांपत्य जीवन में दोनों को बाँध लेती है। नानी कहती है, “मेरी खुशी का ठिकाना नहीं है। पर मैं गाँववालों में बाँटना चाहती हूँ।

वहाँ जाकर सब तैयारी करूँ। धूमधाम से तुम दोनों का विवाह रचाऊँगी। कागजी कारवाई से विवाह संपन्न नहीं होता। समाज की स्वीकृति चाहिए न! न जाने कितने लोग तुम्हारे ब्याह देखने की आशा लगाए हैं। सबकी आस पूरी करूँगी। मेरी तो हो गई।"[58] इस कहानी में लेखिका ने समस्या उकेरा और साथ ही समाधान का रास्ता भी दिखा दिया है। इन्होंने समाज को सही और स्वस्थ दिशा प्रदान की है। इशरत खान के शब्दों में, "मृदुला जी के लेखन की विशेषता यह रही है कि समस्याओं को उभारते हुए उसका उद्देश्यपूर्ण हल भी प्रस्तुत कर देती हैं।"[59] यह लेखिका की खासियत है जो समस्या उकेरती भी है और उसका हल भी प्रस्तुत कर लेती हैं। लेखिका समाज, परिवार, दांपत्य जीवन, स्त्री से संबन्धित समस्याओं से अच्छी तरह परिचित है और इनके समाधान के लिए कोई न कोई उपाय प्रस्तुत कर लेती हैं। इनके साहित्य का मकसद केवल समस्या को दर्शाना नहीं है। मृदुला जी स्वयं कहती हैं, समाज की बुराइयों के निदान पर मैं गौर करती हूँ।

स्त्री मनोदशा का स्वरूप

हिन्दी कथा साहित्य में महिला लेखक को कहानी साहित्य में ठोस आधार माना जा सकता है। वर्तमान में नारी मनोदशा को अभिव्यक्त करने वाला साहित्य महिलाओं की समसामयिक जीवन स्थिति को तथा उनकी अनुभूतियों को प्रतिबिंबित करता दिखाई देता है, जो एक सशक्त माध्यम भी है। शिक्षा की अपर्याप्तता, अध्ययन की सीमाओं, कार्यक्षेत्र में व्यापकता का अभाव, पारिवारिक उत्तरदायित्वों, समाज-परिवार के विरोध एवं वांछित प्रोत्साहन के अभाव के कारण स्त्रियाँ साहित्य रचना में उतनी कृतकार्य नहीं हो सकी, फिर भी एक स्त्री की कलम से जो भी कुछ लिखा गया है अथवा लिखा जाता है। वह यथार्थ से परिपूर्ण होता है। उसके मन, शरीर तथा भावनाओं की भी विशेषताएँ होती हैं। स्त्री लेखन

निजता से आरंभ होकर सर्वव्यापक तक की यात्रा को तय करता है। इसी कारण से यह लेखन साहित्य से निकलकर काफी आगे बढ़ गया है। स्त्री की मनोदशा को पुरुषों ने ही नहीं बल्कि स्त्रियों ने भी काफी व्यापकता से उजागर किया है। वर्तमान के कहानी लेखन के स्वरूप को देखने पर उसमें नारी समस्याओं का जीवंत चित्रण मिलता है। आज के दौर का महिला केंद्रित साहित्य या महिलाओं द्वारा लिखा गया साहित्य विस्तृत तथा विविधता से भरपूर है।

लेखिका 'शीशा फुआ' कहानी में निर्यात से आबद्ध जीवन स्थितियों व स्त्री की मनोदशा को प्रकट करके इन भावनाओं का सत्यापित चित्रण अपने अनुभवों के आधार पर करती हैं। कहानीकार के शब्दों में – "खटिया पर पड़ी यम देवता का इंतजार करती फूआ की दुर्दशा का वृतांत भाभी ने सुनाया। मुझे अपने कानों पर ही विश्वास नहीं। उनके रहते परिवार का बंधन बिखरने लगा, उनका शरीर गिर गया था। शरीर के दो प्रमुख यंत्रों आँख और कान के सहारे उन्हें सब दिख-सुन रहा था।"[60] लेखिका ने समाज की स्थितियों को उजागर करने के उद्देश्य से यह कहानी लिखी है। इसमें स्त्री की मनोदशा को प्रकट करते हुए वे आगे लिखती हैं, "सब भाई, यहाँ तक की उनकी बेटी भी फूआ के इंतकाल से पहले जमीन अपने नाम कराने की आपाधापी में लग गई। जिसने सबकी सेवा की, उसकी सेवा में कोई तत्पर नहीं हुआ। फूआ का कंठ स्वर अवरुद्ध हो गया था। इसीलिए जब उनकी बेटी जमीन का कागज बनवाकर उनके अँगूठे में स्याही लगाने लगी, फूआ की भृकुटि तन गई। उस परास्त भृकुटि में तब भी इतना दमखम था कि बेटी के हाथ से स्याही गिर गई। देवरों ने भी यही किया। फूआ पहली बार गिड़गिड़ाई यम देवता के आगे – 'जल्दी आओ, जल्दी करो!' और उनकी पुकार सुन ही ली यमदेवता ने। फूआ चली गई ऊपर वाले को जवाब देने। नीचे वालों को उनके जाते ही छूट मिल गई। उनके परिव्यक्त चोले को पकड़कर रोने-चिल्लाने,

फूआ की सँजोई संपत्ति का बंदरबाँट करने की।"[61] इस कहानी का संक्षिप्त चारित्रिक चित्रण करते हुए मरती जा रही इंसानियत की ओर इशारा किया गया है। समाज की उस सच्चाई को दर्शाने का प्रयास किया गया है, जिसमें यह बताया गया है कि कोई इंसान जीवित होता है तब तक तो उसके परिवार वाले उसकी सेवा करते हैं; परन्तु जब वह मरणासन्न अवस्था में होता है। तब उसकी संपत्ति को हड़पने के लिए पूरा परिवार एकत्र हो जाता है। उन्हें मात्र उस इंसान की संपत्ति ही दिखाई देती है। इसके लिए उसके परिवार में बंदरबाँट भी शुरू हो जाती है।

महिला कहानी लेखन में मृदुला सिन्हा तक आते-आते समकालीन एवं वर्तमान दौर का साहित्य तथा लेखन महिला लेखिकाओं पर सिमटता है। कहानी 'औलाद के निकाह पर' स्त्री मनोदशा का जीवंत रूप प्रस्तुत करती है। कहानी में वर्णित स्त्री जिसका बेटा अपनी पत्नी से मिलने जाता है तो उसकी सास अर्थात् लड़की की माँ उससे मिलने नहीं देती। इस पर लड़के की माँ गालियाँ देने लगती है क्योंकि उसके भीतर दूसरी महिला को लेकर ईर्ष्या पैदा हो जाती है। यह एक स्त्री का दूसरी स्त्री के प्रति मनोदशा का ही भाव है। प्रस्तुत कहानी में लड़के की माँ की सोच लड़की और उसकी मई के प्रति, "एक वर्ष बाद मेरा गौना हुआ। मैं ससुराल गई। मेरी सास कड़े स्वभाव की थी। हर वक्त मुझे डाँटती। ताना देना नहीं भूलती। तुम्हारी अम्मी ने मेरे बेटे को लौटा दिया। उसी की बीबी से मिलने तक नहीं दिया। इतनी सुंदर भी न तुम! गोरी-चिट्टी। दूध-सी सफेद। मेम साहब। अगर मेरा बेटा छू लेता तो क्या जिस्म मैला हो जाता! जैसी मतारी, वैसी बेटी!"[62] मृदुला सिन्हा की कहानियों में स्त्रियों की मनोदशा का वर्णन प्रायः दिखाई देता है। जैसे – "सच-मुच माँ का मन बैठ जाता। मक्की की रोटी, महिजाउर (मट्ठा-चावल), चावल की रोटी, बड़ी कढ़ी, अड़कौंच (अरुई के पत्ते की सब्जी), तपरूआ (पकौड़ी), तिलौड़ी – न जाने क्या-क्या बनाकर खिलाने की योजना का

कार्यान्वयन भला उतने अल्प समय में कैसे हो सकता था? रात से सुबह तक जो भी बन पड़ता, खिलातीं, सहेज देती, कुछ बनाने का सामान बाँध देतीं, योजनानुसार सूची के बचे हुए खाद्य पदार्थ को मेरे अगले आगमन के समय बनाने और खिलाने की योजना मन में सँजोकर संतोष करती"[63] इस कहानी में स्त्री गृहणी होकर पूरे परिवार को संभालती है। उनके लिए भोजन-पानी की व्यवस्था करती है। बेटी को उसके विवाह के पश्चात भी उसे ससुराल जाते हुए भी कुछ न कुछ अवश्य देती हैं। यह उसके मनोभाव व मनोदशाएँ ही हैं, तभी तो वह सबको साथ लेकर चलने में विश्वास रखती है।

मृदुला सिन्हा की कहानियों में नारी पात्रों की मनोदशा बहुत सहज प्रतीत होती है। इनकी रचनाओं के पात्र बड़े आत्मीय लगते हैं। इनके पात्रों के सुख-दुःख और संवेदनाएँ भी बड़े जीवंतता के साथ इनके लेखन में दिखाई देता है। रमेश नैयर के अनुसार, "नारी पात्रों के मनोभावों को मृदुलाजी जिस सहजता के साथ अपनी साहित्यक कृतियों में व्यक्त करती थीं, उनसे स्पष्ट आभास होता था कि वे स्वयं प्रत्येक पात्र की आत्मा में प्रवेश करके उसे जीती हैं।"[64] इनके पात्र हमारे बीच के ही लगते हैं। इनके पात्र ही नहीं पूरी कहानी ही अपनी कहानी सी प्रतीत होती है।

मृदुला सिन्हा के कहानी साहित्य में नारी के विविध रूपों का चित्रण

मृदुला जी ने अपने कहानियों में नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण किया हैं। उन्होंने भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर माने वाली पत्नी का निरूपण ज्यादा किया हैं। संतान और पति पर अपने आप को निछावर करने वाली माँ का रूप भी अधिक दर्शाया है। पढ़ाई लिखाई का महत्व भी इन्होंने नारी एवं पुरुष के माध्यम से दर्शाया है। साथ ही नारी की दयनीय स्थिति को भी उजागर किया है जिसमें नारी के आया रूप को भी उकेरा है।

आधुनिक नारी का रूप भी झलकता है। कामकाजी नारियों का रूप भी सम्मिलित हैं। घरेलू औरतों का रूप सबसे ज्यादा निखारा हैं।

माँ रूप –

लेखिका ने अपनी कहानियों में माँ का सजीव चित्रण किया है। उनकी माएँ एक आदर्श नारी होती हैं। साथ ही परंपरागत भारतीय नारी जो हर दर्द, गम या परेशानियाँ झेल सकती हैं, चाहे वह प्रताड़ना उसे अपने बच्चों के द्वारा ही क्यों न मिला हो। वह अपने परिवार को बाँधे रखती हैं। डॉ. राजेन्द्र बाविस्कर के शब्दों में, "कहा जाता है माँ की कोख से अगर साँप भी जन्म ले तो उसके प्रति भी माँ के दिल में अपार ममता होती है। ऐसा माना जाता है कि दुनियाँ में कठोर से कठोर गुनाहों को माफ करने वाला एक ही अदालत है और वह है ममतामयी माँ का हृदय। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में भी ममतामयी माँ का चित्रण हमें दिखाई देता है। भले ही माँ बेटे के रिश्ते में अलगाव आया हो। अक्सर बेटे, माँ की प्रताड़ना करते हैं। लेकिन माँ की ममता में थोड़ी भी कमी हमें नजर नहीं आती।"[65] बच्चों की प्रताड़ना पर आधारित मृदुलाजी की कहानी है 'अपना जीवन' और 'खोए जीवन की खोज'। इन दोनों कहानियों में माँ को प्रताड़ना दी गई है। 'अपना जीवन' में माँ बस इतना ही चाहती थी कि वह पोती को अपनी गोद में चिपकाकर सुलाये पर काम से आए बहू और बेटे ने जब देखा तो बिना लाग-लपेट के हर्ष बोला था – "माँ हमें अपना जीवन अपनी तरह से जीने दीजिए। आप लोग अपना जीवन जीएँ। हमारी बच्ची हमें दीजिए। हम इसे अपनी तरह पलेंगे।"[66] जबकि हर्ष के आने के बाद से तो मोना अपना जीवन जीना भूल ही गई थी। अपने बेटे को पालते-पोसते उसकी जान हर्ष में समा चुकी थी। वह अपना जीवन कैसे जीती। इसी तरह 'खोए हुए जीवन की खोज' में भी समीर अपनी माँ अनुराधा से कहता

है, “माँ! हमें अपनी जिन्दगी जीने देंगी या नहीं! माँ! अब आप हमारा पीछा छोड़ दें। आप अपनी जिन्दगी जीएँ। हमें अपनी जीने दें।”[67] जिस माँ ने इतना प्यार दिया, उसी माँ को प्रताड़ना दे बैठा बेटा। लेकिन माँ तो माँ होती है। सबसे अनोखी। हर हाल में बच्चों को प्यार करती, उनके लिए जीती है। अपना जीवन अपने बच्चों के लिए समर्पित करती है।

मृदुला सिन्हा की ‘अक्षरा’ कहानी में ऐसी माँ का वर्णन भी है जिसने भले ही अपने कोख से बच्चा न जन्म हो, पर उसमें ममता कूट कूट भरी है। सुखिया को बच्चा नहीं हुआ पर उसने अपनी भतीजी के बेटे पप्पू को अपने पास रखा और उसकी अच्छी तरह देखभाल की। सुखिया को डर लगा रहता कि कहीं उसकी भतीजी रेशमा पप्पू को लेने न आ जाये और एक दिन ऐसा ही होता भी है। रेशमा पप्पू को ले जाती है। यह सिलसिला चलता रहता है क्योंकि जब रेशमा के घर कोई गाँव से आता है तो पप्पू उसका बेटा और यदि सुखिया के घर कोई आए तो पप्पू उसका बेटा बन जाता है। पर सुखिया को पूरा विश्वास था कि पप्पू उसके पास ही रहना चाहता है। सुखिया अपने मालकिन को मालिश करती हुई कहती है, “पर देखना दीदी, पप्पू उसके साथ नहीं रहेगा, कल ही भागकर आएगा। अपने प्यार से मैंने उसे बना लिया अपना बेटा, इसलिए लौट आएगा। देख लेना आप!”[68] इस तथ्य की पुष्टि के लिए डॉ. राजेन्द्र बाविस्कर के कथन को दर्शाया जा सकता, “वैसे देखा जाय तो हर स्त्री एक माँ होती है। भले उसकी कोख से बच्चे का जन्म न हुआ हो तो भी उसमें ममता होती है। बच्चे की किलकारियों से अपने आप ही नारी में, माँ उमड़कर वत्सलता में बदलती है।”[69] नारी का रूप ही निराला है।

ऐसी ही एक और कहानी है ‘आकांक्षा’, जिसमें बच्चा गोद लिया जाता है। इस कहानी में निशा अपने पति विवेक को बच्चा गोद लेने के लिए मनाती है। जबकि विवेक अपना खुद

का बच्चा चाहता था फिर भी बच्चा गोद लेने के लिए मान जाता है। अनाथालय से एक-दो महीने की बच्ची को गोद ले लेते हैं। निशा उस बच्ची को नहला-धुलाती, दूध देती, उसके उपयोगी वस्तुएँ खरीदती। दिन-रात उसमें उलझती है। विवेक को समय नहीं दे पाती है। यह सब देखकर विवेक निशा से बच्ची की देखभाल के लिए आया रखने के लिए कह देता है। विवेक ने तो यह भी कह दिया कि "तुम तो उसके पीछे ऐसे लगी हो जैसे अपनी कोख से जनी हो!"[70] इससे पता चलता है कि निशा बच्ची को बहुत प्यार तथा दुलार करती है। निशा अपने पति से कहती है, "मैं इसकी माँ हूँ और तुम बाप। लो, इसे गोद में लो। कागजी गोद पर हस्ताक्षर करने की रस्म अदायगी तो पूरी हो गई। बाप की गोद तो यह है न।"[71] बच्ची के प्रति निशा का लगाव कितना झलकता है। ऐसा लगता है कि उसकी कोख से जन्मी हो।

बेटी रूप –

बेटी माँ की परछाई और पिता की दुलारी लाड़ली होती है। जीवन में आगे चलकर बेटी बहिन, माँ, बहू, भाभी, सास, दादी, नानी आदि अनेक भूमिकाओं में अपने आप को ढाल लेती है। लेकिन बेटी को पराया धन भी कहा जाता है। फिर भी बेटियाँ विदा होने के बाद भी अपने मायके के परिजनों का हर हाल में मान रखती है। ऐसे ही रिश्तों के मान रखने पर आधारित मृदुला जी की कहानी है 'मान रिश्ते का'। इस कहानी में विमला अपने पिता का मान रखती है। यह कहानी दहेज से संबंधित कहानी है, जिसमें विमला अपने शादी के समय कम दहेज देने और अपनी छोटी बहन के शादी पर दिये जाने वाले दहेज की तुलना तो करती है पर अपनी समझदारी से पिता का मान रखती है। रिश्ते का मान रखती है। एक नजारा प्रस्तुत है, "दीनानाथ के ठीक सामने विमला अपनी बहन वीणा को लिए बैठी थी। वीणा की बगल में दूल्हा था जो बी. ए. का मात्र छात्र था। पिता-पुत्री की आँखें

मिलीं। पुत्री एक पिता को देख रही थी। पिता कुछ छुपाने, कुछ कहने की छटपटाहट में बोला, "लेकिन विमो, यह सब...."

विमला ने बात संभाल ली। कहा, "पिता जी! पंडित जी कुछ पूछ रहे हैं आपसे।"

बेटी की दृढ़ता, सहनशीलता को देख पिता सकपका गये। कुछ बेटी से, कुछ समाज से छुपाते हुए बोले, "हाँ, हाँ, अगले साल अवश्य दे दूँगा।"[72] विमला को परिस्थिति का भान था, जिसके चलते पिता की झिझक को संभाल लिया।

मृदुला सिन्हा की 'और उसी क्षण' कहानी में भी बेटी का रूप झलकता है। पति द्वारा मायके से गठरियाँ ससुराल लाने से मना करने पर भी मधु अपनी माँ को गठरियाँ बाँधने से मना नहीं कर पाती है। मधु जब भी अपने मायके जाती उसकी माँ कुछ-न-कुछ बाँध के अवश्य देती। मगर मधु के पति इन गठरियों से बहुत चिढ़ते है। मधु के पति कहते है, "क्या ला रही हो! फेंक दो उधर। उठा लाती हैं धरोहर-मोटरी। लाख बार मना किया, मेरे घर यह सब मत लाया करो।"[73] मधु को भी बार-बार झल्लाहट सुना अच्छा नहीं लगता पर अपनी माँ के सामने पति की झल्लाहट को कह नहीं पाती है।

मृदुला जी की एक और दिलचस्त कहानी है 'स्पर्श की तासीर'। इस कहानी में नन्दिता डॉक्टर है और अमेरिका में रहती है। नन्दिता की माँ बीमार होती है और माँ की बीमारी जान कर वह इंडिया आती है। बेटी के रूप में अपनी बीमार माँ की देखभाल करने के लिए। लेकिन उसे तो डॉक्टर सम्बोधन ही मिलता है। वह बार-बार डॉक्टर सम्बोधन पाकर तंग आ चुकी थी। नन्दिता अपनी माँ से कहती है, "डॉक्टर सम्बोधन सुन-सुनकर मैं थक चुकी हूँ। मेरी सास, मेरा पति, मेरा बच्चा.. सब मुझे डॉक्टर की नजर से देखते है। अपनी बीमारी में

उन्हें भी मेरे स्पर्श से ही तसल्ली मिलती है। मेरी सेवा उनके लिए रामबाण होती है। पर मैं तो सिर्फ एक डॉक्टर की हैसियत से सेवा नहीं करती। माँ ! मैं वहाँ बेचैन थी कि कोई मेरी सेवा को बहू की सेवा, पत्नी की सेवा, माँ की सेवा के रूप में तो स्वीकार करे। माँ, कम-से-कम तुम तो अपनी बेटी की सेवा स्वीकार कर लो, अमेरिका से आई एक डॉक्टर की नहीं।"[74] बेटी का रूप निखर के सामने आया है।

'पुनश्च' कहानी में मृदुला जी ने माँ और बेटी का संगम रूप दिखाया है। इस कहानी में मंजुला बाई अपनी बीमार माँ की देखभाल करती है। जबकि उसकी बेटी को भी बच्चा होने वाला होता है। वह बड़ी दुविधा में है क्योंकि दोनों की स्थिति बेहत अलग है। साथ ही वह डर भी रही है क्योंकि कहीं बच्चे का जन्म और माँ की मृत्यु एक साथ घटित न हो जाए। माँ की सेवा भी करना चाहती है और बेटी की पहली संतान का स्वागत सेवा भी करना चाहती है। "उस दिन अस्पताल के बेड पर पड़े माँ के संज्ञा शून्य शरीर की जगह पर किसी नन्हें शिशु को देखती मंजुला बाई हर्षित हो गई। हुलास से भर आया मन। तभी घर से सूचना आई- "करुणा को दर्द प्रारंभ हो गया।" मंजुला की तन्द्रा भंग हुई। वह तो भूत में उलझी थी। और भविष्य के आगमन का समय भी हो गया। कहीं दोनों साथ-साथ न घटित हो। फिर क्या करेगी मंजुला बाई! रोयेगी या हँसेगी। जन्मोत्सव या मृत्योत्सव, क्या मनाएगी? उत्सव होते हुए भी दोनों की तासीर अलग होती है। "हंसैव ठठायव फुलायव गालू," दोनों क्रियाएँ एक साथ नहीं हो सकती। मंजुला बाई ने मन को कड़ा कर उसे आदेश दिया- "भविष्य का स्वागत करना ही है। भूत को विदा देने में समय नहीं जाया करना है।"[75] मंजुला ने निर्णय तो कर लिया पर ऐसा कुछ नहीं घटा। दरअसल यह निर्णय भी वह अपने माँ के सिखाये ज्ञान के कारण ही ले पा रही है। मंजुला ने समय की नाजुकता को पहचाना, महसूस किया माँ और बेटी को साथ लिए आगे बढ़ती गई।

मृदुला जी की दिल को छूने वाली बेटी पर आधारित एक और कहानी है 'उऋण'। इस कहानी में तीन भाई के होते हुए भी सोनाली अपनी बीमार माँ की देखभाल करती है। नौकरी के साथ-साथ बेटे को सँभालना उसे कठिन लगा इसलिए छात्रावास में भेज दिया था। उसकी माँ राजरानी के दोनों पाँवों में प्लास्टर चढ़े थे क्योंकि वह बाथरूम में गिर गई थीं। सोनाली माँ को अपने घर ले आयी। सोनाली ने माँ की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ा। जी जान से उसकी सेवा की। हाँ, नौकरी करने के कारण सोनाली को कई परेशानियों का सामना भी करना पड़ा। उसकी एक सहयोगी का कथन है, "इन दिनों आप वह काम कर रही हैं, जो बेटा भी नहीं करता। आप अपना भविष्य बना रही हैं। आपका बेटा भी आपके साथ ऐसा ही करेगा।"[76] माँ बेटी की प्यार भरी सुंदर कहानी है, जो अपने साथ माँ की सेवा भाव लिए संदेश मुखरित करती है।

बहन रूप –

भारतीय संस्कृति में भाई-बहन संबंध को बहुत पवित्र माना जाता है। भाई-बहन के संबंध को दर्शाती रक्षा बंधन का त्योहार भारतीय परिवारों में हर वर्ष राखी पूनम के दिन मनाया जाता है। यह त्योहार हर बहन के लिए बहुत महत्व रखता है। यह त्योहार रक्षा और सुरक्षा का प्रतीक है। इस अवसर पर बहन अपने भाइयों के कलाई पर राखी बाँधती हैं। यह एहसास दिलाती है कि भाई को अपनी बहन की रक्षा हर हल में करनी है। यह उसकी ज़िम्मेदारी है।

मृदुला सिन्हा द्वारा लिखित 'सात राखियाँ' में सुखवीर के सात भाई होते हैं। वह खुद अपने भाइयों के लिए राखी बनाती है। हिंदुस्तान-पाकिस्तान बँटवारे में उसके चार भाई मारे जाते हैं। फिर भी हर राखी में वह सात राखियाँ ही बनाती थी। शादी के बाद भी सुखवीर सात राखियाँ ही बनाती और अपने तीनों भाइयों की कलाइयों पर सातों राखियाँ

बाँधती रहीं। सुखवीर के तीन बेटे हुए। "अपने दोनों बेटों की शादी के बाद वह वाहे गुरु से दुआ करतीं, 'परिवार नियोजन और महँगाई के जमाने में दो ही बच्चे होने चाहिए। मेरे बच्चों के एक लड़का एक लड़की देना, ताकि राखी मानती रहे'।"[77] उन्होंने पोती प्रीति के जन्म पर बहुत बड़ी पार्टी भी दिया। लेकिन सुखवीर के बचे तीनों भाई भी आततायियों के द्वारा 1 नवंबर, 1984 को मारे गए। उनकी मृत्यु के दस महीने बाद फिर राखी का त्योहार आ गया। सुखवीर ने सात राखियाँ बनाई और गुरुद्वारे चली गई। "अपनी हथेली में दबाई सात राखियाँ 'गुरु ग्रंथ साहब' पर पटकते ही वह पहुँच गई थीं भाइयों के पास।"[78] भाइयों के लिए सुखवीर का समर्पित रूप झलकता है।

भाई-बहन पर मृदुला सिन्हा द्वारा लिखी गई एक और कहानी है 'उपदेश'। इस कहानी में रमेश अपनी बहन उषा को पढ़ाना चाहता है। वह शहर में कॉलेज में पढ़ता है। कॉलेज की छुट्टियों में घर आता है और अपनी बहन को शहर की लड़कियों के बारे में बताता है। उषा अपनी सहेलियों के साथ भैया रमेश के पास जाती है और कहती है, "भैया! हम लोग तुम्हारे शहर की लड़कियों की करतूत सुनने आए हैं। बताओ न?"[79] बहन की जिज्ञासाओं को रमेश अपने जवाबों से शांत करता है। रमेश अपनी बहन और अपने गाँव के लोगों को शिक्षित करना चाहता था ताकि अज्ञानता दूर हो सकें। परिवार के लोगों के विरोध करने पर भी रमेश ने उषा को पढ़ाया मिडिल स्कूल पास करने के बाद हाई स्कूल में उसका नाम लिखवाया। रमेश बहन को पढ़ा कर उसकी शादी भी पढ़े-लिखे लड़के के साथ करवाने के सपने देखता। बहन की उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। लेकिन उसकी बहन अपने स्कूल के मास्टर के साथ भाग जाती है। मास्टर उनकी जात का न होकर चमार जात का होता है। सब रमेश को ही दोषी ठहराते है। इधर रमेश भी अपने कॉलेज के भाषण प्रतियोगिता जिसका विषय 'अंतर्जातीय विवाह ही सामाजिक कुरीतियों का एकमात्र हल है'

में प्रथम आता है। लेकिन भाषण में दिया गया वक्तव्य की व्यावहारिकता अपने ही घर महसूस करना उसे मुश्किल लगता है।

मृदुला सिन्हा की 'भैया दूज' कहानी भी भाई-बहिन पर आधारित कहानी है। इस कहानी में मंगलसिंह अपनी बहन सुमंगला को बहुत प्यार करता है। गाँव में स्कूल नहीं होने पर भी मास्टर रखकर उसे थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा देता है। उसकी शादी भी शहर के हाई स्कूल शिक्षक के साथ कराता है। भारी कर्ज लेकर धूम-धाम से शादी कराता है। इस पर गाँव वाले कहते हैं, "भाई हो, तो ऐसा। इतना तो माँ-बाप भी नहीं करता। मंगल ने अपने ऊपर भारी कर्ज उठाकर शहरी रिशतेदारों को खुश करने का एक भी प्रयत्न बाकी न छोड़ा।"[80] ससुराल में सुमंगला भी बहुत खुश है, पर वकालत पढ़ रहे फुफेरे देवर से मिली जानकारी से प्रभावित होकर सुमंगला ने 'हिन्दू सक्सेसर ऐक्ट' (हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम) के तहत अदालत में अर्जी देकर अपने भाई मंगलसिंह से अपना हिस्सा माँग लेती है। लेकिन भाई-बहन के प्यार के आगे यह माँग फीका पड़ जाता है।

पत्नी रूप -

भारतीय संस्कृति में पति को भगवान का दर्जा दिया जाता है। उसके लंबे आयु के लिए पत्नी व्रत, उपवास रखती है। भाले ही उसका पति उस पर अत्याचार करे वह चुपचाप पति की सेवा में लगी रहती है और सब कुछ सहन कर लेती है। डॉ. राजेन्द्र बाविस्कर के शब्दों में, "भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर माना जाता है। जहाँ तक कि भारतीय स्त्रियाँ अपने पति के लंबे आयु एवम् सुख के लिए कठोर से कठोर व्रत, उपवास करती आयी है। पुराण, धर्मग्रंथी में सती सावित्री का अपने पति को पुनर्जन्म मिले इसलिए कठोर से कठोर व्रत कर उपवास रखना पति-परायण नारी का मूर्तिमंत्र उदाहरण है। आज भी पति के सुदृढ़

स्वास्थ के लिए या लंबी आयु के लिए करवाँ चौथ, तीज जैसे कठोर व्रत उपवास किये जाते हैं। दूसरी ओर व्यसनी पतियों द्वारा मारपीट, गाली-गलौज कई प्रकार के अन्याय को सहकर भी पति की सेवा ही परमेश्वर की सेवा मानकर सब दुःख सहन करनेवाली नारी है।”[81] नारी की सहनशीलता को आँका नहीं जा सकता है। मृदुला सिन्हा ने अपनी कहानियों के माध्यम से विविध पत्नी रूपों को दर्शाया है। कहीं आदर्श एवं पति के साथ कदम से कदम मिलाने वाली तो कहीं पति के अत्याचारों को सहती हुई पत्नियों को उकेरा है। मृदुला जी की 'परिवर्तन' कहानी में ऐसी पत्नी का चित्रण किया है जिसने सीधे साधे धोती-कुर्ता पहने वाले पति को आधुनिक बना दिया। पैंट पहने वाला और अंग्रेजी बोलने वाला बना दिया। यह दो सहेलियों की कहानी है। दोनों शादी के बाद भी हॉस्टल में रहकर पढ़ रही थी। माधुरी बनावटी प्रवृत्ति की है। सीधे-साधे पति को भी मॉडर्न बना दिया। कॉलेज के छात्रावासी दिनों से ही अपने सहेलियों के पास अपने पति के बारे में झूठ बोलने में बिल्कुल नहीं कतराती हैं। हॉस्टल का एक दृश्य दृष्टव्य है जब माधुरी के पिता अपने दामाद के साथ माधुरी से मिलने आते हैं, लेकिन माधुरी अपनी सहेलियों से कहती है, “अरे, मेरे पिता जी के साथ तो गाँव के पंडित का लड़का था? रमेश जी नहीं आये। उनकी परीक्षा चल रही है।”[82] कुछ वर्षों बाद सरला और माधुरी ट्रेन में मिलते हैं तब रमेश को देखकर सरला दंग रह जाती है। “मैंने ऊपर से नीचे तक रमेश जी को देखा, जो बिल्कुल मॉडर्न ड्रेस में थे। उनके बाल माधुरी के बालों से थोड़े ही बड़े थे, तथा बिल्कुल अमिताभ बच्चन स्टाइल में थे।”[83] सरला ने अपनी सहेली माधुरी के पति में पूर्ण परिवर्तन देखा था और अंदर ही अंदर समझ भी रही थी कि यह परिवर्तन माधुरी ने ही लाया है।

मृदुला की 'प्रायश्चित' कहानी में पति को समझने वाली पत्नी का रूप निहारा गया है। यह कहानी पति-पत्नी के आपसी समझ की कहानी है। राकेश की पत्नी पहले अपने पति की हरकत से कुछ घबराती भी थी, लेकिन हरकतों के वजह भी सोचने-समझने लगी। कारण जानकर राकेश की पत्नी ने कारण के जड़ गोपी को गाँव वापस भेज देना ठीक समझा। गोपी इनका नौकर है और जब भी राकेश उसे नंगे बदन देखता वह गुस्सा करने लगता, हरकत करने लगता था। दरअसल बात पहले की है जब गोपी हेडमास्टर का नौकर हुआ करता था तब चोरी के इल्जाम पर राकेश ने गोपी को होस्टल के लड़कों के साथ पीटा था। उस समय गोपी नंगे बदन में था। सच्चाई का तो पता नहीं लेकिन राकेश इस घटना को भूल नहीं पाया। अब गोपी को अपने साथ ही रखना चाहता है, "स्नेह! अब मैं गोपी को अलग नहीं कर सकता। वह यहीं रहेगा। मुझे अपनी भूल का प्रायश्चित करना है। वह यहीं रहेगा। यहीं रहेगा। तुमसे सारी बातें बता कर मैंने अपना बोझ हल्का कर लिया।"[84] पत्नी ने भी पूरा समर्थन किया।

'चौथे पहर की धूप' कहानी में मृदुला जी ने एक समाज सेवी पत्नी का चित्र खींचा है। जिसे पति का पूर्ण सहयोग मिला है। सत्या जी एक समाज सेवी पत्नी है, जिसके कारण घर से बाहर आना-जाना रहता है। लेकिन परिवार के सदस्यों की बीमारी पर भी वह अपने परिवार जनों के लिए भी सेवा धर्म निभाती है। उनके पति को टायफाइड हो गया। "उन्हें नर्सिंग होम में भरती होना पड़ा। सेवा-शुश्रूषा के लिए दो नर्सें बहाल की गई थीं। सत्याजी ने अपना बाहर का आना-जाना कम कर दिया। अधिकांश समय नर्सिंग होम में ही बितातीं।"[85] सत्या जी अपने दायित्व से परिचित है। अपने कामों को वह समय और परिस्थिति के अनुसार ढाल लेती है। लेकिन बुढ़ापे में मि. चावला को पत्नी पर अधिकार जताने का भूत

चढ़ गया। पक्षाघात से पीड़ित हो गए और उनको बैटपैन लगाने के लिए एक जमादार रखा गया। जमादार की बातों में आकार उन्हें अपनी पत्नी पर अधिकार जमाने का मन कर आया। सच में मि. चावला ने हद कर दी बार-बार पत्नी को बैटपैन लगाने और धुलवाने की आज्ञा देता रहा। दो दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। फिर दूसरे दिन मि. चावला ने कड़कती आवाज में सत्याजी को बैटपैन लगाने की आज्ञा देते है तो सत्याजी भी चुप नहीं रहती, कहती है, "तुम्हारी पत्नी हूँ। तुम अधिकार जताना चाहते हो। लो ये चूड़ियाँ और मंगलसूत्र। .... आज से मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ। तुम्हारा घर छोड़कर जा रही हूँ। मैं चली।"[86] मगर सत्याजी को घर छोड़ना नहीं पड़ा। मि. चावला ने माफी माँग ली। इससे पता चलता है कि सत्याजी ज़ोर जबरदस्ती सहने वालों में से नहीं है। वह तो स्वतंत्र और दृढ़ निश्चय वाली नारी है।

मृदुला जी की कहानी 'घर का वैरागी' कहानी में एक पति व्रता नारी को चित्रित किया गया है। कनकलता अपने पति मोहन बाबू को अच्छी तरह पहचानती है। पति की सेवा करती उनका कहा मानती और उन्हें बहुत समझती भी है। साथ ही कनकलता के जीवन दर्शन और व्यावहारिक ज्ञान बहुत ऊँचे भी हैं। परिस्थिति के अनुसार अपने को ढाल लेती है। उनके जीवन दर्शन से प्रभावित होकर उनके पति के मित्र हरिकिशोरजी ने कहा, "संसार तुम्हारी जैसी माता-बहनों से गतिमान है। हम पुरुष लोग तो जीवन की व्याख्या-भर करते रहे हैं। आप लोग जीवन की रचना और रखरखाव में सदियों से लगी हो। धन्य हैं ये नारियाँ। ईश्वर की अनुपम देन! सृष्टि को अक्षुण्ण रखने में संलग्न।"[87] नारी के गुणों का बखान किया गया है। कनकलता और उसके पति बहू की प्रसूति के कारण दिल्ली चले गए थे। उसका बेटा अनिल भी माँ की जीवन दर्शन से बहुत प्रभावित होता है। उनके पति शिक्षकीय जीवन से अवकाश प्राप्त कर चुके थे और घर-गृहस्थी छोड़कर सन्यासी जीवन बिताने चले

जाते है। बिन बताए जाने पर भी कनकलता अपने पति की कुशलता की कामना करती है। लेकिन एक वर्ष के बाद मोहन बाबू घर लौटकर वापस आते हैं। अब तो पत्नी की हर बात मानने के लिए तैयार हैं और पत्नी ने भी उन्हें घर पर रहकर वैरागी बनने से कभी मना नहीं किया है।

मृदुला जी की एक अनोखी कहानी है 'जीत या हार'। इस कहानी में रानी को उसका पति नहीं अपनाता है। फिर भी रानी ढाढ़स बाँधती है और अपने पति द्वारा अपनाने की प्रतीक्षा करती है। पहले रानी अपने भाग्य पर रोती थी। साथ ही परिवार के सब सदस्य रानी के दुःख में डूबते थे। लेकिन उसने रोना बंद कर दिया और अपनी परिस्थिति से समझौता कर लिया। पति और परिवार वालों की सेवा में लग गई। फिर तो कोई भी उसके लिए नहीं रोया और कहने लगे, "सती है, सती! इस कलयुग में मिलेगी ऐसी औरत! औरत-मरद का रिश्ता ही नहीं जानती। फिर भी दाँत पर दाँत बैठाए पति और घरवालों की सेवा कर रही है।"[88] लेकिन रानी की यह तपस्या रंग लाई और बुढ़ापे में ही सही रानी को उसके पति ने अपना लिया। अपनाया ही नहीं बल्कि बीमार पत्नी की सेवा में दिन-रात लग गया। देर से ही पर रानी की तपस्या फलित हुई। इस कहानी में नारी ही सहनशीलता, त्याग एवं निष्ठा का रूप झलकता है।

मृदुला जी ने ऐसी पत्नी का रूप भी उजागर किया है जो हालत के साथ अपने को बदल नहीं पाई है। उनकी 'रिले रेस' कहानी बयां करती है। इस कहानी में पत्नी अपने बचत भरी जिंदगी जीने की कला को त्याग नहीं पाती है। कारोबार बढ़ने और अमीर हो जाने पर भी अपनी सुविधा के लिए जुटाए जाने वाले साधनों पर खर्च करना उसे फिजूलखर्च लगता है। "मेरे द्वारा फैलाए कारोबार को उसे दिन-रात की मेहनत से सँभालते-बढ़ाते देख मुझे प्रसन्नता होती थी। पर उसका एयरकंडिशंड कार पर चलना, नयना को लेकर कभी बंबई,

कभी मद्रास, कभी कुल्लू-मनाली तो कभी अमेरिका, इंग्लैंड जाना तुम्हें फिजूलखर्ची लगता।"[89] नौकरों को हर बात पर टोकती या डाँटती भी थी। उसे आराम से रहना आया ही नहीं।

मृदुला सिन्हा की एक प्रसिद्ध कहानी है 'एक और निश्चय'। इस कहानी की मुख्य पात्र शालिनी है, जो राहुल की पत्नी है। हादसे में शालिनी के दोनों पाँव कट जाते है। फिर भी वह जिन्दगी से हार नहीं मानती है। पति ने उसके इलाज के लिए भी कोई विशेष रुचि नहीं दिखलाई फिर भी दृढ़ संकल्प करके उसने कृतिम अंगों की संस्था में अपने उपचार के लिए गई। इस संस्था में रहकर उसके मन में एक के बजाय अनेक के लिए जीने का संकल्प प्रस्फुटित हुआ। लेकिन मन में पति के पास जाने की इच्छा भी थी। एक साल के बाद जब उसका कृतिम पाँव बनकर आता है तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। कृतिम पाँवों पर चलना दो ही दिनों में सीख गई। मन उतावला था पति से मिलने के लिए। पति से मिलने जब घर पहुँची तो देखा कि उसका पति तो दूसरी शादी कर चुका है। मन में घुमड़ता विचार 'एक के लिए जीने से बेहतर है अनेक के लिए जीना' की ओर अग्रसर हो गई। "शालू के चपल चरण तो रिक्शा तक पहुँच गए थे। दद्दा जी की बगल में बैठती हुई रिक्शावाले से बोली – "स्टेशन लौट चलो" और पूरी शक्ति लगा सीट पर बैठे ही रिक्शा ठेलने लगी थी। एक के लिए नहीं, अनेक के लिए जीने के निर्णय से भरी शक्ति लिए।"[90] शालू पति के सामने रोती चिलाती या पछताती नहीं है। पूरे आत्मविश्वास के साथ दृढ़ता से निश्चय करके जीवन में आगे बढ़ती है। 'ऋण' कहानी के माध्यम से मृदुला जी ने ऐसी पत्नी का चित्रण किया है जिसने पति को कुष्ठ रोग के कारण छोड़ दिया था। लेकिन पति से अलग होकर उसने समाज सेवा करना शुरू कर दिया। उसके मन में कहीं न कहीं पछतावा था, जिसके कारण उसके जैसा कुष्ठ रोग से ग्रस्त पति के बारे में राय लेने आई महिला को तोषिमा ने पति का साथ न

छोड़ने के लिए कह दिया। तोषिमा के शब्दों में, “अनजाने, अनचाहे, अनसमझे राग-यमन की बेला में मैं बिलावल गा उठी- नहीं-नहीं, ऐसा मत करना। मत छोड़ना पति को। उसी के साथ रहो। आखिर उसकी सेवा कौन करेगा? क्या निर्बल पति की सेवा समाज-सेवा नहीं?”[91] इन वाक्यों से साफ पता चलता है कि तोषिमा को अपने किए पर पछतावा है। संयोग या नियति का खेल ही कह लो तोषिमा को संस्था के माध्यम से अपने पति शिवालिक की सेवा करने का मौका मिल गया और उसने कोई कसर नहीं छोड़ी पति की सेवा में। दोनों साथ नहीं रहे पर पत्रों के माध्यम से जुड़े रहे। ऐसी ही मिलती जुलती कहानी है ‘सती का सम्मान’। इस कहानी में लेखिका ने इंदिराजी के माध्यम से पति के लिए पत्नी की सेवा भाव को उकेरा है। इसमें इंदिराजी के पति को पक्षाघात हो जाता है। इस कहानी में इंदिराजी अपने पति को नहीं छोड़ती है। बल्कि पति के सेवा में दिन-रात लगी रहती है। “इंदिराजी सेवा-मगन थीं। सभी गोष्ठियों में जाना-आना छोड़ दिया था। मि. पसरीचा की सेवा भी समाज-सेवा ही थी। इंदिराजी की छवि उन दिनों मेरे सामने मायूस-सी नारी की थी। निराश होंगी, परेशान होंगी; परंतु मैं तो उन्हें देखकर दंग रह गई। पचहत्तर वर्ष की आयु में बिछावन पर पड़े पति की सेवा मात्र सेवा के लिए नहीं, उन्हें जितना दे सके, सुख देने के लिए हो रही थी।”[92] पति के मरने के बाद भी इंदिराजी ने पति की अंतिम इच्छा को पूरी करने का निश्चय किया कि वह किसी-न-किसी रूप में समाज के लिए कुछ करती रहेंगी।

कुछ पति ऐसे होते हैं जो पत्नी की कमाई पर निर्भर रहते और पत्नी को मारते-पीटते भी हैं। फिर भी पत्नी ऐसे पतियों को छोड़ती नहीं हैं। मृदुला जी ने भी ऐसी नारी का चित्रण अपने ‘परामर्श’ कहानी में किया है। लक्ष्मी मेयर साहिबा के घर में काम करती है। वह एक पतिव्रता पत्नी है। पति शराबी है और उसे मारता-पीटता भी है, फिर भी वह पति को

तलाक देना नहीं चाहती है, बल्कि उसकी चिंता करती है। कहती है, “मेरा मर्द तो न दो पैसा कमा सकता, न दो रोटी बना सकता है। न किसी दूसरी औरत ने इसकी ओर आज तक आँख उठाकर भी देखा है। फिर उसे कैसे छोड़ दूँ? किस पर छोड़ दूँ? वह तो जिंदा ही नहीं रह पाएगा।”[93] पढ़ी लिखी न होकर भी लक्ष्मी में सज्ञानता है। पति को समझती और उसके प्रति समर्पित है।

मृदुला सिन्हा की कहानी ‘जैसे उड़ि जहाज को पंछी’ में भी एक ऐसी पत्नी का चित्रण हुआ है, जो पति के लिए अपने को मॉडर्न बनाती है और पति के लिए ही गुजराती पत्नी बनती है। अमेरिका में पढ़ रहे भरत के साथ रोमिला का विवाह हो जाता है लेकिन भरत देसी गुजराती लड़की को पत्नी के रूप में नहीं अपना पाता है। इसीलिए रोमिला रोमा बन जाती है। रोमा बनने के लिए रोमिला को बहुत मेहनत करनी पड़ी। लेकिन चार वर्ष में भरत बदल गया और विदेशी रंग उतर गया और स्वदेशी रंग में रंग गए। पति के रंग को पहचान कर रोमा भी फिर से रोमिला में उतर गई। “रोमिला द्वारा स्वागत की परंपरागत रस्म अदायगी का भी इंतजार नहीं कर सका। पत्नी को अपने सीने से चिपकता बोला, “केम छो, रोमिला?”

पकड़ इतनी मजबूत कि सात जन्म तक भी न छूटे।

“मजा मा सारो छे।” कहते-कहते रोमिला का कंठ अवरुद्ध हो गया।”[94] भारतीयता की पहचान को मजदूत बनाया गया है।

‘पहली मृत्यु पर’ कहानी मृदुला जी की राजनीति पर आधारित कहानी है। इस कहानी में पत्नी की अहम भूमिका है। पति को सही राह पर चलाने के लिए पत्नी की जिम्मेदारियों को उकेरा गया है। इस कहानी में कस्तूरी ने अपने पति सौरभ को ईमानदार रखने में कड़ी

मेहनत की। जब सौरभ नगर निगम का चुनाव लड़ रहा था तब चुनाव के समय बहुत प्रलोभन आए करोड़ तक आ गया। मात्र अपनी उम्मीदवारी वापस लेनी थी। सौरभ ने माँ और पत्नी से राय माँगी। दोनों ने कहा- "यह तो मृत्यु के समान है। राजनीति में तुम्हारा अभी जन्म हुआ है। पैसा लेकर चुनाव हार जाना तो तुम्हारी अकाल मृत्यु ही होगी।"[95] माँ, पत्नी तथा पिता के सहयोग से सौरभ ने सही रह पकड़ ली। लेकिन पिता के अकाल मृत्यु के कारण सौरभ को पार्टी ने मध्यावधि चुनाव में उम्मीदवार बना लिया और वह विधायक बन गया। उसकी माँ ने तो इसका विरोध भी किया क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि सौरभ कष्ट उठाए। उसकी पत्नी कस्तूरी पहले से भी ज्यादा सतर्क रहने लगी, "सौरभ की गतिविधियों पर कस्तूरी की नजर रहती। बैठक रूम में बड़े-बड़े व्यापारी व ठेकेदारों के मिलते समय उसके कान उधर ही रहते। कहीं कोई भूल न हो जाए। पति के पाँव न फिसल जाए।"[96] वैसे देखा जाए तो कस्तूरी की क्षमताएँ कम हैं। वह हर वक्त अपने पति के पास नहीं रह सकती है। लेकिन अपनी स्थिति और क्षमता के अनुसार अपनी ओर से पति को ईमानदार रखने में हर प्रयास बुलंद करती है।

मृदुला सिन्हा की कहानियों में एक ठेठ भारतीय पत्नी का रूप 'खूँटा' कहानी में दर्शाया गया है। इस कहानी में रुक्मिणी उर्फ लाजो रानी के पति रामदीन द्वारा पुरुष सुलभ भूल हो जाता है, जिसके कारण लाजो रानी ने अपने पति से बोलना बंद कर दिया। पति की सेवा खुद या परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा करती रही। लेकिन एक शब्द भी नहीं कहती। यह बात परिवार वालों से भी नहीं छुपी और छुप भी नहीं सकती थी। परिवार बड़ा था। इस पर उसकी सास लाजो रानी को समझाती है, "अरे! मरद से भूल-चूक हो जाती है। ऊँच-नीच व्यवहार भी। औरत तो सब दिन माफ करती आई है। तभी तो पुरुष से बड़ी कहलाती है। तुम भी माफ कर दो।"[97] फिर भी लाजो रानी में कोई परिवर्तन नहीं आता है। लाजो रानी

के मायके तक बात पहुँच गई थी और उसके दोनों भाई भी उसे लेने आए लेकिन लाजो रानी नहीं मानी। अपने भाइयों से कहा, “मैं नहीं जाती तुम्हारे घर। वहाँ से विदा हो गई। अब यही मेरा घर है। सास-ससुर, देवर, ननद, नौकर-चाकर, खेती-बाड़ी, कितना बड़ा संसार है। कैसे छोड़ दूँ? और क्यों छोड़ूँ? इसी घर की खूँटा बनी रहूँगी। सब मुझसे बँधे रहेंगे। यह बंधन चुभता नहीं, सुख देता है।”[98] इन वाक्यों से साफ पता चलता है कि भले ही पति से रूठी है फिर भी उसे अपने परिवार की चिंता है। लाजो रानी ने अपना कर्त्तव्य निभाया है।

मृदुला जी ने अपने कहानियों में अधिकतर भारतीय पत्नियों की पहचान को बरकरार रखा है। भले ही कहीं-कहीं रूप परिवर्तन भी हुआ हो पर जीत भारतीयता की होती है। एक पत्नी के विभिन्न रूपों को पिरोने में कामयाब हुई हैं।

सास और बहू रूप -

भारतीय संस्कृति में बहू का दर्जा बहुत अहम माना जाता है। परिवार को सम्पूर्ण बनाती है। साथ ही परिवार की इज्जत इन पर निर्भर करती है। मृदुला जी ने अपने कहानियों में अधिकतर आदर्श बहुओं का चित्रण किया है। सास-बहू के रिश्ते को सँजोया है। कर्त्तव्यपरायण, कर्मनिष्ठा से युक्त बहुओं का भी रूप झलकता है। मृदुला जी ने ‘दादी माँ की पिकनिक’ कहानी में पार्वती के माध्यम से एक आदर्श बहू का रूप उकेरा है। पार्वती की सास के चार बेटे हैं फिर भी वह गाँव में अकेली रहती है। चारों बहुओं में केवल पार्वती ही अपने सास के लिए चिंतित रहती थी। साथ ही लोक-लाज से भी परेशान रहती है। पार्वती ने जिद ठान ली और सास को अपने साथ दिल्ली ले गई। सास भी इनकार नहीं कर पाई। क्योंकि “उन्हें भी यह अहसास तो था ही कि चारों बहुओं में एक पार्वती ही थी जो दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, पुणे रहकर भी सास की खोज-पुछारी करती थी; तीज-त्योहार पर कपड़े और

जरूरत के समान भेज देती। यह सब मात्र उन्हें सम्मान देने के लिए। उन्हें उन सामानों की जरूरत हो, न हो।”[99] पार्वती ने सास के मन को बहलाने की बहुत कोशिश की मगर उनकी सास को तो बस गाँव की याद आती है। पार्वती और उसके पति ने माँ की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी। माँ को वह सब करने दिया जो वह करना चाहती है। मगर दोनों ने अपने तरीके से उनके आराम को ध्यान में रखते हुए।

सास पर आधारित मृदुला जी की कहानी है ‘अनावरण’। इस कहानी में एक आदर्श सास का रूप खींचा गया है। प्रभाती की सास आज के दौड़ के लिए भी एक आदर्श सास है। इन्होंने अपनी बहू प्रभाती को बेटी से भी बढ़कर प्यार दिया है। शादी के बाद भी बहू को पढ़ने दिया। प्रभाती के शब्दों में, “बी. ए. पास करने के बाद मेरे घरवाले (ससुर और पति) मुझे वकालत पढ़ने देने के लिए राजी नहीं थे। मेरी सास अड़ गई। उन्होंने कहा, “प्रभाती वकील बनेगी।” उनके बारे में सब जानते थे। यदि वे कुछ ठान लेती थीं तो करके दिखाती थीं। उन्होंने मुझे पढ़ाया। मेरी बेटी को भी स्वयं पालती थीं। मैं विद्यार्थी माँ जो थी।”[100] प्रभाती की सास के विचार बहुत ऊँचे थे। वह केवल अपने या अपने परिवार के बारे में नहीं सोचती है बल्कि उनकी सोच में तर्क निहित होता है। सब के लिए सोचती सबका कल्याण चाहती है। वह बहू को वकील बना कर उन तमाम औरतों के लिए खड़ा करना चाहती है, जिनको अपना हक मालूम नहीं है, कानून की समझ नहीं होते है। बहू की दूसरी लड़की होने पर ही उसका ऑपरेशन करवा देती है। बहू को चौके में जाने भी नहीं देती है क्योंकि वह जानती है कि पढ़ाई के साथ चौके का काम करना झंझट भरा होता है। वह कहती, “मैं बी. ए. पास बहू लाई हूँ। गाँव में किसी के घर ऐसी बहू नहीं आई। मुझे मालूम था कि तुम्हें भोजन बनाने का प्रशिक्षण नहीं मिला होगा। तुम कलम चालती रहीं, मैं कलछी। इसलिए

आज के बाद भोजन बनाने की कोशिश मत करना। आगे पढ़ना, ऑफिसर बनना या वकील बनना।"[101] प्रभाती की सास शिक्षा के महत्व को जानने पहचानने वाली नारी है। पोती को भी डॉक्टर बनाना चाहती है इसलिए बचपन से ही अपनी बड़ी पोती को केवल डॉक्टर से संबन्धित खिलौनों से ही खेलने देती है। एक आदर्श सास के सभी गुण उसमें है। ऐसे सासों की भारतीय परिवार को जरूरत है।

सास-बहू पर अंकित मृदुला जी की एक और कहानी है 'रद्दी की वापसी'। इस कहानी में बाढ़ और उसके बाद की स्थिति का वर्णन हुआ है। बाढ़ ने घर-घर को पानी में डुबो दिया था, जिसके कारण घर-घर से रद्दी निकाले जा रहे थे। गौरी ने भी रद्दीवाले को बेचने के लिए अपने घर से कुछ रद्दियाँ बाहर निकाल कर रख दिया था। लेकिन उसकी सास उन रद्दियों में खो गई और एक-एक सामानों के घर में आने की कथा सुनाने लग गई। प्रत्येक सामान घर में कैसे आए और किस प्रकार टूटे या खराब हुए। सभी सामानों की कथा दुखांत ही रही पर गौरी समझ गई थी कि उसकी सास उन रद्दियों के साथ जुड़ी हुई है। इसलिए रद्दीवाले के आने पर बड़ी दृढ़ता से कहा, "नहीं सावजी, ये बरतन अब नहीं बिकेंगे। ये अभी रद्दी हुए ही कहाँ! माँजी इनके सहारे जिंदा हैं। इनमें इस खानदान की न जाने कितनी पीढ़ियों की कहानियाँ समाई हैं। ये रद्दी नहीं हो सकते। इसके पहले मुझे इनका मोल नहीं मालूम था। अब तो आप इसका मोल चुका ही नहीं सकते। अब ये जीवन भर मेरे साथ रहेंगे। अनमोल हैं ये रडद्दियाँ!"[102] भारतीय परंपरा में बहू द्वारा सास के प्रति सम्मान की भावना को दर्शाया गया है। साथ ही पुराने सामानों को सहेजने की प्रवृत्ति को भी उजागर किया गया है।

कामकाजी नारी का रूप -

शिक्षा ने नारी की स्थिति में बहुत परिवर्तन लाया है। शिक्षा के माध्यम से ही नारियाँ अपने बलबूते पर खड़ी होने में सक्षम हुई है। आज वह चारों दिशाओं में फैलकर अपना पंख

पसार रही है। डॉ. अमरनाथ के शब्दों में, "हाल ही में इस तरह की स्त्रियों का एक वर्ग उभरकर सामने आया है। इनमें अधिकांश महिलाएँ उच्च मध्य वर्ग, मध्य वर्ग और निचले स्तर से आयी हैं, शिक्षा के बल पर। इनमें उत्साह है। बाहर की दुनिया से जुड़ने का एक सुख है। वे अकसर तरो-ताजा दिखती हैं। उनका सामाजिक चरित्र है। व्यापक क्षेत्र भी उनके पास है। सीमित अर्थ में वे राजनीति भी समझती हैं। सारे आन्दोलन के बीज भी इसी वर्ग में सबसे पहले पड़ते हैं। सामाजिक परिवर्तन में इनकी ऐतिहासिक भूमिका होती है।"[103] नारी आत्मा निर्भर होती जा रही है। लेकिन पारिवारिक बंधन में जब बंध जाती है तो उसकी आत्मा निर्भरता (उसकी नौकरी) के कारण उसे दोहरी जिन्दगी का सामना करना पड़ता है। दोहरी दायित्व का निर्वाहन करते-करते शोषण का भी शिकार हो जाती है। मृदुला सिन्हा ने भी अपनी कहानियों में कामकाजी नारियों का रूप अंकित किया है लेकिन सीमित मात्रा में। इनकी निचले स्तर की महिलाएँ ज़्यादातर शोषण का शिकार हुई है। इनकी कामकाजी नारियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है। एक पढ़ी लिखी नौकरी करने वाली और दूसरी अनपढ़ दूसरों के घर झाड़ू पोछा करने वाली और दाई ।

मृदुला जी की 'मानिनी' कहानी में पति के जेल चले जाने पर प्रभा ने अपने बच्चों के स्कूल में ही नौकरी माँग ली। जैसे-तैसे गुजारा हो गया। लेकिन जेल से लौटे ही पति ने नौकरी छुड़ा दिया। पति पत्नी के बंधन में पत्नी को पति की ही बात मान लेनी पड़ जाती है। पत्नी की स्वतंत्रता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। जब कि वह नौकरी भी उसने मजबूर होकर किया था। मृदुला जी की 'उधार का सूरज' कहानी में शिवानी अमेरिका में काम करती है। उसे कोई रोक-टोक नहीं है। स्वच्छंद रूप से काम कर सकती है क्योंकि अभी उसकी शादी नहीं हुई है। 'स्पर्श की तासीर' कहानी में नन्दिता एक कामकाजी नारी है, पेशे से डॉक्टर है।

शादी-शुदा औरत है। दो बच्चों की माँ है। इसे अपने पेशे से कोई परेशानी नहीं है। बस परिवार जनों और रिश्तों से डॉक्टर सम्बोधन पा-पाकर तंग आ चुकी है।

'परामर्श' कहानी में मृदुला जी ने मेयर साहिबा के यहाँ काम करने वाली लक्ष्मी का चित्रण किया है। लक्ष्मी का पति शराबी है और कोई काम नहीं करता है। लक्ष्मी की कमाई पर निर्भर है। लक्ष्मी काम पर तो जाती है पर उसका ध्यान घर पर ही अटकता है क्योंकि उसके पति विष्णु ने उनके घर को जुए का अड्डा बना रखा था। फिर भी लक्ष्मी विष्णु को तलाक नहीं देती है। शराबी पति के हरकतों तथा अत्याचारों को चुपचाप सह लेती है । दोहरी जीवन को ढोती जा रही है। इस प्रकार की एक और मृदुला जी कहानी है 'केकड़ा का जीवन'। इस कहानी की नायिका सीता है। उसका पति बहुत कामचोर होता है। परेशान होकर मायके चली जाती है। यहाँ से दिल्ली मीना दीदी के घर काम करने चली जाती है। घर के काम-धाम और इकलौती मीना की बेटी सौम्या की देखभाल करना ही सीता का काम रहता। इस घर में सीता को कोई कमी नहीं थी। बस एक कमी खलती वह यह कि उसे भी बच्चा चाहिए था। इसलिए पत्र लिखकर पति को दिल्ली बुला लिया। यह जानते हुए भी कि उसका पति निठल्ला निकम्मा है। मीना से कहती है, "दीदीजी, यह अब तक कमाया-खटाया नहीं तो क्या, मैं तो कमाने लगी न। दो घर कमाकर इसका भी पेट पाल दूँगी। दिल्ली में रहकर तो मैं दो क्या, दस का पेट पाल सकती हूँ। पर एक बच्चे से अपनी कोख तो अकेले नहीं भर सकती न? इसीलिए दीदी, और कोई बात नहीं। वैसे तो आपके घर में मुझे सारा सुख है, पर..।"[104] सीता मीना के घर का सुख छोड़ कर पति के साथ चली गई। पर जैसा उसने सोचा था वैसा नहीं हो पाया। बच्चे तो हो गए लेकिन सीता को कोई सुख नहीं मिला क्योंकि उसके बच्चे ही उस पर हाथ उठाने लगे थे। वह मीना के पास मदद माँगने जाती है पर मीना

कोई मदद नहीं करती है। सीता हार कर थक चुकी थी। उसने स्वयं अपना जीवन नरक बनाया और उसी में ही प्राण त्याग दिए।

दाई का दायित्व निभाने वाली औरतों का रूप मृदुला जी ने 'बलेसर माई का तालाब' और 'मनौती' कहानियों में दर्शाया है। बलेसर माई चमइन जात की है और 'मनौती' कहानी की सांगली अछूत जाति की है। दोनों का पेशा जनाना है। इसलिए बच्चा जन्माने के समय दोनों की पहुँच पंडित के घरों तक हैं। बलेसर माई के गाँव में परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही थी। जिसके कारण पूरा परिवार जच्चा और जन्मौती बच्चे की देखभाल में लग गए, "बलेसर के परिवार का भी मुख्य कार्य सभी घरों में जच्चा और जन्मौती बच्चे की देख-रेख करना था। जनाना पेशा था। जनाना पेशे के नाम से ही विशेष रूप से जाति पहचानी जाति थी।"[105] इस पेशे की कोई निश्चित आमदनी नहीं होती है। बच्चे के परिवार वाले जो नेग दे वही उनकी आमदनी होती है। नेग में मिले सामानों से इनका घर सज भर जाता है। 'मनौती' कहानी में भी सांगली पेशे से दाई है। मगर यह दाई केवल अपने बचपन की सहेली सुभद्रा को छूने के लिए बनी है। सांगली के मन में एक विचार आया, "क्यों न वह अपनी सास के साथ प्रसूति करवाना सीख ले। उसने वैसा ही किया। जच्चा और बच्चे की मालिश, बच्चे को नहलाना, धुलाना सब सीख लिया था उसने।"[106] दरअसल सांगली और सुभद्रा एक ही गाँव की बेटी है पर इनके जात अलग-अलग है। एक अछूत है तो दूसरी ब्राह्मण। संयोग से दोनों का विवाह एक ही गाँव में होता है।

मृदुला सिन्हा ने 'सहस्त्रपूतों वाली' कहानी में पेशे से नर्स पार्वती औरत का चित्रण किया है। पार्वती पूरी निष्ठा और लगन से अपना कार्य करती है। पहले तो उसे जच्चा वार्ड में काम करना पसंद नहीं था लेकिन नौकरी का सवाल है पसंद-नापसंद नहीं देखा जा सकता

है। वह जच्चा वार्ड में ही रही। “उसकी निष्ठा और मेहनत को देखकर प्रशासन ने उसकी सेवा का पाँच वर्ष का कार्यकाल बढ़ा दिया। क्वार्टर भी रहने दिया। पाँच वर्षों के बाद भी वह अस्पताल आती रही। किसी ने नहीं रोका। वह जच्चा वार्ड में ही रहती। बस वेतन नहीं मिलता था। बाकी सब तो यथावत चलता रहा।”[107] कार्य के प्रति समर्पण और लगाव को महसूस किया जा सकता है।

‘डायरी के पन्नों पर’ कहानी में सुवर्णा और सौहार्द दोनों कामकाजी पति-पत्नी होते हैं। एक दूसरे को समय नहीं दे पाते थे, जिसके कारण उनके दाम्पत्य जीवन में दरार पैदा हो गया और मामला कोर्ट तक चला गया पर जज की सलाह पर दोनों ने एक दूसरे की डायरी पढ़ी और उनकी समस्या समाप्त हो गई। इसी प्रकार की एक और कहानी है ‘खूँटे का बंधन’। इस कहानी में भी मृदुला जी ने कामकाजी पति-पत्नी की दशा को सामने लाया है। शुभा और शैलेश अलग-अलग दफ्तर में काम करते है, जिसके कारण दोनों एक दूसरे को समय नहीं दे पाते है। शुभा अलग होने की बात कहती है पर दफ्तर के काम से जब वह पटना गई तो उसकी मुलाक़ात अमेरिका से लौटे बुजुर्ग दाम्पत्य से होती है। उनके जीवन के बारे में जानकर शुभा चकित रह जाती है। बातों ही बातों से शुभा को पता चला कि दोनों दाम्पत्य सात समंदर पार रहते थे, “तब पुकारने की जरूरत ही कहाँ पड़ी। हमारे बीच सात समंदर की दूरी थी। साल में एक बार मिलते थे हम दोनों।”[108] उनके जीवन के बारे में जानकर शुभा अंदर से हिल गई और तेय किया कि वह भी वह भी शैलेश से खूँटे की तरह बँधी रहेगी। अलग दफ्तरों की क्या बिसात।

मृदुला सिन्हा की ‘उऋण’ कहानी भी कामकाजी दाम्पत्य की कहानी है। इस कहानी में भी दोहेरे दायित्व का भार केवल पत्नी पर ही है। सोनाली और अमिताभ दफ्तर जाते है पर

सोनाली को घर का सारा काम भी करना होता है। मनचाही नौकरी पाई लेकिन घर और दफ्तर के कामों के तले वह घिसती जा रही थी। दफ्तर से आकर वह सोचती, "दफ्तर की कुर्सी और मेज ही थोड़ा आराम करने की जगह है। विवाह के बाद हर सुबह घर के सारे काम निबटाकर वह काम पर जाती थी।"[109] इससे यह स्पष्ट होता है कि नारी चाहे नौकरी करे या न करे उसे घर के सारे काम करना ही पड़ता है। इस स्थिति में पति को भी पत्नी का हाथ बटाना चाहिए। पर ऐसा कम ही देखा जाता है।

कामकाजी दाम्पत्य पर आधारित एक और कहानी है- 'विलमता बिलगाव'। यह विशाखा और हर्ष की कहानी है। दोनों अलग-अलग जगहों पर काम करते हैं। एक दूसरे को समय नहीं दे पाते हैं। "दोनों में दुराव होने का कारण भी समय की दूरियाँ ही थी। आपसी बातचीत तो प्रारंभ से नहीं होती थी। दोनों का काम ही ऐसा था। कभी-कभी तो एक का दफ्तर से लौटने तो, दूसरे का जाने का समय होता था।"[110] इसलिए विशाखा हर्ष से अलग होना चाहती है। पर इस बीच विशाखा को एक बच्चा होता है। कामकाजी नारी होने के कारण दो महीने की आयु से ही शिवम् क्रेच में दिन बिताने लगता है। "विशाखा दफ्तर जाते समय उसे (शिवम्) क्रेच में रख आती। लौटते समय साथ लाती।"[111] कामकाजी नारी की यही निशानी है- दफ्तर भी जाओ, साथ में बच्चे को भी संभालो और शाम को थके हारे घर के कामों में जुट जाओ। लेकिन विशाखा दोहरी ज़िम्मेदारी से अपने को मुक्त कर लेती है यानि नौकरी छोड़ देती है। सपरिवार संग रहने का निर्णय स्वयं ले लेती है।

काम-काज जीवन को गति प्रदान करते हैं। पर इन्हीं काम-काजों के कारण हम अपने परिवार जनों से दूर हो जाते हैं। काम के साथ- साथ पारिवारिक रिश्तों की कदर करते हुए समायोजन करना सीखना चाहिए।

घरेलू नारी का रूप -

घरेलू नारियों की संख्या सबसे अधिक होती है। कथा साहित्य में भी इनकी चर्चा सर्वाधिक होती है। घर की चार दीवार ही इनका संसार होता है। अपनी स्थिति से इन्हें कोई शिकायत भी नहीं होती है। इनका जीवन परिवारजनों की सेवा में कट जाता है। घरेलू काम काज, बच्चों की देख-रेख, पति की सेवा आदि कार्यों में इतनी व्यस्त होती है कि ये स्वयं अपना जीवन जीना भूल जाती है। साथ ही यह अपने पति और अन्य परिजनों के शोषण का भी शिकार बन जाती है। डॉ. अमरनाथ के शब्दों में, "ये वे स्त्रियाँ हैं जो सदा ही अपने पति-परमेश्वर, परमेश्वर और राजतन्त्रेश्वर की शिकार रहती हैं। इनकी तारीफ में फरमाया जाता है कि ये औरतें ही हिंदुस्तान की शान हैं। मुल्क की नाक हैं। धर्म इन्हीं के बल पर फल-फूल रहा है। धन्य हैं ये नारियाँ! इस तरह पुरुष के दोनों लोक सध जाते है- क्योंकि इस लोक में स्त्री की महानता पुरुष के चरण-चिह्नों पर चलने में है। उस लोक के लिए स्त्री का तप! पूरा परिवार तर जाएगा। अब क्या चाहिए? एक इलाका परमेश्वर का, एक पति परमेश्वर का।"[112] घरेलू स्त्रियों की यही विशेषताएँ हैं। परिवार वालों के लिए सब कुछ सहने के लिए तैयार रहती है। त्याग, समर्पण, सामंजस्य या करना हो समझौता तत्पर रहती है। ये घर की सारी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाती चली हैं। इनमें पुरुषों की तुलना में अधिक सहनशीलता होती है। तभी तो अपने ऊपर हो रहे शोषण या अत्याचार को खुशी-खुशी सह लेती है। डॉ. अमरनाथ ने भी कहा है कि, "पुरुष वर्ग घर की सारी जिम्मेदारियाँ इन्हें सुपुर्द कर स्वयं बाहर की जिम्मेदारियाँ सँभालता है, और ये घरेलू महिलाएँ मात्र इन्हें ही अपना दायित्व स्वीकार कर घर में पिसती रहती हैं; पिसती रहती हैं खुद भूखी-प्यासी रहकर। घर-भर को खिलाकर जो बच रहा, उसे अपना भाग मानती हैं। यह महिलाओं का वह समूह है

जिनमें एक से एक असाधारण मिसालें मिलती है। त्याग, सहनशीलता, वीरता, ओजस्विता, धैर्य, क्षमा, क्रोध, दया, ममता हर क्षेत्र की लाजवाब मिसालें यहाँ हैं।"[113] इन सब से यही स्पष्ट होता है कि घरेलू महिलाओं में गुणों का समावेश होता है। परिस्थिति के अनुसार या जरूरत पड़ने पर वह उन गुणों का निर्वाह करती है।

मृदुला सिन्हा ने भी अपनी कहानियों में घरेलू नारियों का चित्रण अधिक किया है। उनके कहानियों में घरेलू औरतों का रूप स्पष्ट झलकता है। उनकी घरेलू औरतें सीधे-सादे, सहज एवं परिवार में व्यस्त रहते हैं। पति का कहना मानते हैं। सरल जीवन यापन करते है। नौकर-चाकर होने पर भी घरेलू औरतों के काम कभी कम नहीं हो पाते है। इनकी 'लालटेन की लौ में' कहानी में भी नौकरों के रहते भी मीना को ही खाना बनाना पड़ता है क्योंकि उसके पति उसके हाथ का बना खाना ही खाना चाहता है। "उसी ने तो मीना से कबूल करवाया था कि चाहे घर में सैकड़ों नौकर-चाकर हो जाएँ, लेकिन भोजन वह अपने हाथ से बनाएगी।"[114] इसमें पत्नी पर अपना रौब जमाने वाला पति साफ नजर आता है।

मृदुला जी की कहानियों में घरेलू औरतें ज्यादा शोषित नहीं हुए हैं। उन्होंने सामान्य घरेलू औरत का वर्णन किया है। इनकी औरतें घरेलू तो हैं पर यह अपना दायित्व अपने हिसाब से और पति के समर्थन के साथ घर की जिम्मेदारियों को निभाती हैं।

समाज सेवी नारी का रूप -

समाज की सेवा करने वाले या मानवता के भलाई के लिए किए जाने वाले काम को हम समाज सेवा कहते है। इन कार्यों के लिए कार्यरत लोगों को हम समाज सेवक या समाज सेविका कहते हैं। यह काम हर व्यक्ति से नहीं हो पाता है। क्योंकि इस कार्य के लिए आत्मा समर्पण और आत्मा शक्ति की आवश्यकता होती है। इस कार्य के लिए लगन, पूर्ण निष्ठा एवं

पवित्र मन की आवश्यकता भी होती। सरल शब्दों में मानवता की सेवा करना ही समाज सेवा है।

मृदुला सिन्हा ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज सेवा के लिए समर्पित नारियों का रूप उभारा हैं। इनकी नारियाँ समाज की प्रत्येक स्तर की है। पढ़ी-लिखी, अनपढ़, देहाती, घरेलू आदि। इन्होंने 'खाली तिजोरी' कहानी में ऐसी नारी का रूप दर्शाया है, जो चुपचाप बिना पति और बच्चों को बताएँ मानव कल्याण के लिए कुछ-न-कुछ करती रहती है। भिखमंगों को पानी पिलाती, भूखों को खाना खिलाती हैं। अपने स्त्री धन यानि जेवरों के माध्यम से वसुन्धरा ने कई लोगों का इलाज करवाया। उनके द्वारा इलाज करवाए गए सहोदर भाई से वसुन्धरा के परिवार वाले जान पाए कि कैसे तिजोरी खाली हो गई। "सहोदर सुबकते हुए कहा- "वे कहा करती थीं- सहोदर! मंदिर में भगवान के आगे घंटी बजाने और आरती दिखाने से क्या होगा।" वे अस्पताल जाती थीं। गरीबों को भोजन, रूपए, कंबल बाँटी थीं। कितनों के पाँव लगवा कर दिए। कितनों की आँखें बनवाई। तभी तो उनकी अंतिम यात्रा में बिना खबर के पाँच सौ लोग उन्हें विदा करने आ गए। उन्हें सूचना मिलती तो शायद श्मशान घाट में पैर रखने की जगह नहीं मिलती। उन्होंने मेरे दिल का भी ऑपरेशन करवाया था। बहुत पैसा खर्च कर नया दिल दिलवाया।"[115] दूसरों के लिए अपने जेवरों की तिजोरी तक खाली कर देने वाली मानव सेवा के लिए समर्पित नारी का रूप वसुन्धरा में प्रदर्शित किया है। वसुन्धरा व्यावहारिक सहयोग पर विश्वास रखती है और करके दिखाती भी है।

संस्था को अपना मकान दान में देने जा रही नारी का चित्रण मृदुला जी ने अपने 'बेमेल तस्वीरें' कहानी में किया है। तीनों बेटे के दूसरे शहर में बस जाने के कारण सीता का घर सूना-सूना हो गया था। पति का साथ तो पहले की छूट चुका था। पोती मोना के संग

मकान को 'जागृति' संस्था को दान में देने के लिए तैयारी चल रही होती है। दादी मकान के यादों में खोई सी हुई थी। लेकिन अब उसके सूनेपन की दशा उसे दान करवाने की मनः स्थिति में ले आया था। ताकि मकान फिर से हरा-भरा हो जाए। सीता के शब्दों, "यह मकान 'जागृति'संस्था के नाम कर दो। इतना बड़ा आँगन है। भजन कीर्तन होगा। क्रेच के बच्चे खेलेंगे। वृद्धाश्रम में वृद्ध लोग रहेंगे। जवान स्त्री-पुरुष भी आते रहेंगे। आखिर वही लोग तो संस्था चलाएँगे। यह सूना आँगन फिर गुलजार हो जाएगा।"[116] सीता को भले ही घर के सूनेपन ने डँसा हो पर उस सूनेपन ने उसके मन में दान भावना का संचार कर दिया है।

अन्य समाज सेविका के रूप में लेखिका ने 'सती का सम्मान' कहानी में इंदिराजी के माध्यम से समाज सेवा व पति की सेवा करना समाज सेवा के रूप में दर्शाया है। बीमार पति की सेवा को भी समाज सेवा में गिनाया है। कुष्ठ रोग से पीड़ित पति को छोड़ना फिर पश्चाताप में संस्था से जुड़ जाना और उसके द्वारा पति और अन्य लोगों की सेवा करना 'ऋण' कहानी में लेखिका ने उभारा है। लेखिका ने 'पगली कहीं की' कहानी में सामाजिक कुरीतियों की शिकार कस्तूरी का चरित्र चित्रण किया है। वह उन तमाम नारियों की भूमिका निभाती है जो पति के शोषण का शिकार बनती है। पति अपनी खामी को छुपाने के लिए कस्तूरी पर बच्चा न हो सकने का झूठा आरोप लगाता है। जिसके कारण दाम्पत्य जीवन में दरार आ जाता है। कस्तूरी बेघर हो जाती है। स्टेशन पहुँच जाती है और वहाँ किसी दरिंदे की हवस का शिकार बन जाती है। गर्भवती होती है और एक बच्ची को जन्म देती है। बच्ची जन्म देने के बाद कस्तूरी अपने सामान्य रूप में आ जाती है और बेघर महिलाओं के लिए बनी संस्था पर पहुँच जाती है। वहाँ अपनी बेटी जया के साथ अन्य बच्चों की देखभाल में जुट जाती है। "कस्तूरी ने जया की देखरेख के साथ उस संस्था में रह रहीं अन्य महिलाओं के बच्चों

की भी देखरेख की जिम्मेदारी ले ली।"[117] हालत की शिकार बनी कस्तूरी ने अपने जीवन में दूसरों की सेवा करने का धर्म अपनाकर अपना जीवन सुधार लिया।

'बलेसर माई का तालाब' कहानी में नेग में मोतियों का हार पाने पर बलेसर माई उसका इस्तेमाल अपने लिए न करके गाँव के लोगों के लिए तालाब खुदवा लेती है। ताकि सब पानी पी सकें। जबकि उस हार को बेचकर सौ बीघे की जमीन खरीदी जा सकती है। इस कहानी में बलेसर माई की उदारता एवं मानव सेवी रूप परिलक्षित होता है। लेखिका ने बड़े सजीव रूप से बलेसर माई का रूप प्रस्तुत किया है। एक दाई चमार जात की गरीब औरत है फिर भी मोतियों का हार पाकर भी उसमें कोई लोभ या स्वार्थीपन नहीं आता है। सब को प्यास से तृप करने की भावना पसर आई।

नारी के विभिन्न रूपों को दर्शाने में मृदुला सिन्हा सफल रही हैं। इनके साहित्य में नारी पात्रों की बहुलता हैं। नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को लेखिका ने करीब से जाना और दर्शाया हैं। प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र के शब्दों में, "आपके साहित्य को नारी जीवन का महागाथा कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।"[118] नारी जीवन को सही मायने में लेखिका ने खुद समझ और अपने कथा साहित्य के माध्यम से विश्व में साझा किया है।

3.5 जीवन मूल्य

जीवन मूल्य वे मूल्य होते हैं जो एक अच्छा मानव या इंसान होने का आभास दुनिया को करवाते हैं। इन मूल्यों से परिपूर्ण व्यक्ति परिवार में ही नहीं अपितु समाज एवं देश-विदेश में भी सम्मान प्राप्त करता है। इन मूल्यों को कई अर्थों में देखा जा सकता है, जैसे – सामाजिक, पारिवारिक, मानवीय, नैतिक, आध्यात्मिक, भौतिक आदि। सामाजिक मूल्य वे मूल्य होते हैं जिनमें अधिकार, कर्त्तव्य एवं न्याय क्षेत्र शामिल होता हैं। मानवीय मूल्य वे होते हैं जिनमें नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश होता है। नैतिक मूल्यों में न्याय

एवं ईमानदारी रहती है तो वहीं आध्यात्मिक मूल्यों में शांति, प्रेम, अहिंसा का वास होता है। भौतिक मूल्यों में भौतिकता शामिल होती है जिसमें सबसे बड़ी चीज रोटी, कपड़ा और मकान शामिल है। साहित्य में इन सभी मूल्यों का अवलोकन होता है। इसमें 'सहित' का भाव होता है। मृदुला सिन्हा जीवन मूल्यों के विकास में समाज कल्याण बोर्ड को अहम मानती हैं। इसलिए इन मूल्यों को आगे बढ़ावा देने के लिए सरकार का योगदान कम एवं समाज तथा सामाजिक संस्थाओं का योगदान प्रमुख है। अपनी मिट्टी और संस्कृति से अनिभिज्ञ होना विश्वगुरु न बन पाने का एक बड़ा कारण है। जीवन में विज्ञान, औद्योगिकीकरण एवं संचार क्रांति की अहम भूमिका है। पाश्चात्य संस्कृति की भोगवादी-सुखवादी अवधारणा ने भी जीवन में हस्तक्षेप किया, जिससे सांस्कृतिक मूल्यों का हास हुआ। कहानियों के परिप्रेक्ष्य में जीवन मूल्य से संबंध मानवीय मूल्य, प्रेम, करुणा, कृतज्ञता के मिश्रण से प्रभावी बन गई है और इन सभी भावों को समाहित करते हुए मूल्य, एकता नया अर्थ देता है। लेखिका सहजता से समाज के लोगों को अपनी कहानियों का पात्र बनाते हुए उन मूल्यों को पुनर्स्थापित करती हैं। कमल किशोर गोयनका के शब्दों में, "मृदुला जी की कहानियों-उपन्यासों में आपको माँ, बहन, पत्नी, मौसी, पुत्री, दादी सभी मिलेंगी और इनमें भारतीय जीवन मूल्यों को बचाने की तत्परता दिखाई देगी।"[119] इसलिए इनकी स्त्री पात्र बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

मानवीय मूल्य

मानव जीवन की सार्थकता उसके मानवीय मूल्यों से सिद्ध होती है। मानव मूल्य समाज और देश के लिए आवश्यक है। मृदुला सिन्हा की कहानियों में व्यक्तित्व के माध्यम से मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई है। जैसे – "बुढ़ापे में बच्चों से सम्मानित होने से बढ़कर सुख नहीं

हो सकता। और इस उम्र में बच्चों द्वारा अवहेलना से बढ़कर कोई दुख नहीं। मैं तो बहुत सौभाग्यशालिनी हूँ। शरीर में भांति-भांति की बीमारियाँ होते हुए भी मन से सुखी हूँ।"[120] इस कहानी में कई स्थानों पर मानवीय मूल्यों की स्थापना की गई है। मानवीय जीवन में सुख-दुख का उतार-चढ़ाव होता रहता है। मनुष्य को हमेशा सम रहना चाहिए। यही खुशहाल जिंदगी का राज है। भारतीय समाज में लोकोक्ति एवं मुहावरों के माध्यम से मानव जीवन की परिकल्पना की गई है। 'अंतिम इच्छा' कहानी में माँ-बेटे की सांसारिक पृष्ठभूमि एवं महत्ता को बहुत ही मार्मिक ढंग से समझाया गया है, "पूत, कपूत भले जग में, माता न कुमाता हो सकती।"[121] बहुत सारे सच्चे कर्मों का परिणाम है कि संसार में माँ की प्रतिष्ठा हुई है। ऐसे मूल्यों की स्थानपा जीवन में सुख एवं सौन्दर्य भर देता है।

मानवीय मूल्यों की स्थापना मृदुला सिन्हा की बहुत सारी कहानियों में हुआ है। वे गहरे जीवन बोध की लेखिका हैं। उनके यहाँ भारतीय चिंतन बोध की प्रबलता और उस पर मानव मूल्य की प्रतिष्ठा देखी जा सकती है। भारतीय समाज में बेटा-बेटी में अंतर करने की परम्परा पुरानी है। परन्तु समाज में बेटी का मूल्य कम नहीं है और उसे बेटा से कम न मानने वाले भी बहुत मिल जाते हैं। 'मगन है मदन' कहानी में एक गरीब बाप द्वारा बेटी को समाज में प्रतिष्ठित करने एवं उसके मूल्यों को दर्शाने का अच्छा उदाहरण सामने आया हैं, "हाँ, मेम साहब! लक्ष्मी ही है। उसके जन्म पर तो मैं थोड़ा दुखी हुआ था। मेरी माँ तो रोने ही लगी। लेकिन मेरी बेटी दुखहरणी है। इस धरती पर आते ही उसने मेरे कई दुख हर लिए। मधु थोड़ा-थोड़ा बोलने लगी है, मेम साहब। वह सुनती और बोलती है। रात को उसका रोना सुनकर चौंककर जागती है; उसे दूध पिलाती है। तिवारी की आँख भर आई थीं। खुशी के आँसू थे। मैं भी भीग गई।"[122] प्रस्तुत कहानी हमें यह बताती है कि बेटी के जन्म और उसका

मूल्य वर्तमान समाज में कितना प्रासंगिक है। भ्रूण हत्याओं के चलते इस मूल्य बोध का ह्रास हो रहा है। जीवन को चलाने वाले संस्कार व्यक्ति के अंदर एक आंतरिक ऊर्जा फैलाता है। 'उऋण' कहानी में राजरानी के चार संतान होने पर भी बुढ़ापे में उसकी सेवा उसकी बेटी सोनाली ही करती है। बेटे पास भी नहीं आते। जब मुखाग्नि देने की बात आती है तो पड़ोसन बेटे को बुलाने का सुझाव देती है तब सोनाली चिल्लाते हुए कहती है – "नहीं! नहीं! ऐसा कुछ भी नहीं होगा और अगर कुछ हुआ भी तो मुखाग्नि भी मैं ही दूँगी। मैं ही बेटी और बेटा दोनों हूँ। मैं ही माँ के ऋण से उऋण हुई हूँ न।"[123] बेटी के मूल्य को ऊँचा कराने का माध्यम लेखिका ने दर्शाया है।

मृदुला जी अपनी कहानियों में मानवीय संवेदना, भारतीय संस्कृति, लोकजीवन और जीवन मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं। साथ ही इनके बिखरते रूपों को बचाने की तत्परता भी विद्यमान है। प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र के अनुसार, "वर्तमान दौर में टूटते-बिखरते मानवीय मूल्यों और रिश्तों को बचा लेने की कसक मृदुला सिन्हा की कहानियों का प्राण तत्व है।"[124] मानवीय मूल्यों और रिश्तों को कायम रखने के लिए इनका आदर करने और सहनशीलता व सामंजस्य की भावना रखने का संदेश लिए इनका साहित्य मुखरित होता है।

आधुनिक युवा बनाम मूल्य

अक्सर हम देखते हैं कि कई परिवार अपने जीवन-काल में कई मुश्किलों का सामना करते हैं। अपनी जिम्मेदारी को निभाने का प्रयास करते हैं। 'मुआवजा' कहानी में उजला और राधामोहन उन्हीं परिवारों का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं। शुरुआती दिनों में कई मुश्किलों का सामना करते हुए आगे बढ़ते हैं। नीरज जब छोटा था तब वे बहुत सारी जिम्मेदारियों के नीचे जैसे दब गए थे। इस कारण इच्छा होते हुए भी वे अपने बेटे का लाड़-दुलार नहीं कर सके। उसी का मुआवजा अब वे अपने पोते के जरिए दे रहे हैं। बेटे को ये

बिल्कुल ही पसंद नहीं है। अब उजला की सहनशक्ति का बाँध टूट जाता है। बेटे नीरज के मुँह से जब वह सुनती है कि उनका इरादा क्या है? तब वह कहती हैं, "इरादा जानना चाहते हो तो सुनो! तुमको नए कपड़े नहीं पहना पाए, बाजार से आइसक्रीम नहीं खिला पाए, खिलौना नहीं खरीद सके, मेरे मन में भी मलाल है। मलाल लेकर मैं मरना नहीं चाहती। तुम्हारे लिए जो सब नहीं कर पाई, तुम्हारे बच्चों को देकर खुशी होती है। ये मेरी अतृप्त इच्छाएँ हैं, जिन्हें पूरा कर रही हूँ। अपने मन का संताप धोती हूँ, और कुछ नहीं।"[125] माता-पिता अपने जीवन की हर आशा, इच्छा अपने बच्चों की आँखों में देख उन्हें पाल-पोसकर बड़ा करते हैं, परन्तु नीरज जैसे कई पुत्र है जो माता-पिता के कर्त्तव्यों का हिसाब लगाते रहते है। बच्चों को बड़ा होते देख माता-पिता हर दुख को स्वर्ग सुख में बदल देते हैं। उन्हें इस बात का कभी एहसास ही नहीं होता कि यही बच्चे भविष्य में उनका दिल दुखाने वाले है।

'खोए जीवन की खोज' कहानी एक विधवा माँ अनुराधा की है, जो अपने बेटे को स्वयं के बल पर पढ़ाया-लिखाया। माँ के आँचल में छिपकर उसका पूरा बचपन बिता। अपने बेटे के अलावा उस माँ के जीवन में ऐसी कोई भी चीज नहीं थी जो उसकी जीवन नैया को गति देती। उसकी शिक्षा पूरी होते ही उसे एक अच्छी नौकरी मिल गई और शैला नामक आधुनिक एवं स्वतंत्र विचारों वाली लड़की से विवाह भी हो गया। दोनों पति-पत्नी एक साथ काम पर चले जाते थे। उनके घर वापस आने से पहले अनुराधा उनके लिए कुछ न कुछ खाने के लिए बनाकर रखती थी। शैला को यह सब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था और वह अपने पति समीर से कहती भी है। इसलिए एक दिन समीर शैला द्वारा पुनरावृत वाक्य बक जाता है, "माँ! हमें अपनी जिन्दगी जीने देंगी या नहीं! माँ! अब आप हमारा पीछा छोड़ दें। आप अपनी जिन्दगी जिए। हमें अपनी जीने दें।"[126] आज की युवा पीढ़ी अपने तरीके से

अपना जीवन जीना चाहती है। वह किसी का हस्तक्षेप अपने जीवन में पसंद नहीं करती। अपने स्वतंत्र विचारों को लेकर चलना चाहती है। बड़ों का आदर-सम्मान तो करना चाहती है परन्तु उनका हस्तक्षेप नहीं चाहती। अकेलेपन की वजह से शायद माता-पिता अपने बेटे-बहू के संसार में अपनी व्यस्तता खोजने का प्रयास करते है। जिनके कारण बार-बार उन्हें अपमानित होना पड़ता है।

पारिवारिक संस्कार बनाम मूल्य

जिस परिवार में प्रेम, विश्वास, बुजुर्गों की सेवा एवं भाईचारा का संबंध व्याप्त होता है, वहीं संस्कारों की वास्तविक स्थिति का पता चलता है, जो जीवन मूल्यों का व्यापक अर्थ प्रकट करता है। मृदुला सिन्हा ने अपनी कहानियों में स्त्री पात्रों द्वारा पारिवारिक संस्कारों के विविध रूपों को प्रस्तुत किया है। परिवार की धुरी अथवा आत्मा स्त्री ही है। पुरुष मकान अवश्य बनाता है परन्तु उसे घर की पदवी एक स्त्री ही प्रदान करती है। तभी तो उसे गृहणी, गृहलक्ष्मी, गृहशोभा आदि कहा जाता है। जीवन मूल्य एवं मानवीय मूल्य की प्रकाष्टा अगर कहीं है तो वह एक स्त्री में ही दिखाई देती है। भारतीय संस्कृति में व्याप्त जीवन मूल्यों एवं पारिवारिक संस्कारों के प्रति निष्ठा का भाव 'औलाद के निकाह पर' कहानी में दिखाई पड़ता है। कहानी की नायिका साइदा के शब्दों, "ई मेरे पास आए। बोले, 'मेरा एक पैंट धो देगी?' मैं वहाँ अकेली थी। मेरी मटेतारी मुझे कई बार हिदायत दे चुकी थी, 'घाट पर कपड़ा धोते समय कोई अनजान बात करे तो जवाब मत देना। कोई मर्द हो, तब तो आँख उठाकर भी नहीं देखना।' अम्मी की सीख मन पर जमी थी। मैंने आँखें नीची किए हुए ही कहा, 'पूरे घाट पर धोबी के कितने पटहे हैं। और किसी के पास नहीं गए, मेरे पास क्यों आए हो? नहीं

धोऊँगी पैंट। जाओ, किसी और से धुलवा लो'।"[127] यहाँ नायिका के आचरण और व्यवहार में पारिवारिक संस्कारों की झलक दिखाई देती है, जो जीवन मूल्य का आधार स्तम्भ हैं।

पारिवारिक मूल्य मुख्य रूप से लड़कियों में ही निहित होता है जो वे अपने घर ही नहीं बल्कि अपने ससुराल में भी मान-सम्मान पाती है। पारिवारिक संस्कारों को जीवन की शक्ति कह सकते हैं। 'सती का सम्मान' नामक कहानी में लेखिका ने बीमार पति की सेवा में संलग्न नायिका के वर्णन द्वारा पाठकों की चेतना को झकझोरने का प्रयास किया है। एक ऐसी स्त्री जो पारिवारिक संस्कारों के साथ अपने दायित्वों का निर्वाह बहुत अच्छी तरह से करती हैं, "इंदिरा जी सेवा-मगन थीं। सभी गोष्ठियों में जाना-आना छोड़ दिया था। मि. पसरीचा की सेवा भी समाज-सेवा ही थी। इंदिरा जी की छवि उन दिनों मेरे सामने मायूस-सी नारी की थी। निराश होंगी, परेशान होंगी, परन्तु मैं तो उन्हें देखकर दंग रह गई। पचहत्तर वर्ष की आयु में बिछावन पर पड़े पति की सेवा मात्र सेवा के लिए नहीं, उन्हें जितना दे सके, सुख देने के लिए हो रही थी।"[128] यहाँ पारिवारिक संघर्षों के साथ-साथ अपने दायित्वों का निर्वाह करती स्त्री का वर्णन है, जो जीवन मूल्यों का उत्कर्ष उदाहरण है। मनुष्य की पहचान उसके संस्कारों से होती है तथा संस्कार ही उसके सम्पूर्ण जीवन मूल्यों को ही ज्ञापित करता है।

पारिवारिक संस्कार जीवन मूल्य के सच्चे अंग होते हैं। परिवार व्यवस्था प्राचीन काल से चली आ रही है। माता-पिता का दायित्व है कि स्वाध्याय चिंतन-मनन का बीजारोपण अपनी संतानों में बचपन से ही करते जाएँ। साथ ही स्वयं भी 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना का पालन करें। इंसान की पहचान उसके संस्कारों से बनती है तथा उसके संस्कार ही उसके जीवन मूल्य के व्याख्यायित करते हैं। आज भोगवादी संस्कृति का प्रचलन बढ़ा है। उससे

उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिला है और इस उपभोक्तावाद ने हमारी भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों का नाश करने में कोई कमी नहीं की है। इसी कारण आज अनुशासन और संस्कारों के अभाव में परिवार बिखरते जा रहे हैं। "संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने साल 1994 को अंतरराष्ट्रीय परिवार वर्ष के रूप में भी मनाया था। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए 15 मई अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।"[129] वर्तमान उपभोक्तावादी समाज में व्यक्ति को बाहरी चमक-धमक से जाना-पहचाना जाता है, जिसके कारण सांस्कृतिक एवं जीवन मूल्यों का बिखराव बढ़ता जा रहा है। मृदुला सिन्हा ने पारिवारिक जीवन मूल्यों को मानवीय मूल्यों का आधार माना है और मानवीय सम्बन्धों को पारिवारिक संस्कारों की पृष्ठभूमि। उनका उद्देश 'विश्वबंधुत्व की भावना' का रहा है और बंधुत्व भाव का बीजारोपण तो परिवार में ही होता है।

जीवन मूल्यों का बिगड़ता संतुलन

आज भूमंडलीकरण के जमाने में मनुष्य स्वार्थी होता जा रहा है। आज की युवा पीढ़ी पढ़-लिखकर विदेशों में जा बसती हैं। देश में पश्चिमीकरण बढ़ता जा रहा है। पश्चिमीकरण के कारण आज की युवा पीढ़ी अपने बुनियादी आचार-विचार, संस्कार, रहन-सहन सब कुछ जैसी भूलती जा रही है। 'पुनर्दान' एक ऐसे ही युवा वर्ग की कहानी है। कहानी का नायक अनुपम विवाह के तुरन्त बाद अपनी पत्नी कोमल को घर छोड़कर अमेरिका चला जाता है। अनुपम की इस हरकत से उसके माता-पिता को बड़ा दुख होता है। वे कोमल के प्रति संवेदनशील है। अपनी आर्थिक स्थिति अधिक मजबूत न होने के बावजूद ससुर दीनदयाल जी कोमल को अमेरिका भेजने में सफल हो जाते हैं। वहाँ पहुँचते ही कोमल के पैरों तले जमीन खिसक जाती है, क्योंकि अनुपम का विवाह एक अंग्रेज लड़की से पहले ही हो चुका था। कोमल अनुपम की असलियत उसके माता-पिता को नहीं बताती। अनुपम की पत्नी

कैथरीन की सहायता से कोमल एक जगह नौकरी करने लगती है। वहाँ कोमल की पहचान आदित्य नाम के लड़के से होती है। धीरे-धीरे दोनों की नजदीकियाँ बढ़ जाती है। कैथरीन कोमल को आदित्या के साथ घर बसाने की सलाह देती है। कोमल और आदित्य की नजदीकियाँ देख अनुपम कैथरीन से उन दोनों के संबंध के बारे में पूछता है, तब वह बताती है कि कुछ दिनों में दोनों विवाह के बंधन में बंधने वाले हैं। अनुपम को बात अच्छी नहीं लगी, वह कैथरीन से कहता है, "नहीं-नहीं, मेरे घरवाले क्या कहेंगे? मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा?"[130] यहाँ अनुपम की बातों से यही लगता है कि पुरुष चाहे जो भी करे सब सही है। स्वार्थ में अंधा अनुपम ने न अपने माता-पिता के बारे में सोचा और न ही अपनी ब्याहाता पत्नी के बारे में। आज जब मजबूर होकर उसकी पत्नी अपना अलग घर बसाना चाहती है तब उसे माता-पिता की इज्जत का ख्याल आता है। कैथरीन के कहने पर कोमल और आदित्य अमेरिका में ही कोर्ट में विवाह कर लेते हैं। तदुपरान्त चारों भारत वापस आते है। कोमल अपने ससुर को अमेरिका में घटी हर घटना के बारे में बताती है। दीनदयाल जी सारी बाते सुनकर सन्न रह जाते हैं। भावुक होकर अपनी बहू और आदित्य के रिश्ते को स्वीकार करते हुए कहते हैं, "बेटी! अमेरिका की तुम्हारी कोर्ट मैरिज से बात नहीं बनेगी। भारतीय पद्धति से तुम्हारा व्याह रचाऊँगा। आदित्य के साथ सात फेरे लगवाऊँगा। गाँठ ऐसी बाँधूँगा कि सात जनम तक खुले नहीं। और हाँ, कन्यादान भी मैं ही करूँगा। ...तुम्हारे पापा ने कन्यादान करके मुझे दे दिया था न। अब तो तू हमारी बिटिया है। मेरे नालायक बेटे ने तुम्हारा हाथ थामकर छोड़ दिया तो क्या, मैं तो हूँ न! दान में मिली बेटी का पुनर्दान मैं स्वयं करूँगा।"[131] दीनदयाल जी यथावत कोमल का कन्यादान करते हैं। इस कहानी में दीनदयाल जी अपने बेटा का समर्थन नहीं करते क्योंकि वह गलत है। यह एक आदर्श उदाहरण है समाज के लिए।

आज इस तरह की अनेक घटनाएँ हम अपने आस-पास देखते हैं। समाज में बदलाव की आवश्यकता है।

मृदुला सिन्हा अपनी कहानियों के माध्यम से एक आदर्श मूल्य की स्थापना करती है, जो पश्चिमीकरण के चलते धूमिल हो रहा है। 'दत्तक पिता' एक ऐसे ही वृद्ध पिता और पुत्र की कहानी है जो समाज में बढ़ रहे पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव और वृद्धाश्रम की बढ़ती माँग एवं उसके पीछे की मूल समस्या को दर्शाता है। यह कहानी आज के माता-पिता की ऐसी दशा को दर्शाती है, जो अपने बच्चों के स्नेह और प्यार के लिए तरसते हैं। किशोरावस्था और युवावस्था बिना किसी के सहारे कट जाती है, परन्तु बचपन और बुढ़ापा अकेले नहीं कटता। इस अवस्था में किसी अपने की जरूरत पड़ती है। प्रस्तुत कहानी में सिद्धार्थ को भी अपने स्वर्गवासी पिता की याद तब आई जब वह स्वयं उसी अवस्था में पहुँच चुका था। मनुष्य जब तक स्वयं उन अवस्थाओं से नहीं गुजरता तब तक वह दूसरों की उन अवस्थाओं को नहीं समझ पाता। आज की युवा पीढ़ी बड़े होने के बाद नौकरी, व्यापार में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि वे अपने माता-पिता की देखभाल करने में असमर्थ रहते हैं।

अक्सर देखा जाता है कि माँ-बाप अपनी संतान को पालते समय कोई कसर नहीं छोड़ते, परन्तु जब उन्हीं माँ-बाप का अंतिम समय आता है तो बच्चे उन्हें बेसहारा छोड़ देते है। 'अंतिम इच्छा' एक ऐसी ही वृद्ध की कहानी है। कहानी की नायिका पार्वती पारिवारिक दुर्व्यवस्था के कारण जब वह वृद्धाश्रम चली जाती है। वहाँ उनकी मुलाकात कमला से होती है। कमला हमेशा अपने बेटों की याद में कुढ़ती और खोई-खोई रहती है। आश्रम के व्यवस्थापकों ने उनके चारों बेटों को खबर कर दिया था परन्तु उन्हें देखने कोई नहीं आया। कमला जब मरणासन्न अवस्था में थी, उनसे उनकी अंतिम इच्छा पूछा गया। लेकिन कुछ कहे

बिना ही उन्होंने अंतिम साँस ले लीं। चूँकि कमला जी भारत सरकार की बड़ी अधिकारी रह चुकीं थीं। इसके कारण उनके शव पर माला चढ़ाने मुख्यमंत्री और कमला जी के दोनों बेटे भी आए थे। दोनों बेटों ने माँ के पाँव पर फूल चढ़ाते हुए फोटो खिंचवाया। यह सब देखकर पार्वती जी बहुत नाराज और दुखी हो जाती है, क्योंकि उसे पता था कि कमला जी के जीते जी उनके बेटे उनसे मिलने आश्रम नहीं आते थे। इसलिए पार्वती जी अपनी अंतिम इच्छा लिखवाती है। अपनी अंतिम इच्छा के बारे में बताते हुए कहती हैं, "मेरे मरने के बाद मेरा कोई भी बेटा, जिसने जीते जी मुझे एक गिलास पानी भी नहीं पिलाया हो, मेरे मुख में आग नहीं लगाएगा।"[132] इस कहानी में जीवन मूल्यों के ह्रास होते जा रहे पहलुओं को दर्शाया गया है। आधुनिक जीवन की चाह में बच्चे पढ़ लिखकर शहरों तथा विदेश तक नौकरी करने के लिए चले जा रहे है, जिसके चलते जीवन मूल्यों में दरार पड़ जाती है और संतुलन बिगड़ जाता है। बेटे अपने कर्त्तव्यों से डगमगा जाते हैं। माँ-बाप एवं परिवार के अन्य सदस्यों की जिम्मेदारी लेना भूल जाते है। इतने व्यस्त होते है कि अपनों के लिए समय नहीं दे पाते हैं।

समाज परिवारों से जुड़ा रहता है, परन्तु परिवार में पाए जाने वाले असंतोष, विचारों में पाई जाने वाली भिन्नताएँ समाज को संकुचित बना रही है। 'बात का गोला' कहानी भी इसी पारिवारिक भिन्नताएँ एवं असंतोष को प्रदर्शित करती है। आजकल सामान्य रूप से हर परिवार में पाई जाने वाली व्यथा इस कहानी के माध्यम से देखी जा सकती है। शहर में रहने वाले बड़े भाई के घर गाँव में रहने वाला छोटा भाई कुछ अपेक्षाएँ लेकर चला जाता है। परन्तु भाभी और भतीजों का रहन-सहन, आचार-विचार एवं उनका व्यवहार देख वह हैरान हो जाता है। अपनी भाभी के साथ वह कई बार बातचीत करने का प्रयास करता है। परन्तु वह हमेशा उसे नजरंदाज करती रहती है। एक दिन भाभी की कुछ सहेली उनसे

मिलने घर आती है। स्वाभाविक रूप से वे उस व्यक्ति का परिचय पूछती है, तो जवाब में भाभी बताती है, “मेरे पति के गाँव से कोई मिलने आया है।”[133] हमारे देश में भाभी को माँ का दर्जा दिया जाता है। ऐसे में अगर वही माँ रूपी भाभी इस प्रकार से अपरिचितों सा व्यवहार करें तो व्यक्ति क्या कर सकता है। प्रस्तुत कहानी में समाज एवं रिश्तेदारों द्वारा निभाई जाने वाली पराई भावना को दर्शाया गया है। समाज परिवार से बनता है। परन्तु परिवार के मायने बदल रहे है और यहीं बदलाव जीवन मूल्यों को खंडित कर रहा है।

निष्कर्ष

मृदुला सिन्हा ने अपनी कहानियों में लोक जीवन को सबसे महत्वपूर्ण रखा है। क्योंकि लोक जीवन से ही समाज को सुधारा जा सकता है। इसी सभ्य समाज में रहकर ही मानव जीवन की अभिव्यक्ति होती है। जीवन की अनुभूति से ही मानव विभिन्न क्रिया कलापों में अपने को सम्मिलित करता है। पूजा पाठ, व्रत तथा तीर्थाटन – यह सभी लोक जीवन का अंश हैं। लेखिका ने अपनी कहानियों की कथावस्तु का केंद्र गाँव तथा शहरी जीवन के साथ-साथ विदेश को रखा है। रिश्तों की कदर करना भी सिखाती है। लेखिका के कहानियों में मध्यमवर्गीय मानव जीवन का चित्रण अधिक हैं। इनके जीवन में व्याप्त समस्याओं और संघर्षों का सजीव रूप सामने चित्रित होता है। इनकी कहानियों की कथावस्तु संक्षिप्त होती है। कहानी की घटनाएँ परस्पर संबन्धित होती जाती है। कहानी के शुरुआत में अंत का पता नहीं चलता है, जिसके कारण कहानी के अंत तक जिज्ञासा बनी रहती है। कहानी का विस्तार होता जाता है और उसमें निहित उद्देश्य को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हुए समाप्त हो जाती है। लेखिका निम्न वर्ग के संघर्ष की आवाज बनी है। वृद्धों की समस्याओं पर भी चिंतन किया है। समाधान के लिए वृद्धों को गोद लेने का सुझाव भी देती हैं।

मृदुला जी की नारी विषयक चिंतन भारतीय विचार चिंतन पर आधारित है। वह स्त्री को विशेष मानती है और उन्हें विशेष सम्मान एवं विकास के अधिक अवसर दिलाने की

पक्षधर हैं। इन्होंने नारी को पुरुष की तुलना में विशेष माना है तथा इनके समानता पक्ष से अधिक इनकी विशेषता पर बल दिया है क्योंकि नारी नये जीवन को जन्म देती है। आधुनिकता को भी साथ लेकर चलती है बिना भारतीय संस्कृति की उपेक्षा किए। लेखिका भारतीय संस्कृति और आधुनिकता को साथ लेकर चलने वालों में से एक है।

आधुनिकता की चाह के कारण आज परिवार टूटते जा रहे हैं। मृदुला जी ने इन्हीं टूटते-बिगड़ते परिवार को अपनी कहानी का केंद्र बनाया हैं। चूंकि यह नारी को श्रेष्ठ मानती है, इसलिए इन्हीं से परिवार को टूटने से बचाने के लिए आशा रखती है। समाज में नारी को उचित सम्मान और स्थान देने की समर्थक है, जिससे समाज का ही विकास होगा। इनका नारी-पुरुष चिंतन भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल है। दोनों का अस्तित्व दोनों में ही समाया हुआ है। यह नारी की स्वतंत्रता की भी समर्थक है। घरेलू दायित्व के साथ-साथ कामकाजी जीवन को इन्होंने स्वीकारा है। लेखिका का पक्ष अस्थावान है जो मानवीय मूल्यों को साथ लेकर अनुशासन, कर्त्तव्यपालन और संयम पर ज़ोर देती हैं।

रचनाकार में मानवीय मूल्य विद्यमान है। जिसके कारण उनकी रचनाओं में मानवीय पक्ष उभर कर सामने आता है। उनकी रचनाओं में मानवीय मूल्यों की स्थापना होती है। हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में इनकी रचनाओं का योग एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इनकी कहानियों का अध्ययन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि इन्होंने सम्पूर्ण समाज का कल्याण चाहा है जिसमें नारी को जीवन दिशा निर्दिष्ट करते हुए उत्साह के साथ जीवन जीने का संकल्प दिया है।

संदर्भ :

1. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, आधुनिक हिन्दी-साहित्य विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007, पृ. सं. - 70
2. देवीशंकर अवस्थी, आलोचना का द्वंद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. सं. - 79
3. वही, पृ. सं. - 82
4. संजय श्रीवास्तव (संपादक), वर्तमान साहित्य, (साहित्य, कला और सोच की पत्रिका), वाराणसी, वर्ष - 40, अंक – 13, 14, 15, मार्च-मई, 2023
5. डॉ. सत्येन्द्र, मध्ययुगीन हिन्दी का लोकतात्विक अध्ययन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ. सं. - 3
6. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 54
7. वही, पृ. सं. - 107
8. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 118
9. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 115
10. बल्देव भाई शर्मा, सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 312
11. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ. सं. -144

12. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. सं. - 10

13. वही, पृ. सं. - 19

14. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य: विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 55

15. वही, पृ. सं. - 170

16. मृदुला सिन्हा, जैसी उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 103

17. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 161

18. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 84

19. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 35

20. मृदुला सिन्हा, जैसी उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 69

21. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 15

22. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 41

23. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 15

24. वही, पृ. सं. - 58

25. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 23

26. वही, पृ. सं. - 70

27. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. - 113

28. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ. सं. - 14

29. वही, पृ. सं. - 18

30. वही, पृ. सं. - 21

31. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 84

32. वही, पृ. सं. - 83

33. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 177

34. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ. सं. - 77

35. वही, पृ. सं. - 80

36. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 113

37. वही, पृ. सं. - 115

38. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. सं. - 75

39. वही, पृ. सं. - 10

40. बल्देव भाई शर्मा, सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 389

41. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. सं. - 19

42. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 89

43. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 111

44. वही, पृ. सं. - 57

45. देवी शंकर अवस्थी (संपा.), नयी कहानी : संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. सं. - 142

46. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 22

47. वही, पृ. सं. - 33

48. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 21

49. वही, पृ. सं. - 22

50. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं.-85

51. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 61

52. वही, पृ. सं. - 63

53. वही, पृ. सं. - 64

54. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 16

55. वही, पृ. सं. - 88

56. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 52

57. बल्देव भाई शर्मा (प्रधान संपादक), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 347

58. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 98

59. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 127

60. मृदुला सिन्हा, स्पर्श की तासीर, किताबघर, नई दिल्ली, 1997, पृ. सं. - 35

61. वही, पृ. सं. - 35

62. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 34

63. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ. सं. - 24

64. बल्देव भाई शर्मा (प्रधान संपादक), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 494

65. डॉ. राजेन्द्र बाविस्कर, चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में नारी, रोली प्रकाशन, कानपुर, 2013, पृ. सं. - 188

66. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 15

67. वही, पृ. सं. - 57

68. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 12

69. डॉ. राजेन्द्र बाविस्कर, चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में नारी, रोली प्रकाशन, कानपुर, 2013, पृ. सं. - 188

70. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 108

71. वही, पृ. सं. - 108

72. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. सं. - 31

73. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ.सं. - 26

74. मृदुला सिन्हा, स्पर्श की तासीर, किताबघर, नई दिल्ली, 1997, पृ. सं. - 14

75. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 110

76. वही, पृ. सं. - 74

77. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, पृ. सं. - 115

78. वही, पृ. सं. - 117

79. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. सं. - 35

80. वही, पृ. सं. - 70

81. डॉ. राजेन्द्र बाविस्कर, चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में नारी, रोली प्रकाशन, कानपुर, 2013, पृ. सं. - 165

82. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. सं. - 46

83. वही, पृ. सं. - 47

84. वही, पृ. सं. - 175

85. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ.सं. - 55

86. वही, पृ. सं. - 57

87. वही, पृ. सं. - 91

88. वही, पृ. सं. - 136

89. वही, पृ. सं. - 150

90. मृदुला सिन्हा, स्पर्श की तासीर, किताब घर, नई दिल्ली, 2010, पृ. सं. - 60

91. वही, पृ.सं. - 62

92. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. -

50-51

93. वही, पृ. सं. - 69

94. वही, पृ. सं. - 85

95. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 125

96. वही पृ. सं. - 126

97. वही, पृ. सं. - 60

98. वही, पृ. सं. - 62

99. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 119

100. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 18

101. वही, पृ. सं. - 20

102. वही, पृ. सं. - 143

103. डॉ. अमरनाथ, नारी का मुक्ति संघर्ष, रेमाधव पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, 2007, पृ. सं. - 137

104. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 107

105. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 86

106. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 56

107. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 113

108. वही, पृ. सं. - 70

109. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 67

110. वही, पृ. सं.- 106

111. वही, पृ. सं. - 107

112. डॉ. अमरनाथ, नारी का मुक्ति संघर्ष, रेमाधव पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, 2007, पृ. सं. - 134-135

113. वही, पृ. सं. - 135

114. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 86

115. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 93

116. वही, पृ. सं. - 20

117. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 134

118. रवींद्रनाथ मिश्र(संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 13

119. वही, पृ. सं. - 11

120. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 29

121. वही, पृ. सं. - 15

122. वही, पृ. सं. - 52

123. वही, पृ. सं. - 74

124. रवींद्रनाथ मिश्र(संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ.सं. - 16

125. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 45-46

126. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं. - 57

127. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 30

128. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 51

129. देवीशंकर अवस्थी (संपा.), नई कहानी: संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. सं. - 145

130. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 61

131. वही, पृ. सं. - 62

132. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 15

133. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 14

चतुर्थ अध्याय

मृदुला सिन्हा की कहानियों की भाषा-शैली

4.1 भाषा

4.2 शैली

चतुर्थ अध्याय

मृदुला सिन्हा की कहानियों की भाषा-शैली

विषय प्रवेश

भाषा एक सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। यह रूप भाषा की स्थायी परंपरा है। यह भाषा का उच्चरित रूप है। इसका प्रयोग हर कोई करता है। एक साहित्यकार इसी भाषा का प्रयोग अपने लेख-रचनाओं में करता है। भाषा के मुद्रित रूप में अपने पाठकों से अपने विचारों का समन्वय करता है। या यूँ कह सकते हैं कि रचनाकार अपनी भाषा के जरिए अपनी बात दूसरों के समक्ष लाता है। इसलिए रचनाकार को अपने भाषा प्रयोग में विशेष सावधानी रखनी चाहिए। कहानी विधा में भाषा की अहम भूमिका रहती है, क्योंकि कहानी जन-जन तक पहुँचती है। इसकी लोकप्रियता के कारण भाषा की दृष्टि से अधिक सजगता से काम लेना होता है। भाषा एक सामाजिक संपत्ति है। लेखन के क्षेत्र में लेखक की भाषा का बहुत बड़ा महत्त्व होता है। कहानी एक लोकप्रिय विधा है, इसलिए इसकी भाषा का महत्त्व सबसे अधिक होता है। डॉ. शिवशंकर पाण्डेय के अनुसार, "कहानी की भाषा जीवन की भाषा होती है।"[1] साहित्यकार की भाषा जन-जन तक पहुँचती है। कहानी को अंग्रेजी में 'Story' या 'Tale' कहा जाता है।

कहानी शब्द का अर्थ 'मनगढ़ंत बात' या 'कथा' से है इसलिए साहित्य की सृजनात्मक विधा कहानी में विविध प्रकार की कथाओं को पिरोया जाता है। यह लेखक की प्रतिभा को उभारने वाली गद्य रचना है। कहानी के मूलतः छह तत्त्व होते हैं – कथावस्तु, पात्र या चरित्र चित्रण, संवाद, देशकाल या वातावरण, उद्देश्य और शैली। इन तत्वों के आधार पर कहानी का सृजन किया जाता है। इन तत्वों का रूप कहानीकार के कहानियों में शामिल होता है।

मृदुला सिन्हा की कहानियों की भाषा में सरलता, सहजता एवं सुगमता विद्यमान रहती है। इनके पात्रों की भाषा में अपनापन झलकता है क्योंकि इन्होंने अपने कथानक में यथार्थ अर्थात् जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को केंद्र में रखा है।

4.1 भाषा

भाषा समाज और साहित्य का अभिन्न अंग है। भाषा के बिना न तो किसी समाज की कल्पना की जा सकती है और न ही साहित्य की। भाषा अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। अभिव्यक्ति किसी व्यक्ति के भावों-विचारों, आशाओं-इच्छाओं की होती है, जिसमें वह अपनी बात कह सकता है। रामकुमार वर्मा लिखते हैं, "भाषा भावों की वाहिका है, इसीलिए जिन भावों का स्पष्टीकरण भाषा को करना है, उनका स्पष्ट और प्रभावशाली प्रयोग भाषा पर ही आधारित होता है।"[2] जब किसी रचना की भाषा-शैली पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, तब उसका अर्थ होता है कि रचना में भाषा का प्रवाह कैसा है? भाषा में सरलता है, स्पष्टता है, व्यंग्यात्मकता है या आलंकारिता है। यही किसी रचनाकार की भाषा के प्रमुख साधन होते हैं। जिससे उनकी भाषा भिन्न व विशिष्ट बनती है। डॉ. स्मिता मिश्र के अनुसार, "भाषा के माध्यम से ही रचनाकार की गहराई, समाज, संस्कृति-परम्परा से उसका सरोकार मालूम पड़ता है। भाषा हमें परम्परा से प्राप्त होती है। जिसे जागरूक रचनाकार नए संदर्भ और नए तेवर प्रदान करता है। इस तरह भाषा निरंतर गतिशील रहती है। कबीर ने कहा है कि 'भाषा बहता नीर है'। किन्तु जहाँ यह नीर रुक जाता है। वहाँ दलदल हो जाता है। भाषा के लिए आवश्यक है कि निरन्तर नए यथार्थ संदर्भों के अनुसार खुद को ढालती चले।"[3] इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि भाषा साहित्य का सर्वस्व है। जो कि किसी रचना को अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति देती है।

भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष' धातु से बना है, जिसका अर्थ है – बोलना या कहना। शब्द और वाक्य भाषा के मुख्य घटक होते हैं। शब्दों के मेल से ही वाक्य का निर्माण होता है। वाक्य संरचना में शब्दों की अहम भूमिका होती है। साहित्य की कहानी विधा में भाषा-शैली बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। इसमें समाज, परिवेश और स्थिति का रूप परिलक्षित होता है। इसलिए इसका स्वाभाविक होना जरूरी है। इस विधा में कहानीकार का समाज से जुड़ना और संबंध रखना अति आवश्यक है। समाज में प्रचलित शब्द, भाषा को जीवंत बनाते हैं। कहानीकार अपनी कल्पना शक्ति और विचारों को समेटते हुए अपनी भाषा प्रयोग से यथार्थ का चित्रण करता है।

मृदुला सिन्हा ने भाषा का विस्तार रूप दिया है अपनी कहानियों में। इन्होंने अपनी कहानियों में संस्कृत, भोजपुरी, अंग्रेजी, उर्दू आदि शब्दों का प्रयोग किया है। वह एक नई पृष्ठभूमि तैयार करता है। कई जगह लेखिका ने मुहावरों का भी उपयोग किया है, जो भाषा को और भी सरल और सहज बनाता है। सुन्दर काव्यात्मक एवं चमत्कारपूर्ण उक्तियों का प्रयोग साहित्य की समस्त विधाओं में होता है। इन चमत्कारपूर्ण उक्तियों या शब्दों के अंतर्गत लोकोक्ति, कहावतें, मुहावरें एवं पहेलियों को समाहित किया जाता है। ये अपने अंदर लोक जीवन के अनुभवों को समेटकर रखती हैं। किसी क्षण विशेष, लोक अनुभव व जाति विशेष में जब कोई वाक्य अपनी पूर्व परम्परा से लोगों के मन में बसा चला आ रहा हो, जिसका कोई विशेष अर्थ हो साथ ही वह ज्ञान का बोध करवाता हो और जिससे मनोरंजन भी हो, वह अपनी बात को सीधे तौर पर न कहकर किसी चमत्कारपूर्ण उक्ति के माध्यम से जो बात कही जाती है, ऐसे ही उपवाक्य लोकोक्ति कहलाते हैं।

आम सामान्यजन अपने व्यवहार में लोकोक्ति, मुहावरें, कहावतें एवं पहेलियों का प्रयोग करते हैं। इनके द्वारा मानवीय घटनाओं, प्रथाओं तथा गुण-दोष का परिचय मिलता है। जब मनुष्य अपने अनुभवों और विचारों को शब्दों में बाँधकर लोक के विश्वासों को प्रतिष्ठा देता है, तब उनके विश्वास ही मुहावरें,कहावतें और लोकोक्तियों में अभिज्ञापित होते हैं। ये लोक जीवन के व्यवहार से जुड़े हुए होते हैं। इनमें व्यंग्य-विनोद के भाव समाये रहते हैं। साथ ही साथ समाज को इससे प्रेरणा भी मिलती है। इस तरह व्यक्ति और समाज की मानसिकता तथा भाषात्मक स्थिति का परिज्ञान इनके माध्यम से होता है। मृदुला सिन्हा ने अपने कहानियों में कहावतों का प्रयोग कई जगहों पर किया है।

मृदुला सिन्हा की कहानियों में उनकी भाषा सरल, सहज, प्रभावपूर्ण एवं व्यावहारिक है। इनकी कहानियों की भाषा पात्रानुकूल, प्रभावपूर्ण, संवेदनशील एवं सरल है। इनकी शब्द संपदा विस्तृत है। इनकी कहानियों में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, संकर शब्दों का प्रयोग मिलता है। इन्होंने अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है। इससे इनकी नवीनता एवं सामयिक रूप सामने आता है। केवल हिंदी भाषी क्षेत्र ही नहीं अपितु अहिंदी भाषी क्षेत्रों के लोगों के लिए भी इनकी कहानी पठनीय है। इसके अलावा इनके कहानियों में मुहावरों, लोकोक्तियाँ, शब्द-युग्मों, पुनरुक्त शब्दों, कहावतों, आदि का भी प्रयोग सफलतापूर्वक हुआ है। मृदुला सिन्हा की कहानियों की भाषा के अंतर्गत प्रयुक्त शब्दावली इस प्रकार है –

1. 'साक्षात्कार' कहानी संग्रह

मृदुला सिन्हा के 'साक्षात्कार' कहानी संग्रह में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्ति का वर्गीकरण इस प्रकार है -

तत्सम शब्द – ये शब्द संस्कृत से आए हुए शब्द होते हैं जो बिना किसी परिवर्तन के हिन्दी में प्रयोग किए जाते हैं। डॉ. विवेक शंकर के अनुसार, “किसी भाषा के मूल शब्द को ‘तत्सम’ कहते हैं। तत्सम का अर्थ ही है – उसके समान या ज्यों-का-त्यों।”[4] अतः इन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

घाट, तीव्र, पश्चात्ताप, व्रत, तीज, लालसा, हृदय, नग्न, आनन्द, भोजन, वस्त्र, नयन, छिद्र, तुच्छ, स्वांतः, चूड़ी, आश्चर्य, झंझट, मर्माहत, आग्रह, सूत्र, परिचित, स्तब्ध, उपयुक्त, आर्तनाद, रात्रि, निस्तब्धता, पुस्तक, सलोना, ध्यान, पटक, एकाग्रचित्त, सौन्दर्य, मोहित, बन्द, निर्मोही, खुशी, गौर, विशेष, निमंत्रण, सप्ताह, शील, स्वभाव, ससुराल, स्वागत, भावना, अभाव, तार, दोष, मोह, अग्नि, प्राण, अनायास, कर्त्तव्य, मण्डप, शंका, उषा, निपट, जिज्ञासा, करतूत, निर्लज्ज, कपाल, आंचल, कठिनाई, कल्पना, जागृत, स्वीकार, आदर्श, विहान, जाग्रत, दृढ़, व्यक्ति, हिचक, एकमात्र, उपस्थित, अनुगामी, पुरस्कार, गोत्र, चर्चा, प्रणाम, तेज, भ्रमण, सज्जन, पुरुष, प्रयत्न, द्वितीय, वर्ष, विद्यार्थी, विशेष, अनुसार, शिखा, परीक्षा, झलक, पुत्र, अल्हड़, गोष्ठी, रुचि, विघ्न, पूर्णिमा, कर्मठ, शांत, अभागा, कृपा, अच्छा, स्थान, सूर्योदय, जलपान, भान, खिन्नता, अखरता, आग्रह, मुद्रा, गुरु-दक्षिणा, विद्या, एकांत, सुशील, आशीर्वाद, आभार, धारणा, शृंगार, अगाध, संस्कार, क्षण, न्याय, कटाक्ष, चित्त, मृत्यु, गृह, स्नेह, गृहस्थ, वृद्ध, तिलक, वेदना, तीर्थ, अनिल, जगत, पलायन, त्याग, आकांक्षा, शंका, नेतृत्व, मित्र, कोटि, अवहेलना, अतीत, विघ्न, विरह-वेदना, तीक्ष्णता, प्रमाणम्, अहं, क्रुद्ध, विनम्र, वात्सल्य, मुंडन, गुरु, चंडाल, सुलभ, प्रियतम, दोष,

तंद्रा, दोष, पृथ्वी, ब्राह्मण, नमस्कार, ईश्वर, जल, दरिद्र, स्वर्ग, नरक, लोभ, मंत्री, प्रिय, स्वप्न, पवित्र, आशंका, स्मृति, अकस्मात्, स्नान।

तद्भव शब्द – ये शब्द संस्कृत शब्द के विकार रूप होते हैं जो हिन्दी में रूप बदल कर प्रयोग किए जाते हैं। डॉ. विवेक शंकर के शब्दों में, "ऐसे शब्द, जो संस्कृत और प्राकृत से विकृत होकर हिंदी में आये हैं, 'तद्भव' कहलाते हैं। तद्भव का अर्थ है – उससे उत्पन्न।"[5] अतः इन शब्दों के रूप में परिवर्तन हो जाता है।

इकट्ठा, सड़क, भीड़, उपहास, चार, आग, छह, जीत, रसोईघर, कान, रात, किसान, गाय, खड़ाऊ, कर्जा, आँसू, दीया, अँधेरा, अमूमन, सराहनीय, सुई, ब्याह, मिठाई।

देशज शब्द – देशज शब्द आम बोलचाल की भाषा में प्रयोग किए जाने वाले शब्द है, जिनकी उत्पत्ति के बारे में कोई सटीक जानकारी नहीं मिलती है। इनका प्रयोग क्षेत्रिय विशेष में अधिक होता हैं।

नाव, डोंगी, चारपाई, खिड़की, ठेस, डिब्बा, लोटा, पटती, बबुनी, फफक, गइया, झगड़ा, झोपड़ी, ताड़ी।

विदेशी शब्द – विदेशी भाषाओं से हिन्दी में आए शब्दों को विदेशी शब्द कहते हैं। हिन्दी में अंग्रेजी, फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली आदि भाषाओं से शब्द लिए गए है और इन शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से किया जाता है।

क) फारसी शब्द - किनारा, शहर, अलबत्ता, दुकान, आवाज, पर्दा, अथक, तमन्ना, नाहक, नम, तमाशा, कोशिश, दिल, मजबूर, अफसोस, हमेशा, ख्याल, बाद, शायद, शिकार, दूर,

हालत, दरवाजा, नाराज, होशियार, मेहमान, लाचारी, तीमारदारी, कमजोरी, कुर्ता, लेकिन, खाक, मगर, अज्ञान, बदबू, जमीन, जबर्दस्ती, परेशान, पेशा, तरफ, बल्कि, नजाकत, वर्णन, मैदान, बीघा, बाज, खबरदार, आगाह, दालान, खराब, कागज, नौकरी, नमकीन, मुसाफिर, चपरासी, शरारत, खूब, तमन्ना, फर्ज, रूमाल, मुफ्त, अर्थी, हिम्मत, सूद, आमदनी, दारू, दीवार, दवा, उम्मीद, सालगिरह, बाजार, बेचारी, पर्दा, बख्शीश, जुर्माना, आबाद, हज्जाम, खाक, हमदर्दी, परवाह, दुरुस्त, खर्चा, पहलवान, कातिल, यार, जिन्दाबाद, सौगन्ध, खुराक, चश्मा।

ख) अरबी शब्द - तय, आदत, गरीब, दौरान, औरत, जवाब, नजर, कसाई, सन्न, इनाम, अखबार, लाजिमी, आखिर, शरारत, हासिल, महबूब, आदमी, शुरू, मंजूर, रस्म, शादी, गुस्सा, वकील, जाहिर, मुश्किल, खराब, गरीबी, विदा, मालूम, शर्म, फर्क, सहारा, होंठ, कागजात, कसूर, मदद, लिबास, शुरू, सुबह, शर्त, मशगूल, नतीजा, लाजवाब, नसीब, लिफाफा, तकलीफ, आसार, शैतान, ईमानदार, खातिर, उम्र, नसीब, अदा, अदालत, कीमत, तकिया, महसूस, दुनिया, तकाजा, बहस, दलील, सलाम, मालिक, हरामी, तकाजा, खैरियत, मुहब्बत, तारीफ, मिजाज, जलील, रिवाज, ब्याह, सुहागरात, बदला, सोफा, करामात, हुजूर, मुद्दा, हवेली, सब्र, मुराद, फिक्र, जवान, इत्मीनान, अजीब, बदन।

ग) तुर्की शब्द – चम्मच, लाश, कैंची।

घ) अंग्रेजी शब्द - बस, ड्राइवर, हॉर्न, कॉलेज, डिबेटिंग सोसाइटी, प्रोफेसर, ट्रक, पार्क, कालेज, मिनट, इंसोमनिया, मेंटल हास्पिटल, टेबल, मिडिल स्कूल, बी. ए., बस-स्टैण्ड,

इंडिया, रेडियो, आफ, नायलोन, ऐक्टिंग, फाइल, होटल, सिनेमा, अपटूडेट, ड्रेस, फुलपैण्ट, हाई स्कूल, मैट्रिक, इंटर कालेज-डिबेट, प्रिंसिपल, पोलिटिकल साइन्स, सर्टिफिकेट, मास्टर, स्टेशन, कम्पार्टमेंट, सीट रिजर्व, रूम-मेट, एम. ए., लेक्चरर, रीडर, पोस्ट, इंजीनियरिंग, इंजीनियर, डाक्टर, होस्टल, फ्री-पीरियड, स्मार्ट, स्टाइल, शूट, कलर, टाई, सिगरेट, रिंग, विजिटर्स रूम, क्लास, प्रोफेसर, बेंच, प्रेसिडेंट, माडर्न, आर्डर, आमलेट, टूर, फैक्ट्री, क्वार्टर, नेमप्लेट, कार, काल-बेल, हैण्ड बैग, बाथरूम, बेडरूम, स्लाइस ब्रेड, कप, हायर सेकेण्डरी, टेबुल, रिजल्ट, प्राइवेट, ट्यूशन, अटोबायोग्राफी, कोर्ट, स्टील, फिक्स-डिपोजिट, फीस, नामिनी, वोटर, टिकट, पेंशन, टीचर्स-ट्रेनिंग-स्कूल, पाउडर-क्रीम, ब्रेक, म्युनिसिपैलिटी, बस-स्टाप, रिपोर्ट, टैक्सी, ट्राम, रिपोर्टिंग, बूथ, पार्टी, रोड, पोस्टर, लीडर, इंडस्ट्रियल कालोनी, हास्टल-सुपरिंटेंडेंट, बोर, बिस्कुट, पिक्चर, होटल, पिकनिक, प्रोग्राम, ड्यूटी, क्लब, जज, मीटिंग, कार्ड, फ्रिज, लिस्ट, गैस, क्यू, ब्लेड, ब्रश, स्लीपिंग गाउन, स्कूटर, पेपर, सेमिनार, गेट, गेटकीपर, हॉर्न, टाउन हॉल, माइक, बिल पास, सर्किट हाउस, कैम्प, कम्युनिटी हाल, आपरेशन, बुक-शेल्फ, स्टडी-टेबुल, क्लास-रूप, टेस्ट, प्लेट, कामन रूम, चेम्बर, क्लास, हेडमास्टर।

ङ) पुर्तगाली शब्द – शर्मिन्दा, बोतल, बरामदा, मेज, कमीज, तम्बाकू।

संकर शब्द – संकर शब्द उन शब्दों को कहते है जो दो भाषाओं के शब्दों के मेल से बनते हैं।

रेल-यात्रा, डबलरोटी, रिक्शा-यूनियन, बैठक रूम, इन्तजार (संस्कृत + उर्दू)।

अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द – हिन्दी में क्षेत्रिय भाषाओं और बोलियों के शब्दों का भी प्रयोग किए जाते हैं।

भोजपुरी शब्द – नैहर, ओसारा, कोहबर।

गुजराती शब्द – हड़ताल।

युग्म शब्द - इधर-उधर, रटा-पिटा, पहनने-ओढ़ने, खाने-पीने, इर्द-गिर्द, देश-विदेश, खाये-पीये, अन्न-जल, आस-पड़ोस, पढ़ाई-लिखाई, लेना-देना, आते-जाते, लिपाई-पुताई, आती-जाती, चाय-नाश्ता, औरतें-बच्चे, बेटी-दामाद, भाव-भंगिमा, माँ-बाप, बाप-बेटी, माता-पिता, नाते-रिश्तेदारों, जीजा-साली, पढ़ी-लिखी, मिलती-जुलती, धर्म-कर्म, धक्का-मुक्की, रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, मिलता-जुलता, लाग-डाँट, नाज-नखरे, दिन-रात, थोड़ा-बहुत, आये-गये, लम्बा-चौड़ा, आना-जाना, हरा-भरा, फलता-फूलता, हाथ-मुँह, , लेना-देना, भरा-पूरा, दूल्हा-दुल्हन, सुध-बुध, आमने-सामने, नौकर-चाकर, आने-जाने, छोटी-मोटी, सुबह-शाम, खट्टे-मीठे, उठना-बैठना, भूत-भविष्य, आगे-पीछे, अगल-बगल, भोले-भाले, लम्बे-चौड़े, तड़क-भड़क, उठते-गिरते, अनाप-शनाप, मरन-हरन, लालन-पालन, चहल-कदमी, अच्छा-खासा, मियाँ-बीबी, गुरु-शिष्य।

पुनरुक्त शब्द – बड़े-बड़े, हजार-हजार, आह-आह, रोज-रोज, बीच-बीच, रात-रात, घूर-घूरकर, पीछे-पीछे, कभी-कभी, अभी-अभी, सूना-सूना, एक-एक, गाहे-ब-गाहे, बड़े-बड़े, आगे-आगे, तरह-तरह, धीरे-धीरे, जोर-जोर, साफ-साफ, रूखी-रूखी, करते-करते, थोड़े-थोड़े, खाना-पीना, मोटी-मोटी, दबाते-दबाते, कहते-कहते, साथ-साथ, बोलते-बोलते,

सुबह-सुबह, अलग-अलग, बार-बार, अपने-अपने, होते-होते, छोटे-छोटे, समय-समय, बारी-बारी, टुकुर-टुकुर, कुछ-कुछ, कहीं-कहीं, शुरू-शुरू, हँसते-हँसते, रोम-रोम, देखते-देखते, भरा-भरा, देखते-देखते, कसते-कसते, जगह-जगह, सुनते-सुनते, भागता-भागता, मोटी-मोटी, क्या-क्या, किन-किन, भूरी-भूरी, खाते-खाते।

मुहावरे – मुहावरे मूलतः वाक्यांश होते हैं, जिनका शाब्दिक अर्थ न लेकर उसका भावार्थ समझा जाता है। कम शब्दों में सटीक अर्थपूर्ण भाव कहा जाता है। इनका प्रयोग कहानी की भाषा को विशिष्ट एवं रंगीन बनाता है। मृदुला जी ने अपनी कहानियों में अधिक मात्रा में मुहावरों का प्रयोग किया है, जो इस प्रकार हैं -

ढाक के तीन पात[6], आग-बबूला होना[7], काठ मार गया[8], सर चढ़ा रखा[9], पाँव भारी होना[10], मुँह पर ताला लगाना[11], लकवा मार गया[12], बुद्धि मारी गयी[13], पाँव धरती पर नहीं पड़ना[14], टस से मस नहीं होना[15], फूली न समाती[16], पानी फेर देना[17], कान काट लिए[18], जैसी करनी वैसी भरनी[19], माथा ठनका[20], छोटे मुँह बड़ी बात[21], गुल खिलाना[22], रफूचक्कर हो जाना[23], पैरों तले धरती खिसकना[24], बाल धूप में नहीं पकाना[25], मन ही मन लड्डू फूटना[26]।

लोकोक्तियाँ – लोकोक्ति शब्द 'लोक + उक्ति' शब्दों को जोड़कर बना है जिसका अर्थ है लोक में प्रचलित उक्ति। लोकोक्ति का दूसरा नाम कहावत है। यह आम बोलचाल की भाषा में कही गई अर्थपूर्ण वाक्य होते है। मृदुला जी ने अपनी कहानियों में जगह-जगह पर लोकोक्तियों का प्रयोग किया है, जो कहानी संग्रह के अनुसार निम्नलिखित हैं -

न कोई पुरिया न पताई (संदेश)[27], ग्यारह नम्बर की गाड़ी (दोनों पाँव)[28], तेल बनावे तीमन (सब्जी), बहरिया जी का नाम[29], बिन घरनी घर भूत का डेरा[30], मियां-बीबी का झगड़ा, बीच में पड़े सो लबड़ा[31], काटो तो खून नहीं[32]।

2. 'एक दीये की दीवाली' कहानी संग्रह

मृदुला सिन्हा के 'एक दीये की दीवाली' कहानी संग्रह में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्ति का वर्गीकरण इस प्रकार है -

तत्सम शब्द

आग्रह, पुण्य, संदेश, कंठ, आशीष, ऋण, खिन्न, अकस्मात्, किंचित्, भृकुटी, दुर्बल, सबल, अवहेलना, जिह्वा, अधिकांश, स्पर्श, वृद्ध, बिछोह, रक्त, वनवास, प्रकोप, विलाप, तपस, उत्सव, गृह, वृक्ष, बधाई, उत्कंठा, अति, दंड, कर्तव्य, पुष्प, शिखर, धर्म, स्मृति, इत्ता, राक्षस, दुष्कर, क्रोध, मनसा, कुटुंब, कटाक्ष, अवहेलना, महाप्रयाण, श्मशान, विलाप, अनायास, वाचालता, क्षण, मंथन, स्वाति, निर्निमेष, नवरात्र, निस्तेज, स्थायी, मृत्यु, इष्टदेव, साधना, तीव्र, शोक, सरिता, रात्रिशयन, विरक्ति, वानप्रस्थी, आश्रम, अनिल, वैद्य, अन्न, अक्षुण्ण, खिन्न, पितृपक्ष, प्रज्ञा, गोष्ठी, हर्ष, विषाद, मुहूर्त, धान्य, दरिद्र, आशंका, कर्ण, सुप्त, मीमांसा, ग्राम्य, आशीष, दिव्य, व्यथा, अश्रु, तलवार, वरदान, कीर्तन, प्राण, निद्रा, दक्षिणा।

तद्भव शब्द

खून, जाँच, खीर, घी, जीरा, कलाई, मरण शय्या, नाई, कचहरी, दातुन, सुई, दीया, कुम्हार, उँगली, ससुराल।

देशज शब्द

मंथर, डिब्बा, माटी, थैला।

विदेशी शब्द

क) फारसी शब्द – दरखास्त, दोस्त, आफत, फुरसत, अथक, चादर, फुरसत, पेश, मुद्दालय, खयाल, जिंदगी, परेशान, खातिरदारी, तनख्वाह, तमाशा, किनारा, मजदूर, कागज, मिन्नत, आरामकुर्सी, चौराहा, चश्मा, हुकुमनामा, नजरअंदाज, बेकसी, मुसाफिर, जमाना।

ख) अरबी शब्द – अजीब, खराब, अल्फाज, हवेली, कमाल, शर्त, हाजिर, मुश्किल, नींबू, खातिर, ख्वाहिश, अल्फाज, वकील, दलील, खातिर, हुक्का, अदालत, मुकदमा, कबूल, हुक्म, तराजू, हिदायत, बहस, इत्मीनान, असर, किस्सा, धड़ाम, मालूम, अजीब, नसीब, तारीफ, नीलाम, गुफ्तगू, सब्र, जुल्म, जश्न, तकलीफ, रजाई, जहन्नुम, तलाक, कसूर, रईस, महल, तहजीब, हिदायत।

ग) तुर्की शब्द – लाश, तलाश।

घ) अंग्रेजी शब्द – इंडिया, फ्लैट, मैप, पासपोर्ट, वीसा, प्लेन, एयरपोर्ट, टेलीफोन, जीन्स, जॉब, अफसर, मिलिटरी, एंटीक, हैंडिल, इंडियन ब्रेन्स, पैकेट, सेंटर टेबल, आउट, कस्टम इंस्पेक्टर, बोर्डिंग, वाडरोव, पोलिथिन, बैगों, प्लॉट, ट्यूब-वेल, मजिस्ट्रेट, फैशन, फुल

साइज, स्टार्ट, पर्स, टॉर्च, होटल, टायफाइड, नर्सिंग होम, नर्सें, बैटपैन, ब्रेक, फाउंटेन पेन, एन्क्वायरी, रिपोर्ट, बुकिंग, डस्टिंग, लीटर, मारबल, किचेन, स्पेशल, चैनल, टंकी, टैप, ट्रेन, पाउडर, रिसर्च, पोस्टिंग, एयरफोर्स, कमिंग, आफ्टर, मार्केट, रोड क्रॉस, रेड लाइट, शोरूम, एप्वाइंटमेंट, गैस एजेंसी, बॉर्डर, सर्वेंट क्वार्टर, ड्राइंग-रम, शो-पीस, डिमांड, कंपाउंड, इंचार्ज, आइडिया, पर्स, स्पीड, कॉन्वेंट स्कूल, फर्स्ट, क्लास, लॉकर, पार्ट टाइम, हॉस्पीटल, ड्यूटी, नर्स, सिविल, वारंट, कैंसर, डिजाइन, माइक, डोज।

ङ) पुर्तगाली शब्द – कमीज, शर्मिंदा, अलमारी।

भोजपुरी शब्द – हमार, बचवा, मचिया, टिकुली, फटफटिया, ईआ।

युग्म शब्द – खाना-पीना, खीर-पूड़ी, उठते-बैठते, चाय-नाश्ता, लेन-देन, चलना-फिरना, उतार-चढ़ाव, कुटाई-पिसाई, बहू-बेटे, पाला-पोसा, मैली-कुचली, अगल-बगल, हरी-भरी, हँसने-रोने, लालन-पालन, नौकर-चाकर, चूल्हा-चौका, मारतीं-पीटतीं, गोलाई-लंबाई, लाड़-दुलार, पसंद-नापसंद, रुचि-अरुचि, इच्छा-अनिच्छा, रहन-सहन, रंग-रूप, खान-पान, यदा-कदा, भरा-पूरा, पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया, खड़े-खड़े, भली-चंगी।

पुनरुक्त शब्द – जाओ-जाओ, पहुँचते-पहुँचते, रोज-रोज, धुर-धुर, भूरि-भूरि, साथ-साथ, सिखाते-सिखाते, चुपके-चुपके, गाते-गाते, हँसते-हँसते, घड़ी-घड़ी, रोम-रोम, पढ़ते-पढ़ते, चढ़ते-चढ़ते, पड़ी-पड़ी, पतली-पतली, बिलख-बिलखकर, खड़ी-खड़ी, अभी-अभी, देखते-देखते, रोम-रोम, लगाते-लगाते, बक-बक, बराबर-बराबर, काट-काट, मध्यम-मध्यम, खाते-

खाते, बुला-बुलाकर, भिन्न-भिन्न, रो-रोकर, सहम-सहमकर, पड़ी-पड़ी, पग-पग, तरह-तरह, आहिस्ता-आहिस्ता, पकड़ो-पकड़ों, खिला-खिला, बारी-बारी, आँगन-आँगन, दरवाजे-दरवाजे।

मुहावरे

बतासे फूटने लगे[33], गला रुँध गया[34], सात समंदर पार[35], ऊँट के मुँह में जीरा[36], नहले पर दहला[37], आँखें चौंधिया जाना[38], घड़ियाली आँसू बहाना[39]।

लोकोक्ति

काला अक्षर भैंस बराबर[40], कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली[41],

जेवर संपत्ति का शृंगार, विपत्ति का आधार[42], न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी[43]

गोदी में बच्चा, नौ गाँव ढिंढोरा[44]

कौआ के मुँह में अनार की कली[45]।

3. 'स्पर्श की तासीर' कहानी संग्रह

मृदुला सिन्हा के '**स्पर्श की तासीर**' कहानी संग्रह में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्ति का वर्गीकरण इस प्रकार है -

तत्सम शब्द

निवास, अट्टालिका, अंतर्यामी, समर्पण, विरक्ति, जगत, विपत्ति, तत्त्वज्ञान, जिह्वा, क्षीर, शय्या, जलज, अंकुश, कीर्तन, श्वसुर, मानुष, परिश्रम, तत्क्षण, आशीष, विषाद, स्वेच्छा, ऋण, स्वाहा, शाप, विघ्न, श्लोक, पक्षी, मुहूर्त, शूल, कदाचित्, क्षमा, अकस्मात्, असली, आश्रम, वात्सल्य, आकस्मिक, श्मशान, गृहप्रवेश, विहंगम, कुटुम्ब, अग्र, जजमान।

तद्भव शब्द

मेहंदी, प्यास।

विदेशी शब्द

क) फारसी शब्द – स्वजन, हावी, बुलंद, जवान, उम्मीद, दफ्तर, बेहतर, कारीगर,जल्दबाजी, फासला, शिकार, सूद, जहर।

ख) अरबी शब्द – भरोसा, तकलीफ, नसीब, विदा, कबूल, महसूस, हाजिर, अल्फाज, ताबीज, तय, बकाया, बतौर, हिदायत, मौसम, तलाक, करामात, ख्वाहिश, बेईमानी।

ग) तुर्की शब्द – बेगम, तलाश।

घ) अंग्रेजी शब्द – रिसीवर, मेडिकल इंस्टीट्यूट, टैंक, टेप, सूप, पैटर्न, टेक्नॉलॉजी, गेट, लॉन, प्लीज, डिग्री, कॉलेज डे, क्लिनिक, पॉकेट, टिफिन बॉक्स, किट्टी पार्टी, एलबम, टास्क, ट्रीट, ड्यूटी ऑवर, कॉल बेल, मम्मी, डैडी, स्टेयरिंग, आफिसियल, अनौफिसियल, डस्टर, स्वेटर, एयरकंडीशंड, टीचर, कोट, कॉरपोरेशन, मोटर, फुटपाथ, स्टीमर, बेड, डायालिसिस, हीटर, अवार्ड, विजिटिंग कार्ड, चैकअप, पोलीथीन, एक्सप्रेस, एयरपोर्ट, टैक्सी, पावरफुल, इंजेक्शन, मूड, ट्यूशन, प्रमोशन, प्रोविडेण्ट फंड, ट्रांजिस्टर, प्लास्टिक, ब्रिटेनिया बिस्किट, फीवर, टायम, मैनेजर।

संकर शब्द – रेलगाड़ी।

भोजपुरी शब्द – अटकलें, गोईठा।

युग्म शब्द – हाव-भाव, मिला-जुला, सुबह-शाम, लाड़-प्यार, मान-दान, खोज-खबर, रुकने-थमने, खाने-सोने, गौरव-गाथा, रोने-धोने, नाच-गाना, खान-पान, शरमाया-सकुचाया, ताने-बाने, काम-काज, जब-तब, रूठना-मनाना, दवा-दारू, लालन-पालन, दुःख-सुख, खून-पसीने।

पुनरुक्त शब्द – पड़ी-पड़ी, वगैरह-वगैरह, पसीना-पसीना, खींच-खींचकर, लाख-लाख, बच्चा-बच्चा, सुना-सुना, ढुसुम- ढुसुम, बिखरे-बिखरे, आहिस्ते-आहिस्ते, बटोर-बटोर, खिला-खिला, तार-तार, चढ़ते-चढ़ते, पहुँचते-पहुँचते, रटती-रटती, बिलख-बिलख, लिपट-लिपटकर, संग-संग, कोना-कोना, दब-दब, पाई-पाई, चिपके-चिपके, गिरते-गिरते।

मुहावरे

काठ मार गया[46], रास ढीली करनी होगी[47],

फूला न समाना[48], एड़ी-चोटी का पसीना[49]।

4. 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी' कहानी संग्रह

मृदुला सिन्हा के 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी' कहानी संग्रह में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्ति का वर्गीकरण इस प्रकार है -

तत्सम शब्द

क्षेम, उदास, निर्दय, फोड़, घुप्प, सयाना, चक्की, कार्तिक, अंकुर, वियोग, अग्रिम, ठिठक, दान-दक्षिणा, परिक्रमा, उत्सव, निर्मम, स्तब्ध, उद्वेलित, नीरज, उजाला, पदचाप, भयाक्रांत, निराधार, सिद्धांत, उपाय, प्रसून, हिलोर, विस्मृत, अनुकंपा, कन्यादान, लक्ष्मी,

तदनुरूप, अल्पना, अनहोनी, आश्वस्त, यज्ञ, अग्निकुंड, उद्यत, कृत्य, छला, अक्षत, संयम, साधना, कढ़ी, पुस्तिका, संध्या, पुलकित, ढक्कन, अश्रु, निस्तेज, निष्ठुर, दूभर, पारावार, प्रसारित, शयन कक्ष, अचंभा, पूर्ति, धवल, संगम, शूल, आकांक्षा, क्षम्य, मंतव्य, कोख, प्रलाप, बलवती, चंचल, राखी, त्योहार, कला, कल्पना, थाली, प्रवास, आगाह, धाम, आरती, पुर्णिमा, वृद्ध, तदनुसार, कस्तूरी, कण, घनघोर, हवन, चटाई, सदाचारी, खोप, जलपान, ऋतु, इंद्र।

तद्भव शब्द

ठगी, चोटी, कुप्पा, आग, मौसी, लोहा, हल्दी, भादों, धोबी, कान, रसोई, धाय, कुम्हार, किवाड़, सूरज।

देशज शब्द

सिलवट, चौहद्दी।

विदेशी शब्द

क) फारसी शब्द – नाराज, फुरसत, कामयाब, गिरवी, फर्ज, रफ्तार, फिरत, खानदान, नग, बाशिंदा, नदारद, दरिया, पसोपेश, मुफ्त, पुख्ता, पुख्ता, शराबी, आतिशबाजी, चश्मा, बिरादरी, दहलीज, अदायगी, अरमान, सुस्ताना, निवाला, खुशबू, किस्त, यार, प्याला, नमक, रिश्ता, जश्न, बावजूद, परवाह, पराया, अदायगी, आगोश, तराजू, दुश्मन, सवार, दालान, भाड़ा, गुंजाइश, आबादी, वीरान, गुमसुम, दरिंदा, तमाशा, अरमान, अशर्फी, वरना, हकदार।

ख) अरबी शब्द – तसल्ली, फौरन, सदमा, अक्ल, कर्ज, माफिक, बेईमानी, जिद, हराम, मंजिल, तब्दील, खौफ, तहकीकात, काफिल, औलाद, बदन, हलाल, हनीफ, दहलीज, हिकारत, वाकई, खैरियत, गुसलखाना, मुस्तैद, कब्र, लिबास, कतई, मंजूर, मरहम, सीरत, अदा, मौसम, गनीमत, हुक्म, फितूर, अजीब, सलमा, दुआ, कमाल, खारिज, किस्सा, हुक्का, किस्सा।

ग) अंग्रेजी शब्द – डायरेक्टर, सिग्नल, डिजाइन, थ्री टीयर, सूटकेस, फैशन, डस्टिंग, टूर, सेटिंग, बिल्डिंग, कॉरीडोर,पेट्रोल, एंट्री गेट, ड्राइव, टायर, रेडीमेड, शर्ट, सेल्समैन, जंक्शन, बेडशीट, साइज, आइसक्रीम, बैनर, फीट, पोस्टमास्टर जनरल, माई डार्लिंग, डिक्शनरी, एयर होस्टेस, फ्लाइट, ट्रॉली, कोल्ड ड्रिंक्स, फ्रीजर, गिफ्ट, क्रॉकरी, गाउन, हैंडपाइप, कंपाउंड, मैट्रिक, डायबिटीज, रिकॉर्ड, रिजल्ट, फ्रेम, ब्लड ट्रांसफ्यूजन, फाइन, ओवर टाइम, गैस, बर्नर, पेंटिंग,पेंटर, नाइटी, थ्री-ह्वीलर, प्लास्टिक, पेंट, फीस, थर्मामीटर, कॉटेज, होमवर्क, स्वीमिंग पूल, पिकनिक, किचन, डिलिवरी, नॉर्मल,

घ) पुर्तगाली शब्द – तौलिया, चाबी, चौंक, परात।

संकर शब्द – डाकखाना, बदा, अजायबघर।

मैथिली शब्द – मेहरारू।

पंजाबी शब्द – दंगल, निहाल।

युग्म शब्द – आकार-प्रकार, आस-पास, जवाब-सवाल, हिसाब-किताब, चेहरा-मोहरा, विपदा-सिपदा, गोरा-चिट्टा, भरा-पूरा, बाँटते-लुटाते, बनती-बिगड़ती, नहाना-धोना, आजू-

बाजू, रोजी-रोटी, दुबला-पतला, अफरा-तफरा, चहल-पहल, सोते-जगते, घूमता-फिरता, लुकता-छिपता, खेती-बाड़ी, हेर-फेर, सास-ससुर, सीधी-सपाट, बनी-बनाई, मोल-भाव, रंग-बिरंगी, टस-से-मस, रही-सही, अगल-बगल, लोक-लाज, मिलते-जुलते, अदला-बदली, गंगा-सेवन, भजन-कीर्तन, चलने-फिरने, रमन-चमन, साधु-संतों, नीम-हकीम, देवी-देवता, तोड़-फोड़, मार-पीट, काम-धाम, पठन-पाठन, हीरा-मोती।

पुनरुक्त शब्द – खड़े-खड़े, भाँति-भाँति, समय-समय, उड़ेल-उड़ेलकर, हुलस-हुलसकर,शत-शत, कतरा-कतरा, उलझा-उलझा, चिल्ला-चिल्लाकर, खोया-खोया, तड़पा-तड़पाकर, भूरि-भूरि, नस-नस, चप्पे-चप्पे, पक्की-पक्की, माँग-माँगकर, बराबर-बराबर, कौन-कौन, ढके-ढके, झुंड-के-झुंड, खींच-खींच, बातों-बातों, जनम-जनम, चप्पा-चप्पा, गिरते-गिरते, सूखा-सूखा, युगों-युगों, बूँद-बूँद।

लोकोक्ति

घर दही तो बाहर देही[50],

5. 'ढाई बीघा जमीन' कहानी संग्रह

मृदुला सिन्हा के 'ढाई बीघा जमीन' कहानी संग्रह में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्ति का वर्गीकरण इस प्रकार है -

तत्सम शब्द

करुण, नितांत, बाण, दोष, अक्षरा, धवल, अनावृत, लोकार्पण, समुद्र, एकाग्रचित, गृह, ग्रसित, अकेली, स्थितप्रज्ञ, निर्लज्ज, लाज, निहार, एकादशी, अवतरण, अर्चना, बिलख,

पायल, माघ, बलि, अनुमान, निरखना, उत्स, मोहित, उत्सव, उद्विग्न, संहारक, पूजा-अर्चना, नमन, सूत्र, संतुष्टि, स्मृति, ध्यानमग्न, जीविका, अवहेलना, वैशाख, आभार, परिक्रमा, सनातन, अमरबेल, निदान, बंधन, क्षमा, उफान, दुर्गंध, सायास, आख्यान, अकाल, तर्जनी, आश्रय, अनर्गल, तपस्या, निहार, पुलकित, श्राप, पुनर्नवा, खिन्न, यथार्थ, संध्या, अवहेलना।

तद्भव शब्द

पत्थर, दर्जन, तैरना, भूखा, खेत, कपड़ा, धोबी, आँसू, सूरज, उँगली।

देशज शब्द

झुग्गी, संकोच, खुरपी, खटखटाना।

विदेशी शब्द

क) फारसी शब्द – परेशान, बहादुर, कारनामा, मर्द, बेताबी, रुखसत, बुनियाद, आबादी, तमाशा, बीमारी, हमजोली, दरबार, वार, सूद, दीवार, खूब, अनुशंसा, गुजारा, सरंजाम, बरखास्तगी, फैसला, किनारा, अर्जी, हिम्मत, तर्ज, नाश्ता, कमोबेश, बावजूद, बगिया, आफत, कमबख्त, मजदूर, जिंदगी, पैमाना, पलंग।

ख) अरबी शब्द – तारीख, निकाह, खाला, हिदायत, औलाद, रहम, तौबा, विदा, शौहर, इंसान, बुरका, इनाम, खुशकिस्मती, तय, शर्त, फर्क, आलम, मुश्किल, बितनी, छानबीन, तलब, तलाक, लमहा, हिदायत, मंजिल, कस्बा, फौज, मुबारक, तराजू।

ग) अंग्रेजी शब्द – अपार्टमेंट, मैडम, ब्यूटी पार्लर, ब्रेड, गेस्ट हाऊस, मेडिकल, एंट्रेंस, पोस ऑफिस, आर्किटेक्ट, सैटारिंग, फिटिंग, प्लास्टर, फिनिशिंग, टाइल्स, बाथटब, वाशबेसिन, साइट, ट्यूबलाइट, बेड स्विच, ऑफ, लाइब्रेरी, डायलॉग, रेसिपी,कॉलबेल, सरप्राइज, पैकेज, बुकिंग, जज, लंच, प्लेटफॉर्म, माइक्रोवेव, बाथटब, फोन, करंट, नर्सरी राइम्स, रिटायर, कीमोथैरेपी, फ्लोर, सर्टिफिकेट, क्लब, सैंडविच, लिफ्ट, लैपटॉप, नाइटी, जींस-टॉप, अपार्टमेंट, शो-केश, शो-पीस, क्रिस्टल, एल्यूमिनियम, ऑपरेशन थिएटर, फैक्टरी, स्ट्रेचर, डिलेवरी, लेबर रूम, डोनेशन, सैल्यूट, एक्सटेंशन, पोस्टमार्टम, रिसीवर, डाइंग डिक्लरेशन, पोस्टिंग, हेलिकॉप्टर, पैकेट्स, रिलीफ कैंप, कैरियर, आंट, टैक्सी, ड्राइक्लीनिंग, वॉडरोब, सूट, हैंगर, फ्रॉक, वुडवर्क, कारपेंटर।

घ) पुर्तगाली शब्द – मेज, कमरा, तौलिया।

भोजपुरी शब्द – गौना, ओसारा।

युग्म शब्द – आदान-प्रदान, आना-जाना, मतलब-उतलब, गुन-धुन, गर्जन-तर्जन, दुबले-पतले, घुमाने-फिराने, ओत-प्रोत, यदा-कदा, सुनते-गुनते, बीच-बचाव, जन्म-मरण, काली-कलूटी, घिसी-पिटी, खाया-पीया, कमाया-खटाया, अनाप-शनाप, अगल-बगल।

पुनरुक्त शब्द – लाल-लाल,सफेद-सफेद, रग-रग, धक-धक, रोती-रोती, कुतर-कुतरकर, लचक-लचककर, खाली-खाली, तिल-तिल, केहाँ-केहाँ, कांव-कांव, पढ़ती-पढ़ती, चूर-चूर, मिलाते-मिलाते, सहमा-सहमा, जनम-जनम, झाँक-झाँक।

मुहावरे

एक हाथ से ताली नहीं बजती[51], पहाड़ टूट पड़ना[52], पाँव तले जमीन खिसकना[53], हल्दी-चूना बुलवाऊँगी[54], कान पर जू न रेंगना[55], कलेजे पर पत्थर रखना[56], दाल में कुछ काला नजर आना[57]।

लोकोक्ति

घी के लड्डू टेढ़ों भले[58]

चिड़िया की जान जाए, लड़िकन के खिलौने[59], केकरो फाटल, केकरो आँटल[60]।

6. 'अपना जीवन' कहानी संग्रह

मृदुला सिन्हा के 'अपना जीवन' कहानी संग्रह में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्ति का वर्गीकरण इस प्रकार है -

तत्सम शब्द – परमानंद, अवतार, मस्तिष्क, अतिथि, कर्ण, आसक्ति, स्थायी, दोष, मंथन।

तद्भव शब्द – गाली, किसान, दातुन, गाभिन, किवाड़।

देशज शब्द – खंगाल, थैला, संदूक।

विदेशी शब्द

क) फारसी शब्द – खामोश, वरना, पुख्ता, नदारद, बुलंद, आमदनी, फरमान, अंजाम, ताजा, दाग।

ख) अरबी शब्द – बदला, बदनाम, हैसियत, दलील, उम्र, नजाकत, करामत,उर्फ, लिबास, मिजाज, दुकान।

ग) तुर्की शब्द – दरोगा, चम्मच।

घ) अंग्रेजी शब्द – सॉफ्टवेयर इंजीनियर, कस्टम ऑफिसर, डायट, बैक गियर, कैन्सिल, जंक्शन, सीट, रोड, हॉर्न, लोकल, गेस्ट हाउस, डिक्की, गेट, वॉलीवॉल, ईमेल, फॉरवर्ड, डेरी फार्म, प्लान, मेट्रो सिटी, पैडल, रिंग, पिस्तौल, स्पीड, ब्रश, पोस्टर, टूथ पेस्ट, पैकेट, फिट, डॉलर, कैंटीन, पीजा, बर्गर, एम्बुलेंस, कजन, नेपकिन, वोल्टेज, कैंप, एम्स, स्टिंग ऑपरेशन, रेकॉर्ड, टेलीविजन, चैनल।

भोजपुरी – गोईंठा।

युग्म शब्द – मारते-पीटते, गली-मुहल्ले, बूँदा-बाँदी, पली-बढ़ी, भाग-दौड़, बेहाल-बेहोश, चाल-ढाल, आनन-फानन, सिलाई-कढ़ाई।

पुनरुक्त शब्द – प्यारा-प्यारा, तिल-तिल, खुली-खुली, खोई-खोई।

मुहवारे

लोहा मानना[61], दाँतों तले उँगली दबाना[62], पेट में चूहे कूदना[63]।

7. 'अंतिम इच्छा' कहानी संग्रह

मृदुला सिन्हा के 'अंतिम इच्छा' कहानी संग्रह में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्ति का वर्गीकरण इस प्रकार है -

तत्सम शब्द – मृत्यु, रश्मि, ऋण, अंकुश, झोला, क्रंदन, समीप, गम, चिंगारी।

तद्भव शब्द – अमूमन।

विदेशी शब्द

क) फारसी शब्द – ननिहाल, नाखून, दुरुस्त, चश्मा, बख्शीश, दंगा।

ख) अरबी शब्द – मकबरा, हुजूर, सब्र, कागज, इलम, तौबा, गनीमत, हकीकत, फितूर।

ग) अंग्रेजी शब्द – फाटोग्राफर, क्लिक, स्टाम्प पेपर, स्पेशल, सर्किट हाउस, सेक्रेटरी, माईक, व्हील चेयर, प्लास्टर, सैंडिल, आइसक्रीम, गिफ्ट, मैनेजमेंट, फेयरवेल, पार्टी, टिफिन वॉक्स, लॉकर, हाफ स्वेटर, बम, ओरिजनल, डायपर, थैंक गॉड, बेबी सीटर, अल्ट्रा साउन्ड टेस्ट, ऑकसीजन सिलेंडर, एलबम, बेसमेंट, फेसबुक, सेभ्ड, हीटर, लाउडस्पीकर, कार, ऑनर किलिंग।

भोजपुरी – भौजी।

युग्म शब्द – गिला-शिकवा, रोजी-रोटी, रूखा-सूखा, जोड़-घटाव, दल-बल, हाथ-पाँव, अदला-बदली, खिलाती-पिलाती, हलराती-दुलारती, उलटूँ-पलटूँ, सवाल-जवाब।

पुनरुक्त शब्द – अंटक-अंटक, तिनका-तिनका, बारी-बारी, चप्पा-चप्पा, छन-छनकर, बहकी-बहकी, सहमी-सहमी।

मुहावरे

मान न मान मैं तेरा मेहमान[64], बेमौसम बरसात[65]।

लोकोक्ति

जिसकी लाठी उसकी भैंस[67]।

4.2 शैली

शैली के द्वारा रचनाकार किसी विषय की गहराई में उतरकर अपने अंतः करण का उद्घाटन करता है। शैली वह भाषिक वैशिष्टय है जो किसी रचनाकार के भावों और विचारों को यथातथ्य रूप में प्रकट करती है। अतः शैली लेखक की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम या साधन है। कहानी के प्रमुख तत्वों में से एक शैली है। शैली तत्व कहानी कला के समस्त उपकरणों के उपयोग करने की रीति है। कला पक्ष के अंतर्गत शैली तत्व सबसे महत्वपूर्ण है। शैली साहित्य के प्रस्तुतीकरण की एक विशेष पद्धति है। इसी के द्वारा किसी साहित्यकार को पहचाना जाता है। हर साहित्यकार की अपनी अलग-अलग शैली होती है। इस तथ्य को डॉ. उषा सक्सेना के इस उद्धरण से समझा जा सकता है – "शैली वस्तुतः वह विधि है जिसमें हम वस्तुओं को देखते हैं। वस्तुएँ विविध रूप से हमें प्रभावित कर सकती हैं तथा इस प्रभावों की प्रतिक्रिया ही शैली रूप में परिणत हो सकती है ... शैली – विविधता लेखक के व्यक्तित्व के अनुरूप हुआ करती है।"[67] जिस प्रकार साहित्यकारों के व्यक्तित्व में भिन्नता होती है, उसी प्रकार उनके द्वारा अभिव्यक्त शैलियों में भी भिन्नता होती है। पात्रों की भूमिका, प्रस्तुतीकरण, वाक्य-चयन, विषय-वस्तु आदि को मृदुला सिन्हा भी अपनी कल्पना और भावना के अनुरूप ढालती है। उनकी साहित्यिक प्रतिभा कहानी, उपन्यास एवं निबंध के माध्यम से प्रकट हुई है। लेखिका का यह सतत प्रयास रहा है कि उसके कथ्य की मूल संवेदना पाठकों के हृदय की अतल गहराई में उतरकर उन्हें विचार मंथन के लिए प्रेरित करे।

शैली शब्द अंग्रेजी भाषा के स्टाइल(style) शब्द के हिन्दी पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। यह स्टाइल शब्द शैली के रूप में किसी साहित्यकार की लेखन संबंधी विशेषताओं को प्रकट करता है। भारतीय परंपरा में शैली शब्द की उत्पत्ति 'शील+अच+डीप'

से मानी जाती है, जिसका संबंध मुख्यतः स्वभाव, चरित्र और आचरण से जोड़ा जाता है। बाबू गुलाब राय लिखते हैं कि – "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[68] इस तरह किसी की भाषा संबंधी विवेचना से किसी साहित्यकार की पहचान होती है और उस शैली में ही किसी लेखक का व्यक्तित्व भी विद्यमान रहता है। साहित्य में शैली की व्याख्या करते हुए भोलानाथ तिवारी लिखते हैं – "शैली का अर्थ सामान्यतः मात्र 'भाषा शैली' समझा और लिया जाता है। वस्तुतः शैली का क्षेत्र काफी विस्तृत है। कथानक की रूपरेखा बनाना, घटनाओं को विशिष्ट क्रम देना, मुख्य कथानक तथा गौण कथानक का संयोजन करना, पात्रों का चयन करने उन्हें अलग-अलग भूमिकाएँ देना, समस्याओं, पात्रों तथा बाह्य परिवेश आदि का चित्रण करना, कहानी या उपन्यास का नामकरण करना, कृति के लेखन में अपने लक्ष्य को अभिव्यक्त कर देना तथा समवेततः भाषा शैली इन सभी की शैली होती है।"[69] किसी भी साहित्यकार की शैली पर विचार करने का मतलब है कि समग्रता से इन सब पर विचार करना होता है। शैली के द्वारा ही किसी साहित्यकार के चिंतन व सत्य की उचित अभिव्यक्ति हो सकती है। शैली किसी साहित्यकार के अनेक पहलुओं को स्पष्ट करती है। कहानी की रचना में भी शैली के तत्वों का भी प्रयोग किया जाता है। कहानी के कथानक को प्रकट करने के लिए अनेक शैलीगत प्रयोग होते रहते हैं। किसी कहानीकार की विशिष्टता उसकी शैली के द्वारा ही उद्घाटित होती है। जिन विभिन्न प्रणालियों के द्वारा किसी कहानी की विषय वस्तु को स्पष्ट किया जाता है, वह उसकी शैलियों में ही निहित होते हैं। सफल कहानी के लिए आवश्यक है कि विषय वस्तु और शैली एक-दूसरे से जुड़े हुए हों। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार, "शैली अनुभूति विषय वस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है, जो उस

विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं।"[70] अतः शैली बहुत महत्वपूर्ण होती है।

वर्तमान कहानी की शैली अपनी नैसर्गिक सुषमा के साथ अवतरित हो रही है, वह कृत्रिम नहीं है। जब कि आज के कथाकारों की शैली संबंध जागरूकता के बारे में नामवर सिंह कहते हैं कि – "इतना होते हुए भी यह कहा जा सकता है कि नये कहानीकारों ने शिल्प की साधना में अनेक नयी पुरानी विधियों को कूट-पीसकर एक मिली जुली शैली का निर्माण किया है।"[71] अर्थात् मिश्रित शिल्प को आज की कई कहानियों में देखा जा सकता है। मृदुला सिन्हा की कहानियों में निहित विभिन्न शैलियों का विवरण प्रस्तुत है :-

1. वर्णनात्मक शैली

यह एक प्राचीन प्रचलित और परंपरित शैली है। इसमें कथाकार पात्रों का वर्णन, घटना का चित्रण वर्णनात्मकता के सहारे करता है। वर्णन करते करते कहानीकार स्थान-स्थान पर बौद्धिक विवेचन, भावात्मक वर्णन और विश्लेषण करता है। इसी शैली में प्रायः एक खतरा यह रहता है कि बहुत बार अनावश्यक, अप्रासंगिक और अतिरिक्त वर्णन भी कहानी में पाया जाता है। मृदुला सिन्हा ने अपने कहानियों में वर्णनात्मक शैली के परंपरागत स्वरूपों का उपयोग किया है। इस शैली में कहानी एवं प्रसंग का वर्णन कथन के माध्यम से किया जाता है। जैसे- "दरअसल दोनों सुवर्णा और सौहार्द के बीच आई दरार फटने की उपाय-योजना बनाते रहे। पति-पत्नी के बीच विश्वास, एक-दूसरे के लिए समर्पण और आपसी तालमेल और समझ के लिए ही दोनों के विचार प्रगट होते। इस क्षेत्र में दोनों को एक-दूसरे के विचार पसंद आ गए थे। दोनों ने एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होकर भी अपने भाव छुपा रखे थे। उनका पूरा ध्यान अपने-अपने मित्र के दांपत्य-जीवन में सुख-शांति लाना था। उन्होंने यह भी एहसास किया था कि वे दोनों ही उस मनमुटाव के कारण बने थे।

इसलिए निदान बनने के लिए थोड़ा-बहुत त्याग करने के लिए भी तैयार थे। उन दोनों का विवाह बंधन में बंधना सुवर्णा और सौहार्द के लिए संभवतः सुखद नहीं होता।"[72] मृदुला सिन्हा ने 'अनावरण' कहानी में प्रभाती के द्वारा किसी बात को विस्तृत रूप में वर्णन करने के लिए पूरी भूमिका बनाई है जो इस प्रकार है – "प्रभाती ने कहा, इस बारे में मेरी सास का बड़ा ही स्पष्ट मत था। वे पति की देख-रेख और सेवा – सम्मान भी करती थीं। पर उनका कहना था – देखो, तुम्हारे ससुरजी अकेले थे। मेरे आने के बाद ही परिवार बना। बच्चों का पालन-पोषण भी मैंने ही किया। वे पोस्ट ऑफिस का काम करते रहे। उन्होंने दफ्तर के काम में कभी मेरी राय नहीं ली। इसलिए मैं समझती हूँ कि बच्चों की बातों में मैं भी उनकी राय क्यों लूँ। मैं जो भी निर्णय लेती हूँ, वे समर्थन करते हैं। वे मेरे काम में दखल नहीं करते, महीने की दूसरी तारीख को अपनी पूरी तनख्वाह देने के सिवा। पर मैं खेती-बाड़ी भी संभालती थी। अन्न बेचती। कभी तुम्हारे ससुरजी ने मुझसे खेती की आमदनी नहीं माँगी। खेती के लिए खर्चा भी नहीं दिया।"[73] मृदुला जी की वर्णन कला बहुत स्पष्ट है।

वर्णनात्मक शैली का अन्य उत्कृष्ट उदाहरण 'परामर्श' कहानी में दिखाई पड़ता है। जिसमें पत्नी अपने पति की गैर जिम्मेदारी आदतों के चलते अपने भविष्य को लेकर परेशान रहती हैं। उदाहरण – "लक्ष्मी शरमा गई थी। उसी समय विष्णु आ धमका था। उसकी चाल-ढाल से सबने अनुमान लगाया, वह पिए हुए था। दोनों समधियों की आँखें सूख गईं। मानो कभी उनमें पानी की एक बूँद भी नहीं रही हो। विष्णु पिता के पास आकर बैठा। उसके मुँह से शराब की दुर्गंध आ रही थी। पिता से बरदाश्त नहीं हुआ। उसने एक चपत जड़ दी उसके गाल पर। चाँटा मानो लक्ष्मी के कलेजे पर लगा हो, उसकी उफ निकल गई। उस दिन से विष्णु ने शराब पीना छोड़ दिया। चौथे महीने वह एक बेटे का बाप बन गया। फिर तो मानो

काम के लिए ही उसने शरीर धारण किया था। तीन पालियों में धंधा। लक्ष्मी को काम से दो महीने की छुट्टी दिलवा दी। उसके काम पर स्वयं सुबह दो घंटे के लिए जाने लगा। दस बजे से एक दुकान पर मजदूरी करता। रात्रि के नौ बजे से बारह बजे तक ठेला खींचता । कभी-कभी उसके रिटायर पिता का शरीर भी बेटे की मेहनत देख-सुनकर दुखने लगता। लक्ष्मी तो नन्हें पुत्र के शरीर तेल मालिश करती न जाने कहाँ खो जाती, मानो बेटे की नहीं, पति की टाँगें हाथ में हों। और उसके हाथ के जोर से बेटा चिल्ला उठता। लक्ष्मी की तंद्रा भंग होती। वह वर्तमान में आ गिरती।"[74] यहाँ वर्णनात्मक शैली द्वारा दृश्य और परिवेश दोनों को हूबहू पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

मृदुला सिन्हा कोमल भावनाओं, सुकुमार कल्पनाओं और पात्रों के भाव जगत को व्यक्त करने के लिए भी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करती हैं। 'पेंटिंग के बहाने' कहानी की अनामिका विवाह के बाद जब ससुराल पहुँचती हैं, तब उसका मन पारिवारिक कोलाहाल से भर जाता है- "थोड़ी ही देर में बच्चे और पति को भी समयानुसार विद्यालय तथा ऑफिस भेजकर अनामिका सास-ससुर की आवभगत में लग गई। सबसे पहले सास द्वारा लाई गठरियों को खोलकर सामानों को रसोईघर में यथास्थान सजाना था। परंतु उनसे भी महत्वपूर्ण कार्य सास-ससुर के लिए डाली जानेवाली चारपाई के लिए डी. डी. ए. द्वारा निर्मित 'हम दो हमारे दो' के लिए ही बनाए गए फ्लैट में जगह ढूँढनी थी। सच तो यह है कि जब से सास-ससुर के पत्र आने शुरू हुए, वह उनकी चारपाई डालने की जगह ही तलाश कर रही है। वह सास-ससुर को दिल से आदर-मान देती हैं। फिर भी पत्र द्वारा उनके दिल्ली बुलाने के अनुग्रह को वह अनमोल तक नहीं पहुँचा पा रही थी। दरअसल घर की सभी समस्याओं का निदान उसे ही ढूँढना पड़ता था। अनमोल तो दफ्तरी उलझनों में ही रात भी गुजारता था। कभी-कभी तो अनामिका की आधी रात तक नींद उन दफ्तरी उलझनों को

सुलझाने में बरबाद करवा देता। वह झल्लाती, 'रात्रि के बारह बज गए। अब संभाल लो अपने दफ्तर की फाइलें। यहाँ के लिए कोई तुम्हें ओवर टाइम नहीं देनेवाला'।"[75] यहाँ लेखिका ने अनामिका के सूक्ष्म मनोभावों को व्यक्त किया है। इस प्रकार वर्णनात्मक शैली का प्रयोग साक्षाकार, एक दीये की दिवाली, स्पर्श की तासीर, अपना जीवन आदि कहानियों में भी किया गया है। 'मगन है मदन' कहानी में तिवारी की पत्नी की बाह्य और आंतरिक मनः स्थिति को कलात्मकता देने के लिए लेखिका ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है- "मैं बाहर लॉन में झूले पर बैठी थी। वह मेरे सामने आई। गोरे-चिट्टे सुंदर चेहरे पर बिंदी थी। माँग सिंदूर से भरी हुई। सिर पर पल्लू लिये बहुत आकर्षक चेहरा। तिवारी ने इशारा किया। उसने मेरे पाँव छुए। । मैंने कुछ-कुछ पूछा। अधिकतर प्रश्नों के जवाब तिवारी ही देता था या वह इशारे से मेरा प्रश्न उसे समझाता था। कंठ से निकाली अस्पष्ट भाषा को वह अपने हाथ-मुँह के इशारे से प्रगट करती। मैं उसके हाथ में सौ रूपए का नोट थमाने लगी। तब वह तिवारी की ओर वैसे ही देखने लगी, जैसे किसी दूसरे के घर गया बच्चा वहाँ के लोगों द्वारा दी जा रही टॉफी को हाथ से छूते समय पहले पिता या माँ की ओर देखता है। तिवारी की पत्नी ने उसके इशारे पर मेरे हाथ से नोट ले लिया।"[76] यहाँ पर भी पूर्ण रूप से बड़े ही सहज रूप से लेखिका ने वर्णनात्मक शैली का सुंदर प्रयोग किया है।

2. पूर्वदीप्ती शैली

पूर्वदीप्ती शैली में स्मृति के सहारे पात्र के जीवन की घटनाओं का चित्रण किया जाता है। इस शैली में अतीत वर्णनात्मक रूप में न आकर स्मृति तरंगों के रूप में आता है। गोपाल राय के शब्दों में, "कथा-प्रस्तुति की यह सर्वथा नयी प्रविधि है। इसका मनोवैज्ञानिक आधार यह है कि मनुष्य कुछ विशेष क्षणों में, वर्तमान में होते हुए भी, चेतना के स्तर पर अतीत में

संक्रमण कर जाता है। वह शरीरतः तो अपने वर्तमान में होता है। पर उसकी चेतना अतीत में विचरण करने लगती है।"[77] इसमें पात्र अतीत की यादों में उलझ जाते हैं और वर्तमान को ठीक से भोग नहीं पाते। परिणामतः जटिल मानसिक उलझनों में फँसकर वे अपने-आपसे संघर्ष करने लगते हैं। मृदुला सिन्हा ने पूर्वदीप्ती शैली द्वारा मानसिक उलझनों की समस्याओं का यथावत अंकन किया है। जैसे उड़ि जहाज को पंछी, अपना जीवन, अंतिम इच्छा आदि कहानियों में पूर्वदीप्ती शैली का प्रयोग हुआ है। 'पगली कहीं की' कहानी के माध्यम से अतीत के पल को याद करते हुए वर्तमान में उसकी व्याख्या कुछ इस प्रकार की गई है – "दस वर्षों बाद अपनी बेटी को 'पगली कहीं की' कहे जाने पर वह अपने इतिहास में झाँकने लगी थी। धुँधली यादें थीं। श्रीनिवास याद आए। सासूजी भी याद आईं, पर वे यादें सुखद नहीं थीं। राधू को याद करना उसे अच्छा लगा। उसकी याद ताजा इसलिए भी है कि वह उसकी बच्ची से मिलने आता रहता है। कस्तूरी को कई बच्चों की देखरेख में रमे देख उसे प्रसन्नता होती है।"[78] यहाँ लेखिका पाठकों को अतीत में ले जाने में सक्षम हुई प्रतीत होती है।

'मुआवजा' कहानी में अतीत के पल को याद करते हुए उजला अपने पति द्वारा कहीं गई बातों को सच होते हुए देख रही है और अपने मन में विचार के उथल-पुथल एवं सुख-दुख अनुभूतियों को सोच रही है। जैसे- "बैक गीयर में जिन्दगी की गाड़ी दौड़ाना उसे इन दिनों बड़ा सुखद लगता है। बीच में रोकती भी नहीं। पीछे ससारती नहीं, दौड़ाती गाड़ी को वहाँ तक ले जाती है, जहाँ से प्रारंभ किया था। सुख में दुःख की स्मृतियों को न्योत लाना मानो उत्सव मनाना ही है। यह क्या कम है कि स्मृतियों को उतारने के लिए मन का धरातल काँटेदार नहीं है। वरना स्मृतियाँ भी बिंधकर लहूलुहान न हो जाएँ। फिर तो उजला अपना वर्तमान संभालती या उन लहूलुहान हुई स्मृतियों को। आज उसे चौका-चूल्हे में अपनी बुद्धि

से दो-चार रुपए बचाने, नीरज की एक नई शर्ट खरीदने के लिए पति की शर्ट की फटी जेबों और कॉलर को अपने हाथ से बार-बार सिल देने जैसी स्मृतियाँ गुदगुदाती हैं।”[79] पूर्वदीप्ती शैली हिन्दी कहानीकारों का अत्यंत लोकप्रिय विधा रही है। अधिकांश महिला कथाकारों ने अपने शिल्प के प्रति अत्यधिक सचेत होकर अपने कहानियों पर काफी मेहनत की है और कहानियों की सूक्ष्म बुनावट करते हुए पूर्वदीप्ती शैली की प्रयोग किया है। ‘अपना जीवन’ कहानी में भी आंशिक रूप में फ्लैस बैक पद्धति का प्रयोग करते हुए मृदुला सिन्हा ने एक स्त्री की सामाजिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व एवं बंधी बधाई रूढ़ियों का चित्रण किया है- “स्मृतियों की डोर थामें मोना हर्ष के जन्मकाल तक पहुँच गई थी। उसके पीछे मिला था मोना को अपना जीवन। जब वह खेलती-खाती सखियों के साथ मस्त रहती थी। कोई जिम्मेदारी नहीं। किसी की चिंता नहीं। कितनी प्यारी दुनिया थी। कितने सुनहले सपने। उस सपने का रंग-रूप उसे स्मरण नहीं। वह तो स्वयं अपनी माँ की सपना थी। उसका जीवन। उसकी माँ का भी अपना जीवन कहाँ था। सुबह से शाम तक वह सास-ससुर दोनों बेटियों, दोनों बेटों और गाय भैसों के लिए जीती थी। मोना ने पहली बार माँ के जीवन का विश्लेषण किया- “माँ हमारे लिए जीती थी और हम माँ के लिए। दोनों में से किसी का अपना जीवन नहीं था। घर में थोड़ा बहुत अपना जीवन था तो पिताजी का।”[80] स्मृतियों के बहाने घटनाओं की एक रास्ता, जड़ता व नीरसता को तोड़ने हेतु इस शैली का प्रयोग ‘बेनाम रिश्ता’ कहानी में किया गया है – “बहुत दिनों बाद पच्चीस वर्ष पूर्व घटी घटना का संपूर्ण दृश्य नजरों के सामने रूढ़ हो गया। शिमला से गाड़ी में पति-पत्नी और दोनों बच्चे का कुल्लू मनाली के लिए प्रस्थान। थोड़ी दूरी पर जाते ही गाड़ी का खड्डे में गिरना। पति के सिर में चोट आना। उनका होश नहीं लौटना। डॉक्टर से बातचीत। बेहाल-बेहोश चित्रा जी के सामने डॉक्टर की एक माँग। माँग पर शीघ्रता से विचार करने का आग्रह। अकेली खड़ी

चित्रा जी। दो नन्हें बच्चे माँ से चिपके। अपना-पराया कोई साथ न था। निर्णय लेना था चित्रा जी को। सबकुछ चला गया था। जो बचा था, उसकी माँग थी। चित्रा जी ने वह वस्तु देना स्वीकार कर लिया, जो उनकी थी। डॉक्टर का सुझाव। और फिर मृत्यु के करीब गया व्यक्ति जीवित हो गया।"[81] इन वाक्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि अतीत में घटित यह घटना अभी-अभी घट रही हो।

अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क से विकसित इस शैली में भूतकाल, वर्तमान काल और फिर भूतकाल की इस ढंग से कथावस्तु विकसित होती है कि वर्तमान जिन्दगी जीते हुए पात्र अपने विगत जीवन की घटना का उल्लेख करते हुए स्मृतियों में खो जाते हैं। इसका उदाहरण 'उऋण' कहानी में देखा जा सकता है – "माँ की हिचकियाँ गिनती सोनाली अतीत में खो गई। तीस वर्ष पूर्व उसकी माँ काम पर जाती थीं और उनके तीनों बेटे स्कूल जाते थे। तब माँ सोनाली को अंदर ही छोड़कर बाहर से ताला लगा जाती थी। एक दिन गुड़ियों से खेलने और खाने-पीने के सामान से सोनाली का मन भर आया। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगी। थोड़ी देर बाद राजरानी बाजार से लौट आई थीं। उन्होंने दरवाजा खोला और बेटी को गले लगाया। सोनाली हिचकियाँ भर रही थीं। दाएँ-बाएँ दोनों तरफ की पड़ोसनें आ गई थीं। बेटी को घर में रखकर ताला लगाने के लिए उन्होंने राजरानी को भला-बुरा कहा था, मगर राजरानी चुप रही थी।"[82] इन वाक्यों ने पाठक गण को जिज्ञासा से भर दिया कि भले ही यह सारी घटनाएँ अतीत में घटी हो, फिर भी इसके बाद क्या हुआ या आगे क्या होने वाला है।

3. पत्रात्मक शैली

एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के पास कोई लिखित संदेश भेजना पत्र कहलाता है। यदि पत्र लिखने तथा पढ़नेवाले के बीच कोई तीसरा न हो, तो वह आत्मीय वार्तालाप बन जाता

है। कहानी में भी इसी आत्मीय संवाद को लाने के लिए कभी-कभी उसे एक पत्र की भाँति लिखा जाता है। इसे ही कहानी की ‘पत्रशैली’ कहते हैं। इसकी तीन पद्धतियाँ प्रचलित है –

1) कई पत्रों के माध्यम से कहानी की सृष्टि की जाती है।

2) एक ही पत्र के माध्यम से समूची कहानी का निर्णय किया जाता है।

3) आरंभ और विकास भाग की अभिव्यक्ति विभिन्न पत्रों द्वारा की जाती है, और कहानी के अंतिम भाग में लेखक वर्णन या विश्लेषण की शैली से कहानी समाप्त कर देता है।

पत्रात्मक शैली के बारे में गोपाल राय कहते हैं कि “पत्र स्वभावतः निजी होते हैं और कमोबेश निकट व्यक्तियों को ही संबोधित होते हैं। पत्र लिखते समय कोई बहुत चालाक व्यक्तियों को छोड़कर यह नहीं सोचता कि वह दूसरों के द्वारा भी पढ़ा जाएगा। वह सार्वजनिक या प्रकाशित हो सकता है, इसकी संभावना कुछ थोड़े ही लोगों को होती है। और जहाँ मन में यह संभावना होती है, वहाँ पत्र प्रायः नकली हो जाते हैं। अतः हमे यह मानकर चलना चाहिए कि पत्र में व्यक्ति बिना कुछ छिपाए, अपनी भावनाओं और विचारों को स्वयं को, अभिव्यक्त करता है। ... लेखक की मंशा यह होती है कि वह कथा-संसार में अपने को पूर्णतः अप्रत्यक्ष बनाए रखें और उसके किसी पात्र या पात्रों की चेतना पाठक की चेतना से सीधे, बिना किसी माध्यम से जुड़ सके।”[83] मृदुला सिन्हा की ‘चिट्ठी की छुअन’ कहानी पत्र शैली में लिखी गई एक लम्बी तथा सुन्दर कहानी है। जिसमें नायिका अपने माँ को पत्र लिखकर अपनी भावनाएँ बयान करती है –

“आदरणीय माँ,

ईश्वर की अनुकंपा और आप लोगों के आशीष से मैं यहाँ सकुशल हूँ। यहाँ परिवार में सब लोग अच्छे हैं, मुझे प्यार भी करते हैं। मेरे सास-ससुर आपकी बहुत इज्जत

करते हैं। कभी किसी बात का उलाहना नहीं देते। और ये तो मेरा बहुत ख्याल रखते हैं। अभी जल्दी में हूँ, फिर लंबी चिट्ठी लिखूँगी। घर में बड़ों को प्रणाम। छोटों से प्यार कहिएगा।

आपकी बेटी सीमा।"[84]

इसी तरह 'ऋण' कहानी में पत्र के माध्यम से प्यार, शादी और पारिवारिक स्थिति का मिश्रित स्वरूप परिलक्षित होता है। जैसे –

"मेरी तोषिमा,

सदा खुश रहो।

तुम्हारा पत्र मिला, धन्यवाद। दरअसल मेरा जीवन संयोगों के दानों की गूँथी हुई माला-भर है। कभी गूँथ जाती है, कभी बिखर जाती है।

यह एक संयोग था कि प्रथम दिन ही कॉलेज में मेरे जैसे कुरूप लेक्चरर की निगाह क्लास की सबसे खूबसूरत विद्यार्थिनी पर अटक गई। तुमने भी मेरे मनोभाव भाँप लिये। तुम्हारी तरफ से शह पाकर मेरा भाव चाहत में बदल गया। शादी के लिए तुम्हारे वैभवशाली माँ-बाप का इनकार करना वाजिब था। काश! हम उनकी मान गए होते! माँ-बाप, भाई-बहनों का सम्मिलित अधिकार प्राप्त मेरी इकलौती दीदी को भी रिश्ता रास नहीं आया था। उनके अनुभवानुसार, दो परिवारों के बीच आर्थिक असमानता में वैवाहिक संबंध बेमेल साबित होता है। दांपत्य की गाड़ी सहजता की पटरी पर नहीं खिंचती।

...एक बात और, अपनी ओर से किसी महिला को पति से विलग होने की सलाह मत देना। असह्य पीड़ा होती है दोनों को। तुम्हारे चेहरे पर भी आनंद की ओढ़ी हुई भीनी चादर के नीचे गहन पीड़ा थी। पर तुम क्यों देने लगीं पीड़ा। तुम तो जीवनदायिनी हो, दुखहरणी।

अब बस। तुम्हारी दी हुई उँगलियों ने कलम पकड़ ली है। यह पकड़ ढीली न हो, दुआ करना।

तुम्हारा, सदा तुम्हारा

शिवालिक"[85]

उपर्युक्त पत्रों के माध्यम से लेखिका कहानी में पात्रों के मनोजगत को स्पष्ट कर उनके उलझे सूत्रों को सुलझाती हैं, जिसमें अनमेल विवाह, तलाक, पारिवारिक अस्वीकृति के बावजूद शादी करने के दुष्परिणाम आदि मुद्दों को स्पष्ट किया गया है। पारिवारिक स्थिति एवं माँ-बाप का पुत्रों के प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति 'पेंटिंग के बहाने' कहानी में दिखाई देता है। एक पिता द्वारा पुत्र को लिखा गया पत्र इस बात को स्पष्ट करता है कि बच्चों की तरक्की माँ-बाप को कितना खुशी प्रदान करता है। उदाहरण –

"प्रिय बेटा,

हम दोनों तुम्हारे जैसा बेटा पाकर गौरवान्वित हैं। तुम्हारे कमरे में लगी पेंटिंग हमें भी बहुत पसंद आई। चलो, अब तो अमेरिका ने भी पसंद कर ली। पेंटिंग की तीनों आकृतियों में जो तुमने भाव उभारे हैं, बड़े सजीव हैं। निश्चय ही एक मेरी और एक अपनी माँ की तसवीर है। उन्हें निहार-निहारकर मुझे आश्चर्य होता था कि तुमने किस हद तक हम दोनों को समझा है। अब अमेरिकावाले भी अपने समाज में ऐसे ही माता-पिता चाहते हैं। ...अमेरिकन माता-पिता को अपनी संतान के संग-साथ के लिए तरसते कई-कई पीढ़ियाँ बीत गई। हमारे यहाँ तो अभी इस तरस की शुरुआत ही हुई है। तुम्हारे ड्राइंगरूम की दीवार पर सजी श्रवणकुमार की पेंटिंग का महत्त्व हिंदुस्तान में भी बढ़ाने की आवश्यकता समझी जाएगी; परंतु अभी वह

समय आने में देर है। सावधान रहना, कहीं इस बीच अमेरिका उस पेंटिंग का पेटेंट न करवा ले।

पेंटिंग के लिए तुम्हारी माँ की ओर से भी ढेर सारी बधाइयाँ और आशीष के साथ...

तुम्हारा पिता।"[86]

4. विश्लेषणात्मक शैली

विश्लेषणात्मक शैली का संबंध व्यक्ति के अंतर्जगत से है। आधुनिक युग में इस शैली का प्रयोग अति आवश्यक हो गया है। कारण, व्यक्ति में जितनी उलझने बाहर से हैं, उससे कहीं ज्यादा जटिल उलझने उसके अंदर हैं। इस शैली में साहित्यकार की भाषिक सामर्थ्य महत्वपूर्ण होती है। इसमें साहित्य में अपूर्व संवेदना के साथ मनुष्य की मनः स्थितियों का चित्रण किया जाता है। यह शैली तर्क प्रधान होती है। अमूर्त तथा सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति के लिए यह शैली उपयुक्त होती है। अंतर्जगत के चित्रांकन में इसी शैली का सर्वाधिक प्रयोग होता है। द्वंदात्मक तथा उहापोह की स्थिति में कहानीकार मन की अवस्था का विश्लेषण करता है।

मृदुला सिन्हा 'अनावरण' कहानी में नायक के मानसिक द्वंद का विश्लेषण इस रूप में करती हैं – "क्या फर्क है पुस्तक लोकार्पण और मूर्ति अनावरण में? ... एक कागज और दूसरी पत्थर की है। दोनों निर्जीव! पर पत्थर मूर्ति में ढलकर और कागज अपने ऊपर अक्षर उकेरकर जीवंत हो जाता है। इसलिए अक्षरों को अपने अंक में समेटे कागज और मूर्ति में ढले पत्थर में पाँव लगाना वर्जित है। दोनों पूजनीय हैं। पुस्तक और मूर्ति दोनों लोक को ही समर्पित होती हैं। इसलिए मूर्ति के लिए भी 'लोकार्पण' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं।

मन इन विवेचनों में उलझा था, पाँव मूर्ति तक पहुँच गए। चप्पल खोलकर उस चबूतरे पर पाँव रखे, जिसके ऊपर धवल मूर्ति विराजमान रखी थी। ऊँचाई होगी पाँच फीट। मूर्ति से कपड़े हटाकर उसे लोकार्पित करते हुए उस स्व. महिला की प्रस्तर आँखों पर दृष्टि थम गई। अचानक मेरी आँखें भर आई। ... मंच पर आसन ग्रहण करने के बाद पुनः मन की शल्य-चिकित्सा की। प्रभाती की सास की मूर्ति का अनावरण किया था। पर स्मृति में अपनी स्वर्गवासिनी सास उतर आई थीं। और वे दो बूँद प्रभाती की सास स्व. सत्यवती देवी के लिए नहीं, अपनी सास स्व. बनारसी देवी के लिए अश्रुअंजलि-स्वरूप थे।"[87] बड़े ही सटीक रूप में विश्लेषण किया गया है।

मृदुला सिन्हा ने अपनी कहानियों में हीन भावना, अर्थाभाव, अतीत की यादों से उपजी मानसिक संत्रास और पीढ़ियों का अंतर एवं उसके सोच को पात्रों के माध्यम से उभारा है। 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी' कहानी में वैवाहिक जीवन की शुरुआती दौर और भविष्य की अशंका की मनःस्थिति को कुछ इस प्रकार व्यक्त किया गया है – "विवाह के उपरांत अपने घर आई रोमिला को नख से शिख तक एक सनातनी गुजराती बहू के रूप में निरख उसकी सास धन्य हो रही थी। परंतु भरत के चेहरे पर विवाहोपरांत अपेक्षित स्वाभाविक अनुराग का भाव माँ और पिता दोनों को चुभ रहा था। इधर सास, प्रकृति और पुरुष मिलन से उत्पन्न अथाह आनंद की प्रतिच्छवि, रोमिला की चाल-ढाल और चेहरे पर ढूँढ़ती रही।"[88] मन में उपजे भावों को बड़े सुंदर रूप से प्रस्तुत किया गया है।

5. काव्यात्मक शैली

काव्य साहित्य का प्रथम एवं पुराना माध्यम है। काव्य के बगैर किसी भी साहित्य की कल्पना अधूरा-सा लगता है। इस विधाओं का धीरे-धीरे विस्तार हुआ और उसके अनेक

प्रयोग साहित्य की अन्य विधाओं में भी दिखाई पड़ने लगा। कहानीकार भी अपनी भाषा को सहजता, सरलता व भावात्मक संदर्भ प्रदान करने के लिए काव्यगत विधाओं का सहारा लेते हैं। इससे कहानी में कुछ नयापन दिखाई देता है। मृदुला सिन्हा स्वयं गीतों की रचना करने वाली लेखिका हैं। इसी कारण उनके साहित्य में जगह-जगह गीत पाए जाते हैं। 'बेटी का कमरा' नामक कहानी में छठ पूजा वाले दिन रामजती और अन्य महिलाओं द्वारा प्रस्पुटित लोक गीत का उदाहरण देखने को मिलता है –

"अँगना में रुनुझुन नाच गई ननदी
कँगना जो देती वह भी नहीं लेती
झुमका लेने को मचल उठी ननदी।"[89]

प्रस्तुत गीत के माध्यम से कहानी के पात्रों में लोक संस्कार के गुण समाहित करने का प्रयास किया गया है। यह कहानीकार की भी विशेषता है और कहानी की भी। मृदुला सिन्हा की अनेकों ऐसी कहानियाँ हैं जिसमें गीतों के माध्यम से लोक रंग को उभारा गया है। 'हस्तक्षेप' कहानी इसका प्रमुख उदाहरण है। इस कहानी में नानी के माध्यम से मृदुला सिन्हा वैवाहिक पद्धति और पारंपरिक लोक गीत गँवाकर लोक के प्रति अपनी आस्था का प्रमाण दिया है –

"मचिया बैठल कौशल्या रानी, मन ही आनंद भले
कब होयत राम के विवाह, सेंदूर हम बेसाहव हे।"[90]

लोक गीतों या लोक संस्कार की एक विशेषता रही है कि वह हर जगह विराज है। चाहे वह सुख की अलबेली शाम हो या दुख एवं शोक का संताप। 'रामायणी काकी' कहानी में लोक प्रचलित शोक गीत इसका उदाहरण है। इस शोक गीत के माध्यम से यह स्पष्ट होता

है कि हमारा समाज और उसकी परंपरागत गीत हमारे सभी क्रिया-कलापों में समाहित है। प्रस्तुत कहानी में मैना प्रभुदयाल के पार्थिव शरीर के सामने अपने कष्टों को व्यक्त करते हुए कहती है –

"भयउ बिकल बरनत इतिहासा। राम रहित धिग जीवन आसा।।
सो तनु राखि करब मैं काहा। जेहिं न प्रेम पनु मोर निबाहा॥
हा रघुनंदन प्रान पिरीते। तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते॥
हा जानकी लखन हा रघुबर। हा पितु हित चित चातक जलधर॥
राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गयउ सुरधाम॥"[91]

उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्रों में या यों कहें कि समाज के हर वर्ग एवं हर क्षेत्रों में लोक गीतों की भरमार है। यह गीत सभी क्रिया-कलापों में मौजूद है। शादी, मजदूरी, पर्व एवं त्योहार के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यों में भी इन गीतों का उदाहरण दिखाई पड़ता है। 'औरत और चूहा' कहानी में खेतों की कटाई करते समय हास-परिहास के लिए और अपनी थकान मिटाने के लिए गीत गाने की परंपरा को दर्शाया गया है। इन गीतों को गाकर कहानी की पात्र मालती अपने स्कूल में पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी है। ये गीत कुछ इस प्रकार हैं –

"धनमा के लागल कटनिया, भर लो कोठारी, देहरियो भरल बा,

भरल बाटे बाबा बखारी, अबकी अधइले किसनमा हो राम।"[92]

मृदुला सिन्हा लोक जीवन की कहानीकार हैं। लोक की अभिव्यक्ति उनकी कहानियों की मुख्य विशेषता है। 'बात का गोला' कहानी में मनुष्य जीवन की नश्वरता को उदृत करते हुए कहती हैं –

"आया है सो जाएगा, राजा रंक फकीर।

कोई सिंहासन चढ़ चलै, कोई बँधे जंजीर॥"[93]

'जुनून और जज्बात' कहानी में 1947 के बँटवारे और उसकी विभीषिका से जुड़ी अनेकों प्रसंग आए हैं। इस कहानी में कहीं-कहीं देश भक्ति और उसकी विशेषताओं का चित्र भी दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत कविता इसका उदाहरण हैं –

"अवतार की गाड़ी से बिखरे काँच के टुकड़े
मेरे जेहन में धँसते चले गए
और कुछ ऐसे तिरछे धँसे कि
न खून रिसता है सारा दिन
न घाव बहता है सारा दिन
आजाद देश में हर पत्थर फेंकनेवाला
मुझे सतवंत का रिश्तेदार नजर आता है
देशद्रोही है वह
क्योंकि वह कुछ ऐसा कर रहा है
देशद्रोही मैं भी हूँ, क्योंकि
मैं ऐसा या वैसा कुछ भी तो नहीं कर रहा हूँ
मैं स्वस्थ हूँ, असहाय हूँ।"[94]

प्रस्तुत पंक्ति देश भक्ति के जज़्बातों से भरी है। मृदुला सिन्हा अपनी कहानियों के माध्यम से समाज की हर छोटी-बड़ी समस्याओं और उसके परिणामों को बताने का प्रयास करती हैं। 'चार पीढ़ियों बाद' कहानी में समधी को भोजन करने के लिए अमंत्रित करना

और भोजन के समय पात्रों द्वारा लोक गीत गवाना कहानीकार की विशेषता है। यह लोक गीत भले ही व्यंग्यात्मक क्यों न हो –

“रूठु न समधी हमार हे, तनि रूठु, रूठु

पैसा रुपैया ला रूठन लागू,

एकन्नी दूअन्नी, दू पैसा देवो दहेज हे

तनि रूठु - रूठु”[95]

मृदुला सिन्हा की कहानियों में काव्यात्मक शैली की बहुलता है। यह शैली कहानी को रोचक एवं सरल बनाती है और पात्रों के माध्यम से पाठक वर्ग को संस्कृति एवं परम्परा से जोड़कर रखना चाहती है। ‘गुमान का दंश’ कहानी में एक गीत के माध्यम से पारिवारिक विघटन एवं आपसी द्वंद को दर्शाया गया है। एक तरह से यह समाज का मुख्य हिस्सा बन गया है। जैसे –

“गे माई भैया अयलन मेहमान

न घर चाउरा, नाहीं दलवा

नहीं पनवसना में पान

कौन विधि राखव माई हे

राघव भैया केरा मान।”[96]

इसी तरह एक अन्य कहानी ‘भैया दूज’ में बहिन द्वारा भाई की लम्बी आयु होने का आशीर्वाद एक लोग गीत के माध्यम से दिखाई पड़ता है –

“कौन भैया चलले अहेरिया

कौन बहिनो देलन आशीष ना।

जीअब रे मेरो भैया

जीअ भैया लाख बरीसे ना।”[97]

1. **संवाद शैली (संवादात्मक शैली)**

कहानी में जो दो पात्रों के बीच वार्तालाप सुनाई पड़ता है यही संवाद शैली है। किसी रचना की रोचकता, स्पष्टता, प्रभावात्मकता, संक्षिप्तता, संजीवता व सोद्देश्य एक हद तक इन संवादों के स्वरूप पर ही निर्भर करता है। प्रेमचंद लिखते हैं - “वार्तालाप केवल रस्मी नहीं होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य को जो किसी चरित्र के मुँह से निकले उसके मनोभावों और चरित्र पर कुछ न कुछ प्रकाश डालना चाहिए। बातचीत का पूर्ण रूप से स्वाभाविक परिस्थितियों के अनुकूल, सरल और सूक्ष्म होना जरूरी है।”[98] संवाद शैली में लेखक स्थान, पात्र, घटना, विषय व वातावरण के अनुकूल शब्दों का प्रयोग करता है। लेखक इसमें अपनी बात को सीधे नहीं कहता है, वह किन्हीं पात्रों के आपसी संवादों से उस बात को कहलाता है। इसका प्रभाव पाठक पर भी एक अलग तरह से पड़ता है। मृदुला सिन्हा ने अपनी कहानियों को वर्णनात्मकता की नीरसता से बचाने के लिए प्रसंगानुरूप संवाद शैली को अपनाया है। उनकी ‘एक दीये की दिवाली’ संग्रह की ‘फासला इतना कि ...’ कहानी में संवादात्मक शैली के दर्शन होते हैं –

“बहुत अच्छी। मुझे यह लड़की बहुत पसंद आई थी। ...

चलिए आप कहती हैं तो इसे ही रख लेती हूँ।

लेकिन हमारी भी कुछ शर्तें हैं।

वह क्या?”[99]

‘ऊपरवार कमाई’ कहानी के संवादों की संक्षिप्तता भी देखने योग्य है –

“शंकर ने पूछा – ‘क्या हुआ माई’?

‘ई तो सूखी कमाई है’। झमाए मन से रिसते शब्द थे।

‘हाँ! यही तो तनख्वाह है’।

‘दूसरी कमाई का क्या हुआ’ ? इमरती ने पूछा।

शंकर चौंका – ‘यह क्या होता है ?’

अब झल्लाने की बारी बलेसर की थी।”[100]

इस संवाद के माध्यम से स्पष्ट होता है कि कहानीकार अपनी कथा के अनुरूप सामूहिक संवाद शैली का प्रयोग किया है। जिससे कहानी के कथानक की गति से भाषा को प्रवाह मिलता है। संवाद साहित्यकार का वह उपकरण है, जिसके द्वारा वह अपनी रचना को उत्कृष्ट बनाता है। संवाद किसी भी नाटक का प्राणतत्व तो होता ही है, वह कथा-साहित्य में भी प्राण फूँकता है। इससे कथ्य की संवेदना और समस्या की सही पहचान होती है। ‘वसीयतनामा’ कहानी में मातुल और हेमा के बीच का संवाद दृष्टव्य है –

“ ‘मम्मी! इस बार आपने अपना भी जन्मदिन मना लिया।’

‘नहीं तो। क्या मैंने केक काटा?’

‘नहीं, मगर बधाइयाँ तो नानाजी को भी मिलीं।’

‘हाँ बेटे! नानाजी की उपस्थिति ने मेरा भी बचपन लौटा दिया था....।’

‘माँ, नानाजी ने आपको क्या गिफ्ट दिया?’

‘कुछ नहीं, बेटा। आशीष भी गिफ्ट ही होता है।’”[101]

मानवीय संबंधों को उद्धाटित करता यह संवाद मातुल और हेमा की संवेदनाओं को अलग-अलग दर्शाता है। इस उदाहरण में एक बच्चा के माध्यम से जो संवाद प्रस्तुत किया गया है, वह उनकी भाषा व लहजे के अनुसार है जो कहानी की भाषा को सशक्त रूप प्रदान करता है। जिसमें रचनाकार तटस्थ होकर विभिन्न पात्रों से आपसी संवाद करवाता है। इस शैली का एक उदाहरण 'खूँटा' कहानी में इस तरह से आया है – " 'क्या हुआ रूपा? तुम लोगों के बीच सब ठीक तो है?'

'माँ! ठीक ही तो है।'

'मेरी आँखों से नहीं छुप सकता। बोलो क्या बात हुई? तुम लोगों ने क्या अलग होने का निश्चय कर लिया?'

'हाँ माँ! हम दोनों ने तलाक लेने का निश्चय किया था। कोर्ट में अर्जी भी दे दी है।' रूपा की जवान पर शब्द घिसट रहे थे।

'किया था का क्या मतलब?'

'मतलब यह कि अब हम दोनों ने अपना इरादा बदल लिया। साथ ही रहेंगे'।"[102]

एक अन्य कहानी 'कटे हाथ में हथियार' में संवाद शैली और मुखर रूप में प्रस्तुत किया गया है। जैसे –

"डॉ साहब को कहने आया था कि हम ब्रश से दाँत माँज लिए। मंगल अपना दाँत दिखाने लगा।

रेखा झल्लाई – 'ठीक है। जा, ऐसे ही माँजते रहना।'

नास्ता की मेज पर बैठते हुए डॉ. आलोक ने अवश्य पूछा था – 'रेखा! किससे बात कर रही थी?'

'आपका मंगल आया था। कह रहा था उसने दाँत माँज लिए।'

'अच्छा'! खिल उठा था डॉ. आलोक का चेहरा – 'और कुछ बोला?'

'नहीं'।

'तुमने पूछा ही नहीं होगा।'

'और क्या पूछती? तुम शौच गए। नहाया? क्या पूछती? बोलो। एक भिखमँगे से क्या बातें करती?'"[103]

लेखिका द्वारा अपनाई गई संवाद शैली उसके कथानक को विशिष्ट बल और प्रभाव प्रदान करती है। अपनी कथा में कौतूहलता, रोचकता व प्रभावात्मकता लाने के लिए इसका अधिकतर प्रयोग किया है।

मृदुला सिन्हा अपनी कहानियों में लगभग सभी शैलियों का प्रयोग करती दिखाई पड़ती हैं। जिससे कहानी के परिवेश निर्माण, कथानक को निरन्तरता देने, पात्रों के चरित्र चित्रण तथा अन्य कार्यों के लिए इसको प्रयुक्त किया गया है। इन शैलियों के द्वारा ही कहानीकार नवीन कथानक, घटनाओं व नवीन कथावस्तु का सफल प्रयोग करते दिखाई पड़ते हैं। कहानीकार ने अपने मन की आंतरिक भावनाओं एवं बदलते जीवन मूल्यों का समावेश कर अपनी रचनाओं में ढाला है। इनकी कहानियों में मुख्य रूप से विश्लेषणात्मक, संवाद, काव्यात्मक, वर्णनात्मक, पूर्वदीप्ति और पत्रात्मक जैसी शैलियों का प्रयोग सहज एवं प्रभावशाली ढंग से किया गया है।

संदर्भ :

1. डॉ. शिवशंकर पाण्डेय, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी : कथ्य और शिल्प, पृ. सं. - 157

2. डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य शास्त्र, पृ. सं. - 116

3. डॉ. स्मिता मिश्र, संवेदना और शिल्प, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1995, पृ. सं. - 60

4. डॉ. विवेक शंकर, आधुनिक भाषा-विज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019, पृ. सं. - 267

5. वही, पृ. सं. - 267

6. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. सं. - 24

7. वही, पृ. सं. - 41

8. वही, पृ. सं. - 53

9. वही, पृ. सं. - 68

10. वही, पृ. सं. - 69

11. वही, पृ. सं. - 69

12. वही, पृ. सं. - 71

13. वही, पृ. सं. - 72

14. वही, पृ. सं. - 77

15. वही, पृ. सं. - 85

16. वही, पृ. सं. - 93

17. वही, पृ. सं. - 95

18. वही, पृ. सं. - 106

19. वही, पृ. सं. - 123

20. वही, पृ. सं. - 124

21. वही, पृ. सं. - 129

22. वही, पृ. सं. - 135

23. वही, पृ. सं. - 142

24. वही, पृ. सं. - 156

25. वही, पृ. सं. - 172

26. वही, पृ. सं. - 174

27. वही, पृ. सं. - 27

28. वही, पृ. सं. - 29

29. वही, पृ. सं. - 50

30. वही, पृ. सं. - 102

31. वही, पृ. सं. - 117

32. वही, पृ. सं. - 162

33. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दिवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ. सं. – 18
34. वही, पृ. सं. - 18
35. वही, पृ. सं. - 19
36. वही, पृ. सं. - 24
37. वही, पृ. सं. - 43
38. वही, पृ. सं. - 74
39. वही, पृ. सं. - 162
40. वही, पृ. सं. - 31
41. वही, पृ. सं. - 78
42. वही, पृ. सं. - 110
43. वही, पृ. सं. - 112
44. वही, पृ. सं. - 115
45. वही, पृ. सं. - 117
46. मृदुला सिन्हा, स्पर्श की तासीर, किताब घर, नई दिल्ली, 1997, पृ. सं. - 27
47. वही, पृ.सं. - 28
48. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं.-13

49. वही, पृ. सं. - 81

50. वही, पृ. सं. - 13

51. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 77

52. वही, पृ. सं. - 90

53. वही, पृ. सं. - 96

54. वही, पृ. सं. - 96

55. वही, पृ. सं. - 106

56. वही, पृ. सं. - 113

57. वही, पृ. सं. - 123

58. वही, पृ. सं. - 106

59. वही, पृ. सं. - 137

60. वही, पृ. सं. - 140

61. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 23

62. वही, पृ. सं. - 25

63. वही, पृ. सं. - 26

64. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 91

65. वही, पृ. सं. - 101

66. वही, पृ. सं. - 14

67. डॉ. ऊषा सक्सेना, हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकाश, शोध साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद, 1972, पृ. सं. - 110

68. बाबू गुलाब राय, सिद्धान्त और अध्ययन, आत्माराम एंड सन्स प्रकाशन, दिल्ली, 2000, पृ. सं. - 223

69. भोलानाथ तिवारी, व्यावहारिक शैलीविज्ञान, किताब घर, नयी दिल्ली, 2018, पृ.सं. - 79

70. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश (दो खण्ड), ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1985, पृ. सं. - 681

71. नामवर सिंह, कहानी: नई कहानी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009, पृ. सं. - 37

72. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 75

73. वही, पृ. सं. - 21

74. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. – 67

75. वही, पृ. सं. - 98-99

76. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 67

77. गोपाल राय, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2006, पृ. सं. - 222
78. मृदुला सिन्हा, जैसी उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 134
79. वही, पृ. सं. - 39
80. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 15
81. वही, पृ. सं. - 20
82. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 69
83. गोपाल राय, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2006, पृ. सं. - 277
84. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 63
85. मृदुला सिन्हा, स्पर्श की तासीर, किताब घर, नई दिल्ली, 1997, पृ. सं. - 67
86. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 103
87. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 17
88. मृदुला सिन्हा, जैसी उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 79
89. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 39

90. वही, पृ. सं. - 97

91. वही, पृ. सं. - 146

92. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013, पृ. सं. - 25

93. मृदुला सिन्हा, जैसी उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. - 16

94. वही, पृ. सं. - 37

95. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 27

96. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 26

97. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ. सं. - 75

98. प्रेमचंद, कुछ विचार, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 2008, पृ.सं. - 67

99. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ. सं. - 106

100. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 99

101. वही, पृ. सं. - 79

102. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. - 66

103. वही, पृ. सं. - 49

पंचम अध्याय

समकालीन हिन्दी कहानीकारों में मृदुला सिन्हा का स्थान

पंचम अध्याय

समकालीन हिन्दी महिला कहानीकारों में मृदुला सिन्हा का स्थान

विषय प्रवेश

हिन्दी कथा-साहित्य में मृदुला सिन्हा का प्रवेश उनकी पहली कहानी 'भ्रम की व्यथा' से माना जा सकता है। इसके बाद से मृदुला सिन्हा निरंतर लिखती गई। इन्होंने अपने पारिवारिक जीवन एवं राजनीतिक जीवन को संभालते हुए अपने लेखन को गति प्रदान करती गई। इनके लेखन का कार्य छात्रावासीय जीवन से शुरू होकर दाम्पत्य जीवन में और प्रफुलित हुआ। उनसे पहले और साथ में अनेक लेखिकाओं ने अपने साहित्य से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया हैं। इन लेखिकाओं ने अपने-अपने भावों एवं विचारों को कथा के माध्यम से उजागर किया है। समकालीन हिन्दी कहानीकारों में मृदुला सिन्हा का स्थान निर्धारित करने से पहले समकालीन के स्वरूप को स्पष्ट करते है।

'समकालीन' शब्द अंग्रेजी के कांटेम्परररी (Contemporary) शब्द का हिन्दी पर्याय रूप है, जो 'कालीन' विशेषण में 'सम' उपसर्ग जोड़ने से बना है। 'कालीन' से तात्पर्य 'काल में' या 'समय में' और 'सम' का प्रयोग 'एक ही' या 'एक साथ' के अर्थ में होता है। अतः 'समकालीन' शब्द समय की धारणा से सम्बद्ध एक विशेषण है, जो एक ही समय में रहने या होने वाले रचनाकारों का बोध कराता है। लेकिन 'समकालीन' का संबंध केवल समय से नहीं है। इस संदर्भ में अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किए हैं। डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित कहते हैं – "समकालीनता मेरे लिए काल बोध के लिए प्रस्तुत की जाने वाली एक भाववाचक संज्ञा नहीं, बल्कि सर्जना के धरातल पर मैं उसे जीवंतता प्रदान करनेवाली एक शक्ति और सर्जक के लिए एक ऐसा उपयोगी तत्त्व मानता हूँ, जो उसकी कृति को नवता

प्रदान करके, ग्रहीता को उस कृति के निकट लाने और उससे आत्मीय भाव से जुड़ जाने का सम्बल प्रदान करता है।"[1] इसी प्रकार डॉ. गोरक्ष थोरात के अनुसार – "समकालीनता केवल एक काल में उत्पन्न होने या क्रियाशील रहने का नाम नहीं है, अपितु उस काल के घात-प्रतिघातों के संदर्भ में अपनी भूमिका निर्धारित करने की प्रक्रिया का नाम है।"[2]

समकालीन महिला कथाकारों का जो रूप हमारे सामने है, इसकी नींव बहुत पुरानी है क्योंकि इनकी वजूद हिन्दी साहित्य में गद्य विधाओं के शुरुआत से ही मिलती हैं। परंतु दुर्भाग्य की बात है कि हमारे इतिहासकारों ने इन महिला कथाकारों को कोई निश्चित स्थान नहीं दिया। फिर भी महिला कथाकारों ने अपनी लेखनी बरकरार रखी और अपनी इतिहास गढ़ती चली गई। हिन्दी कथा साहित्य में महिला कथाकारों का संक्षिप्त इतिहास कुछ इस प्रकार है –

डॉ. गोरक्ष थोरात के शब्दों में, "हिन्दी महिला कथा-लेखन को सूत्रबद्ध रूप से प्रस्तुत करने का श्रेय डॉ. उर्मिला गुप्ता को है। उन्होंने अपने 'हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग' प्रबंधात्मक कृति में हिन्दी महिला कथा-लेखन परम्परा की विस्तार से चर्चा की है।"[3] डॉ. उर्मिला जी ने हिन्दी महिला कथा-लेखन को दो भागों में विभाजित किया है- प्रारम्भकालीन कथा-साहित्य और विकासकालीन कथा-साहित्य।

1. प्रारम्भकालीन कथा-साहित्य

डॉ. उर्मिला गुप्ता ने इस युग को संवत 1925 से 1980 यानी 1868 से 1923 तक मानी है।[4] इस काल में अनेक महिला कथाकारों ने कहानी एवं उपन्यास लिखें। लेकिन हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों को केवल बंग महिला (राजेन्द्र बाला घोष) ही दिखाई दिया। पर असल में उस समय बंग महिला के अलावा भी कई महिलाओं ने कथा साहित्य में अपना

योगदान दिया। हालाँकि महिला कथा साहित्य में कहानी विधा में सर्वप्रथम बंग महिला का नाम लिया जाता है। क्योंकि उनकी कहानी ‘दुलाई वाली’ 1907 में ‘सरस्वती’ में छपी थी। इनकी अन्य मौलिक कहानियाँ ‘भाई-बहन’, ‘हृदय-परीक्षा’ हैं। इन्होंने कुछ कहानियों का अनुवाद भी किया है। इस काल की अन्य महिला कथाकारों में श्रीमती यशोदा देवी, प्रियंवदा देवी, शारदा कुमारी देवी, साध्वी पतिप्राणा अबला, सरस्वती गुप्ता, हेमन्त कुमारी चौधरी, ब्रह्मकुमारी भगवान देवी दुबे, रुक्मिणी देवी, हुक्म देवी गुप्ता, लीलावती देवी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन महिलाओं ने स्त्री की घरेलू जीवन, पतिव्रता, नारी की महानता, बाल विवाह के दुष्परिणाम आदि को अपनी कहानी का विषय बनाया। इस काल की महिलाएँ अधिकतर घरेलू औरतें थीं, जिसके कारण इन्होंने अपनी अस्मिता को स्थापित करने के लिए अपने घरेलू जीवन को आधार बनाया।

इस काल में महिला कथाकारों का दायरा केवल कहानी लेखन तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि इन्होंने उपन्यास लेखन के भी प्रयास किए। हिन्दी की पहली महिला उपन्यासकार के रूप में साध्वी सती पतिप्राणा अबला का नाम लिया जाता है। इन्होंने ‘श्रीमती अबला’ नाम से ‘सुहासिनी’उपन्यास लिखा। यह उपन्यास 1890 में छपा गया था। इस काल के अन्य उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं- सरस्वती गुप्ता, प्रियंवदा देवी, हेमन्त कुमार चौधरी, यशोदा देवी, ब्रह्म कुमारी दुबे, रुक्मिणी देवी, हुक्मा देवी लीलावती देवी आदि। इन सभी महिला उपन्यासकारों के उपन्यास संक्षिप्त होते थे। इस उपन्यासों में मूल रूप में स्त्री की गरिमा, मान-मर्यादा और अस्मिता के प्रश्न छलकते हैं।

डॉ. गोरक्ष थोरात के शब्दों में “प्राचीन मर्यादाओं और रिवाजों को बरकरार रखते हुए स्त्री की अस्मिता को उभाराने का प्रयास इनमें दिखाई देता है।”[5] अतः महिलाओं ने अपने लेखन में भी अपनी मर्यादाओं को पार नहीं किया है, परन्तु अपनी जगह को खोजती, दिखलाती, सवारती प्रश्नों में उलझ जाती है। इन कारणों से महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में कलात्मकता तत्व देखने को नहीं मिलता है। यह काल महिलाओं के लिए हिन्दी कथा साहित्य में प्रवेश करने का समय था।

2. विकासकालीन कथा-साहित्य

महिलाओं के विकासकालीन कथा-साहित्य के इस युग का समय डॉ. उर्मिला गुप्ता ने संवत 1981 से संवत 2004 यानी 1924 से 1947 तक स्वीकारा है।[6] इस युग के कहानीकारों में सुभद्रा कुमारी चौहान, उषादेवी मित्रा, महादेवी वर्मा, कमला चौधरी, शिवरानी देवी, होमवती देवी, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, कमला त्रिवेणी शंकर, तेजरानी पाठक तथा तारा पांडे प्रमुख रही हैं। इन कहानीकारों ने समाज में पनप रहे कुरीतियों का विरोध अपनी कहानियों के माध्यम से किया हैं। सामाजिक स्थिति को कहानी का विषय बनाया है। इनके कुछ प्रमुख विषय हैं - समाज में स्त्री की दशा, पुरुष वर्ग की दुराचारी सत्ता, पतियों की अवहेलना एवं विश्वासघात के कारण स्त्रियों की उत्पीड़न, जाति वर्ग में भेद-भाव, पूँजीवादी शोषण का प्रचलन, गरीबों पर अत्याचार, जमींदारों द्वारा किसानों का शोषण और देश में चल रहे राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन आदि। अतः इस युग की कहानियों में यथार्थ चित्रण का समावेश दृष्टिगोचर होता है।

इस युग में महिलाओं ने उपन्यास भी लिखे हैं। कहानियों के विषय की तरह उपन्यासों में भी तत्कालीन सामाजिक कुरीतियों यथा – दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, कन्या-विक्रय, पुरुषों के

दुराचार, वृद्ध-विवाह आदि को विषय बनाया हैं। इस युग के महिला उपन्यासकारों में उषादेवी मित्रा, कंचनलता सब्बरवाल, दिनेश नंदिनी प्रमुख हैं। इस युग में हिन्दी साहित्य जगत में काव्य रचना का प्रचलन था। इस कारणवश शायद साहित्य के इतिहासकारों की दृष्टि महिला कथाकारों की ओर नहीं पड़ी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही हिन्दी साहित्य में कथा एवं अनेक गद्य विधाओं में लेखन मुख्य बन गया।

3. समकालीन महिला कथा-साहित्य

महिला कथाकारों का एक सशक्त प्रवाह बीसवीं शती के छठे दशक में हिन्दी साहित्य में प्रवाहित हुआ। इस प्रवाह में शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मेहरुन्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, मंजुल भगत, मालती जोशी, कृष्णा अग्निहोत्री, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, सूर्यबाला, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुदगल और मृदुला सिन्हा आदि मुख्य रूप से सामने आई। इन महिलाओं ने पुरुष प्रधान समाज में साहित्य के क्षेत्र में अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर साहित्य रचना की हैं। अपने रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध एवं मज़बूत बनाया है।

महिला कथाकारों ने अपनी प्रारम्भिक लेखन अवस्था में अपने कथा में घरेलू स्त्री के जीवन की व्यथा एवं सच्चाईयों और उनके स्थिति में सुधार लाने के विषयों पर कहानी एवं उपन्यास लिखे हैं। फिर स्त्री से संबंधित विभिन्न कुरीतियों पर लिखा गया। पर समकालीन महिला कथाकारों ने अपने अनुभव क्षेत्र का विस्तृत रूप लिखा, जिसमें कामकाजी स्त्रियों की दोहरी भूमिका का यथार्थ चित्रण, स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को नए रूप में प्रस्तुति, पारिवारिक सम्बन्धों का टूटना, सामाजिक स्थितियाँ आदि। इस युग की कथाकारों ने केवल स्त्री जीवन से संबन्धित विषयों पर ही नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त विविध समस्याओं पर कहानियाँ

और उपन्यास लिखे हैं। इस युग की महिला कथाकारों ने समाज में व्याप्त लिंगभेदी मानसिकता और व्यवहार में दोहरेपन के प्रति तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है।

पुरुष प्रधान समाज में स्त्री सदियों से दोयम दर्जे पर ही रही है। उसके हिस्से पर ही सब कुछ चुपचाप सहना और हालत के आगे समझौता करना रखा गया हो। पर समकालीन महिला कथाकारों ने पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था में पनपी सभी विसंगतियों एवं विडम्बनाओं को `गहराई से उभरा है। डॉ. गोरक्ष थोरात के शब्दों में,"स्त्री-पक्ष को प्रबलता से प्रस्तुत करना, नारी में व्यक्तित्व की पहचान की भूख जगाना समकालीन महिला कथाकारों की एक उपलब्धि है।"[7] लेखन के माध्यम से महिलाओं ने अपने स्थिति को दृष्टि प्रदान की जिसने अपने बारे में तथा अपने अस्तित्व की पहचान की ओर उन्मुख किया। डॉ. कल्पना पाटील के अनुसार, "समकालीन महिला लेखन स्त्री के आत्मविकास और आत्मविश्वास को जगाकर व्यक्तित्व निर्माण का लक्ष्य लेकर सामने आता है।"[8] दूसरे शब्दों में महिला को मजबूत बनाने का कार्य किया है।

महिलाओं के स्थिति में बदलाव का एक मुख्य कारण है उनका कामकाजी होना, पर इसमें भी इन्हें भावनात्मक संघर्ष का सामना करना पड़ा क्योंकि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के लिए जब स्त्री घर से बाहर निकली तब उसके दांपत्य और मातृत्व पर प्रश्न उठ जाता है। फिर भी इन संघर्षों के साथ जूजते हुए स्त्री अपने अस्तित्व की पहचान बनाती चली गई। कथाकारों ने सदियों से दबी-कुचली स्त्री की पीड़ा को आवाज दिया। साथ ही कई जगह क्रोध को भी दर्शाया गया है, जिसके कारण पारिवारिक सम्बन्धों में टकराव तथा टूटना भी स्वीकार किया गया। इस समय की कथाकारों में मन्नू भंडारी, नासिरा शर्मा, ममता कालिया, मेहरुन्निसा परवेज, मंजुल भगत, अलका सरावगी, राजी सेठ, सूर्यबाला, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग आदि प्रमुख हैं।

मृदुला सिन्हा की समकालीन प्रमुख महिला हिन्दी कहानीकार

समकालीन हिन्दी कहानीकारों में मृदुला सिन्हा का स्थान निर्धारित करने के लिए उनकी समकालीन कुछ प्रमुख महिला कहानीकारों का विवरण इस प्रकार है-

1. मृदुला गर्ग

25 अक्तूबर 1938 ई. को उत्तर प्रदेश के मेरठ में इनका जन्म हुआ। इन्होंने स्त्री की काममूलक अनुभवों, काम और प्रेम विषयक आधुनिक जीवन दृष्टि को अपनी कहानियों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित किया है। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ – उपन्यासों में 'चितकोबरा', 'उसके हिस्से की धूप', 'वंशज', 'अनित्य', 'मैं और मैं', 'कतार से बाहर', 'कठगुलाब' और कहानी संग्रहों में 'कितनी कैदें', 'टुकड़ा-टुकड़ा आदमी', 'डैफोडिल जल रहे हैं', 'उर्फ सैम', 'ग्लेशियर से', 'दुनिया का कायदा' आदि।

इनकी कहानी 'कितनी कैदें' में पति-पत्नी के काम जीवन का अंकन है। साथ ही इस कहानी में आधुनिक जीवन की यांत्रिकता को काम भावना के जरिए से दर्शाया गया है। इनकी कहानी में नारी की अपनी स्वतंत्र रूप चाहने वाली का वर्णन भी मिलता है। ऐसी कहानी 'एक और विवाह', 'दुनिया का कायदा', 'हरी बिंदी' आदि। 'हरी बिंदी' कहानी में दाम्पत्य जीवन में पति के अनुशासन से तंग होने वाली स्त्री का अंकन है तथा अन्य पुरुषों से संबंध भी रखती है। यह स्थितियाँ आधुनिक स्त्री की स्वतंत्र रहने की इच्छुकता का बोध कराती है। इनकी कहानी की स्त्री का रूप (पत्नी और माँ का) बदलता रहता है। 'अवकाश' कहानी में व्यक्ति की इच्छा को सबसे महत्त्वपूर्ण बताया गया है।

डॉ. कल्पना पाटील के शब्दों में "मृदुला गर्ग भाव को जादा महत्त्व देती हैं स्त्री-पुरुष इन डॉ लिंगो को नहीं।"[9] भावों से ही मनुष्य का स्वभाव जाना जा सकता है। 'उर्फ सैम' की

कुछ कहानियाँ पुरुष द्वारा स्त्री पर शोषण को दिखाया है। सांप्रदायिक दंगों पर भी इन्होंने लिखा है। इनकी 'अमली सुबह' दिल्ली की सांप्रदायिक दंगों में से एक है। 'तीन किलो की छोरी' कहानी एक गर्भवती स्त्री की कहानी है, जिसमें जचकी के दौरान उसके स्वास्थ के प्रति होनेवाली लापरवाही को प्रस्तुत किया गया है और बच्ची जन्म देने के कारण उसे तुरंत काम पर लगाया जाता है। भारत की अनेक स्त्रियों की दास्तान हैं।

2. कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती का जन्म 18 फरवरी 1925 ई. को गुजरात में हुआ था। इन्होंने भारत विभाजन का दर्दनाक हादसा को स्वयं महसूस किया है। इसलिए इनके साहित्य में विभाजन का रूप परिलक्षित होता है। इनके प्रमुख उपन्यास है- 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी', 'यारों को मार', 'सूरजमुखी अंधेरे के', , 'जिंदगीनामा', 'दिलोदानिश', 'समय सरगम' आदि। इनके कहानी संग्रह है- 'यारों के यार', 'तिनका पहाड़', 'बादलों के घेरे' आदि।

इनकी कहानी 'बादलों के घेरे' और 'कुछ नहीं कोई नहीं' कहानियों में मोहभंग की स्थिति का चित्रण किया गया है। 'तीन पहाड़' कहानी में असफल प्रेम के परिणाम को दर्शाया गया है। 'एक दिन' कहानी में पति द्वारा दूसरी शादी करने पर भी पहली पत्नी शीला द्वारा चुपचाप गम सहना और आखिर में पति का पहली पत्नी के पास वापस लौटना।

इन्होंने लम्बी कहानी एवं उपन्यास अधिक लिखें हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों में नारी जीवन, स्त्री पुरुष के यौन संबंध तथा विभाजन की त्रासदी का खुला रूप प्रस्तुत किया हैं। यौन सम्बन्धों के विषय में लेखन के कारण इनकी विशेष पहचान एक बोल्ड लेखिका के रूप में है।

3. सूर्यबाला

सूर्यबाला का जन्म 22 अक्टूबर 1944 ई. को उत्तर प्रदेश में हुआ। इनके उपन्यास 'मेरे संधिपत्र', 'सुबह के इंतजार तक', 'अग्निपंखी', 'दीक्षांत', 'यामिनी कथा' आदि हैं। इनकी कहानी संग्रह 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम', 'दिशाहीन मैं', 'मुंडेरपर', 'मरियल तीतर' आदि हैं। इनकी कृतियों में ज़्यादातर नारी की स्थिति की सच्चाई अर्थात नारी की समझौता युक्त जीवन का अंकन मिलता है। घर परिवार तथा जीवन की बेबसी का चित्रण है। इनकी कहानी 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम' में एक माहोल जिसमें पिता का दुख एवं विवशता को संवेदनशील रूप में दर्शाया गया है।

इनकी कहानी 'आदमकद' एक बदसूरत एवं चुप रहने वाली स्त्री की कहानी है। इस कहानी में स्त्री की कार्य के प्रति समर्पण, निष्ठा एवं स्वाभिमान रूप दिखाई देता है। 'दरारे' कहानी में वर्ग संघर्ष को उकेरा गया है। इनकी कहानी 'रेस' में नायक सुधीर दूसरों को पीछे रखने की होड़ में स्वयं के स्वास्ठ की लपरवाही के कारण जान से हाथ धो बैठता है। इनकी कहानी का प्रसंग आज के युग की अनेक नौजवानों की दास्तान है। व्यंग्य रूप में अपनी बात को कहने में इनकी विशेषता है। डॉ. कल्पना पाटील के शब्दों में, "सूर्यबाला अपनी व्यंग्यात्मक प्रहारात्मक क्षमता के कारण प्रसिद्ध रही है।"[10] यह क्षमता सभी के बस की बात नहीं है।

4. मंजुल भगत

इनका जन्म 22 जून 1936 ई. को मेरठ, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनकी उपन्यास इस प्रकार है- 'अनारो', 'टूटा हुआ इंद्रधनुष', 'बेगाने के घर में', 'लेडीज क्लब', 'तिरछी बौछार',

'खातुल', 'गंजी' आदि। कहानी संग्रहों के नाम है- 'क्या टूट गया', 'गुलमोहर के गुच्छे', 'सफेद कौव्वा', 'अत्महत्या के पहले बूंद', 'कितना छोटा सफर', 'बावन पत्ते और एक जोकर', 'चर्चित कहानियाँ' आदि।

इनकी कहानी 'क्या छूट गया' में नारी की मनोभावनाओं का चित्रण किया गया है। 'बावनपत्ते और एक जोकर' कहानी में ऐसी नारी का चित्रण किया गया है,जो शहरों के जीवन शैली से प्रभावित है और उनको ही मान देती है। 'नालायक बहू' की नारी असल में एक लायक बहू है, जो पति के बेकार होने पर खुद काम करती है और निसंतान होने के कारण बच्चा गोद लेती है, पर उसकी सास की नजर में पराया बच्चा गोद लेने पर नालायक बहू बन जाती है। 'त्यागमयी' कहानी में स्त्री एक माँ की त्याग की कथा है। 'सादगी' कहानी में एक वेश्या का चित्रण है, जो वेशभूषा से तो एकदम सामान्य नारी लगती है। जबकि 'पायदान' कहानी में नारी की साहस और आत्मशक्ति को उकेरा है।

इन्होंने 'चिथड़ा गुड़िया' कहानी में समाज में अपनी इज्जत बनाए रखने की चाहने वाली नारी का भी चित्रण किया है, भले ही वह एक नपुंसक पुरुष की पत्नी ही क्यों न हो। एक ओर 'शुभ-अशुभ' और 'अपना अपना नशा' कहानियों में पतिवत्र पत्नी का चित्रण है, जो पति के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। एक पति के लिए स्वस्थ बच्चा पैदा करना चाहती है, भले ही उसकी जान को खतरा क्यों न हो। दूसरी का पति पत्नी की दिनभर की कमाई को अफिम में खर्च कर देता है। यह मृदुला गर्ग की बड़ी बहन है। इनकी कहानियों में नारी के विविध रूपों का चित्रण मिलता है।

5. निरूपमा सेवती

निरूपमा का जन्म 30 अक्टूबर 1946 ई. को दिल्ली में हुआ। इनके उपन्यास 'पतझड़ की आवाजे',बँटता हुआ आदमी', 'मेरा नरक अपना हैं', 'दहकने पार' आदि है। इनके कहानी संग्रह है- 'खामोशी को पीते हुए', 'आतंक बीज काले खरगोश', 'कच्चा मकान' तथा 'भीड़ में गुम'।

निरूपमा सेवती ने अपनी कहानी 'टुच्चा' में बहन की भूमिका में नारी को प्रस्तुत किया है, जो पिता की मृत्यु के बाद अपने भाई बहनों का पालन पोषण करती है। 'फिर कभी' कहानी में ऐसी नारी का चित्रण है जो तलाक के बाद अन्य पुरुषों से संबंध रखती है और उसे अपनी बेटी की कोई चिंता भी नहीं है, चाहे वह किसी के साथ रातभर भी क्यों न रहे। इनकी कहानी 'शायद हाँ शायद नहीं' में पुंजीवादी समाज का चित्रण है। इसमें नायिका स्वरूप से बड़ी नौकरी लेती है, फिर उसे छोड़कर निखिल का साथ देती है। अंत में उसे केवल उदासी और अकेलेपन का साथ मिलता है।

इनकी 'तलफलाहट' कहानी में दाम्पत्य जीवन का चित्रण है, जिसमें पति पत्नी अलग हो जाते है लेकिन पत्नी अपने पति के पास वापस आ जाती है। 'झूठ का सच' कहानी में ऐसी माँ का चित्रण है, जो यह मानती है कि बच्चे के लिए पिता का प्यार भी महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए पति का दुर्व्यवहार भी चुपचाप सह लेती है। इस कहानी के विपरीत में 'सूरपंचशती' में ऐसी नारी का चित्रण है, जो पति की हर बात को मानने से इन्कार करती है। गलत बातों को मानने के बजाय तलाक ले लेती है। इनकी कहानी 'गुबार' में आधुनिक

नारी का चित्रण है। इस कहानी की नारी प्रेम में है पर प्रेमी से ही शादी करने की जिद में नहीं है।

6. मन्नू भंडारी

मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 ई. को भानपुरा, मध्य प्रदेश में हुआ। इनका असली नाम महेन्द्र कुमारी है। इनकी कहानी संग्रह है - 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों' की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लैट सैलाब', 'त्रिशंकु', 'मेरी प्रिय श्रेष्ठ कहानियाँ' आदि। इनके उपन्यास है – 'एक इंच मुस्कान', 'आपका बंटी', 'स्वामी', 'महाभोज', 'सप्तपर्णा', 'कल्वा' आदि। इनकी कहानी 'त्रिशंकु' में आधुनिक नारी का चित्रण हुआ है, जो शारीरिक संबंधों में स्वतंत्र विचार रखती है, विवाह के बंधन उसे नहीं बाँधती है। स्त्री पुरुष संबंध को एक अलग नजरिए मित्रता से देखती है। इसी क्रम में 'ऊँचाई' कहानी को भी रखा जा सकता है क्योंकि इसमें नायिका पति और पूर्व प्रेमी के साथ संबंध बनाए रखती है। एक ओर 'यही सच है' कहानी में मानवीय प्रेम को दर्शाया गया है। 'क्षय' कहानी में पिता के बीमारी के कारण बेटी नौकरी करके परिवार का पालन पोषण करती है।

मन्नू भंडारी ने 'बंद दराजों का साथ' कहानी में एक आदर्श नारी का चित्रण किया है। इस कहानी में पति का किसी और के साथ संबंध जानने के बाद मंजरी पति को छोड़ देती है। भारतीय परंपरागत नारी की तरह चुपचाप दर्द नहीं सहती है और दूसरी शादी भी कर लेती है। 'तीसरा आदमी' कहानी में पति-पत्नी के बीच तनाव को विवाह में दर्शाया गया है। 'चश्मे' तथा 'नकली हीरे' कहानियों में पति-पत्नी के सम्बन्धों का अंकन किया गया है।

इनकी 'सजा' कहानी में आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की स्थिति का वर्णन है तो 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' में रोगग्रस्त पति पाने के कारण दर्शना पति का प्यार नहीं पाती है। पति की सेवा करती है साथ में प्यार पाने की कोशिश भी करती है। 'घुटन' कहानी में भी दाम्पत्य जीवन में नारी के हिस्से में आए सूनेपन का अंकन है।

7. शिवानी

शिवानी का जन्म 17 अक्टूबर 1923 ई. में राजकोट, गुजरात में हुआ। इनका वास्तविक नाम गौरा पंत है। इन्होंने उपन्यास ज्यादा लिखें हैं। इनके उपन्यास – कृष्णकली, कालिंदी, अतिथि, पूतों वाली, चल खुसरों घर अपने, श्मशान चंपा, मायापुरी, कैंजा, गेंदा, भैरवी, स्वयंसिद्धा, विषकन्या, रति विलाप, आकाश। इनकी कहानी संग्रह इनके नाम पर ही है यथा – शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ, शिवानी की मशहूर कहानियाँ, झरोखा, मृण्माला की हँसी।

इनकी कहानी 'जेष्ठा' कहानी में इनके निवास स्थान कुमाऊँ की संस्कृति और अंधविश्वास का समावेश है। 'रति विलाप' कहानी में मामा का भाँजी के अनाथ हो जाने से उसके बदलते रूप का चित्रण। पिता के समान प्यार करने वाला मामा भाँजी के अनाथ हो जाने पर उसकी संपत्ति में अपना हिस्सा छाट लेता है। 'चन्नी' कहानी एक अनाथ लड़की की कहानी है, जिसे उसकी बड़ी भाभी पालती है। 'अपराधी कौन' कहानी दो सहेलियों की कहानी है जो ननद भाभी के रिश्ते में बंध जाते हैं, लेकिन कमर की करधनी के वजे से दोनों एक दूसरे के दुश्मन बन जाते है।

यह कहानी औरतों के आभूषणों के प्रति लगाव को दर्शाता है। 'दादी' कहानी में आधुनिक नारी का चित्रण किया गया है, जो सास के आगमन से खुश नहीं होती है क्योंकि सास के मनाहों से बहू को चिढ़ है और वह अपने इच्छानुसार स्वतंत्र रूप में जीना चाहती है।

8. दीप्ति खंडेलवाल

दीप्ति खंडेलवाल का जन्म 21 अक्टूबर 1930 में हुआ। इनकी कहानी संग्रहों के नाम है – कड़वे सच, धूप के अहसास, वह तीसरा, दो पल की छांह, नारी मन और औरत और नाते। इनके उपन्यास प्रिया, कोहरे, प्रतिध्वनियाँ आदि हैं।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानी का मुख्य विषय दाम्पत्य जीवन रहा है। पर इनके दाम्पत्य अधिकतर असंतुष्ठ, उदास, बनते-बिगड़ते हुए होते है। डॉ. कल्पना पाटील के अनुसार, "दीप्ति खंडेलवाल की कहानियाँ असंतुष्ठ दाम्पत्य की कहानियाँ मानी जा सकती है।"[11] इनकी कहानी 'क्षितिज' पति-पत्नी के बीच अहंम के कारण आए टकराव और तलाक केआर परिणाम की कहानी है। 'शेष-अवशेष' कहानी में दोनों स्त्री-पुरुष को बराबर का दर्जा लेखिका ने दिया है। दोनों जाति एक दूसरे के महत्त्व को निर्धारित करते है। अतः दोनों एक दूसरे पर निर्भर है।

'जमीन' कहानी में दो दाम्पत्यों का चित्रण किया गया है। निम्न वर्ग और उच्च वर्ग की दम्पतियों का वर्णन है। निम्न वर्ग की दंपति का घर खर्च केवल माधो के वेतन से नहीं चल पाता है, फिर भी पत्नी के चाहने पर भी वह पत्नी को नौकरी करने नहीं देता है। एक तरफ उच्च वर्ग का पति अपना काम निकलवाने के लिए अपनी पत्नी का इस्तेमाल करना चाहता है। आधुनिक काल में दाम्पत्य जीवन में आए परिवर्तन को लेखिका ने मार्मिक ढंग से इस

कहानी में प्रस्तुत किया है। इनके 'संधि -पत्र' कहानी में वर्तमान दाम्पत्य जीवन को दर्शाया गया है, जिसमें दोनों पति-पत्नी आर्थिक रूप से स्वत्रंत है और अपने आप को सही साबित करने की होड़ में लगे रहते है। इस कहानी के अंत में दोनों पति-पत्नी को अपनी गलती समझ में आ जाती है। लेखिका ने कहानी 'मोह' में एक सफल दाम्पत्य जीवन का चित्रण किया है। इस कहानी में पति-पत्नी को अपने प्यार करने के ढंग को पहचान ने की सलाह दिया है। 'प्रेत' कहानी में लेखिका ने समाज की झूठी रूढ़ियों एवं परंपराओं पर व्यंग्य प्रहार किया है क्योंकि इन रूढ़ियों और परंपराओं से किसी नारी का पूरा जीवन खराब हो सकता है।

9. नासिरा शर्मा

नासिरा शर्मा का जन्म 22 अगस्त 1948 ई. को प्रयागराज (अभी इलाहाबाद के नाम से जाना जाता है), उत्तर प्रदेश में हुआ। इनके कहानी संग्रहों इस प्रकार है – पत्थरगली, शामी कागज, संगसार, इब्ने मरियम, सबीना के चालीस चोर, खुदा की वापसी, इनसानी नस्ल, दूसरा ताजमहल, बुतखाना आदि। इनके उपन्यास हैं – सात नदियाँ : एक समन्दर, शाल्मली, ठीकरे की मंगनी, जिन्दा मुहावरे, अक्षयवट आदि।

इनकी कहानी 'आइने की वापसी' में दाम्पत्य जीवन को सफल बनाने के उपाय बताने की कोशिश की गयी है। 'बावली' में नारी के उपेक्षित एवं शोषित रूप को दर्शाया गया है। 'वही पुराना झूठ' कहानी में पुरुषसत्ता की प्रधानता जिसमें नारी का पिसता रूप चित्रित है। 'सबीना के चालीस चोर' कहानी में देश विभाजन के कारण उत्पन्न कई समस्याओं का उल्लेख किया गया है। 'विरासत' कहानी में शहर में बसी बेटी की चिंता में व्याकुल माँ-बाप

की कहानी है। 'चाँद तारों की शतरंज' कहानी में जमींदारी प्रथा का अंकन है, जिसमें शोषित वर्ग गरीबों का चित्रण है।

10. मालती जोशी

मालती जोशी का जन्म 4 जून 1934 ई. में औरंगाबाद, महाराष्ट्र में हुआ। इनका मन कहानी रचने में ज्यादा रमा है। इनकी कहानी संग्रहों के नाम हैं – पाषाण युग, मध्यांतर, पराजय, मन ना भये दस बीस, मालती जोशी की कहानियाँ, एक घर सपनों का, विश्वास गाथा, शापित शैशव, पिया पीर न जानी आदि। इनके कुछ उपन्यास है पटाक्षेप, समर्पण का सुख, सहचारिणी, राग-विराग तथा शोभायात्रा।

इनकी कहानी 'अस्ताचल' में बच्चों को सब कुछ मानने वाली और बच्चों के लिए सब कुछ सहने वाली माँ का चित्रण है। भले ही बच्चे माँ की अवहेलना करे पर माँ की ममता में खोट नहीं होता है। इसी श्रेणी में 'टूटने से जुड़ने तक' कहानी में माँ का ममतामयी स्वरूप दर्शनीय है। 'वही घर में' कहानी में भी बच्चों को प्रधान बनाया गया। माँ बच्चों के लिए अपनी पसंद न पसंद को भी एक कोने में रख देती है। बच्चों के पसंद में रम जाती है, भले ही उसकी नापसंद की चीज क्यों न हो। दूसरी तरफ 'मैं शकुन हूँ' कहानी में आधुनिक माँ का चित्रण है, जो बच्चों को डाँटती रहती हैं तथा बच्चों को भी बिगार देती है। 'बकुल फिर आना' कहानी में नारी के रूप में एक आदर्श बेटी का चित्रण है, पिता द्वारा दहेज न दे पाने पर भी पिता के आज्ञा के अनुसार व्यक्ति से शादी कर लेती है।

11. शशिप्रभा शास्त्री

शशिप्रभा शास्त्री का जन्म सन 1923 ई. में मेरठ में हुआ। इनके कहानी संग्रह है – धुली हुई शाम, अनुत्तरित, जोड बाकी, पतझड़, दो कहानियों के बीच, एक टुकड़ा शंतिरथ आदि। इनके उपन्यास है- वीरान रास्ते और झरना, नावें, सीढ़ियाँ, परछाइयों के पीछे, परसों के बाद, क्योंकि, उग्र एक गलियारे की, कर्करेखा, खामोश होते सवाल, ये छोटे महायुद्ध, हर दिन इतिहास, अमलतास आदि।

इनकी कहानी 'तट के बंधन' में पति एवं पुराने प्रेमी के कारण नारी की दुविधा स्थिति को उकेरा गया है। 'अगरबत्ती' कहानी में एक परिश्रमी नारी का चित्रण किया गया है, जो दूसरों के घर में काम करती है और अपना घर चलाती है और अपने बच्चों को पढ़ाती भी है। 'प्यार की दीवार' कहानी में पीड़ित नारी का चित्रण है, जो प्यार पाने के लिए तरसी हुई है। इस कहानी में प्रेम के अभाव में अकेलापन एवं कष्टदायी जीवन का चित्रण किया गया है। 'अनुत्तरित' कहानी में बेटी यानि एक लड़की की पाबंदियों पर आधारित कहानी है। यह पाबंदी या रोक-टोक लड़की को अपनी लड़की होने के कारण जताई जाती है।

'ग्रोथ' कहानी एक कामकाजी विवाहित स्त्री की कहानी है, जिसे नौकरी के कारण अपने दांपत्य जीवन में कठिनायों का सामना करना पड़ा। 'गुब्बारे की लाश' कहानी में एक सख्त माँ का रूप चित्रित है, जो बेटी से पहले बेटी के लिए आए खतों को पढ़ना चाहती है।

12. प्रभा खेतान

प्रभा खेतान का जन्म 1 नवम्बर 1942 ई. को कोलकाता में हुआ। इनकी रुचि उपन्यास लेखन में ज्यादा रही है। इनके आठ उपन्यास हैं- आओ पेपे घर चले, तालाबंदी, अग्निसंभवा, एडस, छिन्नमस्ता, अपने अपने चेहरे, पीली आंधी और स्त्री पक्ष।

इन्होंने अपने उपन्यासों में लगभग सभी स्त्री चरित्रों का चित्रण किया है। इन्होंने कभी नारी को कसूरवार के रूप में दर्शाया तो कभी प्रमुख नायिका के रूप में। लेखिका ने अपनी रचनाओं में परम्पराओं में बंधी, पुरुष वर्ग द्वारा उपेक्षित, शोषित, पीड़ित नारी का रूप चित्रित किया है।

13. राजी सेठ

राजी सेठ का जन्म 4 अक्टूबर 1935 को नौशेहरा छावनी, पाकिस्तान में हुआ। इन्होंने उपन्यास की तुलना में कहानी अधिक लिखे हैं। इनके कहानी संग्रहों की सूची इस प्रकार है- अंधे मोड़ से आगे, तीसरी हथेली, यात्रा-मुक्त, दूसरे देश काल में, यह कहानी नहीं, सदियों से, किसका इतिहास, गमें-हयात ने मारा, खाली लिफाफा, मार्था का देश, यहीं तक। इनके दो उपन्यास तत्सम और निष्कवच हैं।

इनकी पहली कहानी संग्रह 'अंधे मोड़ से आगे' कहानियों में विवाह संस्था का चित्रण अधिक है। इनकी कहानी 'उसका आकाश' में वृद्ध जीवन का अंकन है, जिसमें वृद्धों के जीवन की दयनीय स्थिति यथा बेबसी, अकेलापन,लाचारी आदि को दर्शाया गया है।

'तीसरी हथेली' में अधिकांश कहानियाँ घर परिवार पर आधारित हैं। इन्होंने पिता के रूप को भी उकेरा है 'कायाप्रवेश' और 'किसका इतिहास' कहानियों में। 'गलियारे' कहानी में

अपंग गृह में रहने वाला किशोर की पीड़ा को दर्शाया है। जबकि मिन्नी के जरिए 'सदियों से' कहानी में तनाव को अंकित किया गया। 'यह कहानी नहीं' में जवान बहू-बेटे के मर जाने से माँ-पाप की त्रासदी का अंकन है। इनकी कहानी 'पासा' में सरकारी नौकरी पर व्यंग्य किया गया है।

14. मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म 30 नवम्बर 1944 ई. को सिकरी, अलिगढ़ में हुआ। इन्होंने कॉलेज के दिनों से लिखना शुरू किया। इनके प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम हैं- इदन्नमम, स्मृतिदंश, बेतवा बहती रही, चाक, झूला नट, अल्मा कबुतरी आदि। इनकी कहानियाँ 'चिन्हार' नाम से प्रकाशित है।

इनकी कहानी 'अब फूल नहीं खिलते' में एक साहसी लड़की झरना का चित्रण है, जो अपने ऊपर हुए अन्याय के विरोध आवाज उठाती है। इस कहानी में शिक्षा के क्षेत्र में हुए अन्याय को दर्शाया गया है। दूसरी ओर 'ललमनियाँ' कहानी में असहाय नारी का चित्र खीचा गया है, जो पुरुष प्रधान व्यवस्था में छली जाती है। इस कहानी में नारी को केवल भोग की वस्तु के नजर से देखा गया है। 'रिजक' कहानी में दाई लल्लन की कहानी है।

15. नमिता सिंह

नमिता सिंह का जन्म 4 अक्तूबर 1944 ई. को लखनऊ में हुआ। इन्होंने कहानियों की रचना अधिक की है। इनकी कहानी संग्रहों के नाम हैं – खुले आकाश के नीचे, राजा का चौक, नीलगाय की आँखे, जंगलगाथा, नाले पार का आदमी आदि।

इनकी कहानी 'नाले पार का आदमी' में बुद्धिजीवी एवं उद्योगपतियों का चित्रण है, जो भष्ट्राचार के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। इनकी 'दर्द' कहानी दलित जीवन पर आधारित है। इस कहानी में दलित नारी रमिया के दर्द और दशा को दर्शाया गया है। मैके में वापस आई बेटी एक रिक्शा चलाने वाले के साथ भाग जाती हैं, जिसके कारण माँ रमिया को दोषी मानकर बिरादरी वाले और उसके स्वयं के बेटे मारते है। 'अपनी सलीबे' कहानी भी दलित नारी नथिया और मीना के साथ हुए यौन अत्याचार की कहानी है। 'उबारने वाले हाथ' कहानी में गरीब घर की शिक्षित बेटी चंदा का चित्रण है, जो अपने तथा अपने परिवार वालों की देख भाल करती है। दूसरी ओर 'एक बेताल कथा और' कहानी दहेज पर आधारित कहानी है, जिसमें शादी के लिए लड़का न मिलने केआर डर से कल्पना के माँ-बाप उसे एम. ए. नहीं करने देते है। उसकी शादी करवा देते है पर ससुराल वालोन की पैसे की माँग पूरी न होने पर उसे जला देते है।

16. चित्रा मुदगल

चित्रा मुदगल का जन्म 10 दिसम्बर 1944 को उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनहोंने कहानियों की रचना अधिक की है। साथ ही उपन्यास लेखन में भी पीछे नहीं है। इनकी कहानी संग्रहों के नाम है – अपनी वापसी, इस हमाम में, जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं, मामला आगे बढ़ेगा अभी, जिनावर, ग्यारह लंबी कहानियाँ, लपटे, बयान आदि। इनके उपन्यास के अंतर्गत एक जमीन अपनी, आँवा, गिलिगडु आदि।

इनकी कहानी 'अपनी वापसी' में प्रौढ़ावस्था की विशिष्ट समस्या से पीड़ित शकुन की कहानी है। 'दरमियान' कहानी में कामकाजी मध्यवर्गीय नारियों की पीड़ा को प्रस्तुत किया

गया है। 'जिनावर' कहानी में एक बेबस तांगेवाला असलम और उसकी घोड़ी की कहानी है। असलम न चाहते हुए भी हालत से मजबूर होकर अपनी वृद्ध घोड़ी को मौत के मुँह में ढकेल देते है और घोड़ी जाते-जाते अपने मालिक को आखिरी बार दो हजार रुपये दिलवाती है। 'इस हमाम में' मध्यवर्गीय परिवार की नारी की कहानी है, जो घुटन के साथ जी रही है। इस कहानी में नारी पर अत्याचार को चित्रित किया है।

इनकी कहानियों का मुख्य स्वर नारी चेतना है। साथ ही इन्होंने कामकाजी नारियों के प्रति होनेवाले अन्याय को दर्शाया है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारियों का भी चित्रण किया है। वृद्धों का दर्द भरा जीवन, समाज के विविध स्तरों की समस्याएँ, साम्प्रदायिकता, राजनीतिक भष्ट्राचार आदि अनेक विषयों पर भी रचना की है।

17. उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा का जन्म 24 दिसम्बर 1930 को कानपुर में हुआ। इनके उपन्यास – पचपन खंभे लाल दीवारे, रुकोगी नहीं राधिका, शेषयात्रा, अंतर्वंशी, भया कबीर उदास तथा नदी हैं। इनके उपन्यास काफी प्रसिद्ध है। इनके कहानी संग्रह – वनवास, शून्य, जिन्दगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा, फिर वसंत आया, कितना बड़ा झूठ।

इनकी कहानियों में नारी की यथार्थ स्थितियों का अंकन मिलता है। इनकी 'छुट्टी का दिन' कहानी उन सभी औरतों की कहानी है, जो किसी कारणवश घर से दूर नौकरी करते हैं। इस कहानी की नायिका माया है, जिसे छुट्टी का दिन पहाड़ जैसा प्रतीत होता है क्योंकि घर से दूर होने के कारण इस दिन वह अकेली पड़ जाती है। 'मोहबन्ध' कहानी में प्रेम में तिरस्कार खाई हुई अचला के अकेलेपन की कहानी है। पहले प्यार से तिरस्कार पाने के बाद

से अचला दूसरे को अपना नहीं पाती है। दूसरी ओर 'चाँद चलता रहा' कहानी में रोहिणी की कथा है, जिसमें मंगेतर द्वारा शारीरिक संबंध रखने का प्रस्ताव चाहकर भी ठुकराती है। क्योंकि शादी से पहले वह अवैध संबंध स्थापित करना नहीं चाहती है। लेकिन उसके मंगेतर की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है। वह दुखित और निराश हो जाती है और खुद को दोषी समझ लेती है।

'वापसी' कहानी इनकी चर्चित और प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में लेखिका ने नौकरी के कारण घर और परिवार से दूर रहने वाले गाजाधर बाबू की स्थिति को बड़े ही मार्मिक एवं यथार्थ ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें गाजाधर बाबू की घर की वापसी न हो कर पुनः नौकरी की ओर वापसी होती है। 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' कहानी में भी पारिवारिक सम्बन्धों को दर्शाया गया है। इस कहानी में नौकरी करने वाले अर्थात कमाने वाले को महत्व एवं ऊँचा रखा गया पर आश्रित की स्थिति दयनीय है।

डॉ. गोरक्ष थोरात के शब्दों में,"समकालीन नारी चेतना का समग्र अंकन करने वाली सशक्त लेखिका के रूप में उषा प्रियंवदा प्रसिद्ध हैं।"[12] इनकी कहानियों में नवीन भाव एवं मूल्यों की अभिव्यक्ति होती है। इनकी नारियाँ सक्षम, स्पष्ट एवं शिक्षित भी होती है। इनके साहित्य में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में होड़, अभिमान की रक्षा और व्यक्तिगत भोगवाद की प्रस्तुति भी होती है।

18. ममता कालिया

ममता कालिया का जन्म 2 नवम्बर 1940 को वृन्दावन, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनके उपन्यास है- बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, एक पत्नी के नोटस, दौड़, अँधेरे

का ताला, दुक्खम-सुक्खम, कल्चर वल्चर, सपनों की होम डेलीवेरी। इनके कहानी संग्रह है- छुटकारा, एक अदद औरत, सीट नं. छः, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, प्रतिदिन, मुखौटा, निर्मोही, थिएटर रोड के कौए, पच्चीस साल की लड़की। इनकी कहानियों के केन्द्र में नारी रही है। इनकी कहानी 'माँ' में लेखिका ने नारी के दो रूप प्रस्तुत किए है। शोषक के रूप में सास और शोषित के रूप में बहू को दर्शाया है। अक्सर देखा जाता है कि भारतीय बहुएँ सास के अत्याचारों के शिकार होते है। इस रूप को स्पष्ट रूप से ममता कालिया ने रेखांकित किया है। 'मंदिरा' कहानी में बेरस दाम्पत्य जीवन प्रस्तुत है। कहानी की नायिका मंदिरा के दाम्पत्य जीवन को दर्शाया गया है। इनकी अन्य कहानियाँ जैसे 'काली साड़ी', 'बसंत-सिर्फ एक तारीख' आदि में भी नारी के शोषित रूप को दिखाया गया है। 'बोलनेवाली औरत' कहानी में भी सास और पति को चुपचाप रहने वाली बहू और पत्नी ही चाहिए। शिखा की स्थिति को कोई भी महत्व नहीं देता है।

डॉ. गोरक्ष थोरात के अनुसार,"ममता कालिया ने अपने साहित्य में नारी मनोविज्ञान को यौन अतृप्ति एवं कामवासना के यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पारिवारिक जीवन में नारी की निराशाओं, कुंठाओं, अंतर्विरोधों, विसंगतियों का सजीव चित्रण इनकी रचनाओं का मूल स्वर है।"[13] लेखिका ने नारी की विविध पीड़ाओं को सजीव रूप से दर्शाया है।

19. मृणाल पांडे

मृणाल पांडे का जन्म 26 फरवरी 1946 को टीकमगढ, मध्य प्रदेश में हुआ। यह लेखक, पत्रकार और सम्पादिका हैं। इनके उपन्यास हैं- विरुद्ध, अपनी गवाही, हमका दियो

परदेस, रस्तों पर भटकते हुए, पटरंगपुर पुराण, देवी तथा सहेला रे और यानी कि एक बात थी, बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, दरम्यान, शब्द बेधी, एक नीच ट्रैजेडी, एक स्त्री का विदागीत, चार दिन की जवानी तेरी आदि कहानी संग्रह हैं। इन्होंने नारी का यथार्थ रूप चित्रित किया है। इनकी रचनाओं में भारतीय परंपरा, नैतिकता, धर्म आदि का रूप स्पष्ट दिखाई देता है। नारी के स्वतंत्र रूप पर इन्होंने अधिक ध्यान एवं ज़ोर दिया है। इनकी 'एक थी हँसमुख दे' कहानी में नारी के स्वतंत्र रूप एवं दर्द का सूक्ष्मता से दर्शाया है। साथ ही इन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से उच्च कुलीन वर्ग के खोखलेपन, दिखावटी रूप को उजागर करते हुए इस वर्ग पर करारा व्यंग्य कसा है।

20. मेहरुन्निसा परवेज

मेहरुन्निसा परवेज का जन्म 10 दिसंबर 1944 को बालाघाट, मध्य प्रदेश में हुआ। इनकी पहली उपन्यास 'आँखों की दहलीज' है। इसके अतिरिक्त कोरजा, अकेला पलाश, समरांगण, और पासंग प्रमुख उपन्यास हैं। इनकी कहानी कृतियाँ हैं- आदम और हव्वा, टहनियों पर धूप, गलत पुरुष, फाल्गुनी, अंतिम पढ़ाई, सोने का बेसर, अयोध्या से वापसी, एक और सैलाब, कोई नहीं, कानी बाट, ढहता कुतुबमीनार, रिश्ते, अम्मा और समर। इनकी 'आदम और हव्वा' कहानी पारिवारिक सम्बन्धों पर आधारित है।

इनकी रचनाओं में भारतीय मुसलमानों के रहन-सहन व स्थिति अंकित है। साथ ही विभाजन से संबन्धित कृतियाँ भी है, जिसमें सुरक्षा का अभाव, डर, असंतोष आदि का भाव दिखाई देता है। इनकी रचनाओं में अंधविश्वास, कुरीतियाँ तथा आदिम रीति-रिवाज से

ग्रसित आदिवासियों की झाँकी भी परिलक्षित होती है। डॉ. गोरक्ष थोरात के शब्दों में, “सामाजिक कुप्रथाओं पर प्रहार करते हुए स्त्री-पुरुष के स्वाभाविक यौनाकर्षण को उच्च धरातल प्रदान किया है। इनकी सभी कृतियों में घर-परिवार की परिस्थितियों का मार्मिक अंकन हुआ है तथा नारी मन की विडम्बनाओं को सफलतापूर्वक उभरा गया है।”[14] इन सबसे ज्ञात होता है कि मेहरुन्निसा परवेज की रचना का क्षेत्र बहुत विस्तृत तथा समृद्ध है।

मृदुला सिन्हा

मृदुला सिन्हा का जन्म 27 नवम्बर 1942 को छपरा, मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ। हिन्दी कहानी के क्षेत्र में इनका आगमन समकालीन हस्तक्षेप के साथ होता है। इन्होंने अपनी कहानियों में समकालीन जीवन परिवेश की विभिन्न परिस्थितियों को व्यापक जीवन के अनुभवों के साथ प्रस्तुत किया है। गहरी संवेदनशीलता, अनुभव की सच्चाई, लोक व शास्त्रों में संचित मानवीय मूल्यों की खोज इनके लेखन की विशेषता है। इनका साहित्य ग्रामीण और शहरी जीवन की व्यथा-कथा, हर्ष और उल्लास का भंडार है।

मृदुला जी की कहानियाँ में भारतीय गाँवों का सजीव चित्रण मिलता है। जयश्री रॉय के शब्दों में, ”मृदुला जी की कहानियों में ग्राम्य जीवन का सौंदर्य, उसके विविध रंग, वहाँ की सरलता और लोक-जीवन अपने संपूर्ण वैभव और जीवंतता के साथ मौजूद हैं ।”[15] केवल गाँव ही नहीं गाँव की समस्याओं एवं उसके समाधान पर भी प्रकाश डालती हैं। उनकी प्रथम कहानी संग्रह की **‘साक्षात्कार’** कहानी, जिस पर संग्रह का नामकरण हुआ है, इस कहानी में ऐसा प्रतीत होता है कि लेखिका ने बाढ़ पीड़ित गाँव का जाइजा लिया हो। स्वयं देखा, हिस्सा बननी एवं महसूस किया जैसा लगता है। इस कहानी में बाढ़ पीड़ित भारतीय गाँवों की दयनीय स्थिति, भूख और गरीबी का साक्षात्कार किया है। रमेश नैयर के अनुसार,

“भारत के ग्रामीण और कस्बाई परवेश से निकले उनकी रचनाओं के पात्र आत्मीय लगते। उनके सुख-दुःख और संवेदनाएँ पूरी जीवंतता के साथ उनके लेखन में मुखर होती थीं।”[16]

उन्होंने माँ की ममता जो बेटी की शादी के बाद भी उसके मायके से वापस ससुराल जाने पर उसके लिए पोटलियाँ एवं गठरियाँ के भरने की आदत को **‘और उसी क्षण’** कहानी में दर्शाया है। इन्होंने भारतीय स्त्रियों की जमा करने एवं पुराने चीजों में यादें बसाने की खूबियों एवं रुचियों को **‘जीवन बीमा की रकम’, ‘रद्दी की वापसी’, ‘साझा वॉडरोब’** कहानियों में अंकित किया हैं। यें कहानियाँ भारतीय दर्शन और पुराने वस्तुओं की अनमोलता को निखारते हैं। आर. शशिधरन के शब्दों में, “भारतीय संस्कृति के प्रति असीम निष्ठा मृदुला जी की कहानी की अन्यतम विशेषता है। उनकी तमाम कहानियों में भारतीय जीवन की गरिमा अंकित है।”[17] लेखिका ने भारतीय स्त्री चरित्र की दृढ़ता को **‘खूँटा’** कहानी में दर्शाया है। वही **‘बेटी का घर’** कहानी में भारतीय सोच या परंपरा जिसमें बेटा और बेटी के घर में अंतर दृष्टि को उकेरा है। धर्म से जुड़ी तथा अंतरजातीय विवाह के प्रसंग को भी इन्होंने **‘उपदेश’** एवं **‘कुछ भी नहीं बदला’** कहानियों में विषय बनाया है। साथ ही समाज की कुरीतियों में से एक दहेज प्रथा का विरोध **‘आशीर्वाद’** कहानी के माध्यम से किया है।

‘अपना जीवन’ और **‘खोए जीवन की खोज’** भारतीय माँओं की कहानी है, जो अपने बच्चों के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देते हैं। बेटे से मिलने की चाह रखने वाली माँ का चित्रण **‘नजरें जुड़ाने वास्ते’** कहानी में किया गया है। आर. शशिधरन के शब्दों में, “मृदुला सिन्हा की कई कहानियाँ मातृ भाव की कहानियाँ हैं।”[18] माँ तो ममता की मूर्ति होती है। इसी गुण को लेखिका ने उकेरा है।

मृदुलाजी ने दाम्पत्य जीवन या दाम्पत्य प्रेम में आए समझ को **'मानिनी', 'जीत या हार', 'गाँठ', विलमता बिलगाव, 'हर गया सत्यवान'** आदि कहानियों में बड़े ही सुंदर तरीके से दर्शाया है। साथ हुई एक पति-वत्रता पत्नी का अंकन **'सती का सम्मान'** कहानी में किया है। दूसरी ओर पत्नी या स्त्री की दयनीय स्थिति एवं संघर्ष को **'पगली कहीं की'** तथा **'केकड़ा का जीवन'** कहानियों में दर्शाया है।

मृदुला जी की कहानियों में कुछ-न-कुछ सीख निहित होती है। ईमानदारी की सीख को बहुत अच्छे तरीके से **'उपरवार कमाई'** कहानी में लेखिका ने प्रस्तुत किया है। साथ ही परोपकार की भावना जैसे संस्कार को **'खाली तिजोरी'** कहानी में दर्शाया है। तो कहीं बेटी को ऊँचा दर्जा दिया **'बुनियाद', बेटी का कमरा', 'उऋण'** आदि कहानियों में। बेटी के लिए भी पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार की माँग की **'भैयादूज'** कहानी के माध्यम से किया है। लेखिका ने आदर्श सास का चित्रण **'अनावरण'** कहानी में किया है। इस कहानी में स्वयं बहू प्रभाती अपनी सास की प्रशंसा करती है। और करती भी क्यों नहीं इस सास ने बहू को बेटी से भी बढ़कर प्यार दिया, उसे समझी, उसके उजवल भविष्य की कामना की, पढ़ाई हो या बच्चों को पालने-पोसने में हर स्तर पर सहयोग दिया। साथ ही बेटे-बहू द्वारा माँ की सेवा और सास-बहू का संगम भी **'पेंटिंग के बहाने'** तथा **'दादी माँ की पिकनिक'** आदि कहानियों में दर्शाया है। इनके अलावा भी बहू द्वारा ससुर की देखभाल का चित्रण भी **'काश! ऐसा नहीं हुआ होता'** कहानी में अंकित किया है।

मृदुला जी ने एक नई एवं नेक सोच का उल्लेख **'आकांक्षा'** कहानी में किया है। इस कहानी में नई सोच अनाथ बच्चों को अपनाने के लिए दिशा निर्दिष्ट किया गया है। इससे केवल अनाथ बच्चे का भविष्य ही नहीं सुधरता बल्कि समाज का ही हित और कल्याण होता है। अमीर-गरीब के बीच बढ़ती दूरियों को **'फासला इतना कि'** कहानी में उकेरा गया है।

मानवीय मनोभावों का चित्रण **'खुद्दारी का सम्मान'** कहानी में लेखिका ने बड़े ही सजीव रूप से दर्शाया है। इन्होंने अछूत और दलित जीवन का भी मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया हैं। **'मनौती ', 'बलेसर माई का तालाब', 'घरवास','अगुआ का अनुराग'** आदि अछूतों पर आधारित प्रमुख कहानियाँ हैं। मृदुला जी ने **'मनौती'** और **'बलेसर माई का तालाब'** में अछूत स्त्री का चित्रण ब्राह्मण जाति की स्त्री के साथ सखी के रूप में प्रस्तुत किया है। यह कहानियों सहज रूप में दो सखियों की कथा है, जिन्होंने अपनी जाति भेद की मर्यादा में रहते हुए अपनी दोस्ती निभाई। इनके अलावा सखी पर आधारित अन्य कहानी है **'भ्रम की व्यथा'**और **'परिवर्तन'**। मृदुला जी ने अपनी कहानियों में जीवन तथा समाज की सच्चाइयों को विषय बनाया है, कोई मन गढ़न की बातें नहीं होती है। आर. शशिधरन के शब्दों में, "कहानीकार के रूप में उनको समाजोन्मुख यथार्थवादी कहानीकार कहा जा सकता है। उन्होंने अपनी कहानियों में मुख्य रूप से निम्नवर्गीय और मध्यवर्गीय जीवन के चित्र ही प्रस्तुत किए हैं। उनकी कहानियों का आधार भारतीय जनजीवन है। इस जनजीवन की धुरी स्त्री है। इसलिए उनकी कहानियों में स्त्री जीवन का चित्र मिलना स्वाभाविक है।"[19]

मृदुला जी ने भारतीय जीवन दर्शन और मानव सेवा को **'सहस्त्रपूतों वाली'** कहानी में मार्मिक रूप से दर्शाया है। पार्वती के माध्यम से मानव जाति की सेवा के लिए समर्पित स्त्री

का चित्रण है जो अपने सेवा निवृत्ति के बाद भी कायम रखती है। साथ ही भारतीय जीवन दर्शन और मूल्यों को संरक्षित किया **'सवासेर'** कहानी में।

मृदुला जी ने अपनी कहानियों में वृद्धों के जीवन को भी प्रमुख विषय बनाया है। इन्होंने वृद्धावस्था में वृद्धों के अकेलेपन एवं समस्याओं का मार्मिक चित्रण **'पूर्वाभास', 'अंतिम इच्छा', 'रामरक्खी मर गई', 'शीशा फुआ'** आदि कहानियों में किया है। वही जन्मभूमि के प्रति लगाव एवं प्रेम को उकेरा है **'रामायणी काकी'** कहानी में। लेखिका ने गौ हत्या का विरोध **'अनशन'** कहानी के माध्यम से किया है।

इन्होंने राजनीति से संबन्धित कहानी भी लिखी है। इनकी **'पहली मृत्यु पर'** कहानी राजनीति पर आधारित कहानी है। इस कहानी में भी स्त्री की अहम भूमिका है। एक पत्नी अपने पति को भ्रष्ट होने से बचाने की कोशिश करती है। इन्होंने पुरुष सत्ता को भी स्पष्ट दर्शाया है **'एक और निश्चय'** कहानी में। पुरुष का स्वभाव बदलते हालत खास करके दुर्घटना के कारण पत्नी की विग्लांता से किस प्रकार बदल जाता है और दूसरी शादी तक कर डालता है। इन स्थितियों का सजीव चित्रण करने में मृदुला जी बहुत सक्षम हुई है। दूसरी ओर इन्होंने पिता की सीख को साफ दर्शाया **'गुड़गाँव में अदौरी', 'विरासत', 'पितृ तर्पण'** आदि कहानियों के माध्यम से।

भारतीय संस्कृति की गौरवता पर लेखिका को सदैव अभिमान है और देश के नौजवानों को अपनी कहानी के माध्यम से विदेश से स्वदेश लौटने का संदेश निहित करती है। विदेश में नौकरी करने वाले भारतीय नवयुवकों को पुनः भारतीय मूल्यों एवं संस्कारों की ओर लौटने का संदेश **'उधार का सूरज', 'पुनर्दान', 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी'** आदि कहानियों में प्रस्तुत किया है। आर. शशिधरन के शब्दों में, "भारतीय संस्कृति के प्रति असीम

निष्ठा मृदुला जी की कहानी की अन्यतम विशेषता है। उनकी तमाम कहानियों में भारतीय जीवन की गरिमा अंकित है।"[20] नशीली पदार्थ शराब के सेवन के दुष्परिणाम को भी उजागर किया है **'कातिल'** कहानी में जुम्मन और महेंद्र के दोस्ती में आए दरार द्वारा। डायरी लेखन की आदत डालने और इसकी उपयोगिता का संकेत किया है **'अंतिम संकेत'** तथा **'डायरी के पन्नों पर'** की कहानियों में।

वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक विषय नौकरीपेशी माँ-बाप की दास्तान को लेखिका ने स्पष्ट एवं मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया **'मेरा फर्ज बनता है'** कहानी में। बच्चों को आया के भरोसे छोड़ने के परिणाम को दर्शाया गया है। माँ-बाप अपने बच्चों के जिन्दगी को सुधारने तथा बेहतर बनाने के लिए नौकरी करते है लेकिन पेशा ही सब कुछ नहीं होता बच्चों की सही परवरिश एवं उचित वातावरण को लेखिका ने बड़े ही सहज रूप में प्रस्तुत किया है। समस्या को उकेरा है पर साथ में समाधान को भी प्रस्तुत किया है। इस कहानी में पिता के दफ्तर से जल्दी घर लौटने के कारण आया की पोल खुल जाती है और पिता अपनी ज़िम्मेदारी जान जाता है और नौकरी छोड़कर अपने बच्चों की देखभाल में जुट जाता है। खुद नौकरी छोड़ता है और पत्नी को नौकरी करने देता है। इससे लेखिका की नई सोच सामने आती है कि बच्चों के परवरिश में केवल माँ को ही जिम्मेदार नहीं ठेहराना नहीं चाहिए और केवल माँ की ही नौकरी नहीं छुड़ाना चाहिए। साथ ही पढ़ाई-लिखाई की उपयोगिता व शिक्षा के महत्त्व को बहुत ही सुंदर तरीके से **'आपबीती'** और **'पुनर्नवा'** कहानियों में दर्शाया है। यह शत-प्रतिशत सच है कि शिक्षा मानव की जिन्दगी को उजवाल एवं बहेतर बनाती है।

मृदुला जी की बहुत ही चर्चित कहानी है **'बेनाम रिश्ता'**। यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। साथ ही इस कहानी में एक विधवा को समाज में ऊँचा स्थान देने की कोशिश किया गया है। इनकी प्रसिद्ध कहानी **'एक दीये की दिवाली'** है। यह कहानी एक बच्चे की है

जो शहर की चकचौंध भरी दुनिया में आता है लेकिन शहर की दिवाली उसके माँ की एक दीये की दिवाली के सामने फीकी पड़ जाती है। 'एक दीये की दीवाली' कहानी-संग्रह के लोकार्पण के पूर्व पुस्तक पढ़कर डॉ. विद्यानिवास मिश्र की प्रतिक्रिया थी – "सारी दुनिया पत्थर-सी होती जा रही है, वैसी स्थिति में लेखिका ने संवेदना का अजप्र स्त्रोत छुपा रखा है। ऐसी कहानियाँ इन दिनों पढ़ने के लिए नहीं मिलतीं।"[21] अतः इनकी संवेदनशीलता का प्रमाण है।

मृदुला जी की कहानियों में सच्चाई निहित होती है। सच एवं समस्या का समाधान विद्यामान रहता है। आर. शशिधरन का कथन है कि "यथार्थ चित्रण मृदुला जी की कहानियों की एक अन्य विशेषता है। अपने समय के यथार्थ को ही उन्होंने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है।"[22] यथार्थ प्रस्तुतीकरण के अलावा इनकी कहानी का मुख्य विषय मानवीय चिंता रहा है। कविता मुखर के अनुसार, "किसी भी रचनाकार में मानवीय चिंता है तो सामाजिक, राजनीतिक चिंता की आवश्यकता नहीं। मानव शाश्वत मूल्य की प्रतिष्ठा के आगे राजनीति बहुत छोटी चीज है, मात्र माध्यम; लक्ष्य तो मानव है। जीवन में इतने ऊँचे प्रतिमान लेकर चलनेवाली हमारी प्रिय लेखिका का मानना है कि –

"संग चलें जब तीन पीढ़ियाँ,

चढ़े विकास कि सभी सीढ़ियाँ"

"मकान ऐसा खरीदो, जिसमें दादा-दादी कि खटिया रखने को भी हो जगह।"

"अगर जरूरत पड़े तो 'वृद्धाश्रम' भी बनाने चाहिए, मगर 'पलना घर' के साथ।"

"महिलाओं को पार्ट टाइम जॉब"

"बेटी के जन्म पर बधावा गाओ"

“बेटी के जन्म पर लड्डू बाँटो, जो रस्म-रिवाज है, सब करो”

उनके कहे अनुसार समाज में उपर्युक्त बदलाव दृष्टिगोचर होने लगे हैं। साहित्य का मकसद मात्र समस्या को इंगित करना नहीं है। मृदुलाजी कहती हैं, समाज की बुराइयों के निदान पर मैं गौर करती हूँ।“[23] इनकी सोच बहुत ऊँची है और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक भी है। इनकी सोच के अनुसार यदि समाज के लोग चले तो समाज एक अच्छी दिशा की ओर अवश्य उन्मुक्त होगा।

मृदुला जी की कहानियों में स्वाभाविकता की परछाई समाहित होती है। इनकी कहानियाँ हमारी और आपकी सी लगती है। इनकी स्वाभाविक गुण पर उपेंद्र कुमार के शब्द दृष्टव्य है, ”वे सहज स्वाभाविक और ठोस स्थितियों की कथाकार हैं, छोटी-छोटी घटनाओं के भीतर छुपे जीवन के व्यापक और उद्दात्त अर्थों को लगातार खोजतीं और उसे सबके सामने बिना किसी लाग-लपेट के प्रस्तुत करतीं।”[24] ऐसी रचनात्मक स्वाभाविकता हर एक के पास नहीं होती है।

मृदुला जी ने अपने कहानियों के माध्यम से जीवन के विभिन्न स्थितियों को बड़े ही सहज रूप में प्रस्तुत किया हैं। इनकी कहानियाँ एक अनुभूति प्रदान करती है। यह अनुभूति पाठक और कहानीकार को बांधे रखती है। इन्होंने गाँव तथा शहरी जीवन, स्त्री जीवन, मित्रता, दलित वर्ग, अंतरजातीय विवाह, वृद्धावस्था की समस्याओं, राजनीति आदि विषयाओं पर कहानी का सृजन किया हैं। अतः इनकी कहानियाँ अनेक विषयों पर आधारित है। आर. शशिधरन के शब्दों में, “डॉ. मृदुला सिन्हा जी भारतीय मिट्टी के कहानीकार हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में भारतीय जनजीवन का ही चित्रण किया है। स्त्री रचनाकार होने के कारण उनकी अधिकांश कहानियों के केंद्र में स्त्री है। उनकी कहानियों में ग्राम का सौंदर्य है, नगरीय चेतना है, मातृभाव हैं, बच्चों की निरीहता है, राजनीति की सच्चाई है, मतलब

यह है कि कहानियों में विषय की विविधता है।"[25] मृदुला जी एक बहुमुखी प्रतिभापूर्ण कहानीकार है, जो अपने कहानियों में विविध विषयों के माध्यम से अपनी बात रखती हैं।

समकालीन महिला कथा लेखन में अनेक महिलाओं का योगदान रहा है। प्रत्येक महिला कथाकारों ने अपनी स्त्री विषयक को अपनी कथाओं का आधार बनाया है। लेकिन सबकी अपनी-अपनी दृष्टि या राय अलग रही है। **मृदुला गर्ग** ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी की अस्मिता खोजने की कोशिश की है। साथ ही पति तथा परिवार का पोषण करने वाली कामकाजी नारी का भी चित्रण किया है। **कृष्णा सोबती** ने नारी के सम्पूर्ण भाव सम्बन्धों की समस्या को उकेरा है। **सूर्यबाला** ने जीवन में हमेशा समझौता करने वाली नारी को प्रस्तुत किया है। **चित्रा मुदगल** ने नारी को मुक्त करने पर ज़ोर दिया है इस मुक्ति में नारी के अधिकार के साथ उनके कर्तव्यों की चर्चा की हैं। स्त्री-पुरुष को समान रूप से दर्शाया है।

मृदुला सिन्हा ने स्त्री को पुरुष के समान नहीं रखा है बल्कि स्त्री को पुरुष से ऊँचा दर्जा दिया है। इन्होंने अनुभव और वास्तविकता को अपनी कहानी का आधार बनाया हैं। इन्होंने ख्याति प्राप्ति के लिए कभी भी कहानी नहीं लिखा बल्कि अनुभाव की सच्चाई को आधार रखकर कहानियों का सृजन किया हैं। शीतला प्रसाद दुबे के अनुसार, "मृदुला सिन्हा भले ही बहुत चर्चित कथाकार नहीं हैं। हो भी नहीं सकतीं क्योंकि उन्होंने चर्चा में बने रहने के लिए कहानियाँ नहीं लिखी हैं। हाँ! इतना अवश्य है कि हिंदी कहानी की विकास-यात्रा में उनके योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उनका रचना संसार विपुल और भारतीय जीवन को लेकर चलने वाला है।"[26] अतः इनकी रचनाओं में भारतीय जीवन का सम्पूर्ण समावेश झलकता है, सीख तथा समस्या का समाधान भी निहित होता है। भारतीय जीवन मूल्यों एवं परंपरा का निर्वाह करते हुए नारी को उच्च स्थान देने वाली मृदुला सिन्हा के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता है।

संदर्भ:

1. वीरेंद्र सिंह (संपा.), समकालीन कविता संप्रेषण - विचार आत्मकथ्य, पृ. सं. - 24
2. डॉ. गोरक्ष थोरात, चित्रा मुदगल के कथा साहित्य का अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 2009, पृ. सं. - 213
3. वही, पृ. सं. - 213
4. डॉ. उर्मिला गुप्ता, हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, पृ. सं. - 17
5. डॉ. गोरक्ष थोरात, चित्रा मुदगल के कथा साहित्य का अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 2009, पृ. सं. - 214
6. डॉ. उर्मिला गुप्ता, हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, पृ. सं. - 139
7. डॉ. गोरक्ष थोरात, चित्रा मुदगल के कथा साहित्य का अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 2009, पृ. सं. - 216
8. डॉ. कल्पना पाटील, चित्रा मुदगल का कथा-साहित्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2012, पृ. सं. - 49
9. वही, पृ. सं. - 50
10. वही, पृ. सं. - 54
11. वही, पृ. सं. - 66
12. डॉ. गोरक्ष थोरात, चित्रा मुदगल के कथा साहित्य का अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन,

कानपुर, 2009, पृ. सं. - 217

13. वही, पृ. सं. - 220

14. वही, 2009, पृ. सं. - 221

15. रवींद्रनाथ मिश्र(सं.), मृदुला सिन्हा का साहित्य विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड,नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 107

16. बल्देव भाई शर्मा(सं.), सहजता की भव्यता (पराग-संचयिनी मृदुला सिन्हा का जीवन मधु), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 494

17. रवींद्रनाथ मिश्र(सं.), मृदुला सिन्हा का साहित्य विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड,नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 121

18. वही, पृ. सं. - 121

19. वही, पृ. सं. - 118

20. वही, पृ. सं. - 121

21. बल्देव भाई शर्मा(सं.), सहजता की भव्यता (पराग-संचयिनी मृदुला सिन्हा का जीवन मधु), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 423

22. रवींद्रनाथ मिश्र(सं.), मृदुला सिन्हा का साहित्य विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड,नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 119

23. बल्देव भाई शर्मा(सं.), सहजता की भव्यता (पराग-संचयिनी मृदुला सिन्हा का जीवन

मधु), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. - 547

24. वही, पृ. सं. - 371-372

25. रवींद्रनाथ मिश्र(सं.), मृदुला सिन्हा का साहित्य विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड,नई दिल्ली, 2017, पृ. सं. - 123

26. वही, पृ. सं. - 143

उपसंहार

कहानी की परम्परा प्राचीन काल से विद्यमान रही है। मृदुला सिन्हा की लेखनी ने कथा साहित्य में अधिक डुबकी लगाई है। मृदुला सिन्हा का कथा साहित्य, विशेषकर उनकी कहानियाँ भारतीय संस्कृति के इर्द-गिर्द रची हैं। इनके विचार भारतीय परिपेक्ष्य के अनुरूप हैं। इन्होंने मानव जीवन की सच्चाइयों का वास्तविक स्वरूप अपनी कहानियों में दर्शाया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के अंतर्गत मृदुला जी के कुल सात कहानी संग्रह – 'साक्षात्कार', 'एक दीये की दीवाली', 'स्पर्श की तासीर', 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी', 'ढाई बीघा जमीन', 'अपना जीवन' और 'अंतिम इच्छा' केंद्र में हैं। इन संग्रहों की कहानियों में भारतीय परिवार, संस्कार, जीवन का यथार्थ स्वरूप, शिक्षा का महत्व, भारतीय संस्कृति एवं ग्रामीण जीवन के प्रति लगाव, वृद्धावस्था की अभिव्यक्ति, दाम्पत्य जीवन का स्वरूप, नारी की भूमिका एवं स्थिति, लोक जीवन, कन्या जन्मोत्सव, मातृत्व बोध का चित्रण आदि महत्वपूर्ण विषयों का समावेश हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मृदुला सिन्हा की कहानियों में निहित लोक तत्व, बुनियादी रिश्ते, भारतीय चिंतन बोध, सांस्कृतिक चेतना, स्त्री मनोदशा का स्वरूप, मानवीय मूल्यों का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। भारतीय परिवार में व्याप्त संस्कार, पर्व एवं त्योहार की महत्ता, ग्राम्य परिवेश का आकलन स्पष्ट रूप से मृदुला जी की कहानियों में निहित है।

मृदुला जी ने अपनी कहानियों में पारिवारिक सम्बन्धों, मानवीय अभिप्रेरणा, स्त्री चेतना, स्त्री मनोदशा, समाज में स्त्री की स्थिति, वृद्धों की मनोदशा एवं स्थिति आदि को दर्शाया है। इन्होंने सामाजिक परिवेश के यथार्थ को पारदर्शिता के साथ उभारा है। इसके साथ ही समसामयिक परिवेश, परिस्थितियों तथा विकलांगता के प्रति संघर्ष को भी दर्शाया है। इनकी कहानियों में भारतीय दलित वर्ग की आर्थिक एवं सामाजिक जटिलताओं को भी उकेरा है, जिसमें उनके ऊपर अमीर ठेकेदारों के शोषण व कुकृत्यों की व्यंजना की गई है। इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से गरीबी, बेरोजगारी, जातिवाद, अंतरजातीय विवाह, सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त कुरीतियों तथा प्राकृतिक विपदाओं जैसी समस्याओं के कारण दुर्बल होते जा रहे समाज का सजीव चित्रण किया है। इनके साहित्य में ग्रामीण परिवेश की अधिकता है। लेखिका का बचपन भी ग्रामीण परिवेश में ही बिता है। इन्हें अपनी मातृभूमि एवं संस्कृति से गहरा प्रेम व लगाव है।

मृदुला जी की कहानियाँ मानवीय जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करती हैं। इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन के कई आयाम प्रस्तुत किए हैं। साथ ही नारी जीवन के कई पहलुओं पर प्रकाश डाला हैं। इनके पात्र अधिकतर सहनशील, संघर्षशील और जुझारू हैं। मृदुला जी समाज में घटित घटनाओं पर प्रकाश डालती है और इन घटनाओं से जुड़े कथानक अपनी कहानी में जोड़ देती हैं। इनकी कहानियों का कथानक अपनी यथार्थता और मार्मिकता के कारण पाठकों के मन में गहरी छाप छोड़ता है। लेखिका ने मानव जीवन की कई समस्याओं के अनछूए पहलुओं पर प्रकाश डाला है। इनकी कहानियाँ एक विशिष्ट वर्ग तक सीमित नहीं रहती बल्कि सभी वर्गों की कहानियों को दर्शाती हैं। मृदुला जी की निरीक्षण दृष्टि सूक्ष्म है क्योंकि उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों की नारी के मुलभूत स्थिति एवं अधिकारों को प्रस्तुत किया है। लेखिका ने दांपत्य जीवन को महत्व दिया है और इसके

बिखराव से ज्यादा इसे जोड़े रखने की समर्थक हैं। सुखी जीवन के लिए पति-पत्नी के बीच आपसी सामंजस्य को आधार माना हैं। इनका पारिवारिक और धार्मिक दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के अनुरूप है। इनका रचना संसार मानव जीवन के इर्द-गिर्द ही पनपता है। इनका साहित्य सफल एवं जीवन साधना को दर्शाता है। इनका सम्पूर्ण साहित्य भारतीय जीवन दर्शन से जुड़ा हुआ है।

मृदुला सिन्हा ने भोगे हुए समाज को सटीक रूप से अपनी कहानियों में दर्शाया है। समाज के बदले हुए रूप को देखा, समझा और अनुभव करते हुए इसके सापेक्ष रूप को अभिव्यक्त किया। इनकी कहानियाँ समाज को दिशा-निर्देश प्रदान करने में अपनी भूमिका का निर्वहन करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ :

1. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978
2. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996
3. मृदुला सिन्हा, स्पर्श की तासीर, किताब घर, नई दिल्ली, 1997
4. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004
5. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013
6. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
7. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

सहायक ग्रंथ :

1. अजय तिवारी, आलोचना और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
2. अमरनाथ, नारी का मुक्ति संघर्ष, रेमाधव पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, 2007
3. अरुणा गुप्ता, छठे दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2008

4. आशा बोहरा, भारतीय नारी दिशा : दशा, नेशनलम पॉलिशंग हाउस, दिल्ली, 1983

5. उर्मिला प्रकाश, हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योगदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996

6. उमेश माथुर, आधुनिक युग में हिंदी लेखिकाएँ, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर, 2000

7. किरण वाला (सं.) इक्कसवीं सदी की स्त्री अस्तित्व से अस्मिता तक, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2013

8. देवीशंकर अवस्थी, आलोचना का द्वंद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

9. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1980

10. नंदकिशोर नवल, हिंदी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

11. नन्द किशोर पाण्डेय (प्रधान संपादक), हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, 2017

12. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2004

13. पृथ्वी कुमार अग्रवाल, भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010

14. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013

15. बल्देव भाई शर्मा (प्रधान संपादक), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

16. मृदुला सिन्हा, मृदुला सिन्हा की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

17. मोहन राकेश, साहित्य और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रकाशन, आगरा, 2018

18. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

19. महादेवी वर्मा, भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2011

20. रामकुमार वर्मा, आधुनिक कवि, गोपाल बुक डिपो, जयपुर, 2003

21. रामचन्द्र तिवारी, आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007

22. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009

23. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

24. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, राजकमल एंड सन्स, दिल्ली, 1956

25. रामस्वरुप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018

26. रवि कुमार 'अनु', हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य की सांस्कृतिक चेतना, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1990

27. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017

28. विवेक शंकर, आधुनिक भाषा-विज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019

29. सन्तोष कुमार चतुर्वेदी, भारतीय संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011

30. साधना अग्रवाल, वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

31. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017

32. हजारीप्रसाद द्विवेदी, विचार और वितर्क, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1965

33. हरदयाल, साहित्य और सामाजिक मूल्य, विभूति प्रकाशन, दिल्ली, 1985

34. हरिदत्त वेदलंकार, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, बालाजी वर्ल्ड ऑफ बुक्स, नई

दिल्ली, 2019

कोश ग्रंथ :

1. एस. के. पूरी, आशा पूरी व सुमन ओबेरॉय, हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, साहनी पब्लिकेशंस, 2015
2. कालिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय व मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, वृहत हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 2000
3. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, भाग 1, ज्ञानमंडल प्रकाशन लि, वाराणसी, 1957

पत्र-पत्रिकाएँ :

1. ब्रजरतन जोशी (संपादक), मधुमती, उदयपुर, वर्ष – 62, अंक – 10, अक्टूबर, 2022
2. संजय श्रीवास्तव (संपादक), वर्तमान साहित्य, (साहित्य, कला और सोच की पत्रिका), वाराणसी, वर्ष - 40, अंक – 13, 14, 15, मार्च-मई, 2023
3. क्रांति कनाटे (संपादक), साहित्य परिक्रमा (कथा विशेषांक), ग्वालियर, अक्टूबर-दिसंबर, 2015
4. अनुराग अग्रवाल (प्रधान संपादक), डॉ. चन्द्र त्रिखा (संपादक), हरिगंधा, हरियाणा, अंक - 341, जनवरी, 2023

5. प्रो. नंद किशोर पाण्डेय (प्रधान संपादक), हिंदी अनुशीलन, भारतीय हिन्दी परिषद प्रयागराज, वर्ष - 61, अंक - 1-2, जनवरी-जून, 2019

परिशिष्ट

शोधार्थी का जीवन वृत्त

1. नाम	:	वानललपारी चिन्जाह
2. पिताजी का नाम	:	श्री ह्लाङदोला चिन्जाह
3. माता का नाम	:	श्रीमती ललबियाकलियानी
4. पता	:	दुरत्लांग नॉर्थ, आइजोल
5. जन्मतिथि	:	23 जनवरी, 1986
6. शैक्षणिक योग्यता	:	क) दसवीं (2002) प्रथम श्रणी ख) बारहवीं (2004) प्रथम श्रणी ग) स्नातक (2007) तृतीय श्रणी घ) हिन्दी शिक्षण पारंगत (बी. एड. 2008) प्रथम श्रणी ङ) स्नातकोत्तर (2010) प्रथम श्रणी च) हिन्दी शिक्षण निष्णात (एम. एड. 2010) प्रथम श्रणी
7. मोबाइल	:	9612207453
8. ईमेल	:	vanlalparichinzah@gmail.com
9. भाषा	:	मिज़ो, हिन्दी, अंग्रेजी
10. प्रकाशन	:	क) 'मृदुला सिन्हा की कहानियों में स्त्री विमर्श का भारतीय संदर्भ', शोध धारा, Vol. 4, December, 2021 ख) 'हिन्दी कहानी का विकासपथ', मिज़ोरम विश्वविद्यालय जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटिस एंड सोशियल साइंस, Vol. IX Issue 2, December 2023

(वानललपारी चिन्जाह)

ISSN : 0975-3664
RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यू.जी.सी. केयर लिस्टेड, शोध जर्नल
[A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, UGC Care Listed, Bi-lingual (Hindi & English) Research Journal of Arts & Humanities]

Year : 2021 **Month : December** **Vol. 4**

प्रधान संपादक
Chief Editor
डॉ0 (श्रीमती) नीलम मुकेश
Dr. (Smt.) Neelam Mukesh

63

संपादक
Editor
डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय
Dr. Rajesh Chandra Pandey

प्रकाशक : शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन), उ0प्र0
Published by : Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

शोध-धारा
SHODH-DHARA

वर्ष/Year : **2021, दिसम्बर/2021, December**
Vol.4, अंक 4
कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल
A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, and U.G.C. Care Listed Research Journal of Arts & Humanities

प्रकाशन : डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय (महासचिव)
शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन) उ०प्र०

Publisher : **Dr. Rajesh Chandra Pandey** (General Secretary)
Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

मुद्रक : कस्टमर गैलरी, मौनी मंदिर, उरई (जालौन), उ०प्र०

Printer : **Customer Gallery,** Mauni Mandir, Orai (Jalaun) U.P.

अंशदान/Subscription :

एक अंक One Volume	: 100/-
व्यक्तिगत पंचवर्षीय Individual Five Year	: 2000/-
व्यक्तिगत आजीवन Individual Life Membership	: 3000/-
संस्थागत पंचवर्षीय Institutional Five Year	: 2500/-
संस्थागत आजीवन Institutional Life Membership	: 5000/-

(Duration of Life Membership is 10 year)

नोट : सभी प्रकार के भुगतान 'शोधधारा' उरई के नाम से देय है।

Note : All payments relating to this journal shall be made by draft in favour of the " ***Shodh Dhara***", Payble at **Orai.**

खाता धारक का नाम`	: शोध धारा	खाता संख्या	: 7033852673
बैंक का नाम	: इण्डियन बैंक	IFSC Code	: IDIB000D695
ब्रान्च कोड	: डी.वी.सी. ब्रांच 6136	MICR Code	: 226019211

The Journal does not ask for publication charges in any form.

कार्यालय : डॉ० (श्रीमती) नीलम मुकेश
प्रधान संपादक, शोध-धारा, १०७५, बैंक कॉलोनी, जालौन रोड, उरई (जालौन), उ०प्र०
: डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय
संपादक, शोध-धारा, २६२, पाठकपुरा, उरई (जालौन), उ०प्र०

Office : **Dr. (Smt.) Neelam Mukesh,** Chief Editor, Shodh-Dhara,1075, Bank Colony, Jalaun Road, Orai (Jalaun) 285001,U.P., Mobile : 9450109471
: **Dr. Rajesh Chandra Pandey,** Editor, Shodh-Dhara, 262, Pathakpura, Orai (Jalaun) 285001,U.P. Mobile;9415592698(W), 9198204835, email:shodhdharajournal2005@gmail.com

डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय (महासचिव, शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन)) मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी द्वारा कस्टमर गैलरी, उरई (जालौन) से मुद्रित करवाकर शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन) से प्रकाशित। संपादक –डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय

Note : * The views expressed in the published articles are their writers own. The agreement of the Editorial Board or the Shodh Pratisthan is not necessary.* Disputes, If any shall be decided by the court at Orai (Jalaun) U.P.

ISSN : 0975-3664 RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH-DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रिव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल (साहित्य, कला और संस्कृति पर केंद्रित)
(A quarterly peer reviewed, referred, U.G.C. care listed reseach journal of Art & Humanities)

Year 2021 December Vol. 4

अनुक्रम Contents

	शीर्षक	लेखक	पृ०सं०
शोध आलेख			
	हिन्दी साहित्य		**1-186**
१.	हिन्छी साहित्य में समाजशास्त्रीय अध्ययन का स्वरूप	डॉ० राज शेखर	1- 7
२.	मृदुला सिन्हा की कहानियों में स्त्री विमर्श का भारतीय संदर्भ	वानललपारी चिंजन	8-16
३.	भारतेन्दु–युगीन पत्रकारिता के विविध आयाम	डॉ० कमलेश सिंह	17-21
४.	'पाँव तले की दूब' में निहित आदिवास संघर्ष	कल्पना सिदार	22-26
५.	बुन्देली साहित्य और राष्ट्र का सांस्कृतिक वैभव	डॉ० नीरज कुमार द्विवेदी	27-33
६.	बुर्के की ओट में झांकता स्वातंत्र्योत्तर भारतीय मुस्लिम समाज	डॉ० अजीत प्रियदर्शी	34-42
७.	सांस्कृतिक उपनिवेशवाद के वर्चस्व का प्रतिरोध 'काशी का अस्सी'	संदीप सो. लोटलीकर	43-51
८.	मार्कण्डेय की रचना धर्मिता	राम मिलन विश्वकर्मा डॉ० जगदम्बा प्रसाद दुबे	52-58
९.	संपूर्णता के कवि : दिनकर	डॉ० मधुबाला सिन्हा	59-61
१०.	हिन्दी माध्यम से शिक्षण की स्थिति का अध्ययन	डॉ० रणजीत भारती	62-66
११.	लोक दर्शन की अवधारणा	विजय नारायण दूबे	67-71
१२.	प्रभा खेतान के उपन्यास नारी स्वाभिमान की संघर्ष–गाथा	गोविन्द शुक्ल डॉ० जगदम्बा प्रसाद दूबे	72-76
१३.	भाषा, लिपि और नवजागरण	डॉ० भास्कर लाल कर्ण	77-85
१४.	डॉ० भूपेन हजारिका के गीतों में स्वदेशानुराग	डॉ० जिनाक्षी चुतीया	86-92
१५.	शमशेर की कविताओं में बिम्ब–विधान एवं प्रतीक–योजना	शरिफुज जामान	93-101
१६.	इक्कीसवीं सदी की कहानी : दलित उत्पीड़न/अस्पृश्यता	राजनाथ दूबे डॉ० जगदम्बा प्रसाद दूबे	102-106
१७.	नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री चिंतन के विविध पक्ष	कु० बसंती सेनापति	107-111
१८.	साहित्य में समीक्षा बोध	डॉ० अनुज कुमार पटेल	112-116
१९.	नया इंसान : मानवीय संवेदना के धरातल पर	डॉ० अखिलेश कुमार शर्मा	117-121

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696
SHODH-DHARA ; Dec 2021; Vol. 4; P. 8-16

मृदुला सिन्हा की कहानियों में स्त्री विमर्श का भारतीय संदर्भ

वानललपारी चिंजन

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, **आईज़ोल, मिजोरम**

डॉ० अखिलेश कुमार शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, **आइज़ोल, मिजोरम**

(प्राप्त : २५ अगस्त २०२१)

Abstract

वर्तमान में आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श का बोल–बाला है, जिसमें कई स्वर विद्यमान हैं। उन महिला स्वरों के बीच, महिला लेखन की चुनौतियों को समझते हुए, स्वीकारते हुए मृदुला सिन्हा की कहानियाँ स्त्री विमर्श का भारतीय संदर्भ प्रस्तुत करती हैं। मृदुला सिन्हा की कहानियों में स्त्री पात्रों का विशेष महत्व है। अपने स्त्री पात्रों के माध्यम से मृदुला जी ने स्त्री जीवन के विविध रूपों को उजागर किया है। इनके स्त्री पात्र समाज को दिशा देने की ओर अग्रसर–प्रयासरत हैं। मृदुला जी ने अपने कथा संसार में ग्रामीण स्त्री से लेकर आधुनिक सोच रखने वाली नौकरीपेशा स्त्री के यथार्थ रूप को दर्शाया है, तो कहीं दिल को छू लेने वाली आदर्श स्त्री पात्र का चित्रण भी है। मृदुला जी ने अपने पात्रों के माध्यम से समाज को नई राह दिखाने की कोशिश की है, जिसमें बदलाव के साथ–साथ पुरानी भारतीय परंपरा को कायम रखने का संदेश भी निहित है। इनकी कहानियाँ आदर्शवादी संदेश से युक्त हैं।

Figure : 00 **References : 37** **Table : 00**

Key Words : अस्तित्त्व, विमर्श, नौकरीपेशा, यथार्थ, ग्रामीण, भारतीय परंपरा, आदर्शवादी संदेश।

भारतीय ग्रामीण जीवन को गहराई से महसूस करके और शहरी अनुभव से लबालब होती मृदुला सिन्हा की कहानियों में दोनों परिवेश का यथार्थ रूप साफ प्रकट होता है। स्त्री पात्रों के विभिन्न रूपों को बड़ी सहजता से दर्शाया है। मृदुला जी ने सही रूप में समाज की उन्नति और उत्थान के लिए पहले स्त्री की स्थिति में सुधार लाना आवश्यक माना है। इसीलिए इनकी कहानियों में स्त्री के यथार्थ रूप को दर्शाते हुए पुरुष–प्रधान सामाजिक व्यवस्था में इनके आदर्श रूप को उभारने के साथ–साथ समाज के लिए संदेश निहित है। आर. शशिधरन के अनुसार, "यथार्थ चित्रण मृदुला जी की कहानियों की एक अन्य विशेषता है। अपने समय के यथार्थ को ही उन्होंने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। लेखिका ने लिखा है– हर कथा कहानी अपने समय का आईना होती है, पन्नों पर अक्षरों में उकेरी समय की पेंटिंग।"[1] मृदुला जी ने समकालीन हस्तक्षेप के साथ अपना लेखन कार्य प्रारंभ किया। इनकी लेखनी का मूलाधार इनका अनुभव रहा है। इस अनुभव में विभिन्न क्षेत्र, प्रांत या देश–विदेश के भ्रमण का फल अंकित होता है। तभी तो, स्वयं इन्होंने 'अपना जीवन' कहानी संग्रह की भूमिका में स्वीकारा है–"कहानी लेखन के लिए घुमंतू होना आवश्यक है।"[2] यानी कि विभिन्न जगहों से कथानक एकत्रित हो जाते हैं। मृदुला जी की कथाओं का स्रोत भी यही रहा है। अपने साहित्यिक, राजनैतिक और सामाजिक कार्यों के कारण ये देश–विदेश घूमती रही हैं। इनके अनुभव का दायरा बहुत विस्तृत है। इन्हीं की जुबानी "झुग्गी–झोपड़ियों से लेकर

बड़ी कोठियों में मेरा उठना–बैठना होता है, आर्थिक असमानता के बावजूद सभी जीवन स्थितियों में बहुत सी समानताएं हैं।"[३]

मृदुला सिन्हा के नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हैं– साक्षात्कार, एक दिए की दिवाली, स्पर्श की तासीर, जैसे उड़ी जहाज को पंछी, नया खेल (बाल कहानी संग्रह), देखन में छोटे लगे (लघु कथा संग्रह), ढाई बीघा जमीन, अपना जीवन और अंतिम इच्छा। इनमें नया खेल और देखन में छोटे लगे को छोड़कर शेष सात कहानी संग्रहों में कुल १२७ कहानियाँ हैं। अधिकतर कहानियों में स्त्री के विविध रूपों को दर्शाया गया है। इस शोध पत्र के केन्द्र में मृदुला सिन्हा के अंतिम तीन कहानी संग्रह हैं, जिसके अंतर्गत 'अपना जीवन, बेनाम रिश्ता, अनावरण, डायरी के पन्नों पर, अंतिम संकेत, रद्दी की वापसी, टिफिन बॉक्स, नजरें जुड़ाने वास्ते, खुद्दारी का सम्मान, एक और निश्चय, खूँटा और कुछ भी नहीं बदला' इन चयनित कहानियों को आधार बनाया गया है।

स्त्री जीवन संघर्षों से घिरा रहता है। प्रत्येक परिवेश में उसे स्त्री होने का दायित्त्व निभाना पड़ता है। चाहे वह गृहिणी हो या कामकाजी स्त्री। समाज की इस सोच को बदलने के लिए स्त्री ने सदियों की दासता को तोड़कर अपने लिए समाज में स्थान बनाने के लिए जिम्मा उठाया है। ऐसे ही कुछ सवालों के चलते हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को लेकर लेखन रेखांकित हुआ है। स्त्री सामाजिक मर्यादा और नैतिक मूल्यों से बंधी होती है। कई बार इसके कारण स्त्री की दुनिया सीमित रह जाती है। स्त्री के लिए संबंधों की लंबी सूची तैयार हो जाती है और उसे उन सभी रिश्तों को सौ प्रतिशत निभाना पड़ता है।

स्त्री ममत्व से परिपूर्ण होती है। इस भाव की अपनी नैसर्गिक प्रवृत्ति होती है। मृदुला जी के स्त्री पात्र भूत, वर्तमान के साथ–साथ भविष्य की भी जांच–पड़ताल करते हैं। मृदुला जी के स्त्री पात्र डरे, सहमे या शर्मीले नहीं होते बल्कि मजबूत एवं आदर्श होते हैं। इन्होंने भारतीय ग्रामीण स्त्री से लेकर शहरी स्त्री के विभिन्न रूपों को सहज रूप से उभारा है। साथ ही भारतीय स्त्री की समस्याओं को भी पाठक के सामने उजागर किया है। दाम्पत्य जीवन की समस्याओं एवं उसके निवारण के उपाय या सुझावों को बखूबी अपनी कहानियों के माध्यम से सामने रखा है। इनके कहानी संसार में राजनीति से संबंधित कहानियाँ भी शामिल हैं। "नारी पात्रों के मनोभावों को मृदुला जी जिस सहजता के साथ अपनी साहित्यक कृतियों में व्यक्त करती थीं, उनसे स्पष्ट आभास होता था कि वे स्वयं प्रत्येक पात्र की आत्मा में प्रवेश करके उसे जीती हैं।"[४]

भारतीय माँ, जो सिर्फ अपने पति और बच्चों के लिए जीने वाली, हर पल अपने परिजनों के सुख –सुविधा को सर्वोपरि रखने वाली माँओं का सजीव उदाहरण मृदुला जी की कहानियों में मिलता है। मृदुला जी ने ऐसी ही माँ का प्रतिबिंब खींचा है 'अपना जीवन' कहानी में। भारत की माँएँ जो स्वयं भूखी रह जाएंगी और अपने पति एवं बाल बच्चों की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन बिता देती हैं। पर, वही संतान बूढ़ी माँ के अरमानों को कुचलकर अपना जीवन शांति एवं उनके तरीके से जीने देने के लिए कह देता है। "बिना लाग–लपेट के हर्ष बोला था–माँ हमें अपना जीवन अपनी तरह से जीने दीजिए। आप लोग अपना जीवन जिए। हमारी बच्ची हमें दीजिए। हम इसे अपनी तरह पालेंगे।"[५] जिस माँ ने अपने बच्चे को ही जीवन माना था, उसी बच्चे ने कितनी आसानी से कह दिया अपना–अपना जीवन जीने के लिए। एक बार भी नहीं सोचा कि माँ पर क्या बीतेगी। माँ की गलती इतनी भर थी कि वह अपनी पोती को गोद

में चिपकाकर सुला रही थी। दादी के रूप में उसके अपने अरमान थे, जो बहू के मना करने पर भी उसकी अनुपस्थिति में अपने को रोक नहीं पाई थी। इस कहानी में 'मोना' नामक स्त्री पात्र में उस रूप को उभारा गया है, जिसमें ममता ही ममता विद्यमान रहती है।

मृदुला जी की एक बड़ी चर्चित कहानी है–'बेनाम रिश्ता'। यह कहानी मनोवैज्ञानिक रूप से बहुत ही महत्त्वपूर्ण संदेश देती है। इस कहानी के पात्र शालीग्राम को एक समय एक बड़ी बीमारी ने आ घेरा। उस समय वह अस्पताल में थे, तभी वहाँ पर एक अन्य स्त्री पात्र चित्रा जी के पति दुर्घटनाग्रस्त होकर उसी अस्पताल में भर्ती हुए। चित्रा जी के पति के मस्तिष्क ने काम करना बंद कर दिया था और शालीग्राम के दिल ने। उस समय चिकित्सकों ने यह कह दिया था कि अगर किसी का धड़कता हुआ दिल शालीग्राम के दिल में प्रत्यारोपित कर दिया जाए तो उनके प्राण बच सकेंगे। डा. शर्मा ने चित्रा जी से अनुरोध किया "आपके पति को अब हम नहीं बचा सकते। पर आपकी सहमति हो तो इनका दिल किसी और के शरीर में प्रत्यारोपित किया जा सकता है। वह जिन्दा हो सकता है।"[६] बिना जाने पहचाने चित्रा जी ने उस अज्ञान आदमी के लिए अनुमति दे दी। उसी के बदौलत शालीग्राम जी जिंदा हुए। जब शालीग्राम के बिटिया के विवाह पर कन्यादान करने की बात आई तो शालीग्राम जी ने चित्रा जी को आमंत्रित किया–"शालीग्राम जी ने ऊंची आवाज में कहा–चित्रा जी! आप इधर आइए। मंडप पर बैठिए। मेरी बेटी को आपका विशेष आशीर्वाद चाहिए।"[७] भारत के गाँवों, शहरों में आजकल बहुदा विधवा औरत को ऐसे शुभ कार्यों में शरीक नहीं किया जाता, लेकिन फिर भी शालीग्राम के कहने और पूरे परिवार, बिरादरी और रिश्तेदारों को असल बात बताने पर शालीग्राम जी की पत्नी माला खुद चित्रा जी को मंडप पर लेकर आती है अपनी बेटी का कन्यादान कराने के लिए। देखिये–"माला मंडप पर से उठी। सीधे चित्रा जी के पास पहुँची। पैर छूकर आशीष लिए। और हाथ पकड़कर मंडप पर ले आई। महिलाओं के झुंड ने आँसू पोंछकर गाना प्रारंभ किया–'शुभ हो शुभ, आज मंगल का दिन है, शुभ हो शुभ। शुभ बोलू अम्मा, शुभ बोलू पापा, शुभ नगरी के लोग सब, शुभ हो शुभ।"[८] शालीग्राम ने चित्रा जी को देवी की तरह माना और अपनी बेटी का कन्यादान उसके हाथों करवाया खुद माता–पिता के रहते हुए। इतना बड़ा त्याग वह भी भारतीय स्त्री का पत्नी के रूप में। समर्पण ऐसा देखने को मिला। एक बेनाम रिश्ता बना लिया। इसमें नारी की उदार भावना उज्ज्वल होती है, जो किसी अनजाने की भी जरूरत में सहयोग देती है। ऐसी होती है भारत की नारियाँ। वृषाली सु. मांद्रेकर ने 'बेनाम रिश्ता' कहानी के संदर्भ में लिखा है, "समाज में विधवाओं को मान–सम्मान दिलाने के लिए प्रेरणा प्रदान करने वाली कहानियां हैं–'बेनाम रिश्ता' चित्राजी ने अपने पति के दिल को शालिग्राम जी के हृदय में प्रत्यारोपित करने के प्रस्ताव को स्वीकार कर स्वयं विधवा बनी थीं। उनका यह योगदान अतुलनीय है।"[९]

'अनावरण' कहानी की नारी पात्र भारतीय समाज में पनप रहे सास–बहू के रिश्ते की अलग ही मिसाल देने वाली कहानी है। सास–बहू के प्यार की कहानी है। प्रभाती अपने सास के प्रति बहुत ही कृतज्ञ होती है। सास सत्यवती देवी ने अपनी बहू प्रभाती को बेटी की तरह या यूं कहे बेटी से बढ़कर रखा है। बहू को ही नहीं पोतियों को भी सिर–आँखों पर रखा है। प्रभाती की सास की तरह शिक्षा में जागरूक नारियों की जरूरत भारतीय समाज को है– "मैं बी.ए. पास बहू लाई हूँ। गाँव में किसी के घर ऐसी बहू नहीं आई। मुझे मालूम था कि तुम्हें भोजन बनाने का प्रशिक्षण नहीं मिला होगा। तुम कलम चलाती रहीं,

मैं कलछी। इसलिए आज के बाद भोजन बनाने की कोशिश मत करना। आगे पढ़ना, ऑफिसर बनना या वकील बनना।"[10] प्रभाती की सास की तरह आदर्श नारी की भारत की बहुओं की पहली और अंतिम आवश्यकता है। प्रभाती की सास केवल शिक्षा के प्रति ही जागरूक नहीं है बल्कि इनमें समाजसेवी गुण विद्यमान हैं। "एम.ए. पास करवा दिया। अब तुम वकालत पढ़ो। मेरे गाँव में कितनी महिलाएँ हैं, जिन्हें अपना हक नहीं मालूम, कानून नहीं मालूम। पिस रही हैं अंधकार में। उनका केस भी कोई नहीं लड़ता।"[11] इनकी सोच बहुत ही गहरी है और भविष्य के लिए दृढ़ संकल्प लिए हुए है। तभी तो अपनी पोती को बच्चपन से ही प्रशिक्षण देती हैं, डॉक्टर बनने के लिए। "मेरी पोती गुड़िया से नहीं खेलेगी। वह सब खिलौना खरीद लाओ, जिससे खेलकर यह डॉक्टर बन सके। इसे डॉक्टर बनाना है। मेरे गाँव में बहुत सी महिलाएँ डॉक्टर के अभाव में मर गईं।"[12] प्रभाती की सास बेटा और बेटी में बिल्कुल भी फरक नहीं करती है। "बेटे को बहुत प्यार करती थीं, पर मेरी दूसरी बेटी के जन्म पर बेटे की एक नहीं सुनी। मेरे पति की इच्छा थी कि मैं दो बच्चों के बाद ऑपरेशन नहीं करवाऊँ, तीसरा बच्चा पैदा करूँ। पर मेरी माँ जी अड़ गईं, 'क्या कहा, तीसरा बच्चा? क्यों? इसलिए कि ये दोनों बेटियाँ हैं? क्या बेटी, क्या बेटा? प्रभाती भी तो बेटी ही है। अब क्या अंतर है? हमारे समय अंतर था। बेटा बाहर के लिए, बेटी अंदर के लिए थी। अब तो दोनों बाहर–भीतर कर रहे हैं।"[13] प्रभाती की सास की दूरदर्शिता का रूप साफ छलक जाता है। अपने परिवार के लिए ही नहीं दूसरों के लिए भी मार्गदर्शिका बन जाती है–"अस्पताल के उस कमरे में भीड़ जमा हो गई थी। बेटी के पक्ष में मेरी सास के लंबे भाषण के बाद लोगों ने तालियाँ बजाईं। मेरा ऑपरेशन करवा दिया। उसी अस्पताल में उस समय चार अन्य जच्चाओं का भी ऑपरेशन कराने का मन बनवाया। नेता बन गई थीं माँ जी।"[14] प्रभाती की सास एक आदर्श सास है, जिसका अनुकरण प्रत्येक नारी को करना चाहिए। शीतला प्रसाद दुबे का मत इस कहानी के संदर्भ में दृष्टव्य है– "यहाँ लेखिका आज के नारी विमर्श से जुड़ी रचनाकारों (जो अपनी देह को आधार बनाकर ही सारी बातें करती हैं।) को जैसे जवाब दे रही हैं कि नारी की उन्नति का मार्ग उसकी देह नहीं बल्कि उसकी सोच है। उसे परंपरागत बंधन से मुक्ति प्राप्त कर व्यावसायिक उन्नति के मार्ग पर चलना होगा। मात्र स्त्री–मुक्ति एवं स्त्री–विमर्श का झंडा लेकर नारेबाजी करना ही श्रेयस्कर नहीं।"[15]

डायरी लेखन की उपयोगिता और इस परंपरा को कायम रखने के लिए मृदुलाजी ने अपनी कहानी में इस लेखन को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। कहीं ये टूटे हुए पति–पत्नी के रिश्ते को जोड़ने का काम करती है तो कहीं किसी माँ के शक का पर्दा साफ कराती है। 'डायरी के पन्नों पर' कहानी में सुवर्णा और सौहार्द्र के दांपत्य जीवन को फिर से पटरी में लाने का श्रेय डायरी लेखन ने किया। "जज साहब, आपको हमने बहुत परेशान किया। मैंने सौहार्द्र की डायरियाँ पढ़ ली हैं। अब मैं अपने दांपत्य–जीवन में कोई दरार नहीं चाहती। यदि सौहार्द्र को कोई एतराज नहीं तो साथ रहेंगे हम।"[16] इस कहानी के अंत में जज के माध्यम से मानो स्वयं लेखिका दंपतियों को संदेश दे रही हो, "आप दोनों डायरी लिखते रहिए और कभी–कभी एक–दूसरे की डायरी पढ़ते भी रहिए–चुप–चोरी से ही सही।"[17] 'अंतिम संकेत' कहानी में भी डायरी के माध्यम से एक और कड़ी खुलकर सामने आई। इस कहानी में मालती को लगा कि उसकी बेटी को उसके ससुरालवालों ने ही जलाकर मार दिया है। बेटी को बहुत प्यार करने वाली माँ मालती की आशंका को बेटी की डायरियों ने सुलझा दिया– "सामानों को उलटते–पुलटते निहारिका की

दो डायरियाँ हाथ लग गईं। सामानों को अपने चारों ओर बिखरा छोड़ वह डायरी के पन्ने उलटने–पुलटने लगी।......और भी बहुत सी बातें लिखी थीं उन आंखों में छलकते जल में, जो तीन महीने बाद पढ़ पाई है मालती। भागकर पुलिस थाने ही गई थी। डायरी दिखा दी थी। चार–पाँच दिनों की भाग–दौड़ के बाद अनमोल और उसके परिवार के सदस्यों को छुड़ा लाई थी।"[१८]

भारतीय नारियों की परंपरा को दर्शाती एक मार्मिक कहानी है–'रद्दी की वापसी' जिसकी नारी पात्र रामसखी और उसकी बहू गौरी है। घर को सजाने व सँवारने में नारी का बड़ा हाथ होता है। इन कामों में माहिर होती भी है। बचत एवं किफायत करने में नारी से बढ़कर कोई नहीं है, तभी तो वह हर काम सही ढंग से करती है। घर के पुराने सामानों को भी रद्दी में बेचकर संचय करती है। इस कहानी में बहू रद्दी के प्रति अपने सास के लगाव से चुकती नहीं है। घर की रद्दियाँ किसी–न–किसी यादों से जुड़ी होती हैं। इनके बहाने यादों को संजोया जाता है। इसी तथ्य को इस कहानी में पिरोया गया है, "नहीं सावजी, ये बरतन अब नहीं बिकेंगे। ये अभी रद्दी हुए ही कहाँ! माँजी इनके सहारे जिंदा हैं। इनमें इस खानदान की न जाने कितनी पीढ़ियों की कहानियाँ समाई हैं। ये रद्दी नहीं हो सकते। इसके पहले मुझे इनका मोल नहीं मालूम था। अब तो आप इसका मोल चुका ही नहीं सकते। अब ये जीवन भर मेरे साथ रहेंगे। अनमोल हैं ये रद्दियाँ!"[१९]

भारतीय नारियों की कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाती कहानी है–'टिफिन बॉक्स'। इस कहानी की मुख्य पात्र हैं–संतोष जी, जो अपने परिजनों के लिए टिफिन उनकी रुचियों के अनुसार पूरे मनोयोग से भरती हैं। यह सिलसिला पूरे पच्चीस वर्षों तक चला, लेकिन बदलते जमाने के अनुसार उनके परिवार के बच्चे भी पढ़–लिखकर देश–विदेश में काम करने चले गए। माँ की ममता कभी भी समाप्त नहीं होती है। वह खाने के माध्यम से अपना प्यार सभी में लुटाती रहती है। अपनी चिंता करना तो वह भूल ही जाती है, औरों के लिए जीती है, औरों का स्वाद अपना लेती है। तभी तो संतोष जी कहती हैं कि "कोई रोता तभी है जब कोई चुप कराने वाला हो। टिफिन भी तभी लौटाया जाए, जब कोई रुचि की चिंता करने वाला हो।"[२०] इन्होंने अपने काम की कभी अवहेलना नहीं की, लेकिन बदलते जमाने की माँग ने उसे अकेला बना दिया। उनके अकेलेपन को भाँपा जा सकता है इन शब्दों में– "अकेले का कोई मन नहीं होता। पसंद और स्वाद भी नहीं। मैं सबके स्वाद के अनुसार टिफिन भरती थी। वही मेरी रुचि बन गई थी। स्वाद भी। मुझे अपने स्वाद का आनंद आता था। रुचि अनुरूप कार्य का भी। एक–एककर सब उड़ गए।"[२१]

माँ हमेशा माँ होती है, चाहे उसकी संताने कितनी ऊँचाई को छू लें। माँ अपने बच्चों से मिलने के लिए सदैव तत्पर रहती है, वह तो बच्चे हैं जो अपने व्यस्त जीवन से समय ही नहीं निकाल पाते अपने माँ से मिलने के लिए। कैसी विडंबना है, माँ को ही अपने बच्चों से मिलने के लिए बहाने खोजने पड़ रहे हैं। 'नजरें जुड़ाने वास्ते' कहानी में एक भोली–सी माँ का अंकन है, जो अपने सचिव बेटे से मिलने के लिए बेकरार है, नातिन की शादी में शामिल होने के बहाने वह अपने बेटे से मिलने के लिए आतुर थी, जिससे मिलने के लिए दिन गिनती रहती है–"तीन बरस, दो महीने और आज का जोड़ो तो पाँच दिन।"[२२] बेटे से मिलना तो हुआ, लेकिन पलक झपकते ही समय खत्म हो गया। भारत सरकार के सेक्रेटरी का भारी भरकम कद आड़े आ गया।

माँ का प्यार सभी बच्चों के लिए समान होता है, लेकिन परिस्थिति के अनुसार कभी ऐसा महसूस

होता है कि माँ अपने सबसे गरीब और कमजोर बच्चे को अधिक प्यार करती है। बल्कि ऐसा होना चाहिए कि माँ सबसे अमीर बच्चे के पास आराम से रहे, लेकिन ऐसा कतिपय नहीं होता है, 'खुद्दारी का सम्मान' कहानी में भी एक आदर्श माँ का चित्रण है। जो अपने सबसे छोटे बेटे सुभाष के पास रहती है और रहना भी चाहती है, क्योंकि सुभाष अपने दोनों भाइयों से गरीब है, लेकिन खुद्दार है। इसी गुण के कारण भी माँ उसके साथ रहना चाहती है– "मेरा दिल कहता है कि मैं सुभाष के पास ही रहूँ। वह इसलिए कि तुम लोग सुखी हो। सुभाष अभाव में है। मैं उसके अभाव कि पूर्ति तो नहीं, पर शक्ति अवश्य बनना चाहती हूँ। उसके साथ लक्ष्मी नहीं तो क्या, मैं तो रहूँगी न। बेटा! माँ तो नदी होती है। ऊपर से नीचे बहती है। पहाड़ से ढलान की ओर ही जाती है।"[२३]

विकलांगों के लिए समर्पित कहानी है 'एक और निश्चय'। जिसमें शालिनी के माध्यम से विकलांगों की दयनीय स्थिति को उकेरा गया है। जब सब कुछ ठीक चल रहा था, तब बहू ही आकर्षण का केंद्र थी। लेकिन जब दुर्घटना घटी और बहू के साथ एक दर्दनाक हादसा घटित होता है, तो पीड़ित के बजाय उसके पति की ही सबको चिंता होती है–"दो महीने कुर्जी अस्पताल में ही घाव छुटने तक मरती रही शालिनी। आने–जाने वाले सगे–संबंधी, हित–मित्रों में अधिकांश औरतें, शालिनी की शून्य छृष्टि से कतराती हुई उसकी सास को बिन माँगे नेक सलाह दे जातीं–'राहुल को ढाढ़स बंधाइये। हाय! बेचारा कैसे सूख गया है'।"[२४] कैसी विडम्बना है। इससे साफ पता चलता है कि नारी "पितृसत्तात्मक संस्कारों से प्रभावित होती है एवं उनके माध्यम से पहचानी जाती है।"[२५] शालिनी एक मजबूत पात्र है, जिसने अपनी अपंग स्थिति की सच्चाई को स्वीकार कर लिया और उल्टा अपने पति की मनोदशा का उपचार ढूंढ़ती है। बीमार स्थिति पर नारी होते हुए भी अपने पति की सुख–सुविधा का ख्याल रखा जाता है, असल में यही सच्ची भारतीय नारी की पहचान है। पति यदि बीमार हो या न हो उसकी सेवा करना पत्नी का धर्म होता है, लेकिन जब पत्नी बीमार पर जाए तो पति ही बेचारा दिख जाता है। शालिनी के इलाज के लिए राहुल को पहल करनी चाहिए थी, लेकिन यहाँ तो राहुल ही कसाई बना हुआ है– "बनावटी बातों से मुझे सख्त नफरत है। बनावटी पांव, बनावटी ही होंगे न? क्या शालू की वही चाल वापस आ सकती है? नहीं, तो फिर क्या फायदा?"[२६] लेकिन माँ के हठ करने के कारण शालिनी को 'कृत्रिम अंग निर्माण संस्था' ले जाया गया। राहुल साथ नहीं गया। एक साल लग गया शालिनी के हूबहू उसके पहले टांगों की तरह बनने में। शालिनी और राहुल के दांपत्य जीवन में विरह मात्र एक साल का था, लेकिन इसी बीच राहुल ने दूसरी शादी कर ली। इसकी भनक लगते ही शालिनी ने तुरंत एक ही पल में उसने अपने दिल में घुमड़ते विचार को अंजाम देने के लिए कदम उठा लिया–"शालू के चपल चरण तो रिक्शा तक पहुँच गए थे। दद्दा जी की बगल में बैठती हुई रिक्शेवाले से बोली 'स्टेशन लौट चलो।' और पूरी शक्ति लगा सीट पर बैठे ही रिक्शा ठेलने लगी थी। एक के लिए नहीं, अनेक के लिए जीने के निर्णय से भरी शक्ति लिए।"[२७]

मृदुला जी की एक और पूर्ण भारतीय नारी पात्र है, रुक्मिणी उर्फ लाजो रानी 'खूँटा' कहानी की। लाजो रानी पतिव्रता नारी है। परिवार के लिए अपना सारा जीवन समर्पित करती है। परिवार की बड़ी बहू होने के नाते अपने कर्त्तव्य को पूर्ण निष्ठा के साथ निभाती है। पति–पत्नी के बीच बोलचाल बंद होने पर दोनों सासें लाजो रानी को ही समझने की कोशिश करती हैं–"अरे! मरद से भूल–चूक हो जाती है।

ऊंच–नीच व्यवहार भी। औरत तो सब दिन माफ करती आई है। तभी तो पुरुष से बड़ी कहलाती है। तुम भी माफ कर दो।"[२८] 'तभी तो पुरुष से बड़ी कहलाती है' वाक्य मात्र बहलाने के लिए कहा गया प्रतीत होता है, क्योंकि हकीकत में ऐसा कभी नहीं होता है। यह मात्र कहने वाली बात है। नारी जीवन को तसल्ली देने वाली बात है। लाजो रानी की स्थिति में भी दोषी या गलत काम करने वाला स्वयं उसका पति है पर लाजो रानी को ही समझाया जाता है। असली बात सामने आने पर भी औरतें ही उसे माफ करने के लिए प्रेरित करती हैं। बड़ी ननद भी पुरुषों की ही तरफदारी करती है–"यह भी कोई बात हुई। मरदों द्वारा ऐसा–वैसा होता ही रहता है। औरत को तो उसी घर में रहना है। जाएगी कहां? इसलिए तो मरदों का ऊंचा–नीचा भी बर्दाश्त करती आई है।"[२९] इसमें दो बातें सामने आती हैं–पहला पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों का वर्चस्व और दूसरा नारियों की विवशता। नारी सदा से ही अपने अस्तित्त्व की पहचान के लिए आवाज उठाती हैं, पर समाज में इनकी आवाज को सुना नहीं जाता–"सदियों से समाज के पितृसत्तात्मक ढाँचे में अस्तित्त्व, अस्मिता और अधिकारविहीन जीवन–निर्वाह करती स्त्री, जिसे समाज और घर–परिवार में दोयम–दर्जा मिला और परिधि में सिमटी संकीर्ण जीवन की परिभाषा। उसे कई यातनापूर्ण परंपराओं और जटिल रूढ़ियों में जकड़ा गया।"[३०]

लाजो रानी ने भी अपने पति का साथ नहीं छोड़ा अपनी भारतीय नारी होने की पहचान को कायम रखा और मायके से घर वापसी का बुलावा आने पर भी वापस नहीं जाती है। ससुराल की खूँटा बनी रहना चाहती है। इस कहानी पर जयश्री राय का कहना है कि "मृदुला जी की कहानियों में चित्रित ये कथा नायिकाएं स्त्री–विमर्श स्वरूप को एक बहुत ही सार्थक दिशा देती हैं। चीख–चिल्लाहट और उथली प्रतिक्रिया से दूर मृदुला जी की ये मानस कन्याएं पूरी मर्यादा और आत्मविश्वास के साथ अपने घर और दुनिया में अपने योग्य स्थान बनाने के लिए सतत अग्रसर हैं।"[३१]

मृदुला जी की 'कुछ भी नहीं बदला' कहानी अंतरजातीय विवाह पर आधारित कहानी है। इस कहानी में राजपरी को मुस्लिम लड़के से प्यार होता है और दोनों भागकर शादी भी कर लेते हैं, लेकिन इनकी शादी टूट जाती है। घर से भागी हुई राजपरी के लिए वापस अपने घर अपने गाँव जाना खुद को कुएं में धकेलने के बराबर था। इसलिए वापस अपने गाँव की तरफ न मुड़कर आगे बढ़ जाती है और साध्वी बन जाती है। यह कहानी नारियों की पाबंदियों और उसके संकुचित जीवन की कथा है। शिक्षा के लिए आतुर राजपरी को भी अपने चचेरे भाई रामबली की तरह पढ़ने का बहुत मन था। दादी से पढ़ने के लिए अनुमति माँगी भी, लेकिन दादी ने तो वही पाठ पढ़ा दिया, जो अशिक्षित भारतीय नारी की जुबानी होती है–"चुपकर! क्यों पढ़ेगी तू। तुम्हें क्या कचहरी करनी है। या साधु–महात्मा बनकर शास्त्र–पुराण पढ़ना और बांचना है। तुम्हें तो घर की मालिकिन बनना है। देखना सुंदर और संपन्न दूल्हा आएगा तुम्हारे लिए। रानी बनकर घर में राज करेगी।"[३२] लेकिन ग्रामीण स्तर पर ऐसा दूल्हा मिलना तो न के बराबर होता है। राजपरी के प्रेम संबंध की खबर गाँव में फैलते ही उसकी शादी किसी और से तय की जाती है, पर इसी प्रेम संबंध को जानकर लड़के वाले सगुन लौटा देते हैं। फिर भी अचेतावस्था में राजपरी की शादी एक द्रुत्ती लड़के से करवा दी जाती है, पर चेतना लौटने पर राजपरी इस शादी से इंकार कर देती है और दूसरे दिन ही राजपरी को मायका भेज दिया जाता है। पर, मायका, उसका गाँव ही उसके जान के दुश्मन बन गए–"गाँव वालों ने कहा–"जहर देकर मार दो। या काटकर घर में ही जमीन में गाड़ दो।

किसी को पता भी नहीं चलेगा।"[३३] ऐसे दकियानूसी विचार भारत के गाँवों में रहे हैं। जहाँ माता–पिता भी इन विचारों का समर्थन करते हैं। राजपरी के पिता ने भी उसे ढूंढने का कोई विशेष प्रयास नहीं किया। बड़े ही आसानी से अपनी बेटी को मरा हुआ समझ लिया। उसके चचेरे भाई रामबली ने उसे ढूंढने की कोशिश तो की, पर सफल नहीं हो पाया। लेकिन राजपरी द्वारा भागकर प्रेम विवाह करना उसे भी गुनाह ही लगा। इसके डर से उसने अपनी दोनों बेटियों की शादी जल्द ही करवा दी। राजपरी और रामबली जीवन के प्रथम चरण में बिछड़ गए और अंतिम चरण में मिल जाते हैं। लेकिन तब तक राजपरी कई स्थितियों से गुजर चुकी थी। रामबली से अपना परिचय देती है–"हाँ! मैं तुम्हारी राजपरी ही थी, पर अब नहीं। तुम्हारी राजपरी मर गई। उसके अंदर से सकीला बानू निकली। सकीला बानू से धर्मशीला, धर्मशीला से माई राम बन गई।"[३४] लेकिन पचास वर्ष के बाद अपने भाई से मिलने पर राजपरी को एक बार फिर अपने गाँव जाने का मन हुआ। पर वह अच्छी तरह जानती थी कि उसके जाने से गाँव में हलचल मच जाएगी। उससे जुड़ा प्रसंग फिर से जग जाएगा और इस उम्र में भी लोग उसकी जान के पीछे पड़ जाएंगे। फिर भी रामबली के द्वारा गाँव के बदलाव की कथा सुनकर राजपरी ने हिम्मत बढ़ाई और दोनों भाई–बहन गाँव की ओर निकाल पड़े। सफर के दौरान राजपरी प्रकृति और समाज में आए बदलाव को देखकर खुश होती है, पर फल खरीदने के लिए उतरे रामबली की बदौलत गाड़ी के आसपास लोगों के बीच हो रहे वार्तालाप से राजपरी को गाँव की खोखले बदलाव की भनक लग जाती है। जिससे वह ड्राइवर से गाड़ी मुड़वा देती है और जाते–जाते रामबली से कहती है–"नहीं–नहीं। गाँव की सड़क का पक्की होना, ऊपरी बदलाव है। अंदर कुछ नहीं बदला। सब झूठ। झूठा दिलासा दिलाकर तुम मुझे ले जा रहे हो। मुझे सब पता लग गया। तुम मुझे मार दोगे। मैं नहीं जाऊँगी उस गाँव में। नहीं देखूँगी गाँव। जो डोर छुट गयी, वह टूट गयी।"[३५] इस कहानी ने भारतीय ग्रामीण स्त्री की वास्तविक दशा को प्रस्तुत किया। जो स्त्री की बेबसी और संघर्ष की कथा से जुड़ी है। यह सच है कि शहरीकरण एवं औद्योगिकीकरण के कारण शहरों में परिवर्तन होते चला गया। इन्हीं कारणों से गाँव में भी बदलाव हुआ है। पर, बदलाव केवल बाहरी आवरण का ही हुआ है, अंदर से सोच, मान्यता, धर्म आदि में कोई बदलाव नहीं हुआ है। रीति रिवाज का बंधन, परिवार की इज्जत, गाँव वालों का डर अभी भी भारतीय गाँवों में हैं। भारतीय समाज के लिए यह कहानी एक चुनौती है कि केवल ऊपरी बदलाव को न स्वीकरे। अंदर से बदलाव की जरूरत को महसूस करें, समझें–जानें।

मृदुला जी अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय गाँव एवं शहरों के सूक्ष्म यथार्थ तत्वों को उजागर करती हैं। डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली ने इस संदर्भ में कहा भी है कि "मृदुला जी ने भारतीय गाँवों, गाँवों के संस्कारों, गाँव की भाषा, ग्रामीणों की सरल प्रकृति को अच्छी तरह समझा है, सराहा है और रुचिपूर्वक चित्रित किया है।"[३६] ग्रामीण क्षेत्रों एवं शहरी रंग–रूप में मृदुलाजी की निगाहें पैनी एवं तेज हैं। दूसरे शब्दों में "भारत की सच्ची झाँकी इनकी कहानियाँ दिखाई देती हैं।"[३७] इनकी कहानी में सच्चाई होती है। इनकी कहानियों का कथानक भारतीय परिवार बोध से जुड़ा हुआ है। नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती, दिखाती, सिखाती, संदेश पहुंचाती इनकी कहानियाँ परिवार को तोड़ने के पक्ष में नहीं, बल्कि भारतीयता के प्रबल आग्रह के साथ परिवार बोध की स्थापना करती हैं।

संदर्भ

१. मिश्र, रवींद्रनाथ (२०१७); मृदुला सिन्हा का साहित्यः विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. ११६

२. सिन्हा, मृदुला (२०१४); अपना जीवन (कहानी संग्रह), यश प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. ७

३. वही, पृ. ७

४. शर्मा, बल्देव भाई (२०१८); सहजता की भव्यता, (प्र. संपादक), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. ४६४

५. सिन्हा, मृदुला (२०१४); अपना जीवन (कहानी संग्रह), यश प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. १५

६. वही, पृ. २२ ७. वही, पृ. २१ ८. वही, पृ. २२

६. मिश्र, रवींद्रनाथ (२०१७); मृदुला सिन्हा का साहित्यः विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. १३१

१०. सिन्हा, मृदुला (२०१३); ढाई बीघा जमीन (कहानी संग्रह), ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, पृ. २०

११. वही, पृ. २० १२. वही, पृ. १६ १३. वही, पृ. २२ १४. वही, पृ. २२

१५. मिश्र, रवींद्रनाथ (२०१७); मृदुला सिन्हा का साहित्यः विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. १३७

१६. सिन्हा, मृदुला (२०१३); ढाई बीघा जमीन (कहानी संग्रह), ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, पृ. ८१

१७. वही, पृ. ८१ १८. वही, पृ. १२६–१२७ १६.वही, पृ. १४३

२०. सिन्हा, मृदुला (२०१४); अंतिम इच्छा (कहानी संग्रह), यश प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. ८७

२१. वही, पृ. ८७ २२. वही, पृ. ६३

२३. सिन्हा, मृदुला (२०१४); अपना जीवन (कहानी संग्रह), यश प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. ७६

२४. वही, पृ. ३४

२५. शर्मा, डॉ. भारती (२०१८); स्त्री–विमर्श हाशिये से पृष्ठ तक, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ. १७

२६. सिन्हा, मृदुला (२०१४); अपना जीवन (कहानी संग्रह), यश प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१४, पृ. ३५

२७. वही, पृ. ३८ २८.वही, पृ. ६० २६.वही, पृ. ६१

३०. शर्मा, डॉ. भारती (२०१८); स्त्री–विमर्श हाशिये से पृष्ठ तक, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पृ. २४

३१.मिश्र, रवींद्रनाथ (२०१७); मृदुला सिन्हा का साहित्यः विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. १०६

३२.सिन्हा, मृदुला (२०१४); अंतिम इच्छा (कहानी संग्रह), यश प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. १२४

३३.वही, पृ. १२५ ३४.वही, पृ. १२६ ३५.वही, पृ. १३०

३६.मिश्र, रवींद्रनाथ (२०१७); मृदुला सिन्हा का साहित्यः विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. ५७

३७. शर्मा, बल्देव भाई (२०१८); सहजता की भव्यता, (प्र. संपादक), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१८, पृ. ३१७

Vol IX Issue 2 December 2023
ISSN (P) : 2395-7352
eISSN : 2581-6780

MIZORAM UNIVERSITY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

(A Bi-Annual Refereed Journal)

MIZORAM UNIVERSITY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

A Refereed Bi-annual Journal

ISSN(P): 2395-7352
eISSN: 2581-6780

Chief Editor

Prof. Bhartendu Singh

Editor

Dr. H. Elizabeth

Volume IX, Issue 2

December 2023

MIZORAM UNIVERSITY
NAAC Accredited Grade 'A' (2019)
(A CENTRAL UNIVERSITY)
TANHRIL, AIZAWL – 796 004
MIZORAM, INDIA

MIZORAM UNIVERSITY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A Refereed Bi-annual Journal
ISSN(P): 2395-7352
eISSN: 2581-6780

CONTENTS

Volume IX, Issue 2 **December 2023**

From the Desk of Chief Editor vii

School Complex in National Education Policy: An Opportunity for Social Work Profession 1
Sanjai Bhatt

Locating the North-East in India's Act East Policy 16
Khwairakpam Goutam Singh & Ayangbam Shyamkishor

Participatory Experiences of Indian Democracy 26
Amitava Kanjilal

Challenges to Human Rights in Detention Camps: An Analysis of Refugee Children's Resilience in *The Bone Sparrow* 32
Pooja K N & Anjum Khan M

Electoral Politics and Coalition Government: A Study of Mara Autonomous District Council (MADC), Mizoram 40
Steffi C Beingiachhiezi & J. Doungel

Citizen Centric Governance: A Study of Haryana Right to Service Act, 2014 48
Rajbir Singh & Aditya

War in Ukraine and India's Foreign Policy 62
Rashid Abbasi

Aspects of Tolerance and Violence under the Late Mughal Ruling Groups of Bengal in the Eyes of Contemporary Counter-Narrative 73
Imon ul Hossain

Struggling for Existence during and after COVID-19 in Rural India - A Micro Study 80
Priyadarshini Sen

Indigenous Language Promotion through the Use of Digital Media in Nagaland 233
Alankar Kaushik & Rhutulu Dukru

Suakliana Beisei Vanram: A Study of Eschatology with Special Reference 'Kan Nghak Reng Che Kan Lalber' by Suakliana 247
Thang Sian Tluang & Ruth Lalremruati

Developmental Path of Hindi Story | हिन्दी कहानी का विकासपथ 255
Vanlalpari Chinjan & Akhilesh Kumar Sharma
वानललपारी चिंजन & अखिलेश कुमार शर्मा

Competence of High School Science Teachers on Teaching of Science Process Skills 269
Lalthaduha & Nitu Kaur

Some Elements of Animistic Beliefs among the Buddhist Tribe of Dirang in Arunachal Pradesh 280
Tenzin Thekcho

MIZORAM UNIVERSITY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A Refereed Bi-annual Journal
ISSN(P): 2395-7352
eISSN: 2581-6780
Vol. IX, Issue 2 (December 2023) http://www.mzuhssjournal.in/

Developmental Path of Hindi Story

Vanlalpari Chinjan*
Akhilesh Kumar Sharma†

Abstract

From ancient times till now, the usefulness of stories remains intact in human society. Be it any caste, religion, class or sect of people, the story has been heard from everyone's mouth. This tradition of oral storytelling is centuries old. Due to this tradition, the foundation of story genre was laid in Hindi literature. The story is related to man, society and public life. The story is influenced by the country-period and environment. For this reason, the form of the story has also been changing. It has seen changes in its existence by going through many movements. These changes are an indication of the richness of Hindi literature. From ancient times to modern times, Hindi stories evolved in different forms and progressed. Hindi newspapers and magazines have played a very important role in providing a strong direction to Hindi fiction.

Keywords*: Tradition, History, Movements, Hindi Newspaper and Magazines.*

*Research Scholar, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram, India. Email: parteii09@gmail.com
†Assistant Professor, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram, India. Email: akhileshksharma82@gmail.com

हिन्दी कहानी का विकासपथ

वानललपारी चिंजन[‡]
अखिलेश कुमार शर्मा[§]

शोध-पत्र सार

प्राचीन काल से लेकर आज तक मानव समाज में कहानी की उपादेयता बरकरार है। किसी भी जाति, धर्म, वर्ग, संप्रदाय के लोग हों, सभी के मुख-विवर से कहानी सुनी-सुनाई जाती रही है। मौखिक कहानी की यह परंपरा सदियों पुरानी है। इसी परंपरा के चलते हिन्दी साहित्य में कहानी विधा की नींव गढ़ी गई। कहानी का संबंध मनुष्य, समाज और जन जीवन से है। कहानी देशकाल-वातावरण से प्रभावित होती है। इसी कारण कहानी के स्वरूप में भी परिवर्तन होता आया है। इसने कई आंदोलनों से गुजरकर अपने अस्तित्व में परिवर्तन देखा है। यह परिवर्तन हिन्दी साहित्य की समृद्धता की ओर संकेत है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक आते-आते हिन्दी कहानी विभिन्न रूपों में ढलकर आगे बढ़ती गई। हिन्दी कथा साहित्य को मजबूत दिशा प्रदान कराने में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

बीज शब्द: *परंपरा, इतिहास, आंदोलन, हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ।*

हिन्दी साहित्य में गद्य विधा की शुरूआत सामान्यत: आधुनिक काल यानी 1900 ई. से मानी गई है। इस वर्ष से हिन्दी कहानी का मुद्रित रूप सरस्वती पत्रिका के जरिए सामने आया। हालाँकि इसके पहले भी भारतीय परंपरा में मौखिक रूप से कथा एवं कहानियाँ प्राचीन काल से विद्यमान रही हैं। "कहानी में कहने की विशेषता बराबर महत्वपूर्ण रही है। लोक और शिष्ट दोनों रूपों में उसका सम्बन्ध वाचिक परंपरा से अधिक रहा। यह रोचक बात है कि हमारी भाषा के मुहावरे में कविता लिखी जाती है और कहानी कही जाती है। तब यह

[‡]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजोल, मिज़ोरम. ई-मेल: parteii09@gmail.com
[§]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजोल, मिज़ोरम. ई-मेल: akhileshksharma82@gmail.com

स्वाभाविक है कि अपने नये मुद्रित रूप में कहानी का हिंदी साहित्य में आविर्भाव बीसवीं शती के आरंभ में होता है, साहित्यिक पत्रकारिता के उदय के साथ। मनोरंजन से हटकर एक अनुभूति का सीधा साक्षात्कार अब उसका विधागत लक्ष्य हो जाता है।"[1] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कहानी केवल मनोरंजन का साधन नहीं है; वरन यह एक अनुभूति है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अनुभूत की जाती है। इन अनुभूतियों के कारण ही कहानी विधा का अस्तित्व मजबूत बनता गया है।

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में भारत की प्राचीन कथा, लोक कथा एवं पाश्चात्य कथा का सम्मिलित रूप देखने को मिलता है। मोटे तौर पर हिन्दी कथा साहित्य की उत्पत्ति आधुनिक काल से ही मानी गयी है। हिंदी कहानी का आरंभ 'सरस्वती' पत्रिका (जिसका प्रकाशन वर्ष 1900 ई.) में प्रकाशित कहानियों से माना जाता है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में "हिंदी कहानियों का प्रारंभ सभी इतिहासकारों ने एक स्वर से 'सरस्वती' के प्रकाशन से ही स्वीकार किया है।"[2] इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन पूर्व भी कहानियाँ लिखी गई होंगी।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार - "अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाओं में जैसी छोटी-छोटी आख्यायिकाएँ या कहानियाँ निकला करती हैं, वैसी कहानियों की रचना 'गल्प' के नाम से बंगभाषा में चल पड़ी थीं। ये कहानियाँ जीवन के बड़े मार्मिक और भावव्यंजक खंडचित्रों के रूप में होती थीं। द्वितीय उत्थान की सारी प्रवृत्तियों का आभास लेकर प्रकट होने वाली 'सरस्वती' पत्रिका में इस प्रकार की छोटी कहानियों के दर्शन होने लगे।"[3]

अतः हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में पाश्चात्य और बांग्ला साहित्य का भी योगदान रहा है। 'सरस्वती' पत्रिका हिन्दी कहानी के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। इस तथ्य की पूर्ति के लिए डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल के शब्दों को देखा जा सकता है - "सरस्वती के प्रकाशन के पूर्व आधुनिक कलात्मक हिन्दी कहानियों का अस्तित्व नहीं था।"[4] हिन्दी साहित्य में हिन्दी कहानी एक प्रमुख कथात्मक विधा है। इस विधा से हिन्दी साहित्य में नया मोड़ आया है; परंतु साथ ही हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी को लेकर विद्वानों में मतभेद रहा है। हिन्दी की प्रारंभिक कहानियों में कहानी कला के गुण कम पाए गए। जाहिर-सी बात है कि शुरुआती दौड़ में किसी भी विधा का रूप पूर्ण नहीं होता है। हिन्दी कहानी की प्रारंभिक अवस्था में प्राचीन-कथा-साहित्य, लोक-कथा-साहित्य तथा पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव देखने को मिलता

है। भारत का कथा साहित्य उपनिषदों, बौद्ध और जैन साहित्यों तथा संस्कृत कथा साहित्य में जन्म ले रहा था। प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य में रचे गए पद्यबद्ध कथाओं का भी योगदान रहा है। चारणों के साहित्य में भी कथा-साहित्य के रूप यथा- इतिहास, बात, प्रसंग आदि पाए गए हैं। हिन्दी कहानी की पृष्ठभूमि भारत के प्राचीन कथा साहित्य में विराजमान है। भले ही इसका रूप बिखरा हुआ क्यों न हो। यह विविध भाषाओं से गुजरते हुए अपने स्वरूप का गठन करती चली है।

लोक कथाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। प्राचीन जनजीवन में कथाओं का मौखिक रूप विद्यमान रहा, पर मौखिक रूप में भी यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होता चला आया, जिसके कारण लोक कथाओं से प्रेरित होकर हिन्दी कहानियों का विकास हुआ। हिन्दी कथा साहित्य में पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव को भी देखा जा सकता है। हिन्दी कहानी का उद्भव बीसवीं सदी के प्रारंभ में हुआ। साथ ही प्रेरणा का स्रोत लेकर 1900 ई. के आस-पास शेक्सपियर के अनेक नाटकों के अनुवाद 'सरस्वती' में कहानी रूप में प्रस्तुत किए गए। इन तथ्यों की पुष्टि के लिए डॉ. रामचन्द्र तिवारी के कथन को यहाँ देखा जा सकता है- "जहाँ तक 'इतिवृत्त' का प्रश्न है, हिन्दी-कहानीकारों ने प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य, लोक-कथाओं तथा पाश्चात्य-साहित्य इन तीनों से सामग्री ली।"[5] अतः हिन्दी कहानियों का विकास समृद्ध एवं व्यापक रूप में हुआ है, जिससे इसका स्वरूप विस्तृत होता गया है।

हिन्दी कहानी की प्रारंभिक अवस्था बिखरी हुईथी, पर बदलते समय के साथ-साथ अनेक कथाकार सामने उभरकर आए; लेकिन मुंशी प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी के विकास में एक नया मोड़ आया जिसके तहत हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को दर्शाने के लिए प्रेमचंद को केंद्र में रखा जा सकता है। इस प्रकार प्रेमचंद को कहानी विधा का आधार स्तम्भ मानते हुए हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

a) प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी
b) प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी
c) प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी

यह काल हिन्दी कहानी का शैशावस्था काल कहा जा सकता है। इस काल में हिन्दी कहानी का जन्म हुआ। अपने स्वरूप की पहचान के लिए हिन्दी कहानी कई रूप धारण करते

हुए अग्रसर होती गई। इस काल में कहानी की कोई विशेष पहचान नहीं थी। लेकिन इसकी शिल्पविधि का विकास हो रहा था। हिन्दी कहानी का प्रारंभ मुख्यतः द्विवेदी युग से ही माना जा सकता है। तथापि इस काल में अधिकतर साहित्यकार नाटक और निबंध लिखने में सक्रिय थे। इस काल में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बहुत-से कहानीकार सामने आए। इसी के तहत 'सरस्वती' पत्रिका में 1900ई. में प्रकाशित किशोरी लाल गोस्वामी कृत 'इंदुमती' को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना। लेकिन शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह कहानी शेक्सपीयर के 'टेम्पेस्ट' का अनुवाद है, जिसके कारण यह मौलिक रचना नहीं कही जा सकती है। इसके अलावा मुंशी इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1872) को रामरतन भटनागर ने हिन्दी की प्रथम कहानी माना है। तो माधवराव सप्रे कृत 'एक टोकरी भर मिट्टी' (1901) को देवीप्रसाद वर्मा ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है।

इस कतार में रामचन्द्र शुल्क कृत 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903) को डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल ने हिन्दी की प्रथम कहानी माना है। तो बंग महिला कृत 'दुलाई वाली' (1907) को रायकृष्ण दास ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है। इस प्रकार हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी को लेकर विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न हैं। उपर्युक्त भिन्न मतों में सामान्यतः 'इन्दुमती' को ही हिन्दी की प्रथम कहानी माना गया है। जबकि "शिल्पविधि की दृष्टि से हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी है, रामचन्द्र शुल्क कृत 'ग्यारह वर्ष का समय'।"[6] इस कहानी से ही मौलिक हिन्दी कहानी की शुरुआत मानी जाती है। इसके आगे भी हिन्दी की मौलिक कहानियों का सृजन होता गया। साथ में बंगला तथा अंग्रेजी आदि से भी अनुवाद किया जाने लगा।

1906 ई. में पं. वेंकटेशनारायण की 'एक अशरफी की आत्मा-कहानी', लाला पार्वतीनन्दन की 'एक के दो दो', पं. सूर्यनारायण दीक्षित की 'चन्द्रहास का अद्भुत आख्यान' आदि कई मौलिक कहानियाँ 'सरस्वती' में प्रकाशित हुईं। "सातवें वर्ष की 'सरस्वती' में बंगमहिला कृत 'दुलाई वाली' कहानी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानी गयी है। कुछ आलोचकों ने इसे ही हिन्दी की आदि मौलिक कहानी के रूप में स्वीकार किया है।"[7] इसी क्रम में 'सरस्वती' के नवें और दसवें वर्ष में वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'राखीबन्द भाई' तथा 'तातार और एक वीर राजपूत' कहानियाँ प्रकाशित हुईं। एक ओर 'सरस्वती' के नवें वर्ष ही यानि "1909 में काशी से 'इन्दु' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ और इसी के माध्यम से 'प्रसाद' का कहानी-साहित्य में प्रवेश हुआ।"[8]

इनकी प्रारंभिक कहानियाँ - आग, चन्दा, गुलाम, चितौर-उद्धार आदि प्रकाशित हुईं। बंगला कहानियों के अनुवादों का प्रकाशन अधिकतर इसी पत्रिका में हुआ। "बंगला के प्रसिद्ध पत्र 'प्रवासी' से अनेक कहानियों का अनुवाद पं॰ पारसनाथ त्रिपाठी ने 'इन्दु' में प्रस्तुत किया।

हिन्दी-कहानी के विकास में प्रवासी का प्रभाव ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।"[9] इस प्रकार कहानियों के मुद्रित रूप का अंकन होता गया और कहानी के इतिहास का रूप गढ़ता गया और कहानी का विकास होता चला गया। कहानी विधा की उत्पत्ति के विषय में श्री रामस्वरुप चतुर्वेदी का कथन दृष्टव्य है- "कहानी हर रूप में उपन्यास से पुरानी विधा है। गीत और कहानी मानव सभ्यता से साक्षरता-काल के पहले से जुड़े हुए हैं, यद्यपि दोनों के लक्ष्य कुछ भिन्न रहे हैं। गीत में मनुष्य ने अपने को व्यक्त किया और कहानी से दूसरों का मनोरंजन। आदिम काल से चली आती ये वृत्तियाँ इन दोनों काव्य-रूपों से आज भी जुड़ी दिखती हैं।"[10] इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कहानी बहुत पुरानी विधा है, जिसका अस्तित्व मनुष्य के साथ बहुत गहरा है। इस प्रकार देखा जाए तो इस युग में कहानीकार सामने तो आए पर इनकी कहानियों में मौलिकता कम और अनुवाद कार्य अधिक पाया गया। प्रेमचंद और प्रसाद से पूर्व कहानी लेखन बहुत कम हुए। इस युग की रचित कहानियों में आम जीवन की सच्चाईयों का रूप बहुत कम मिलता है। अतः इस काल में जितनी भी कहानी सामने आईं, वें पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही जनता के सामने प्रस्तुत हुईं।

प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी

हिन्दी कहानी का विकास क्रम मूलत: प्रेमचंद युग से ही देखा जा सकता है। प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी को नई राह प्राप्त हुई। इस युग में कथा का विकास जादुई एवं तिलिस्मी चमत्कारों से हटकर चरित्र की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर होने लगा। प्रेमचंद की प्रथम कहानी 'पंचपरमेश्वर' का प्रकाशन सरस्वती में 1916 में हुआ। इस कहानी से मनोवैज्ञानिक कथानकों की शुरुवात होती है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने इस युग को कहानी के विकास युग की संज्ञा दी है। वे लिखते हैं - "विकास-युग के प्रथम चरण में सरस्वती के माध्यम से चंद्रधर शर्मा गुलेरी और प्रेमचंद, इन्दु के माध्यम से 'प्रसाद' तथा हिन्दी गल्पमाला के माध्यम से जी. पी. श्रीवास्तव तथा इलाचन्द्र जोशी आदि प्रमुख कहानी लेखक सामने आये।"[11] फिर आगे चलकर हिन्दी कहानियों में दो धाराएँ सामने आईं - पहला, यथार्थवादी दृष्टिकोण जिसमें जीवन के व्यावहारिक पक्ष को दर्शाया गया। इसमें प्रेमचंद, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन प्रमुख हैं। दूसरा, आदर्शवादी दृष्टिकोण जिसमें भाव सत्य को

महत्त्वपूर्ण रखा गया। इसमें जयशंकर प्रसाद, चंडीप्रसाद तथा राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह प्रमुख हैं।

प्रेमचंद ने अपने युग को एक नई राह प्रदान की जिसमें अपनी कहानियों के माध्यम से 1930 तक आते-आते ये कथा-साहित्य के सम्राट कहलाए। इन्होंने 300 से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इनकी विशिष्टता यह है कि इन्होंने अपने आपको युगानुसार परिवर्तित किया। उनके लेखन की शुरुआती दौड़ से लेकर उनके अंतिम दिनों तक उनके दृष्टिकोण और मान्यताओं में बदलाव आया है। इनकी कहानियाँ ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित होती हैं। उनके अनुसार कहानी जीवन का अंग है। इसीलिए ये सामाजिक सत्य से मनोवैज्ञानिक सत्य तक पहुँच गए। इस युग में हिन्दी कहानियों के विभिन्न रूप उभरे। आलोचकों के मतानुसार यह विभिन्न रूप इस प्रकार हैं-

(क) चरित्र प्रधान कहानियाँ - इन कहानियों में लेखक का मुख्य उद्देश्य किसी चरित्र का सुंदर चित्रण करने से होता है। इस प्रकार के कहानी लेखन में प्रमुख प्रेमचंद हैं। इनकी आत्माराम, बड़े घर की बेटी, बाँका गुमान, दफ्तरी, बूढ़ी काकी आदि कहानियाँ चरित्र प्रधान कहानियाँ हैं।

(ख) वातावरण प्रधान कहानियाँ - इस तरह के कहानियों में भावना के प्रेरक उपादानों को कथानक का मूल कारण बना दिया जाता है और कहानी में यह सजीव होकर कहानी की केंद्र बिन्दु बन जाते हैं। इसके अंतर्गत जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन तथा गोविंदवल्लभ पन्त आदि लेखक आते हैं। प्रसाद जी की आकाशदीप, प्रतिध्वनि, बिसाती, हिमालय का पथिक आदि कहानियाँ वातावरण प्रधान कहानियाँ हैं।

(ग) कथानक प्रधान कहानियाँ - इस प्रकार की कहानियों में चरित्र तथा परिस्थितियों के संबंध पर ज़ोर दिया जाता है। इस प्रकार की कहानी लिखने वालों में विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', ज्वालादत्त शर्मा तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि प्रमुख हैं।

(घ) कार्य प्रधान कहानियाँ - इन कहानियों में लेखक केवल कार्य पर ही शुरूआत से अंत तक बना रहता है। इसके अंतर्गत गोपालराम गहमरी की जासूसी कहानियाँ और दुर्गाप्रसाद खत्री की वैज्ञानिक कहानियाँ आती हैं।

इन उपर्युक्त कहानियों के अलावा ऐतिहासिक, हास्य एवं व्यंग्य प्रधान, प्राकृतवादी और प्रतीकवादी कहानियाँ भी इस युग में लिखी गईं और ये कहानियाँ अपने आप में ऐतिहासिक महत्त्व रखती हैं। लेकिन आज इस युग की कहानियों के वर्गीकरण को वैज्ञानिक नहीं माना जा रहा है क्योंकि कहानी को अनुभूति की एक इकाई माना जा रहा है। प्रत्येक काल या युग

के मूल्यांकन के लिए अपने मानदंड होते हैं। इसलिए “प्रेमचंद-युग के आलोचक से आज के मूल्यों और मानों की आशा करना उसके साथ अन्याय करना है”[12] प्रत्येक युग के लेखकों की अपनी पहचान होती है। इस काल में प्रेमचंद के कहानियों का चरम रूप उभरकर सामने आया है।

शैली रूपों में भी विकास कहानी प्रकारों के साथ हुआ। पाँच शैलियों का प्रमुख रूप से प्रचलन होता है। प्रथम वर्णनात्मक शैली है। इसका प्रचलन सबसे अधिक होता है। इसमें लेखक पूरी की पूरी कहानी को सुनाता है। दूसरी संलाप शैली है। इस शैली का कम प्रयोग होता है। इसमें वार्तालाप के जरिए कथा और चरित्र का विकास होता है। तीसरी शैली के अंतर्गत आत्म-चरितात्मक शैली आती है। इसमें लेखक खुद को उत्तम पुरुष में रखता है और कहानी रचता है। चौथा है पत्र-शैली और पाँचवाँ है डायरी-शैली। इन शैलियों में कहानियों की रचना होती रही और कहानी विधा समृद्ध होती गई।

इस युग के अंतिम चरण में हिन्दी कहानियों की नई दिशा सामने आई। स्वयं प्रेमचंद भी पहले आदर्शवादी कहानी लिखते थे, लेकिन अपने युग की सुधारवादी परछाई में वे भी यथार्थयुक्त कहानियाँ लिखने लगे। प्रेमचंद युग से ही कथा का क्षेत्र बदल जाता है और मध्यम वर्ग एवं उनकी समस्याओं को उठाया जाने लगा। कथा का मूल केंद्र मानव जीवन की सच्चाईयों से जुड़ने लगा। इन नए विषयों को कथा साहित्य का केंद्र बनाते हुए अनेक नए लेखक सामने आए। इनमें इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, जैनेन्द्र, उपेन्द्रनाथ ‘अश्क’ और अज्ञेय प्रमुख हैं। इन लेखकों में जैनेन्द्र प्रेमचंद युग के अंतिम चरण के सबसे योग्य लेखक के रूप में उभर कर आए। इनके अलावा भी कई लेखकों का आगमन हुआ। इन लेखकों के बीच प्रेमचंद युग में लेखिकाओं का भी पूर्ण योगदान सामने आया, जिनमें उषादेवी मित्रा, होमवती देवी, सत्यवती मलिक और कमला चौधरी प्रमुख हैं। इन लेखिकाओं ने नारी की निजी खूबियों एवं घरेलू जीवन की स्थिति का सुंदर रूप प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

प्रेमचंद के बाद की कहानियों का नाम किसी एक व्यक्ति विशेष के नाम से नहीं जुड़ा। दूसरे शब्दों में कहानी कला ने नया मोड़ लिया और यह विस्तृत होती चली गई। प्रेमचंदयुगीन कहानी के बाद हिन्दी कहानी लेखन के क्षेत्र में बदलाव आया और इसका दायरा विस्तृत रूप में फैलता गया। लेकिन साथ ही इसकी काल अवधि सीमित या कम होती गई।

1936 के बाद हिन्दी कहानी विभिन्न वादों में बँट गई। हिन्दी कहानी के विस्तार में पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। सन 1938 में 'कहानी' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ, पर यह 1942 में किसी कारणवश बंद हो गई। लेकिन दूसरी ओर 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के जरिए हंसराज रहबर, अमृतराय, रांगेय राघव आदि लेखक कहानी लेखन में सामने आए। इस युग के शुरुआती समय में देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, लेकिन इस युग के प्रारम्भ के ग्यारह वर्ष के अंतर्गत देश आजाद हुआ लेकिन आजादी की खुशियों के साथ देश बँटवारे के शोक में डूबा हुआ भी था। देश की दयनीय स्थिति का प्रभाव कहानी लेखन में भी पड़ने लगा। इन स्थितियों के कारण लेखक यथार्थ की ओर उन्मुख हुए और नए कहानीकारों का आगमन होता गया।

1954 में 'कहानी' पत्रिका का पुनः प्रकाशन हुआ। इस काल में लेखक आम जनता के करीब आए और उनके यथार्थ से जुड़कर कहानी रचना को समृद्ध और धनी बनाते गए। इन नए कहानीकारों में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ 'रेणु', धर्मवीर भारती आदि तथा महिला कहानीकारों में उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि प्रमुख हैं। इसके बाद 1960 से हिन्दी कहानी ने नयी कहानी के रूप में नया रूप धारण किया। इस नयी कहानी के प्रारंभ की पहचान को दृढ़ करने में 'नयी कहानियाँ' नामक पत्रिका ने अहम भूमिका निभाई है। इस पत्रिका का प्रकाशन 1960 में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से हुआ। इसके संपादक श्री भैरवप्रसाद गुप्त थे। सटीक रूप से इन नयी कहानियों की प्रारम्भिक अवधि को निश्चित करना कठिन है। लेकिन इस काल में कहानियों की प्रवृत्ति में आए परिवर्तन एवं इसके पहले की कहानियों की तुलना में 1954 से 1965 तक की कहानियों में पूरी तरह से नयी कहानी की प्रवृत्तियाँ प्रतिष्ठित हो गईं। इन प्रवृत्तियों में प्रमुख रूप से यथार्थ जीवन को दर्शाया गया। साथ ही व्यक्ति को प्रधानता दी गई। मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण अधिक किया गया। आधुनिकता का बोध भी है और तीव्र भावावेश का अभाव है।

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी में कहानी लेखन में नया मोड़ आया, जिसमें कहानीकार प्रगतिवादी, यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक आदि की रचना की ओर अग्रसर हुए। प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी के बाद से हिन्दी कहानी ने आंदोलन रूप धारण किया और यह विभिन्न आन्दोलनों के रूप में विकास की ओर अग्रसर होती चली गई। प्रमुख आन्दोलनों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित हैं:

अन्य प्रमुख कहानी आन्दोलन

कहानी आन्दोलनों की पंक्ति में सर्वप्रथम **नयी कहानी** आती है। 1947 में देश आज़ाद हुआ। आज़ादी के पहले और आज़ादी के बाद हिन्दी कथा साहित्य की प्रवृत्तियों में काफी परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता के बाद लिखी गई कहानियों को स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानी कहा जाता है। डॉ. विवेक शंकर के शब्दों में, "नयी कहानी भारतीय स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात लिखी गई उन कहानियों को कहा गया, जिसमें परंपरागत कहानी से आगे नये मूल्यों, नये भावबोधों और नए शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। इस प्रकार, नयी कहानी नये युगबोध, नये भावबोध, नये शिल्प-विधान की कहानी है।"[13] इन कहानियों में विभिन्न रचनात्मक पक्ष और बदलाव को देखा गया अर्थात इनमें नई अभिव्यक्तियाँ उभरकर सामने आईं। इस आंदोलन के प्रमुख कहानीकार हैं- राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश एवं कमलेश्वर। नयी कहानी के बाद आने वाले कहानी आन्दोलनों का विवरण इस प्रकार है -

अकहानी - नयी कहानी के विरोध के कारण अकहानी का जन्म हुआ। इस कहानी आंदोलन की कालावधि 1960 से 1963 तक मानी जा सकती है। इसमें कहानी के स्वीकृत मूल्यों को स्वीकार न करके अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा की गई, जिसमें यौन संबंध पर ज्यादा लिखा गया। दूसरी ओर कुछ लोग अकहानी को नयी कहानी के विकास के रूप में स्वीकार करते हैं। डॉ. विवेक शंकर के अनुसार, "अकहानी में 'अनुभव की प्रामाणिकता' के सूत्र को अनुभव की वैयक्तिकता या अनुभव की निजता के रूप में स्वीकारा गया, जिसके कारण अकहानी में सेक्स का खुला चित्रण हुआ और सभी प्रकार के नैतिक मूल्यों का भंजन तो हुआ ही, साथ-ही-साथ पारिवारिक, सामाजिक और साहित्यिक मूल्यों का विघटन भी हुआ। अकहानी का प्रमुख वर्ण्य-विषय सेक्स का चित्रण है।"[14] अकहानी आन्दोलन के समर्थकों में डॉ. गंगाप्रसाद विमल, जगदीश चतुर्वेदी, रवीन्द्र कालिया, दूधनाथ सिंह, प्रयाग शुक्ल, सुधा अरोड़ा, ज्ञान रंजन, रमेश बक्षी, श्रीकान्त वर्मा, विजयमोहन सिंह, विश्वेश्वर आदि प्रमुख हैं।

सचेतन कहानी - इस कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक डॉ. महीप सिंह हैं। इस आन्दोलन का आरंभ 1964 ई. में 'आधार' पत्रिका के 'सचेतन कहानी विशेषांक' के प्रकाशन से माना जाता है। यह कहानी नई कहानी की तुलना में अधिक संतुलित एवं व्यापक दृष्टिकोण रखती है। इस आन्दोलन से जुड़े अन्य कहानीकारों में कमल जोशी, मधुकर सिंह, योगेश गुप्त, वेदराही, हिमांशु जोशी, मनहर चौहान आदि के नाम उल्लेखनीय

हैं। डॉ. रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में - "नयी कहानी के दायरे में जो नकारात्मक प्रवृत्तियाँ पनप रही थीं, उन्हीं का विरोध 'सचेतन कहानी' आन्दोलन में किया गया था। यही नकारात्मक प्रवृत्तियाँ 'अ-कहानी आन्दोलन' के रूप में उभर कर सामने आयी थीं। 'सचेतन कहानी' आन्दोलन बहुत शीघ्र बिखर गया।"[15] बदलते समय के साथ कहानीकारों के विचारों में परिवर्तन होते गए, जिसके परिणामस्वरूप अनेक कहानी आंदोलनों का रूप सामने आया।

सहज कहानी - अमृतराय ने 1968 ई. में 'नयी कहानियाँ' पत्रिका का प्रकाशन इलाहाबाद से शुरू किया। इस पत्रिका का प्रकाशन पहले दिल्ली के राजकमल प्रकाशन से होता था। इन्होंने **सहज कहानी** पर आवाज उठाई, लेकिन यह आन्दोलन के रूप में प्रचलित नहीं हो सकीं। इस आन्दोलन के प्रतिष्ठित न हो सकने के कारण को स्पष्ट करते हुए डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है - "अमृतराय ने किसी भी प्रकार के बने-बनाये साँचे का विरोध किया और अपनी बात बलपूर्वक प्रस्तुत की, किन्तु उन्हें सहज कहानी लिखने वाले नये लेखक उपलब्ध नहीं हुए।"[15] इस कहानी आंदोलन के समर्थक कम होने के कारण यह जल्द ही बिखर गई। किसी का विरोध करने एवं बलपूर्वक अपनी बात रख देने से कोई समर्थन यों ही नहीं दे देता है।

समांतर कहानी - सन 1971 ई. के आस-पास समांतर कहानी आन्दोलन का प्रवर्तन कमलेश्वर ने 'सारिका' पत्रिका के माध्यम से किया। समांतर से इनका आशय कहानी को आम आदमी के जीवन की परिस्थितियों एवं समस्याओं के समांतर प्रतिष्ठित करने से है। इस आन्दोलन के रचनाकारों ने आम आदमी के संघर्षों, चिन्ताओं एवं तकलीफों को दर्शाया। इस आन्दोलन से जुड़े प्रमुख रचनाकारों के नाम हैं - अरविंद, आशीष सिन्हा, इब्राहीम शरीफ, कामतानाथ, जितेन्द्र भाटिया, दामोदर सदन, निरुपमा सोबती, मधुकर सिंह, मृदुला गर्ग, सुधा अरोड़ा, शीला रोहेकर, विभुकुमार, श्रवणकुमार, सतीशज माली, सुदीप, सनत कुमार, से. रा. यात्री, रमेश उपाध्याय। यह आन्दोलन भी इसके आगे की आंदोलनों की तरह ज्यादा देर तक नहीं चल पाया। डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने कहा है कि - "इसके सिद्धान्त-सूत्र सोच-समझकर निर्धारित किये गये थे, कहानियों के भीतर से उभर कर सामने नहीं आये थे। यह सारा आन्दोलन कमलेश्वर की महत्त्वाकांक्षा का द्योतक अधिक था, रचना-संदर्भों से उभरकर रचनाकारों की सक्रियता की अनिवार्य परिणति के रूप में सामने नहीं आया था।"[16] इस कहानी

आंदोलन में भले ही आम आदमी के संघर्षों को दर्शाया गया हो, मगर पाठकों के मन को गहराई से नहीं छुआ गया।

जनवादी कहानी - इसके बाद जनवादी कहानी की ओर कुछ रचनाकारों का ध्यान आकर्षित हुआ। इसकी शुरुआत दिल्ली विश्वविद्यालय में 1977 ई. में स्थापित जनवादी विचारमंच से मानी जा सकती है। अगले वर्ष ही इसी मंच के तत्त्वावधान में हिन्दी लेखकों का एक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 1967 से 1977 ई. तक के जनवादी साहित्य का मूल्यांकन किया गया। राजधानी दिल्ली में ही 1982 ई. में जनवादी लेखकमंच का पहला राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। इसी से जनवादी आन्दोलन क्रियाशील हुई। इस तरह की कहानी की शुरुआत कहानी सम्राट प्रेमचंद की 'कफन' और 'पूस की रात' कहानियों से मानी गई। इस कहानी परंपरा में समाज के निचले वर्ग जैसे किसानों, मजदूरों, दलितों और असहायों की दयनीय जीवन स्थिति एवं संघर्षों को दर्शाया गया है। जनवादी कहानी की परंपरा का विकास क्रम यशपाल, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त, मार्कण्डेय, भीष्म साहनी, अमरकान्त, शेखर जोशी आदि की कहानियों में परिलक्षित होता है। इस परंपरा को आगे बढ़ाने में ज्ञानरंजन, काशीनाथ सिंह, रमेश उपाध्याय, रमेश बतरा, हेतु भारद्वाज, नमिता सिंह, असगर वजाहत, धीरेन्द्र अस्थाना, उदय प्रकाश आदि लेखक उल्लेखनीय हैं।

सक्रिय कहानी - इस कहानी आन्दोलन का प्रवर्तन राकेश वत्स ने 1979 ई. में 'मंच' पत्रिका से किया। यह कहानी आन्दोलन मूलत: आदमी को अपनी कमजोरियों से उभारकर सामना करने और मज़बूत बनाने की ओर अग्रसर करता है। इस कहानी आन्दोलन के समर्थकों में रमेश बतरा, चित्रा मुद्गल, सच्चिदानन्द धूमकेतु, सुरेन्द्र सुकुमार, धीरेन्द्र अस्थाना आदि रचनाकारों के नाम प्रमुख हैं। सक्रिय कहानी के बारे में डॉ. रामचन्द्र तिवारी का कहना है कि - "'सक्रिय कहानी' की अवधारणा में 'समांतर कहानी' और 'जनवादी कहानी' की अवधारणाओं को मिला दिया गया है। इस आन्दोलन का प्रभाव भी सीमित ही रहा।"[17] कहानियों का रूप बदलता गया, जिसके कारण अनेक कहानी आंदोलनों का जन्म हुआ, मगर मानव मन की अस्थिरता के कारण इन आंदोलनों का समय कम होता गया। बदलावों के आने से हिन्दी कथा साहित्य समृद्ध होता चला गया।

हिन्दी कथा साहित्य की शुरुआत भले ही आधुनिक काल से हुई हो, पर अपनी शुरुआती दौड़ से ही हिन्दी कथा साहित्य का विकास बड़ी तेजी से होता गया। इसमें कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा वृतांत आदि अनेक विधाओं का संकलन रूप मिलता हैं। ये विधाएँ अपने-अपने प्रत्येक क्षेत्र में समृद्ध होती गईं और विकास के पथ पर अग्रसर हुईं। हिन्दी कहानी 1900 ई. से 1936 ई. तक एक निश्चित दिशा की ओर उन्मुख हुई, पर प्रेमचन्दोत्तर कहानी के बाद से हिन्दी कहानी के विकास क्रम में विभिन्न आन्दोलनों का रूप देखा गया। इन आन्दोलनों ने हिन्दी कहानी को किसी-न-किसी रूप में समृद्ध किया और प्रवृत्तियों में विविधता का मिश्रण दिया। हालाँकि इन आन्दोलनों की काल अवधि कम रहीं। इन आन्दोलनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक आन्दोलनों में मानव जीवन के विभिन्न संदेर्भों को विभिन्न रूपों में प्रकट किया गया है।

प्रत्येक रचनाकार अपने विचारों को अपनी रचना के द्वारा दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करता है। साथ ही अपने तरीके को ध्यान केन्द्रित करने के लिए अपने विचारों पर ज़ोर देता है। रचनाकारों के माध्यम से ही समाज की सच्चाई को देखा जा सकता, जिसके कारण साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। अर्थात रचनाकार अपनी रचनाओं का विषय समाज से ही लेता है। साहित्यकारों के लिए समाज से बढ़कर और कोई भंडार नहीं है। कहानी साहित्य का सफर जादुई तिलिस्म से जीवन के यथार्थ की ओर उन्मुख हुआ, जिसने समाज की प्रवृत्तियों को सामने लाने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

****

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृ.- 144
2. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.- 293
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2016, पृ.- 359
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल, मयूर बुक्स, नयी दिल्ली, 2022, पृ.-463

5. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.- 292
6. वही, पृ.- 293
7. वही, पृ.- 293
8. वही, पृ.- 293
9. वही, पृ.- 294
10. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृ.- 144
11. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.- 294
12. वही, पृ.- 295
13. हिन्दी साहित्य, डॉ. विवेक शंकर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2016, पृ.- 282
14. वही, पृ.- 283
15. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.- 305
16. वही, पृ.- 305
17. वही, पृ.- 306
18. वही, पृ.- 307

शोधार्थी का विवरण

नाम	:	वानललपारी चिन्जाह्
शिक्षा	:	पीएच. डी.
विभाग	:	हिन्दी
शोध प्रबंध का शीर्षक	:	‘मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन’
प्रवेश शुल्क के भुगतान की तिथि	:	25.07.2019
शोध प्रस्ताव की संस्तुति	:	

1) विभागीय शोध समिति की तिथि : 27.04.2020
2) बी.ओ.एस. तिथि : 19.05.2020
3) स्कूल बोर्ड तिथि : 29.05.2020

मिज़ोरम विश्वविद्यालय पंजीयन संख्या	:	1905399
पीएच. डी. पंजीयन संख्या	:	MZU/Ph.D./1423 of 25.07.2019
समयावधि विस्तार पत्र संख्या	:	-

(प्रो. संजय कुमार)

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ोल

शोध-प्रबंध सार

ABSTRACT

मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

MRIDULA SINHA KI KAHANIYON KA AALOCHANATMAK ADHYAYAN

[मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल के हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

(पीएच. डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध का सारांश]

AN ABSTRACT SUBMITTED IN PARTIAL FULFILLMENT OF THE REQUIREMENTS FOR THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

वानललपारी चिन्जाह

VANLALPARI CHINZAH

MZU REGISTRATION NO: 1905399

Ph.D. REGISTRATION NO: MZU/Ph.D./1423 of 25.07.2019

हिन्दी विभाग

मानविकी एवं भाषा संकाय

DEPARTMENT OF HINDI

SCHOOL OF HUMANITIES AND LANGUAGES

अक्टूबर, 2024

OCTOBER, 2024

मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

MRIDULA SINHA KI KAHANIYO KA AALOCHANATMAK ADHYAYAN

प्रस्तुतकर्ता

वानललपारी चिन्जाह्

हिन्दी विभाग

VANLALPARI CHINZAH

Department of Hindi

शोध-निर्देशक

डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा

हिन्दी विभाग

Dr. Akhilesh Kumar Sharma

Department of Hindi

मिजोरम विश्वविद्यालय, आइजोल के मानविकी एवं भाषा संकाय के अंतर्गत

हिन्दी विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि के

लिए अपेक्षित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध का सारांश

Submitted in partial fulfilment of the requirement of the degree of

Doctor of Philosophy in Hindi of Mizoram University, Aizawl.

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन

अध्याय 1. मृदुला सिन्हा और उनकी सृजन यात्रा

1.1 मृदुला सिन्हा का व्यक्तित्व

1.2 मृदुला सिन्हा का कृतित्व

अध्याय 2. हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

अध्याय 3. मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

3.1 लोक तत्व

3.2 समाज और परिवेश

3.3 भारतीय चिंतन बोध

3.4 नारी के विविध रूप

3.5 जीवन मूल्य

अध्याय 4. मृदुला सिन्हा की कहानियों की भाषा-शैली

4.1 भाषा

4.2 शैली

अध्याय 5. समकालीन हिन्दी कहानीकारों में मृदुला सिन्हा का स्थान

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध-प्रबंध सार

मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन

समाज का प्रतिबिंब साहित्य में झलकता है। साहित्यकार अपने साहित्य के जरिए समाज में व्याप्त रीति-रिवाजों, परम्पराओं, मान्यताओं, रहन-सहन, आस्था आदि को प्रस्तुत करता है। किसी भी देश का इतिहास, संस्कृति और सभ्यता आदि की जानकारी साहित्य के माध्यम से ही प्राप्त होती है। मनुष्य अकेला नहीं रह सकता है। वह सामाजिक जीवन का आदी है। वह समाज से अलग नहीं हो सकता है क्योंकि समाज से उसका अस्तित्व है। उसका सर्वांगीण विकास केवल समाज में रहकर ही संभव हो सकता है। समाज में घटित गतिविधियों का समावेश साहित्य में प्राप्त होता है और साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा प्राप्त होती है। अतः साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक हैं।

साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन में विषय के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण-दोष तथा उपयुक्तता का विवेचन किया जाता है। इसमें विषय अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं अर्थ निगमन की प्रक्रिया शामिल है। हिन्दी गद्य साहित्य के साथ हिन्दी आलोचना का जन्म हिन्दी के आधुनिक काल के प्रथम चरण यानि भारतेन्दु युग से माना जाता है। हिन्दी गद्य साहित्य की कहानी प्राचीन एवं समृद्ध विधा है। हिन्दी कहानी ने भारतीय संस्कृति को उजागर और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध **'मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन'** में मृदुला जी के कुल सात कहानी संग्रहों को आधार बनाकर, इनका आलोचनात्मक रूप से अध्ययन-विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इस शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है।

शोध प्रबंध का **प्रथम** अध्याय **'मृदुला सिन्हा और उनकी सृजन यात्रा'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम उप-अध्याय के अंतर्गत 'मृदुला सिन्हा का व्यक्तित्व' रखा गया है। इस उप-अध्याय में मृदुला जी के जीवन का सविस्तार परिचय प्रस्तुत किया गया है। भारतीय संस्कृति की संरक्षिका मृदुला सिन्हा का साहित्य वृहत् और भारतीय जीवन को लेकर चलने वाला है।

मृदुला सिन्हा बिहार राज्य से हैं। इनका जन्म 27 नवंबर, 1942 को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के छपरा गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम छबीला सिंह और माता का नाम अनूपा देवी था। इनके पिता एक आदर्श शिक्षक थे। इनकी माता एक सफल गृहिणी थी। मृदुलाजी के व्यक्तित्व पर इनके माता-पिता के सहज व्यक्तित्व का सरल प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। शिक्षा के प्रति जागरूक पिता की संतान होने का सौभाग्य मृदुला जी को प्राप्त हुआ। इनके पिता शिक्षा के महत्व से अवगत थे। इसलिए समाज में मिसाल कायम करते हुए बालिकावस्था में मृदुला को अपने साइकिल के कॅरियर पर बैठाकर स्कूल ले जाया करते थे। स्कूल जाने की अवस्था के पहले ही मृदुला जी ने स्कूल में कदम रख लिया था।

मृदुला जी की प्रारंभिक शिक्षा उनके गाँव छपरा से शुरू हुई। फिर आठ वर्ष की अवस्था में छात्रावासीय परिवेश में बालिका विद्यापीठ, लखीसराय, बिहार में इनका दाखिला हुआ। इस विद्यालय की स्थापना बालिकाओं में भारतीय संस्कृति के संस्कार-बीजारोपण के उद्देश्य से की गई थी। बिहार में यह पहला आदर्श आवासीय विद्यालय था, जो केवल बालिकाओं के लिए बना था। इस विद्यालय के संचालक ब्रजनंदन शर्मा थे। इन्होंने 1958 में मैट्रिक की परीक्षा पास की और महंत दर्शनदास महिला कॉलेज में दाखिला लिया। लेकिन जून 1959 को इनका विवाह डॉ. रामकृपाल सिन्हा से हो जाने के कारण यह विवाहोपरांत शहर में किराए पर घर लेकर रहने लगीं। फिर इन्होंने महाविद्यालीय शिक्षा लंगटसिंह कॉलेज,

मुजफ्फरपुर से बी.ए. ऑनर्स (मनोविज्ञान) पास किया। इसके बाद मनोविज्ञान विषय पर ही एम.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से उत्तीर्ण की और इसी विश्वविद्यालय से बी.एड. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इन डिग्रियों के बाद इनके लिए आजीविका के लिए शिक्षिका बनने का रास्ता तैयार हो गया। इनकी यह उच्च स्तर की पढ़ाई अपने समय में एक मिसाल है। फिर इन्होंने 1964 से डॉ. श्री कृष्ण सिन्हा महिला महाविद्यालय, मोतीहारी, बिहार में प्राध्यापिका के रूप में चार वर्ष तक अध्यापन कार्य किया। तत्पश्चात नानाजी देशमुख की प्रेरणा से एक आदर्श विद्यालय 'भारतीय शिशु मंदिर' की स्थापना की और इसके संचालन में कार्यरत रहीं। इस विद्यालय के कुशल संस्थापक प्राचार्या के नाते इन्होंने नौ वर्षों (सन् 1968 से 1977) तक अपना दायित्व निभाया है। इस प्रकार इन्होंने एक प्राध्यापक से लेकर संस्थापक प्राचार्या तक का अकादमिक और प्रशासनिक कार्यभार संभाला है। इन सामाजिक अध्यापन की सेवा के बाद इनका झुकाव राजनीति की ओर अग्रसर हुआ। इस झुकाव में इनके पति को भी श्रेय जाता है। अगस्त 2014 में इनकी राजनीतिक यात्रा गोवा के राज्यपाल के रूप में विराजमान हुई। इन्होंने यह संवैधानिक पद की जिम्मेदारी अक्टूबर 2019 तक संभाली। अपनी राजनीतिक, सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों को संभालते हुए मृदुला जी ने अपनी साहित्यिक सृजन की यात्रा को भी निरंतर गतिमान रखा।

द्वितीय उप-अध्याय **'मृदुला सिन्हा का कृतित्व'** है। इस उप-अध्याय में मृदुला जी के कृतित्व का विश्लेषण किया गया है। मृदुला जी की पहली कहानी रचना 'भ्रम की व्यथा' है। जिसे उन्होंने 1978 में लिखा है। इस कहानी को संपादक राजेंद्र अवस्थी ने अपनी प्रतिष्ठित हिन्दी पत्रिका 'कादंबिनी' में 1978 को प्रकाशित किया। यह कहानी कई भाषाओं में अनूदित भी हुई। इनकी दूसरी कहानी 'अनशन' भी 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में प्रकाशित हुई। यही से

उनकी लेखन ने गति पाई और इसी वर्ष 1978 में उनकी प्रथम कहानी संग्रह 'साक्षात्कार' प्रकाशित हुआ।

मृदुला सिन्हा हिन्दी की गद्य और पद्य दोनों विधाओं में कुशल और दक्ष हैं। उनकी रचनाओं का मूल आधार भारतीय जीवन दर्शन है। मृदुला जी ने कहानी, उपन्यास, निबंध, कविता आदि सभी विधाओं में लेखन कार्य किया है। इसके साथ ही लोक जीवन, भारतीय संस्कृति, जीवन मूल्य, दांपत्य जीवन, ग्रामीण जीवन आदि को आधार बनाकर प्रभावी लेखन कार्य किया है। इनकी भाषा-शैली, शब्द चयन, और वाक्य संरचना प्रभावमयी होने से भी उनकी रचनाओं को विशिष्टता मिली है।

मृदुला जी ने अपनी लेखन का प्रेरणा स्रोत अपने पति को माना है। इनकी दोनों प्रकाशित कहानियाँ इन्होंने शादी के बाद ही लिखी हैं। लेकिन इनकी मौलिक लेखन प्रेरणा का स्रोत इनके विद्यालय जीवन से ही शुरू हो चुकी थी, जब उनकी लड़ाई सहेली शांता से हो गई और दुखी मन से उन्होंने अपनी उत्तर पुस्तिका पर एक कहानी लिख डाली पर यह पुस्तिका कहीं खो गई। लेखिका के शब्दों में, "जब वे दसवीं कक्षा में थीं। उनकी प्रिय सहेली शांता उनसे नाराज हो गई, उससे अपनी नाराजगी पर वे बहुत दुखी और परेशान हो गई थी और अपनी उत्तर पुस्तिका के पूरे पन्ने भरते हुए एक कहानी (1956) लिख डाली परंतु वह कहानी आज उपलब्ध नहीं है। वह कॉपी गुम हो गई।"[1] इस घटना से साफ होता है कि छात्रावासीय जीवन से ही लेखिका कहानी लेखन की ओर सजग हो चुकी थीं। भले ही वे विद्यार्थी जीवन से ही साहित्य की ओर आकृष्ट हो गई हो पर उनके लेखन को क्रम शादी के बाद पति की प्रेरणा से ही आरंभ हुआ और फलित रूप उभर के सामने आया। लेखिका बचपन से ही संवेदनशील रही हैं। वे अपने लेखन में अपने गाँव, मौहल्लों, परिवार, समाज, खेत-खलिहानों की स्मृति ढालती हैं। इनकी लेखन शक्ति के कारण इनकी पहचान आज समकालीन

लेखन के रूप में हैं। इनकी कहानियों में रिश्तों में बंधी दादी, नानी, चाची, काकी, माँ, बहिन, सखी, नारी के विविध रूप सहज रूप से प्रकट होते हैं। वे लेखन में सामाजिक और राजनीतिक कार्यों के साथ साहित्यिक सरोकारों को भी मिलाती हैं। इनकी पहचान साहित्य, समाज और राजनीति तीनों जगहों पर अग्रणी हैं। इनकी कहानियों में ग्रामीण परिवेश की झलक अधिकतर पायी जाती है। वे बहुमुखी प्रतिभा की साहित्यकार हैं। इन्होंने अपनी लेखनी की शुरुआत कहानी से ही की है, वह भी आत्मकथात्मक कहानी से। उनकी पहली कहानी 'भ्रम की व्यथा' है, जो 'कादंबिनी' में 1978 में प्रकाशित हुई थी। इसी कहानी से इनकी लेखनी गतिमान हो गई और निरंतर साहित्य सृजन की ओर उन्मुख होती चली गई।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अंतर्गत मृदुला जी के कुल सात कहानी संग्रह केंद्र में हैं। उनमें से प्रथम कहानी संग्रह है - **'साक्षात्कार'**। इस कहानी संग्रह का प्रकाशन वर्ष 1978 में हुआ। यह मृदुला सिन्हा का प्रथम कहानी संग्रह है। इसमें कुल 21 कहानियाँ हैं। 'साक्षात्कार' कहानी से यह कहानी संग्रह प्रारंभ होती है। कहानी-संग्रह का नामकरण भी इसी पर हुआ है। यह कहानी बाढ़ पीड़ित भारतीय गाँवों की दयनीय दशा को दर्शाती है। भूख तथा गरीबी का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत है। इस कहानी की दूसरी कहानी है 'अनशन'। यह मृदुला जी की दूसरी कहानी है। इस कहानी में बेचू का अनशन चित्रित है जो बेटी द्वारा गाय कसाई के पास बेचने के कारण भूख हड़ताल कर बैठता है। अनशन के कारण बेचू मर जाता है। यह अनशन बेचू का प्रायश्चित कर्म है। इस कहानी के बारे में प्रेमचंद जी के पुत्र और कहानी पत्रिका के संपादक श्रीपत राय का कथन है, "मृदुला जी की कहानी में प्रेमचंदजी का कथानक है और बहुत बड़ी संभावनाएँ हैं इनके लेखन में।"[2] इसके बाद मृदुला जी की प्रथम कहानी 'भ्रम की व्यथा' है। इसमें प्रेम में भ्रमित राधा को दर्शाया गया है। राधा को भ्रम हुआ कि उसका नया पड़ोसी

उससे प्यार करता है, लेकिन वह नवयुवक तो विवाहित है और इंसोमनिया बीमारी का शिकार होता है। यह कहानी 'कादंबिनी' पत्रिका में प्रकाशित होती है। पर मृदुला जी ने इसे प्रकाशित नहीं करने के लिए 'कादंबिनी' के संपादक राजेंद्र अवस्थी से आग्रह किया। इस पर राजेंद्र अवस्थी कहते हैं, "आपने जो कहानियाँ लिखी हैं। उनके बारे में आप कैसे कह सकती हैं कि यह कहानी नहीं है। मैं संपादक हूँ। मुझे कहानियों को कहानी कहने, न कहने का हक है। मैं आपकी कहानी 'कादंबिनी' में छाप रहा हूँ। आप अपनी एक तसवीर भेजें।"[3]

इस संग्रह की अन्य कहानियाँ हैं - मान रिश्ते का, उपदेश, परिवर्तन, उनकी सीख, आपबीती, भैया दूज, आज का लक्ष्मण, जीवन बीमा की रकम, मानिनी, गंवई और शहरी रंग, उधार के फूल, दोषी कौन, जैसे को तैसा, आशीर्वाद, कातिल, निष्कलंक, अप्रत्याशित और प्रायश्चित। इन कहानियों में मृदुला सिन्हा ने कहीं रिश्तों की डोर बाँध कर संबंध को टूटने से बचाया है तो कहीं अंतरजातीय विवाह की समस्या को उकेरा है। व्यक्ति की बनावटी और सहज प्रवृत्तियों पर कलम चलाई है तो कहीं पारिवारिक पृष्ठभूमि पर। इस संग्रह की कहानियों में भारतीय जीवन संस्कृति की झलक देखी जा सकती हैं।

इसी क्रम में उनका दूसरा कहानी संग्रह है - **'एक दीये की दीवाली'**। इस कहानी संग्रह में भी कुल 21 कहानी हैं। इस कहानी संग्रह में उधार का सूरज, और उसी क्षण, मेरे हिस्से की उमस, न्योता, पूर्वाभास, चौथे पहर की धूप, झगड़ुआ का पेट, बाबूजी, एक दीये की दीवाली, अचार का घड़ा, घर का वैरागी, सागर-सा, फासला इतना कि, आखिर कब तक?, जब-जब होहीं धरम कै हानि, बेटी का घर, जीत या हार, मुसाफिर काकी, रिले रेस, हाँ! मैं दोषी हूँ और पितृ तर्पण कहानियाँ हैं। जिनमें एक 'दीये की दीवाली' प्रसिद्ध कहानी है। यह कहानी

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम में भी स्वीकृत रह चुकी है। इस संग्रह की कहानी में भारतीयों को अपने देश की सेवा को सर्वोपरि मानने का संदेश दिया गया है। ममत्व से भरी कहानी है। वृद्धावस्था की समस्या, अकेलापन, नसबंदी विषय, तीर्थ यात्रा, स्त्री धन आदि विषयों से लबालब हैं। मृदुला जी की कहानी के कथानक और पात्र सजीव एवं अपने से प्रतीत होते हैं। उनके कहानी जीवन के यथार्थ के ताने-बाने से बनती है। इस कहानी संग्रह की दो शब्द में लेखिका ने स्वयं कहा है, "इस संग्रह की अधिकांश कहानियों के कथानक, पात्र और स्थितियों में से कुछ बचपन से मेरे साथ चलकर प्रौढ़ हुई हैं तो कई ने बाद में जुड़कर भी पहचान बनाई है।"[4]

मृदुला जी का तीसरा कहानी संग्रह है – **'स्पर्श की तासीर'**। इस संग्रह में कुल 15 कहानी हैं। इस संग्रह की कहानियाँ हैं – स्पर्श की तासीर, आपबीती, गाँठ, शीशा फुआ, दूसरा पहलू, अपनी बारी, एक लावारिस की आत्मकथा, एक और निश्चय, ऋण, संयोग, दत्तक पिता, विरासत, पुष्पांजलि, घरवास और जीवन बीमा की रकम। यह स्वभाव बयां करने वाली मार्मिक कहानी संग्रह है। यह कहानी संग्रह मानव जीवन की जीवंत कहानियों का संग्रह है। इस कहानी संग्रह के कहानियों के बारे में लेखिका के शब्दों में, "इस संग्रह की सभी कहानियाँ सामाजिक जीवन के नये-पुराने मूल्यों को जीते हुए नर-नारी के संघर्ष का संकेत मात्र हैं। मैंने उनके भावों को दिशा-भर देने का प्रयास किया है।... इन कहानियों के माध्यम से मैंने अपनी जमीन पर खड़े रहकर नये को अपनाने की दिशा निश्चित करने की भरसक कोशिश की है।"[5]

प्रस्तुत शोध प्रबंध का चौथा कहानी संग्रह है – **'जैसे उड़ि जहाज को पंछी'**। यह 16 कहानियों की कहानी संग्रह हैं। इस संग्रह की कहानियों में बात का गोला, बाबूजी का लोटा, जुनून और जज्बात, मुआवजा, सती का सम्मान, पुनर्दान, परामर्श, अगुआ का अनुराग, जैसे

उड़ि जहाज को पंछी, लालटेन की लौ में, पेंटिंग के बहाने, आकांक्षा, सात राखियाँ, दादी माँ की पिकनिक, पगली कहीं की और बलेसर माई का तालाब हैं। इस संग्रह की कहानी का मूल स्वर भारत और भारतीय संस्कृति की ओर पुनः लौट आने का भाव अंकित किया गया है। पाश्चात्य जीवन की ओर उन्मुक्त होते जा रहे युवकों को अपने देश लौट आने का संदेश सँजोए हुए कहानी की व्यथा है। साथ ही भारतीय ग्रामीण और शहरी जीवन के अंतर्द्वंद को सामने लाया है।

इसी क्रम में मृदुला जी का पाँचवाँ कहानी संग्रह - **'ढाई बीघा जमीन'** है। इस कहानी संग्रह में कुल 19 कहानियाँ हैं। इस संग्रह में संकलित कहानियाँ है – अक्षरा, अनावरण, औरत और चूहा, औलाद के निकाह पर, बेटी का कमरा, बुनियाद, चिट्ठी की छुअन, ढाई बीघा जमीन, डायरी के पन्नों पर, हार गया सत्यवान, हस्तेक्ष्प, कटोरी, केकड़ा का जीवन, पुनर्नवा, अंतिम संकेत, चार चिड़ियाँ, चार रंग, रद्दी की वापसी, रामायणी काकी और साझा वॉडरोब। इस कहानी की संग्रह में भारतीय संस्कृति को सहेजने, परम्पराओं की शक्ति को पहचानने और मानव-मूल्य तथा सम्बन्धों को दर्शाया गया है। शीतला प्रसाद दुबे के शब्दों में, "मृदुला सिन्हा का कहानीकार भारतीय जमीन की सौंधी महक को लेकर प्रस्तुत होता है। वह विमर्शों का पानी नहीं पीटता बल्कि नारी-जीवन के संदर्भों को ईमानदारी से सिर्फ उजागर ही नहीं करता बल्कि उसके भीतर छिपी समस्याओं को एक बेहतर समाधानकारक रचनात्मक स्तर पर प्रस्तुत करता है।... मानव की अंतश्चेतना को भारतीय चिंतन परंपरा के अंतर्गत देखने वाली कहानीकार सिन्हा जी मानव-संबंधों के कठिन संदर्भों की सहज रचनाकार हैं।"[6]

'अपना जीवन' शोध प्रबंध के क्रम में मृदुला जी का छठवाँ कहानी संग्रह है। इस संग्रह में कुल 18 कहानियाँ है। अपना जीवन, बेनाम रिश्ता, चार पीढ़ियों के बाद, एक और निश्चय,

गुड़गाँव में अदौरी, कटे हाथ में हथियार, खोए जीवन की खोज, खूँटा, खूँटे का बंधन, खुदरी का सम्मान, मेरा फर्ज बनता है, पेट, रामरक्खी मर गई, समझौता, सवा सेर, सहस्त्र पूतों वाली, अगुआ का अनुराग, पहली मृत्यु पर आदि कहानियाँ है। इस संग्रह की कहानियों में माँ की असीम ममता का चित्रण है। गाँव केन्द्रित कहानियाँ है। समाज सेवा भाव अंकित हुआ है। भारतीय नारी का सटीक वर्णन हुआ है। इनकी कहानियाँ यथार्थ एवं आदर्शों का बयान करती हैं। जयश्री रॉय के अनुसार, “मृदुला जी अपनी कहानियों में आदर्शोन्मुख यथार्थ की बात करती हैं।”[7]

शोध प्रबंध के क्रम में मृदुला जी का सातवाँ कहानी संग्रह है – **‘अंतिम इच्छा’**। इस संग्रह में कुल 17 कहानियाँ है। जिनमें अंतिम इच्छा, बेमेल तस्वीरें, गुमान का दंश, हंसुली, काश! ऐसा नहीं हुआ होता, मगन है मदन, मनौती, नजर जुड़ाने वास्ते, उऋण, वसीयतनामा, टिफिन बॉक्स, खाली तिजोरी, ऊपरवार कमाई, विलगता विलगाव, पुश्र्व, चक्रव्यू का आनंद और कुछ भी नहीं बदला आदि कहानियाँ हैं। इस संग्रह की कहानियों में वृद्धजनों की समस्याओं, मानवीय व्यापारों की मार्मिक कथा, माँ की ममता, बेटा-बेटी के भेद को समाप्त करने की नसीहत, पारिवारिक संबंधों को जाहिर करना, परोपकार की भावना व बचत के संस्कार को पिरोती, ईमानदार व दांपत्य प्रेम की अटूट विरासत तथा अंतरजातीय विवाह आदि तथ्यों को सँजोया गया है।

शोध प्रबंध का द्वितीय अध्याय **‘हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास’** है। इस अध्याय में कहानी विधा का वर्णन करते हुए इसके उद्भव और विकास की परंपरा को दर्शाया गया है। हिन्दी गद्य विधा का प्रारंभ आधुनिक युग से माना जाता है। कहानी गद्य विधा के अंतर्गत आती है। कहानी उपन्यास की तुलना में छोटी व संक्षिप्त होती है। रामस्वरुप चतुर्वेदी के शब्दों

में, “कहानी हर रूप में उपन्यास से पुरानी विधा है। गीत और कहानी मानव सभ्यता से साक्षरता-काल के पहले से जुड़े हुए हैं, यद्यपि दोनों के लक्ष्य कुछ भिन्न रहे हैं। गीत में मनुष्य ने अपने को व्यक्त किया और कहानी से दूसरों का मनोरंजन।”[8] हिन्दी गद्य साहित्य की विधाओं में कहानी बहुत महत्वपूर्ण व लोकप्रिय विधा है। कहानी मौखिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त साधन है। प्राचीन काल से ही इस विधा का प्रचलन हैं पर लिपिबद्ध रूप आधुनिक काल से प्रारम्भ हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कहना है, “जिस प्रकार गीत गाना और सुनना मनुष्य के स्वभाव के अंतर्गत है उसी प्रकार कथा-कहानी कहना और सुनना भी। कहानियों का चलन सभ्य-असभ्य सब जातियों में चला आ रहा है। सब जगह उसका समावेश शिष्ट साहित्य के भीतर भी हुआ है।”[9] कहानी विधा का स्वरूप व अस्तित्व विद्वानों ने ‘सरस्वती’ पत्रिका में प्रकाशित कहानियों से ही माना हैं, लेकिन हिन्दी की प्रथम कहानी को लेकर विद्वानों का मत भिन्न रहा हैं। डॉ. रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में, “हिन्दी-कहानियों का प्रारम्भ सभी इतिहासकारों ने एक स्वर से ‘सरस्वती’ के प्रकाशन से ही स्वीकार किया है।”[10] इस तरह ‘सरस्वती’ पत्रिका के प्रकाशन वर्ष 1900 ई. से हिन्दी कहानी को एक निश्चित पहचान मिल गई। इसी वर्ष से ही हिन्दी गद्य साहित्य की शुरुआत मानी जाती है। ‘सरस्वती’ पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में हिन्दी की प्रथम कहानी निर्धारित करने में विद्वानों में मतभेद रहा है। इस पत्रिका में प्रकाशित हिन्दी कहानियों की सूची इस प्रकार है, जिसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी पुस्तक ‘हिंदी साहित्य का इतिहास’ में दिए है। इसमें उन्होंने लिखा है, “कहानियों का आरंभ कहाँ से मानना चाहिए यह देखने के लिए ‘सरस्वती’ में प्रकाशित कुछ मौलिक कहानियों के नाम-वर्ष क्रम से नीचे दिये जाते हैं -

इंदुमती – किशोरीलाल गोस्वामी – संवत् 1957 (1900 ई.)

गुलबहार - किशोरीलाल गोस्वामी – संवत् 1959 (1902 ई.)

प्लेग की चुड़ैल – मास्टर भगवानदास, मिरजापुर – संवत् 1959 (1902 ई.)

ग्यारह वर्ष का समय – रामचंद्र शुक्ल – संवत् 1960 (1903 ई.)

पंडित और पंडितानी – गिरिजादत्त वाजपेयी – संवत् 1960 (1903 ई.)

दुलाईवाली – 'बंगमहिला' – संवत् 1964 (1907 ई.)।"[11] इतिहासकारों में हिन्दी की प्रथम कहानी को लेकर मतभेद होते हुए भी आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'इंदुमती' कहानी को हिन्दी का प्रथम कहानी के रूप में स्वीकारा-सा प्रतीत होता है। इसके बाद 'ग्यारह वर्ष का समय', फिर दुलाईवाली को क्रम में रखते हैं। हिन्दी कहानियों के उद्भव और विकास में भारत के प्राचीन कथा, लोक कथा एवं पाश्चात्य कथा का सम्मिलित रूप भी शामिल है। हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को परिलक्षित करने के लिए प्रेमचंद को केंद्र में रखा जा सकता है। इस प्रकार इन्हें कहानी विधा का आधार स्तम्भ मानते हुए हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को तीन भागों में विभाजित करके समझा जा सकता है-

1. प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी
2. प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी
3. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

कहानी साहित्य के इतिहास एवं विकास यात्रा की लम्बी परंपरा को देखते परखते हुए कह सकते हैं कि कहानी विधा को बहुत उपलब्धियाँ प्राप्त हैं। प्रेमचंद पूर्व हिंदी कहानी यानी हिंदी की प्रारंभिक कहानियों से आज तक के हिंदी कहानी अपने उत्कर्ष, वैविध्य और विस्तार के साथ विकसित और समृद्ध होती चली गई। हिंदी कहानी साहित्य हिंदी साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधाओं में से एक हैं।

तृतीय अध्याय में **'मृदुला सिन्हा की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन'** को लिया गया है। इस अध्याय को पाँच उप-अध्यायों में बाँटा गया है। **पहला** उप-अध्याय **लोक तत्व** है। इस अध्याय में लोक को केंद्र में रखा गया है। सामान्य बोल-चाल की भाषा में 'लोक' को लोग कहा जाता हैं। इसका अंग्रेजी रूपांतरण 'Folk' या 'Public' है। डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली के शब्दों में, "लोक शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की लोक-दर्शने धातु से है। इसका धातु अर्थ है – देखने वाला। रूढ़िगत अर्थ सामान्य लोग है। ... ऐसा ज्ञात होता है कि प्रारम्भ से ही लोग शब्द सामान्य अर्थ में और लोक शब्द पारिभाषिक अर्थ में प्रयुक्त होता था।"[12] प्राचीन काल से ही 'लोक' शब्द का प्रयोग होता आ रहा है। इसका प्रयोग पूरे जनसमुदाय के लिए होता है। लोक की अभिव्यक्ति में जो तत्व मिलते हैं, वे लोक तत्व कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में मानवजाति का ज्ञान ही लोकतत्व है।

मानव जीवन से जुड़ी तत्वों एवं क्रियाकलापों में निर्वाह करती व्रत, पूजापाठ, तीर्थाटन, त्योहार आदि संस्कार लोक तत्व का ही अंग हैं। इन संस्कारों का लोक जीवन में बहुत महत्व है। लोक जीवन में पशु पालन की बहुत महत्ता है। ग्रामीण समाज इसका जीता जागता उदाहरण है। पशु-पालन जीवन में खुशियाँ लाते है। साथ ही पशु-पालन हमारी अनिवार्य आवश्यकता भी है। प्राचीन काल से ही पशु-पालन की रीति चली आ रही है। भारतीय समाज में गाय को माता का दर्जा दिया जाता है और इनकी पूजा होती है।

मृदुला जी का साहित्य लोक जीवन से जुड़ा है। इन्होंने लोक जीवन में सर्वाव्याप्त लोक दृष्टि को उजागर किया है। प्रत्येक व्यक्ति की सोच व विचारों को उभारने की कोशिश की है। लोक जीवन से ही समाज निर्मित होता है। लोक जीवन में व्याप्त संस्कृति ही भारतीय संस्कृति का रूप है। डॉ. रामशरण गौड़ के शब्दों में, "मृदुला सिन्हा आज के साहित्यकारों में इसलिए महान हैं कि उनकी लगभग सभी रचनाओं में स्थान-स्थान पर लोक के दर्शन होते हैं और

उनका समाहार लोक को प्रतिबिंबित करता है।”[13] प्रत्येक व्यक्ति का जीवन दर्शन लोक तत्व में समाहित होता है। मानव समाज लोक तत्व से पूर्ण होता है।

लोक जीवन का एक अमूल्य तत्व है – प्रेम। यह लोक जीवन में समरसता, आनंद, साहचर्य, आत्मीयता लाता है। यह ऐसा तत्व है जो व्यक्ति व्यक्ति के बीच गहरे संबंधों का बीजारोपण का काम करता है। संबंध-रिश्ते दायित्व का बोध कराते हैं। दायित्व बोध और आत्मीयता का मूल्य भारतीय समाज को भारत की लोक संस्कृति का ही योगदान कहा जा सकता है।

मृदुला जी ने अपनी रचनाओं में लोक मूल्य के माध्यम से लोक चेतना को जागृत करने की कोशिश की है। इनके साहित्य में लोक तत्व विद्यमान रहता है। भारतीय संस्कृति लोक तत्वों से भरी हुई है। डॉ. रामशरण गौड़ के शब्दों में, “मृदुला सिन्हा ने अपने लेखन की विभिन्न विधाओं में लोक-मूल्यों की ओर ध्यान खींचकर लोक-चेतना के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया है, जिसने भारत को कर्मठता, सरलता और सहजता के अमूल्य गुण दिए।”[14] प्रत्येक व्यक्ति का जीवन दर्शन ही लोक का निर्माण करता है। मानव समाज लोक का समावेश होता है।

द्वितीय उप-अध्याय में **समाज और परिवेश** को रखा गया है। समाज एक आधारभूत ढाँचा है, जहाँ मानव निवास करता है और विविध क्रिया-कलाप करता रहता है। समाज में रहकर व्यक्ति विभिन्न प्रकार की भूमिका अदा करता है। साहित्यकार समाज की व्याख्या अपने पात्र के माध्यम से करते है। वह अपने समाज की सामग्रियों का इस्तेमाल करते हुए कहानी या कथा का निर्माण करता है। मृदुला सिन्हा के शब्दों में, “साहित्यकार अपने समय के समाज से पात्र, स्थितियाँ और घाट-प्रतिघात का चयन करता है। उन मिट्टी, पानी और हवा

से वह अपनी लेखनी रूपी चाक से एक कहानी गढ़ता है। उसमें अपनी कल्पना शक्ति का रंग भरता है।”[15] समाज का संक्षिप्त रूप लेखन के द्वारा सामने आता है।

मृदुला सिन्हा की कहानियों में भारतीय समाज का परिवेश अंकित होता है। लेखिका ने शहरी तथा ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है। साथ ही इनके परिवेश तत्कालीन पूंजीपति और अमीरी-गरीबी को रेखांकित करते हैं। समाज संरचना में लेखिका नारी को सबसे ऊँचा स्थान प्रदान करती है और उसे मानवी के रूप में प्रतिष्ठित भी करती हैं। इस उप-अध्याय में परिवार तथा रिश्तों का विवेचन किया गया है। परिवार संसार की प्रथम पाठशाला है। इन परिवारों की धुरी नारी होती है। लेखिका पितृसत्तात्मक व्यवस्था में नारी को विशेष स्थान देती है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के ढांचा के अंदर रहकर आदर्श नारी का रूप प्रस्तुत करती है। समाज में निम्न वर्ग की स्थिति और उनके संघर्ष, जाति वर्ण व्यवस्था की सामाजिक विकृतियों को दर्शाया गया है। समाज में वृद्धों की उपस्थिति एक समृद्ध संपदा होती हैं। लेकिन बदलते समाज के रूप में यह बच्चों के लिए बोझ प्रतीत होते जा रहे हैं। ऐसे में मृदुला जी ने वृद्धों के जीवन की अभिव्यक्ति, इनके दर्द व अकेलापन को अपनी कहानी का विषय बनाया है। परिवार में बेटी की स्थिति व अधिकार को भी उजागर किया है। मृदुला जी ने ‘बेटी का कमरा’ कहानी में एक नए सोच का अंकन किया। इस कहानी में बेटी के शादी हो जाने के बाद भी एक पिता अपने बनवाए घर में बेटी के लिए कमरा बनवाता है, वह भी सबसे बड़ा और अत्याधुनिक उपकरण से सजावाला कमरा। राधामोहनजी अपने बेटी लक्ष्मी और दामाद राहुल से कहते हैं, “पहली संतान तो तुम ही हो, फिर तुम्हारे लिए कमरा क्यों नहीं? तुम्हारी रुचि और आवश्यकता के लिए कुछ विशेष प्रावधान किया है – जैसे पढ़ने-लिखने के लिए टेबल, पुस्तकें रखने के लिए रैक। ये चीजें नीचे के कमरों में नहीं हैं। यह तुम्हारा कमरा है। तुम दोनों साल में एक बार एक दिन के लिए ही आए तो क्या! ढंग का कमरा तो चाहिए।”[16] यह

एक नया संदर्भ है जो लेखिका ने कहानी के माध्यम से समाज के आगे प्रस्तुत किया है। साथ ही तत्कालीन परिस्थितियों के हवाले सामाजिक परिवेश के विभिन्न परिदृश्यों को उजागर करते हुए वर्तमान संदर्भ में चिंतन किया गया है।

मृदुला जी का कहना है, "समाज के विभिन्न क्षेत्रों में घूमती कुछ-कुछ ऐसा ही चुनती-बुनती रहती हूँ अपनी लेखनी के लिए खुराक। इन्हीं से कहानियाँ बुनती हूँ। इन सबसे अधिक और भी बहुत कुछ है समाज में। पाठकों का संबल और सराहना मिलने पर अपने समाज से कहानियाँ चुनने का मेरा अभियान जारी रहेगा।"[17] अतः लेखिका समाज और परिवेश के भीतर से कथानक चुनकर अपनी आवाज को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं।

तृतीय उप-अध्याय **भारतीय चिंतन बोध** है। इस उप-अध्याय में मृदुला जी के कहानियों में निहित भारतीय संस्कृति में गढ़ी हुई लोक जीवन, परंपरा और त्योहारों को दर्शाया गया है। इसके अंतर्गत भारतीय चिंतन दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना, आचार-विचार आदि पक्षों की विवेचना वर्तमान समय की जरूरत को ध्यान में रखकर किया गया है। भारतीय संस्कृति का एक पक्ष त्योहारों में भी निहित है। प्रत्येक त्योहार के अपने मायने होते हैं। यह त्योहार हमारे संस्कृति और आध्यात्मिकता से जुड़ा रहता है। मृदुला सिन्हा ने भी अपनी कहानियों में त्योहारों का वर्णन किया है और अपने साहित्य में ऊँचा स्थान दिया है। डॉ. रामशरण गौड़ के शब्दों में, "भारत पर्व और त्योहारों का देश है। ये पर्व और त्योहार केवल मनोरंजन के साधन मात्र नहीं होते, इनमें प्रेम, सहकारिता, मैत्री का भाव परिलक्षित होता है।"[18] पर्व और त्योहार मानव के जीवन में खुशियों का संचार करते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुकूल ही मृदुला जी कहानियों गढ़ती हैं। भारतीय संस्कृति को उजागर करते हुए इसके संरक्षण की ओर ध्यान खींचती भी हैं। इशरत खान के शब्दों में, "मृदुला सिन्हा भारतीय संस्कृति की संरक्षिका हैं।"[19] इनके कहानियों में भारतीय संस्कृति को बचाए रखने का गुण विद्यमान है। मृदुला जी अपने कहानियों के माध्यम से अपनी चिंतन दृष्टि दर्शाती है। समस्याओं को उठाती हैं और

उसके लिए समाधान भी प्रस्तुत करती हैं। क्योंकि किसी विषय पर समाधानपरक विचार करना ही चिंतन है। चिंतन की सार्थकता समस्या के समाधान पर निर्भर होती है। लेखिका की कहानियाँ भारतीय संस्कृति से रूबरू होते हुए भारतीय चिंतन का बोध कराती हैं। आचार्य मिथिला प्रसाद त्रिपाठी का कहना है, "भारत की सच्ची झाँकी इनकी कहानियाँ दिखा देती हैं। सबमें मंगल की भावना, सबमें सुख का संदेश, सबका सुखद समाधान इनकी विशेषता है। यही इनका भावात्मक स्वरूप भी है।"[20] मृदुला जी लोकधर्मी चिंतनधारा की लेखिका हैं।

चतुर्थ उप-अध्याय **'नारी के विविध रूप'** है। मृदुला सिन्हा की कहानियों में नारी के विविध रूप देख सकते हैं। इसमें माँ की ममता, बेटी की नादानी, बहन का अधिकार, पत्नी का सेवा भाव हैं। साथ ही नारी में नवजागरण पैदा करने की शक्ति है। उन्होंने नारी संबंधी अनेक समस्याएँ जैसे भ्रूण-हत्या, वृद्ध समस्या, समानाधिकार की भावना, शिक्षा की आवश्यकता, भारतीय नारी का संकल्प आदि पर विचार प्रस्तुत किया है। इनके नारी पात्र सशक्त तथा संवेदनशील होते हैं। मृदुला जी अपने गरिमामय व्यक्तित्व तथा कृतित्व से नारी जीवन के नए नए परिदृश्यों को उकेरते हुए मानव जीवन की विविध परिस्थितियों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करने में सफल निकली हैं।

मृदुला जी की अधिकांश कहानियों के केंद्र में नारी है। इनकी नारी पत्नी धर्म का निर्वाह धैर्यता के साथ करती है तो कहीं ममत्व से भरी माँ के रूप में है, तो कहीं बेटी के रूप में पिता की मान रखती हैं, कहीं बेटों का कर्तव्य निभाती हुई होती है। इसलिए इन्होंने नारी जीवन से जुड़ी विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हुए इनके स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से हल निहित कहानियों का सृजन किया है। इनकी नारी विद्रोह नहीं करती बल्कि भारतीय परंपरा को जीवित रखते हुए विषम परिस्थितियों में भी दृढ़ता से परिवार के लिए खड़ी रहती है। इन्होंने नारी के विविध रूपों का स्पष्ट एवं सटीक चित्रण किया है। स्त्री पात्र

निरूपण, सशक्त नारी की अभिव्यक्ति, मातृत्वबोध का चित्रण, दांपत्य जीवन तथा स्त्री मनोदशा का स्वरूप आदि को वर्तमान परिपेक्ष्य में उभारा गया है। विभिन्न भूमिका निभाती नारी के विविध रूप यथा माँ, बहन, पत्नी, बहू, घरेलू नारी, कामकाजी नारी, समाज सेवी नारी आदि को दर्शाया गया है। नारी को नारी रहने की सीख देती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कामयाबी हासिल करने पर भी स्त्रियों को अपने परिजनों को खाना परोसने के लिए संदेश देती है। विकास की ऊँचाई छूने के लिए प्रेरित करती है, साथ ही माँ बनने की सृजन शक्ति को निभाने और याद रखने के लिए भी कहती हैं। परिवार में नारी की भूमिका अहम होती है। परिवार को रिश्तों में बाँधे रखती हैं नारी। समाज और देश निर्माण में नारी की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता है। पर इसी नारी की स्थिति में सुधार लाना अभी बाकी है। समाज में नारी की स्थिति को उजागर करते हुए लेखिका ने आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियों का सृजन किया है।

पंचम उप-अध्याय **'जीवन मूल्य'** है। मृदुला सिन्हा ने अपने कहानियों में जीवन मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इनके प्रत्येक कहानियों में जीवन मूल्यों का विस्तार मिलता है। मृदुला जी जीवन मूल्यों पर आस्था रखती है और अपनी कहानियों में जीवन मूल्यों को बरकरार रखती हैं। डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा के शब्दों में, "जीवन मूल्यों के प्रति आस्था और विश्वास इनकी और इनकी रचनाधर्मिता की विशिष्ट पहचान है। इनकी प्रत्येक रचना किसी-न-किसी जीवन मूल्यों को सहेजने वाली, उकेरने वाली होती है। वैचारिक तौर पर भी मृदुला जी मानवतावादी साहित्यकार हैं।"[21] जीवन मूल्यों के अंतर्गत मानवीय मूल्यों को परिलक्षित किया गया है। एक अच्छा इंसान होने का आभास दुनिया को करवाना ही मानवीय मूल्य है। इन मूल्यों से युक्त मानव परिवार, समाज तथा देश में सम्मान पाता है। मूल्य मानवीय, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, भौतिक आदि होते हैं। सामाजिक मूल्य के अंतर्गत अधिकार

व कर्तव्य और न्याय क्षेत्र आते हैं। मानवीय मूल्य में नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का मिश्रण होता है और अच्छा व्यक्ति होने का बोध कराता हैं। यहाँ नैतिक मूल्य में न्याय तथा ईमानदारी का सामवेश होता है और शांति, प्रेम, अहिंसा का मिश्रण आध्यात्मिक मूल्यों में होता है। भौतिकता से युक्त भौतिक मूल्यों में मानव की प्रथम आवश्यकता रोटी, कपड़ा और घर शामिल होता है। साहित्य में इन सभी मूल्यों का अस्तित्व शामिल होता हैं। लेखिका ने इन सभी मूल्यों को अपनी कहानी में स्थान दिया है। इसके साथ युवाओं में पाश्चात्य जीवन शैली के प्रभाव एवं आकर्षण के कारण बदलते जीवन मूल्यों के रंग-रूप को भी चित्रित किया गया है। भारतीय संस्कृति की ओर झुकने का संदेश निहित होता है। पारिवारिक सम्बन्धों और संस्कार में जीवन मूल्यों की स्थिति एवं चुनौतियों को भी रेखांकित किया गया है। आधुनिक जीवन के प्रभाव के चलते जीवन मूल्यों के बिगड़ते संतुलन को भी उकेरा गया है। अतः इसमें जनमानस में व्याप्त जीवन मूल्यों की चर्चा करते हुए उनकी महत्ता को रेखांकित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय **'मृदुला सिन्हा की कहानियों की भाषा-शैली'** है। इस अध्याय को दो उप-अध्यायों में बाँटा गया है। प्रथम उप-अध्याय में 'भाषा' रखा गया है। इस अध्याय के अंतर्गत मृदुला सिन्हा द्वारा रचित कहानियों में उनकी भाषा पर प्रकाश डाला गया है। मृदुला जी की भाषा सरल, सहज, भावपूर्ण तथा व्यावहारिक है। किसी भी साहित्यकार के लिए साहित्य में प्रयुक्त भाषा और शैली उसकी पहचान बनाती है। मृदुला सिन्हा की कहानियाँ में भाषा सहज एवं पात्र के अनुकूल होती है। उपेंद्र कुमार के शब्दों में, "श्रीमती मृदुला सिन्हा ने अपने मिजाज, कथानकों और पात्रों के अनुरूप ही अपनी भाषा खोजी है और शैली विकसित की है।"[22] लेखिका ने अपनी कहानियों में लोक प्रचलित मुहावरों, लोक गीत की पंक्तियाँ और लोक भाषा के शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। इनकी कहानियों में परंपरागत

सूक्तियाँ जैसे - 'घर दही तो बाहर दही', 'मरता क्या न करता', 'एक ओर खाई, दूसरी ओर गड्ढ़े', 'सौत तो काठ की भी बुरी होती है', 'न घर का न घाट का' आदि का सटीक प्रयोग मिलता है। मुहावरे जैसे – 'आग बबूला होना', 'फूलकर कुप्पा होना', 'फुले ना समाना' आदि का प्रसंगानुरूप प्रयोग कहानियों में किया है।

कहावतें जैसे – 'दूध में जामन देकर बार-बार हिलाया नहीं करते', 'केकरो फाटल-केकरो, ऑटल' आदि कहानी को सहजता प्रदान करती हैं। लेखिका ने 'बात का गोला' कहानी में संस्कृत भाषा की उक्तियाँ जैसे – 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति नरोपराणि', 'गतासून गतासूंश्च नानु शोचन्ति पण्डिताः' का प्रयोग प्रसंग के अनुरूप किया है। इस कहानी में संजीवन के बाबूजी द्वारा मरने वाले को याद करके न रोने की सलाह के लिए यह उक्ति अंकित किया गया है। साथ ही लेखिका ने कबीरदास के दोहों का भी प्रयोग भी 'बात का गोला', 'जुनून और जज्बात' आदि कहानियों में किया जैसे –

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय॥"[23]

"आया है सो जाएगा, राजा रंक फकीर।

कोई सिंहासन चढ़ चलै, कोई बंधे जंजीर॥"[24]

"सुखिया यह संसार है खावै और सौवे।

दुखिया दास कबीर है जागे और खौवे॥"[25]

लेखिका ने अपने कहानियों में प्रसंगानुरूप मुहावरों, कहावतों, सूक्तियों, दोहों, अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है, जिसके कारण इनकी भाषा लचीली तथा कलात्मक है। साथ ही इनकी अधिकतर कहानियों के शीर्षक आकर्षक, सांकेतिक व प्रेरक होते हैं। इनकी कहानियों के कथानक संक्षिप्त तथा पात्र प्रभावशाली होते हैं। भाषा के अंतर्गत शब्द संपदा, शब्द प्रयोग, वाक्य विन्यास, लोकोक्ति, मुहावरे आदि को विवेचित किया गया है।

द्वितीय उप-अध्याय **'शैली'** है। साहित्यकार शैली के माध्यम से अपने लेखन की विशिष्टता को प्रकट करते है। मृदुला सिन्हा ने अपने कहानियों में विविध शैलियों का प्रयोग किया है। शैली के अंतर्गत प्रयुक्त कथा, कहानी की विभिन्न शैलियाँ यथा – वर्णनात्मक, पूर्वदीप्ति, पत्रात्मक, विश्लेषणात्मक, काव्यात्मक तथा संवाद को परंपरागत और आधुनिक दृष्टिकोण से परखा गया है। इन्होंने कथानकों तथा पात्रों के अनुकूल अपनी कहानियों में भाषा-शैली का प्रयोग किया है।

पंचम अध्याय **'समकालीन हिंदी कहानीकारों में मृदुला सिन्हा का स्थान'** है। इसके अंतर्गत समकालीन हिन्दी कहानी की परंपरा में मृदुला सिन्हा का स्थान निर्धारित करने की कोशिश की गई है, जिसमें मृदुला जी के समकालीन प्रमुख महिला कहानीकारों का विवरण दिया गया है।

हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों का एक सशक्त प्रवाह बीसवीं शती के छठे दशक में हुआ, जिसमें अनेक महिला कथाकार उभरकर सामने आए। इनमें मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, सूर्यबाला, मंजूल भगत, निरूपमा सेवती, मन्नू भंडारी, शिवानी, दीप्ति खंडेलवाल, नासिरा शर्मा, मालती जोशी, शशिप्रभा शास्त्री, प्रभा खेतान, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, नमिता सिंह,

चित्रा मुदगल, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मृणाल पांडे, मेहरुन्निसा परवेज, मृदुला सिन्हा आदि प्रमुख हैं। इन महिला कथाकारों ने पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर हिन्दी साहित्य को अपने सृजन से समृद्ध बनाया।

प्रारंभिक हिन्दी महिला कथाकारों ने घरेलू नारी के जीवन की त्रासदी एवं यातना का चित्रण किया है जबकि समकालीन महिला कथाकारों ने अपने अनुभव को विस्तार दिया और समाज की दोहरी नैतिकता का पर्दाफाश किया, कामकाजी नारी की दोहरी जिंदगी का यथार्थ रूप दर्शाया, स्त्री-पुरुष संबन्धों की सूक्ष्मताओं को नए रूप में प्रस्तुत किया तथा मानवीय संबन्धों के बिखराव से उत्पन्न सूनेपन आदि को कहानी का विषय बनाया। इनके विषय क्षेत्र का विस्तार होता गया और यह सशक्त बनते गए। ममता कालिया के शब्दों में, "हम उचित गर्व कर सकते हैं कि महिला-लेखन अब हिन्दी साहित्य में एक सशक्त उपस्थिति हैं, सचेत, सतर्क व स्वाभिमानी। यह समूचे हिन्दी जगत के लिए चकित होने का समय है कि महिला-लेखन ने अपनी चमक, दमक और ठसक के साथ आज विश्व पटल पर अपनी जगह बनाई है।"[26] आज महिला लेखन अपनी ऊँचाई के साथ प्रगति पथ अग्रसर होती जा रही है।

कहानीकार के रूप में मृदुला सिन्हा की विशिष्टता – मानव जीवन में साहित्य का बड़ा महत्त्व होता है। हिन्दी साहित्य जगत में मृदुला सिन्हा का महत्वपूर्ण स्थान है। वे अपने अनुभवों को कहानियों में पिरोती हैं। यथार्थ चित्रित करना मृदुला जी की विशेषता है। इनकी प्रतिभा इनके प्रत्येक साहित्य विधा में मुखरित होती है। इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के अध्येता तत्वज्ञ, धार्मिक आस्था, विश्वास से युक्त परंपरा के साथ, आधुनिकता की समर्थक, साहित्य तथा समाज के प्रति गहरी आस्था निर्मित होती है। उनका मानना है कि नारी पुरुष से विशेष होती है। यह विशेषता नारी के ममत्व के कारण मानती है। यह नारी को हर क्षेत्र में पुरुषों के सामान बराबरी कि हकदार ठहरती हैं मगर नारी को परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य

और दायित्व को निभाने की सलाह भी देती हैं। आज जल, थल और नभ में विकास की ऊँचाइयों को छूती नारियों से लेखिका कहती हैं कि यह मत भूलो कि तुम्हें ही माँ बनना है और भले ही खाना बनाने का मौका न मिले फिर भी परोसना तुम्हारा धर्म है। इनकी चिंता के केंद्र में आज के टूटते-बिखरते परिवार हैं। इनको बचाने की उम्मीद यह नारियों से ही करती हैं। इनकी कहानियों में लोक तत्व, जीवन मूल्य तथा भारतीय संस्कृति के जड़े दृढ़ता से परिलक्षित होते है। इन्हें भारत के गाँवों से लगाव है। समस्या के प्रति सजग है उकेरती भी हैं साथ ही समाधान भी प्रस्तुत कर लेती हैं। लेखिका 'वसुधैव कुटुंबकम' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की धारणा को सर्वोपरि रखती हैं। भारतीय चिंतन शैली में व्याप्त संस्कारों को सजीवता से अपनी कृतियों में परिलक्षित करती हैं। इन्होंने मानवीय मूल्यों एवं भारतीय संस्कृति को बचाए रखने का तत्व प्रकट किया है। समाज में इन मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की कोशिश स्पष्ट रूप से प्रकट होती है।

संदर्भ:

1. मृदुला सिन्हा, मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, संस्करण 2017, पृ. - 147
2. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, 2017, पृ. - 42
3. वही, पृ. - 42
4. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996, पृ. - 7
5. मृदुला सिन्हा, स्पर्श की तासीर, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1997, पृ. - 7
6. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, 2017, पृ. - 135
7. वही, पृ. - 111
8. रामस्वरुप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृ. - 144
9. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2016, पृ. - 358
10. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992, पृ. - 213
11. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2016, पृ. -359 - 360
12. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, भारतीय लोकदर्शन, अर्चना प्रकाशन, अजमेर, 1991, पृ. - 1

13. बल्देव भाई शर्मा (संपा.), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली,2018 , पृ. - 312

14. वही, पृ. - 315

15. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा (भूमिका), यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2014, पृ. - 7

16. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2013, पृ. - 46

17. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी (भूमिका), विद्या विहार, नई दिल्ली, 2005, पृ. - 8

18. बल्देव भाई शर्मा (संपा.), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 2018, पृ. – 313

19. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा.), मृदुला सिन्हा का साहित्य विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. - 125

20. बल्देव भाई शर्मा (संपा.), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली,2018 , पृ . - 317

21. रवींद्रनाथ मिश्र, मृदुला सिन्हा का साहित्य विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017, पृ. - 31

22. बल्देव भाई शर्मा (संपा.), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. – 372

23. मृदुला सिन्हा, जैसी उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004, पृ. - 12

24. वही, पृ. - 16

25. वही, पृ. - 35

26. संजय श्रीवास्तव (संपा.), वर्तमान साहित्य, साहित्य, कला और सोच की पत्रिका, रुद्रादित्य प्रकाशन, वाराणसी (उ. प्र.), मार्च-मई 2023, पृ. - 6

शोध-प्रबंध के महत्वपूर्ण निष्कर्ष

- मृदुला सिन्हा भारतीय संस्कृति की संरक्षिका हैं। इनकी कहानियों में भारतीय संस्कृति परिलक्षित होती है। संस्कृति का संबंध इतिहास से होता है। इन्होंने भारतीय संस्कृति, जीवन मूल्यों तथा लोक को सर्वोपरि रखा है। इन तत्वों का गुणगान व वर्णन अपनी कहानियों में किया है। मृदुला जी भारतीय संस्कृति के प्रति असीम निष्ठा रखती हैं और इनकी अधिकांश कहानियों में भारतीय जीवन की गरिमा परिलक्षित होती है। 'उधार का सूरज', 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी', 'पुनर्दान' आदि कहानियाँ इसके उदाहरण हैं।
- मृदुला जी ने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में सृजन किया है। पर, उनकी रुचि गद्य सृजन में अधिक रमी है। इन्होंने अपने गद्य साहित्य सृजन के केंद्र में नारी को रखा है।
- मृदुला जी समाज संरचना में नारी को सबसे ऊँचा स्थान प्रदान करती है। उसे मानवी के रूप प्रतिष्ठित करती हैं। साथ ही वह समाज को समग्रता में देखना चाहती हैं।
- मृदुला जी अन्य लेखिकाओं से अलग हैं। वे अपने स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्रियों को परिस्थिति से जूझने के लिए आक्रोश के स्थान पर समझदारी का सहारा लेने की सीख देती हैं।
- मृदुला जी ने कहानियों के माध्यम से जीवन के प्रति आस्थावादी दृष्टिकोण, संवेदनशील, उदारता, करुणा, सामंजस्य आदि का होना आवश्यक बताया है।
- मृदुला जी की कहानियाँ सीधी-सादी समस्या या घटना के साथ प्रारंभ होती हैं और फिर वह उसकी व्याख्या और विश्लेषण के साथ परिणामों की सतह पर ले जाती हैं। इस संपूर्ण यात्रा में उनकी तार्किकता, बुद्धि, सतर्कता, निरीक्षण क्षमता एवं दीर्घकालीन अनुभव का प्रमाण मिलता है। वह हर समस्या का सूक्ष्मता से चिंतन एवं मनन करती हैं और फिर समस्या का समाधान भी उसी समस्या के भीतर खोजकर शांत होती हैं।

- मृदुला जी विवाह को भारतीय कुटुंब व्यवस्था की सबसे मजबूत कड़ी मानती हैं। विवाह संस्कार को सबसे श्रेष्ठ मानती हैं, संबंध तोड़ने की पक्षधर नहीं हैं।
- मृदुला जी स्त्री-जीवन का श्रेष्ठत्व मातृत्व में मानती हैं। परंतु उनका मानना है कि आज परिवार नियोजन, महत्वाकांक्षा आदि के कारण मातृत्व खतरे में है। उनके अनुसार नारी को अपनी सृजनशक्ति का सामना करना चाहिए। अन्यथा कहीं परिवार नियोजन करते-करते समाज अनियोजित न हो जाए। मृदुला जी की अनेक कहानियाँ मातृ भाव से परिपूर्ण हैं। अपना जीवन, खोए हुए जीवन की खोज, अंतिम इच्छा, और उसी क्षण, नजरें जुड़ाने वास्ते, मेरे हिस्से की उमस आदि मातृ भाव से संबंधित कहानियाँ हैं।
- मृदुला सिन्हा की कहानियों पर उनके चिंतन-मनन और व्यक्तित्व की गहरी स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने समाज, संस्कृति, राजनीति और नारी चेतना आदि विभिन्न विषयों पर अनेक कहनियों का सृजन किया है।
- लेखिका का दृष्टिकोण नारी के संबंध में समन्वयवादी रहा है। स्वयं नारी होने के नाते वे स्त्री की संवेदना, कोमलता तथा भावुकता को प्राधान्य देती हैं। इसी कारण इन्होंने- ‘हम भारत की नारी हैं फूल नहीं चिंगारी हैं’। इस नारे में परिवर्तन करके कहा हैं – ‘हम भारत की नारी हैं फूल और चिंगारी हैं।’ उनके अनुसार नारी की शक्ति और सामर्थ्य से समाज का विकास और समाज के सार्थक सहयोग से नारी का विकास होगा।
- मृदुला सिन्हा की भाषा सरल, सहज, भावपूर्ण व व्यावहारिक है। इनकी कहानियों की भाषा में तत्सम व तद्भव शब्दों का तालमेल बना रहता है। इनके शब्द-चित्र इतने अनोखे होते हैं कि पूरा ग्रामीण परिदृश्य छलक उठता है। साथ ही इन्होंने अंग्रेजी शब्दों का भी इस्तेमाल किया है जिसके कारण हम जैसे हिंदीतर क्षेत्र के शोधार्थियों के लिए इनके कथा साहित्य को समझने में आसानी प्राप्त हुई है।

- मृदुला सिन्हा ने अपनी कहानियों में यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने अपने समय के यथार्थ को कहानियों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा है, 'सती का सम्मान' कोई मनगढ़ंत कहानी नहीं, जीवंत घटनाक्रम है- पात्रों के नाम और घटनाक्रम सहित।
- मृदुला जी ने अपनी कहानियों में वृद्धों के जीवन को भी प्रमुख विषय बनाया है। इन्होंने वृद्धावस्था में वृद्धों के अकेलेपन एवं समस्याओं का मार्मिक चित्रण 'पूर्वाभास', 'अंतिम इच्छा', 'रामरक्खी मर गई', 'शीशा फुआ' आदि कहानियों में किया है।
- मृदुला सिन्हा ने अपनी कहानियों में सामाजिक संवेदनाओं के अंतर्गत परिवार, विवाह प्रथा, रीति-रिवाज, स्त्री और परिवार, आपसी संबंधों की टूटन आदि विषयों को केंद्र में रखा है। पारिवारिक संबंधों में सास-बहू का रिश्ता, माँ-बेटी, पिता-पुत्र, आदि संबंधों की गहरी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति हुई है।
- मृदुला जी के कहानी साहित्य की विशिष्टता उनके मानवीय चिंतन व विचार से है, जिसमें सबको साथ लेकर चलने की बात है। उनका मानना है कि –

  "संग चलें जब तीन पीढ़ियाँ,
  चढ़ें विकास की सभी सीढ़ियाँ"
- मृदुला जी के कहानियों में पुरुष पात्र की प्रधानता कम है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ :

1. मृदुला सिन्हा, साक्षात्कार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978
2. मृदुला सिन्हा, एक दीये की दीवाली, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली, 1996
3. मृदुला सिन्हा, स्पर्श की तासीर, किताब घर, नई दिल्ली, 1997
4. मृदुला सिन्हा, जैसे उड़ि जहाज को पंछी, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2004
5. मृदुला सिन्हा, ढाई बीघा जमीन, ज्ञान गंगा, नई दिल्ली, 2013
6. मृदुला सिन्हा, अपना जीवन, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
7. मृदुला सिन्हा, अंतिम इच्छा, यश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

सहायक ग्रंथ :

1. अजय तिवारी, आलोचना और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
2. अमरनाथ, नारी का मुक्ति संघर्ष, रेमाधव पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, 2007
3. अरुणा गुप्ता, छठे दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2008
4. आशा बोहरा, भारतीय नारी दिशा : दशा, नेशनलम पॉलिशंग हाउस, दिल्ली, 1983
5. उर्मिला प्रकाश, हिंदी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योगदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996
6. उमेश माथुर, आधुनिक युग में हिंदी लेखिकाएँ, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर, 2000
7. किरण वाला (सं.) इक्कसवीं सदी की स्त्री अस्तित्व से अस्मिता तक, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2013

8. देवीशंकर अवस्थी, आलोचना का द्वंद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

9. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1980

10. नंदकिशोर नवल, हिंदी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

11. नन्द किशोर पाण्डेय (प्रधान संपादक), हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, 2017

12. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2004

13. पृथ्वी कुमार अग्रवाल, भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2010

14. बच्चन सिंह, आधुनिक हिन्दी साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013

15. बल्देव भाई शर्मा (प्रधान संपादक), सहजता की भव्यता, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

16. मृदुला सिन्हा, मृदुला सिन्हा की लोकप्रिय कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

17. मोहन राकेश, साहित्य और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रकाशन, आगरा, 2018

18. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य और इतिहास दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016

19. महादेवी वर्मा, भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, 2011

20. रामकुमार वर्मा, आधुनिक कवि, गोपाल बुक डिपो, जयपुर, 2003

21. रामचन्द्र तिवारी, आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007

22. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2009

23. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015

24. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, राजकमल एंड सन्स, दिल्ली, 1956

25. रामस्वरुप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018

26. रवि कुमार 'अनु', हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य की सांस्कृतिक चेतना, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1990

27. रवींद्रनाथ मिश्र (संपा), मृदुला सिन्हा का साहित्य : विवेचन एवं विश्लेषण, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, 2017

28. विवेक शंकर, आधुनिक भाषा-विज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019

29. सन्तोष कुमार चतुर्वेदी, भारतीय संस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2011

30. साधना अग्रवाल, वर्तमान हिंदी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

31. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017

32. हजारीप्रसाद द्विवेदी, विचार और वितर्क, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1965

33. हरदयाल, साहित्य और सामाजिक मूल्य, विभूति प्रकाशन, दिल्ली, 1985

34. हरिदत्त वेदलंकार, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, बालाजी वर्ल्ड ऑफ बुक्स, नई दिल्ली, 2019

कोश ग्रंथ :

1. एस. के. पूरी, आशा पूरी व सुमन ओबेरॉय, हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश, साहनी पब्लिकेशंस, 2015
2. कालिका प्रसाद, राजबल्लभ सहाय व मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, वृहत हिंदी कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 2000
3. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, भाग 1, ज्ञानमंडल प्रकाशन लि, वाराणसी, 1957

पत्र-पत्रिकाएँ :

1. मधुमती, ब्रजरतन जोशी (संपादक), उदयपुर, वर्ष - 62, अंक - 10, अक्टूबर, 2022
2. वर्तमान साहित्य, (साहित्य, कला और सोच की पत्रिका), संजय श्रीवास्तव (संपादक), वाराणसी, वर्ष - 40, अंक – 13, 14, 15, मार्च-मई, 2023
3. साहित्य परिक्रमा (कथा विशेषांक), क्रांति कनाटे (संपादक), ग्वालियर, अक्टूबर-दिसंबर, 2015
4. हरिगंधा, अनुराग अग्रवाल (प्रधान संपादक), डॉ. चन्द्र त्रिखा (संपादक), हरियाणा, अंक - 341, जनवरी, 2023

5. हिंदी अनुशीलन, प्रो. नंद किशोर पाण्डेय (प्रधान संपादक), भारतीय हिन्दी परिषद प्रयागराज, वर्ष - 61, अंक - 1-2, जनवरी-जून, 2019